CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

10·3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पथ की खोज

भाग १

डा० देवराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

डॉ० देवराज

रामपुर (उ० प्र०) में सन् १९२७ में जन्मे डॉ देवराज हिन्दी के जाने-माने कवि, उपन्यासकार और चिंतक हैं। सात काव्यग्रंथ, छ: उपन्यास, और कई समीक्षात्मक निबंध-ग्रन्थ प्रकाशित। संप्रति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय दर्शन-शास्त्र विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष।

संपर्क सूत्र :
दर्शन विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००५

प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो०बा०१०६,पिशाचमोचन,वाराणसी-२२१००१

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पथ की खोज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

भारत के प्रथम बुक क्लब
प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० १०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए
विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित
सन् १९७६

Dr. Devraj
PATH KI KHOJ
(Part I)
Novel

मूल्य : १०.००

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदन

'पथ की खोज' लेखक का पहला उपन्यास है। चूंकि वह आकार में बड़ा है, इसलिए इधर अरसे से उस पर नजर डालने का मौका नहीं मिला था। कुछ मन में यह प्रच्छन्न सन्देह भी था कि, उपन्यास के क्षेत्र में पहला प्रयत्न होने के कारण, सम्भवतः वह महत्वपूर्ण नहीं है। यों कई मित्रों ने समय-समय पर यह सुझाया था कि लेखक और हिन्दी कथा-साहित्य दोनों की दृष्टि से उपन्यास का ऐतिहासिक महत्व है और इसलिए उसका नया संस्करण आना चाहिए। मित्रों के इस सुझाव पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, इसलिए भी कि प्रस्तुत लेखक प्रायः निरन्तर साहित्य और दर्शन के लेखन में व्यस्त रहता आया है। किन्तु जब, कुछ महीने पहले, हिन्दी प्रचारक संस्थान के उत्साही अधिष्ठाता श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने उपन्यास को पुनः प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की, तो उसे देखना आवश्यक हो गया। देखने पर पाया गया कि उपन्यास न तो अरोचक ही है, और न नगण्य। और तब याद पड़ा कि प्रकाशन के वक्त हिन्दी जगत् में प्रस्तुत उपन्यास का काफी समादर हुआ था। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'प्रतीक' में उपन्यास का तीन प्रसिद्ध समीक्षकों द्वारा रिव्यू कराया गया था। जहाँ तक मुझे याद है ये तीन समीक्षक सर्वश्री नेमिचन्द्र जैन, देवराज उपाध्याय और शिवदान सिंह चौहान थे। इनमें जहाँ प्रथम दो की समीक्षा सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रशंसात्मक थी, वहाँ श्री चौहान का स्वर भिन्न था। उसी के आस-पास स्वर्गीय डाक्टर प्रकाशचन्द्र गुप्त ने किसी पत्रिका (हंस ?) में उपन्यास पर प्रशंसापरक समीक्षा लिखी थी।

इस नये संस्करण के लिए मैंने जहाँ-तहाँ नगण्य से संशोधन किये हैं। अधिकांश संशोधन उपन्यास के दूसरे खण्ड में हुए हैं जहाँ एक-दो अनावश्यक प्रसंग और उनसे सम्बद्ध अजनबी से आनेवाले पात्र हटा दिये गये हैं। लेखक के बाद के उपन्यासों की तुलना में प्रस्तुत उपन्यास का कैन्वस विस्तृत और बड़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बाद की कृतियों में लेखक ने समाज की अपेक्षा व्यक्तियों को ही अधिक चि
किया है। इसके विपरीत इस उपन्यास में उस समय के विशेषत: बौ
मध्यवर्ग के आर्थिक और वैचारिक संघर्षों से भरे जीवन का विशद चि
मिलेगा। साथ ही उसमें कतिपय नैतिक प्रश्नों को बड़े तीखे रूप में उठाया
था—इस दृष्टि से प्रस्तुत लेखक पूर्व लेखकों का विशेष ऋणी नहीं था, य
उसका अनुमान है कि वह जैनेन्द्र से प्रभावित हुआ होगा। संभवत: उपन्या
के लेखन-काल में वह अज्ञेय की कृतियों से सुपरिचित नहीं था। अपने नैति
साहस के कारण भी उस समय इस उपन्यास ने समझदार पाठकों का ध्या
आकृष्ट किया था। एक प्रकार से उसमें उठाये गये प्रश्न और उनके संके
समाधान आज भी बासी नहीं पड़े हैं—आज भी दूर तक क्रान्तिकारी ज
पड़ते हैं।

आशा है कि उन पाठकों को भी, जिन्होंने मेरे बाद के उपन्यास पढ़े हैं, मे
यह पहला प्रयत्न अरुचिकर नहीं लगेगा। उसमें उन्हें लेखक की बाद की अने
वैचारिक—नैतिक प्रवृत्तियों का पूर्वाभास भी मिल सकेगा।

इस संस्करण को सुरुचि और शीघ्रता के साथ प्रकाशित करने के लिए
श्री कृष्णचन्द्र बेरी का कृतज्ञ हूँ।

२८ नवम्बर १९७५
हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

देवराज

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रस्तावना के सूत्र

(प्रथम संस्करण से उद्धृत)

इस उपन्यास में लेखक ने एक ही चेतना के बारे में सर्वज्ञ होने का दावा किया है। उक्त चेतना भारत की उस जीवन्त सांस्कृतिक आत्मा की प्रतीक कही जा सकती है जो, इतिहास के विशिष्ट युग में, अतीत के उज्ज्वल आदर्शों से अनुप्राणित होते हुए भी संदेह और जिज्ञासा से वंचित नहीं हैं। ये सन्देह और जिज्ञासा ही पथ के स्वतन्त्र अन्वेषण की प्रेरणा देते हुए उक्त चेतना (अथवा व्यक्तित्व के विकास को सम्भव, वल्कि अनिवार्य, वना देते हैं।

असली जिज्ञासा में ईमानदारी अन्तर्निहित रहती है। (कथा-साहित्य की दृष्टि से इस ईमानदारी का स्वरूप जीवन की सूक्ष्म-जटिल ज़रूरतों, और उनके उचित संपोषण में वाधा देनेवाले तत्वों को देखने का साहस है।)

इस उपन्यास में उक्त चेतना के इसी विकास का इतिहास है। विभिन्न खण्ड उस इतिहास के उन हिस्सों का चित्र देते हैं जिनकी उथल-पुथल उक्त चेतना की जीवन-दृष्टि में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित करती है।

इस उपन्यास में, शायद, उन्हें कुछ कम रस मिले जो सन्देह और अन्वेषण के द्वन्द्व से अपरिचित हैं—जो बौद्धिक यौवन के आरम्भ से ही किसी नये-पुराने जीवन दर्शन पर ईमान ला चुके हैं।

आज का साहित्यकार वहुत ज्यादा सजग होने को बाध्य है, पर उसे याद रखना है कि उसकी जीवन दृष्टि का सम्बन्ध सिर्फ मानव जीवन के ऐहलौकिक (सुख-दुःख की सम्भावनाओं) से है।

नया युग, नई जिन्दगी, सुख-दुःख की नई परिस्थितियाँ; इसीलिए नये साहित्य और नई जीवन-दृष्टि की अपेक्षा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नये यथार्थ को, अर्थात् उस यथार्थ को जो अब चेतना में आकर दर्द दे लगा है, अनदेखा करने की, उससे कतराने की, प्रवृत्ति ही पुरानी दृष्टियों औ आदर्शों के पतन का मुख्य कारण होती है।

जीवन का प्रवाह निरूपित दृष्टियों की सुविधा के लिए नहीं रुक जाता।

युग की वैज्ञानिक साधना से उपन्यासकार ने दो चीजें ली हैं—यथार्थ को समग्रता में देखने का साहस, और उस देखने की उपयोगिता का अटूट विश्वास। ब्रह्माण्ड में अपनी स्थिति के सम्बन्ध में आज का मनुष्य धोखे में नहीं रह चाहता—इसलिए भी आज का उपन्यासकार निर्मम विश्लेषण करने मजबूर है।

इस उपन्यास (या इन उपन्यासों) में कहीं-कहीं ऐसे विश्लेषण पाकर आ विचलित न हों।

स्वीकृत जीवन-दृष्टि और यथार्थ में विरोध होने पर जहाँ अल्पप्राण व्यक्ति यथार्थ की ओर से मुँह मोड़ लेता है, वहाँ महाप्राण विचारक नई जीवन-दृष्टि का निरूपण करने को अग्रसर होने लगता है।

नया युग अधार्मिक या आदर्श-विरोधी नहीं होता, हो नहीं सकता—य धर्म और आदर्श मानव-जीवन के आवश्यक तत्व हैं। सिर्फ यह कि वह न आदर्शों और सपनों में मानव-जाति का त्राण देखता है।

लखनऊ, देवराज
२ अप्रैल, १९५१

नोट—कोष्ठस्थ अंश नये संस्करण में जोड़े गये हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

: १ :

'नव भारती' का विशेषांक लिए हुए चन्द्रनाथ जब धीरे-से कमरे में घुसा तो सुशीला बैठी अपने बाल सँवार रही थी। छोटी टेबुल पर, जिस पर वह ...लपान करता था, आईना, तेल की शीशी, पानी का ग़िलास और कतिपय ...यर-पिन रखे थे। कुर्सी की पीठ दर्वाजे की ओर थी। सुशीला बड़े यत्न से ...पने हाथ के कंघे को लम्बे-घने बालों में परिचालित कर रही थी और पीछे से ...सकी गोरी गर्दन बालों के वैषम्य से और भी मोहक लग रही थी।

इससे पहले चन्द्रनाथ ने कभी किसी युवती को इस दशा में नहीं देखा था। ...ह स्वयं वेश-भूषा के संबन्ध में सदैव से असावधान रहा है, और उन छात्रों को ...ो साज-सज्जा में अधिक समय देते हैं, अवज्ञा की दृष्टि से देखता आया है। पर ...ज सुशीला को देखकर उसमें वह भावना नहीं जगी। इसके विपरीत उसे ...सकी शृंगार-क्रिया अनिर्वचनीय रूप में सार्थक प्रतीत हुई। प्रायः सभी ...ड़कियाँ शृंगार-सज्जा में काफ़ी समय खर्च करती हैं, यह वह जानता है; और ...ह मानो प्रसन्न होकर देखता है कि सुशीला इसका अपवाद नहीं है। वह ...ीला को मुस्कराती आँखों से देख रहा है। आखिर यह सुशीला चाहती क्या ... क्यों वह एक विशेष भंगी से अपने बालों को नियंत्रित करने से लि... व्यग्र है ? ...स प्रक्रिया द्वारा उसकी नारी-प्रकृति मानवता के किस स्वार्थ की सिद्धि करना ...हती है ? क्यों वह इस तरह केश-सौन्दर्य के पीछे पड़ी है ?

सुशीला का यह परिश्रम मेरे ही लिए है, इस अहंकारपूर्ण व्याख्या से ...न्द्रनाथ का हृदय एक उद्दण्ड कृतज्ञता से भर गया। सहसा सुशीला को दर्पण ... एक दूसरी छाया दिखाई दी, वह हड़बड़ा कर उठी, और खुले हुए बालों को ...त्र से ढकने का उपक्रम करने लगी। परन्तु इससे पहले ही वह, उसका पीछे ...ा हुआ हाथ, उसके बाल और उसका प्रयत्न; सब पति के बाहु पाश में बद्ध हो ...े थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'अरे !' और 'छोड़िए !' के अमोघ अस्त्रों के व्यर्थ हो जाने पर सुशीला क
करती ? चन्द्रनाथ कंघा लेकर बालों को सँवारने की चेष्टा करने लगा। कि
यह धैर्य-साध्य काम उसकी शक्ति के सर्वथा बाहर था। उसकी असफलता
हँसने की धृष्टता न करके सुशीला कुर्सी पर नीची दृष्टि किए बैठ गई।

सुशीला देखने में शालीन और सुकुमार जान पड़ती है। उसके गोरे नि
रंग में कोमलता की मधुर झलक है, और तरल आँखों में स्निग्ध अपनापन।
अपेक्षाकृत सरल है, चन्द्रनाथ की अपेक्षा कुछ कम लम्बी। वह वक्रता
बात नहीं करती, किन्तु उसे प्यार की बातें और प्यार किया जाना अ
लगता है। चन्द्रनाथ उसके सम्बन्ध में अब तक इतना ही जान पाया है।

पत्रिका के विशेषांक में चन्द्रनाथ की एक कहानी निकली थी, जो शा
उसकी तीसरी कहानी थी। उसे लेकर ही वह सुशीला के पास गया थ
अवश्य ही उसके अन्तर में यह इच्छा थी कि सुशीला उस अंक को, विशेष
उसकी कहानी को, पढ़े और उसके प्रयत्न की सराहना करे। किन्तु वह क
ऐसा चाहता था, इसका उसे कोई भाव न था। नारी के शृंगार-रूप सौन
की भाँति कला-सृष्टि भी शायद प्रकृति के किसी गूढ़ प्रयोजन की पूर्ति के
होती है। इस प्रयोजन के संबंध में चन्द्रनाथ की जानकारी नितान्त अपूर्ण
वह इसका अनुभव भी करता है। किन्तु सुशीला के पास वह जिस प्रयो
को लेकर गया था वह अपेक्षाकृत स्पष्ट था। नारीत्व का प्रबल आग
उसे भुला न सका। संक्षिप्त प्रणय-क्रीडा के बाद उसने कहानी-अंक सु
के हाथों में रख दिया।

सुशीला लौट-पौट कर विशेषांक के सुन्दर चित्रों को देखने लगी।

चन्द्रनाथ पत्रिका के संबन्ध में उससे कुछ कहना चाहता था और व
की भूमिका बनाने की कोशिश में था। इतने में नीचे से आवाज आ
'चन्द्रनाथ, महाशय चन्द्रनाथ !'

'महाशय' कहकर पुकारना हरिशंकर की आदत थी; उसमें
"फ़ार्मेलिटी" न थी। वह चन्द्रनाथ का पुराना परिचित और मित्र था। उ

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शादी कर डालूँ।'

चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—कुछ और नीयत तो नहीं है ?

'कुछ नहीं, बस थोड़ा हलवा और मिल जाय।...अंगन भाई, छोटी बहू जी से हमारी ओर से कहना "थैंक यू" समझा, और थोड़ा सा....(तश्तरी दिखाकर)....हाँ, समझ गया ?'

बारह बरस के अंगन ने शीघ्र ही अपनी समझदारी का प्रमाण उपस्थित कर दिया।

भोजन करने के पाँच मिनट ही बाद हरिशंकर ने कहा—अच्छा महाशय चन्द्रनाथ, नमस्कार।

'अरे, इतनी जल्दी! बैठो न, कौन घर पर बीवी इन्तजार कर रही है।'

'तुम्हारी श्रीमती जी तो इन्तजार कर रही होंगी, महाशय। कहेंगी हलवा खिलाया तो भी न टला। अच्छा, अब फिर किसी दिन डटेंगे।'

चन्द्रनाथ—कहानी-अंक पढ़ोगे ?

हरि०—लाइब्रेरी में पढ़ लूँगा। नमस्कार।

बातचीत या किसी दूसरे सम्बन्ध-सूत्र को यकायक तोड़कर चल देना हरिशंकर का स्वभाव था। स्थान या व्यक्ति की आसक्ति उसकी प्रकृति के विरुद्ध थी। वह जब-जब चन्द्रनाथ के घर आता, उससे बड़े अन्तरंग ढंग से घुल-मिलकर बातें करता, और फिर हफ्तों उसके दृष्टि-पथ से ओझल रहता। उसका जीवन प्रवाहमय था, उसे एक जगह ठहरना पसन्द न था। बरेली के श्रीप्रसाद कालेज में वह अनेक वर्षों से पढ़ रहा था, परन्तु उसका कोई निश्चित डेरा न था। हॉस्टल में वह कभी नहीं ठहरा; कभी होटलों और कभी संयुक्त किराए के मकानों में रहा करता। बरेली से बाहर रहनेवाले उसके घनिष्ठ मित्रों तक को उसके पते की जानकारी न रहती। अनुभव से यह भी सिद्ध हो चुका था कि यह जानकारी निरर्थक थी, क्योंकि पत्रोत्तर देने की दुर्बलता हरिशंकर में नहीं थी।

हरिशंकर चल गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चन्द्रनाथ को लगा, जैसे यह व्यक्ति बिलकुल ही माया-ममता-शून्य है। मित्र के अनुरोध का उसकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं है; अनुनय की वाणी उसके लिये कोई अर्थ नहीं रखती। हरिशंकर कल आएगा, इसकी कोई आशा या आशंका नहीं है। फिर उसकी चिंता भी क्या? और वह बातें कैसी करता है, जैसे सारे संसार का अनुभव उसी में समा गया हो! हरिशंकर उसे सांसारिक बातों में नितान्त अबोध समझता है, यह चन्द्रनाथ को मालूम न हो, ऐसा नहीं; पर वह इसकी परवाह नहीं करता। फिर इसमें सन्देह भी नहीं कि हरिशंकर ने दुनियाँ ज्यादा देखी है। हवा के झोंके की तरह वह सदैव इधर-उधर घूमता रहा है और उसने, अपनी ही डींग के अनुसार, हजारों स्त्री-पुरुष देखे हैं। उसका विश्वास है कि वह प्रेम, घृणा आदि मानवीय सम्बन्धों को अधिक यथार्थ रूप में जानता है।

हरिशंकर कहानी-लेखक है। इधर चन्द्रनाथ ने भी उसकी देखा-देखी कहानियाँ लिखना शुरू कर दिया है। इससे पहले वह सिर्फ कविताएँ लिखा करता था। चन्द्रनाथ की कहानियाँ हरिशंकर ने देखीं, ध्यान से पढ़ीं और 'अच्छी हैं, लिखे जाओ, दुनियाँ देखो', कहकर उनके सम्बन्ध में अपनी सम्मति या उपेक्षा प्रकट कर दी।

चन्द्रनाथ ने हरिशंकर की सम्मति को निर्विकार चित्त से ग्रहण किया, यह नहीं कहा जा सकता। पर उसने हरिशंकर का प्रतिवाद नहीं किया। वस्तुतः हरिशंकर की तुलना में उसकी कहानी-कला-सम्बन्धी जानकारी बहुत कम थी। हरिशंकर ने अंग्रेजी साहित्य लेकर एम० ए० किया था और चेखव, तुर्गनेव आदि रूसी लेखकों को भी पढ़ा था। कहानी-कला पर वह अपने को धुरंधर समझता था। फिर उसके इस कथन में कि चन्द्रनाथ ने दुनियाँ नहीं देखी है, अत्युक्ति कहाँ थी?

उसने हरिशंकर से छिपाकर एक कहानी लिखी—छिपाकर इसलिए कि हरिशंकर बड़ी सतर्कता से उसकी रचनाएँ पढ़ जाता था—और उसे चुपचाप, धड़कते हृदय से, नवभारती-सम्पादक के पास भेज दिया। स्वीकृति का पत्र आ जाने पर उसने कहानी भेजने की बात हरिशंकर पर प्रकट कर दी। हरिशंकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने कहा—'संभव है छप जाय, मैंने तो वह कहानी देखी नहीं है।' कहानी के छप जाने पर और उदीयमान लेखकों में उसकी गिनती हो जाने पर चन्द्रनाथ अपनी कहानी पर हरिशंकर की सम्मति जानने को विशेष रूप से व्यग्र हो उठा।

हरिशंकर चला गया, और चन्द्रनाथ अपनी खीझ मिटाने के लिये भीतर पहुँचा। इस समय वहाँ की मानव-राशि भोजन के अनुष्ठान में लवलीन थी। चौके के बाहर सुशीला और रमेश तथा उसकी बहिन सरला दो थालियों पर डटे हुए थे। भाभी पका रही थीं।

चन्द्रनाथ के पहुँचने पर सुशीला ने मुख पर अवगुण्ठन करने की चेष्टा की।

'मैंने सोचा भाभी, भीतर चलकर जरा घर के अन्न की खैर-खबर लूँ। उस दिन भाई साहब कह रहे थे कि अब आटे का खर्च एकदम बढ़ गया है।'

'हाँ, तुम्हारी बहू भी आ गई है न, इसकी भूख क्या थोड़ी है,' भाभी ने मृदु हास्य से सुशीला की ओर देखकर उसकी थाली में रोटी परोसते हुए कहा।

इतने में रमेश ने रोटी माँगी। चन्द्रनाथ ने कहा—'रमेश, तुम्हें अब रोटी नहीं मिलेगी, रोटियाँ सब घूँघट में गायब हुई जा रही हैं।'

सुशीला ने अपनी रोटी रमेश को दे दी। भाभी उसे दूसरी रोटी देने लगीं, पर सुशीला ने थाली पर अपने हाथ रख दिए।

'नहीं भाभी, अब वह रोटी नहीं लेंगी, तुमने टोक भी दिया। अगर वह कुछ ज्यादा भी खाती हैं तो तुम्हें इस तरह नहीं कहना चाहिए था।'

चन्द्रनाथ की बात सुनकर सुशीला हँसने लगी। भाभी ने रोटी देते हुए कहा—

'यह तो हमेशा ऐसी ही बातें करते हैं, बहू, तू बुरा मानकर कहाँ रहेगी?'

रमेश खुद भी खा रहा था और सरला को भी खिला रहा था। सरला दो बरस की थी और रमेश पाँच का। भोजन कितनी स्वादिष्ट वस्तु है, इसका पूरा अनुभव पाने के लिये बच्चों को खाते हुए देखना चाहिए। सरला फुदक रही थी और रमेश भी हिल-हिलकर रोटी-दाल का स्वाद ले रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सरला और रमेश दोनों का पेट भर चुका था; यह स्पष्ट था कि उन्हें कुछ और करना चाहिए। तृप्ति के अतिरेक में उठकर रमेश ने पीछे से सरला के गले में हाथ डाल दिए और उसे उठाकर नचाने लगा। सरला चीख उठी।

सरला की तार-सप्तक-जैसी आवाज़ की उपेक्षा करना असंभव था। उसके "अम्मा, अम्मा" के अनवरत आह्वान ने पल भर में घर की दीवारों को मुखरित कर डाला। भाभी ने चौके के भीतर से "रानी बिटिया" को चुपाने की कोशिश की, चन्द्रनाथ ने उठकर उसे गोद में लेना चाहा, लेकिन सब व्यर्थ। माँ की गोद का वास्तविक स्पर्श पाए बिना सरला चुप होनेवाली न थी। सरला के चीखने से उस पर कोई संकट न आए, शायद यह सोचकर ही यकायक रमेश भी रो उठा।

घर में खासा कुहराम मच गया। अंगन दूकान जा चुका था, क्योंकि कुछ देर में बाबू शिवनाथ को रोटी खाने आना था। सुशीला अभी तक भोजन समाप्त नहीं कर पाई थी। उसके कारण ही भाभी चौके से नहीं निकल पा रही है, इस संकोच से वह गड़ी-सी जा रही थी। अन्त में उसने कठिन आग्रह करके भाभी से एक बासी परावठा ले लिया, और वे बच्चों के ज़िद्दीपन का बखान करती हुई बाहर निकलीं।

दो ही मिनट बाद सरला माँ की गोद में हँस रही थी, और रमेश हाथ-मुँह धोकर कुदक रहा था।

❀ ❀ ❀ ❀

रात को सुशीला ने चन्द्रनाथ से पूछा—क्या मैं ज्यादा खाती हूँ ?

चन्द्रनाथ ने कहा—चार-पाँच रोटी से कम क्या खाती होगी।

सुशीला अब इस घर में नई नहीं है। उसका गौना पिछले अगहन में हुआ था। परन्तु तब वह चन्द्रनाथ के पास अधिक ठहर नहीं पाई थी, अथवा यों कहो कि चन्द्रनाथ उसके पास अधिक नहीं रुक सका था। गर्मियों की छुट्टियों में चन्द्रनाथ उसे लिवाकर लाया और अब वह लगभग एक महीने से उसके पास है। इतने दिनों में दोनों का परिचय काफी घनिष्ठ हो चला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्रनाथ की बात सुनकर सुशीला हँसी नहीं। उसने कहा—मैं गाँव की लड़की हूँ और गाँव की लड़कियाँ ज्यादा खाती हैं।

चन्द्रनाथ ने सुशीला की ठोड़ी ऊपर उठाते हुए बड़ी गम्भीर मुद्रा से उसके मुख को देखकर कहा—तुम सचमुच गाँव की लड़की हो। जरा बोलना तो, सुनूँ तुम्हारी भाषा कैसी है।

अबकी बार सुशीला हँस पड़ी।

कुछ देर बाद चन्द्रनाथ ने कहा—सुशीला रानी, भाभी का कुछ काम कर दिया करो। देखा नहीं, बच्चे कितना तंग करते हैं।

'तो क्या आप समझते हैं, मैं काम ही नहीं करती; साग काट देती हूँ, दाल-चावल बीन देती हूँ, सरला को खिलाती हूँ—'

'बस, बस, मैं यही कहना चाहता था।'

"क्या मैं इतना भी नहीं समझती; भाभी अकेली सब काम कैसे कर सकती हैं ?'

चन्द्रनाथ ने प्रसंग बदलने के लिए कहा—तुमने कहानी-अंक पढ़ा, सुशीला ?

'कहाँ पढ़ सकी। फुर्सत ही नहीं होती, सिर्फ दो कहानियाँ पढ़ पाई हूँ।'

चन्द्रनाथ ने उन कहानियों के नाम पूछे, उनमें उसकी अपनी कहानी नहीं थी। यह स्पष्ट था कि सुशीला ने कहानियों और उनके लेखकों की सूची नहीं पढ़ी।

इससे पहले भी चन्द्रनाथ ने सुशीला को पुस्तकें पढ़ने को दी थीं, पर वह उसकी आशा का चतुर्थांश भी नहीं पढ़ पाई थी। उसने पंजाब की कोई हिन्दी-परीक्षा पास करके वहीं से सिर्फ अंग्रेजी में मैट्रिक कर लिया था। इण्टरमीडिएट में भी वह बैठी थी, पर उत्तीर्ण न हो सकी। किन्तु वह अंग्रेजी नहीं बोल सकती थी, न उसकी अंग्रेजी पुस्तकों में रुचि ही थी; इसलिए चन्द्रनाथ उसे प्रायः हिन्दी की पुस्तकें ही पढ़ने को देता था।

'आज यह कौन आए थे ?' सुशीला ने कोमल स्वर में पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'तुम नहीं जानतीं; यह हैं मिस्टर हरिशंकर शर्मा। साहित्य के अच्छे विद्वान् हैं। पिछले साल अँग्रेजी में एम० ए० किया है। कहानियाँ अच्छी लिखते हैं।'

'इनका रंग बहुत गोरा है'—सुशीला बोली।

'हाँ, और माथा भी बहुत चौड़ा है।'

'माथा तो मैंने नहीं देखा, धोते वक्त हाथ देखे थे। बोलते बहुत जोर से हैं।'

'पूरे लाउड स्पीकर हैं। तुम इनसे साहित्य पढ़ोगी ?'

सुशीला कुछ सोचने लगी। फिर उसने पूछा—आपका एम० ए० का रिजल्ट कब आएगा ?

'अब आने ही वाला है। क्यों, तुम्हें क्या चिन्ता है ?'

'कुछ नहीं, बी. ए. की तरह अब भी आप प्रथम श्रेणी में पास हों, यही मेरी अभिलाषा है।

फिर कुछ रुककर उसने पूछा—इन्होंने एम० ए० किस श्रेणी में पास किया ?

'किसने, हरिशंकर ने ?'

'हाँ'

'तृतीय श्रेणी में।'

'और बी० ए० ?'

'बी० ए० भी तृतीय श्रेणी में, पर वैसे बड़े मेधावी आदमी हैं। परीक्षा में मेहनत कम करते हैं।'

'आपका बी० ए० का रिजल्ट सुनकर मेरी एक सखी बहुत खुश हुई थी।'

चन्द्रनाथ—अच्छा !

सुशीला—वही लड़की जिसने व्याह में आपसे कहा था, 'खाना तक नहीं जानते।' उसका नाम साधना है। वह कहती है कि प्रथम श्रेणी पाने के लिये बहुत साफ और तेज दिमाग चाहिए।

'यह साधना कहाँ तक पढ़ी है ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'उसने सब विषयों में इण्टर किया है, और अब बी० ए० की तैयारी कर रही है।'

'क्या उसने प्रथम श्रेणी पाई थी?'

'नहीं; पर वह है बहुत तेज लड़की। अंग्रेजी खूब बोल लेती है। इण्टर में उसके हिन्दी में बहुत अच्छे नम्बर थे, शायद ७४ प्रतिशत। वह कहती है कि प्राइवेट पढ़कर प्रथम श्रेणी पाना नामुमकिन है। फिर शिवपुरी में पढ़ाने-वाले भी मुश्किल से मिलते हैं।'

सुशीला जब अपने गाँव की बात करती है तो और सब-कुछ भूल जाती है। उसकी दृष्टि में शिवपुरी के सामने सारे संसार की सत्ता तुच्छ है। शिवपुरी उसका मायका है। लड़कियाँ अपने मायके को जितनी अच्छी तरह जानती हैं, उतना संसार के किसी दूसरे भूभाग को नहीं। उनके बचपन की विशुद्ध चेतना में मायका समाया रहता है। सुशीला के मायके की बहुत सी बातें चन्द्रनाथ को मालूम हो गई हैं। जब-जब उसमें कहानीकार बनने की आकांक्षा सजग होती है, तब वह उसकी बातें बड़े ध्यान से सुनता है; दूसरे "मूड" में होने पर ऊब भी जाता है। तब वह पार्श्ववर्तिनी सुशीला का मुख किसी कोमल इंगित से बन्द कर देता है। पिछले एक मास से उसका यही क्रम है। नई-नई आई होने के कारण सुशीला मायके के आख्यानों से भरी हुई है। चन्द्रनाथ चाहता है कि वह उसकी यह सर्वदर्शिनी दृष्टि शिवपुरी से हटाकर विशाल विश्व की ओर लगा दे।

आज चन्द्रनाथ सुशीला की कहानियाँ सुनने के मूड में न था।

अष्टमी का रुपहला चाँद आकाश में हंस-शावक की भाँति तैर रहा था। उसकी विशुभ्र किरणें चन्द्रनाथ के सामने शय्या पर बैठी हुई सुशीला पर चारों ओर से आक्रमण कर रही थीं। घर और बचपन की बातें करती हुई सुशीला यों ही भोली मालूम पड़ती है, चाँदनी की रजतच्छटा में उसका चेहरा और भी भोला प्रतीत हो रहा था। जब चन्द्रनाथ ने उसके अधखुले मुख पर अपनी हथेली दशन-पंक्ति को स्पर्श करती हुई जमा दी, तो सुशीला लज्जापूर्ण हँसी से सिहर उठी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यत्न से बनाए हुए सुशीला के बालों को अपनी उँगलियों से अस्त-व्यस्त करते हुए चन्द्रनाथ सोचने लगा—क्या हरिशंकर की दी हुई प्रेम की परिभाषा ही समग्र सत्य नहीं है ? सुशीला आकर्षक लगती है, और इस आकर्षण के अतिरिक्त नारी में प्रेम करने योग्य है ही क्या ? उसका पाण्डित्य और प्रतिभा कितनी है, क्या यह बिना जाने ही सुशीला उस पर अपना सर्वस्व निछावर नहीं कर चुकी है ? आधी रात की स्तब्धता में निबिड़ आलिंगन में आबद्ध पति-पत्नी जब एक दूसरे को उष्ण अधैर्य से चूमते हैं तब उनमें पंचभूतों के अतिरिक्त क्या सजग होता है ? शारीरिक व्यापार से परे प्रेम का आधार भी क्या हो सकता है ? शरीर अथवा रक्त की क्षुधा के बाहर प्रेम की खोज आकाश-कुसुम की गवेषणा से कम हास्यास्पद नहीं है। उसकी अतृप्ति का यही कारण तो नहीं है कि वह प्राप्त वस्तु का निर्विकल्प चित्त से उपयोग नहीं कर सकता ?

कुछ पल बाद सुशीला ने कोमल उपालम्भ के स्वर में कहा, 'रहने दीजिए, आपने मेरे सारे बाल खोल डाले।'

चन्द्रनाथ ने चौंककर कहा—ओह! कुसूर हुआ।

'इस दशा में यदि भाभी देख लें तो ?' सुशीला मधुर कण्ठ से कूज उठी।

'हुश्', चन्द्रनाथ ने अधिकार के स्वर में कहा।

यह चुप रहने का संकेत था।

यह सोने का आदेश था।

RajGuru Math, Shivala; Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

: २ :

चन्द्रनाथ जिस परिवार में पला था वहाँ, और उस कोटि के दूसरे सैकड़ों घरों में, विवाह से पहले वर द्वारा कन्या के देखे जाने की प्रथा न थी, बदायूँ के पुराने वातावरण में विवाह वैयक्तिक से अधिक एक सामाजिक घटना समझी जाती थी। शादी के पहले चन्द्रनाथ ने सुशीला का फ़ोटू मात्र ही देखा था।

किन्तु स्वयं उसकी दृष्टि में विवाह सौ-फ़ीसदी एक वैयक्तिक घटना थी। विवाह से पहले अपनी भावी सहचरी के सम्बन्ध में वह न जाने कितनी कल्पनाएँ कर चुका था, और उसे लक्ष्य कर कितनी कविताएँ लिख चुका था। बड़ी उत्कण्ठा और बेचैनी से, बड़ी आशा और उमंग से, अपार आकुलता भरे हृदय और अनन्त प्यासभरी आँखों से उसने उस घड़ी की प्रतीक्षा की थी जब वह अबाध रूप से अपनी प्रणयिनी के निकट हो सकेगा—उसे अनन्य सहचरी के रूप में प्राप्त कर सकेगा।

अपनी कल्पना में उसने इस सहचरी की मूर्ति भी खड़ी कर ली थी—वहाँ उसने उन सब विशेषताओं का, उन सब गुणों का, आरोप कर लिया था जो उसे प्रिय थे, जिन्हें वह अभी तक विभिन्न व्यक्तियों में प्यार की दृष्टि से देखता आया था।

विवाह से काफी पहले, कई वर्ष पूर्व, उसके प्रेम का लम्बा इतिहास बन चुका था। यों तो इस इतिहास का प्रारम्भ तभी से हो गया था जब, तीन-चार वर्ष की अवस्था में; उसने अपनी माँ के प्रेम की चेतना प्राप्त की, पर उसका विशेष आरम्भ हुआ स्कूल-जीवन के उस दिन से जिस दिन उसने वहाँ एक नए साथी का साक्षात्कार किया। श्रीमोहन मेधावी था, स्निग्ध था, और सुदर्शन भी। पहले ही दिन उसने चन्द्रनाथ को आकृष्ट किया, और दोनों में मैत्री हो गई। यह मैत्री काफी दिनों चली—बीच में दो-एक बार झगड़ा या गलतफ़हमी भी हो गई जिसने चन्द्रनाथ को प्रेम की पीड़ा का प्रथम अनुभव कराया। फिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मेल हुआ, और बाद में, अपने पिता की बदली हो जाने के कारण, श्रीमोहन चला गया। चन्द्रनाथ ने बहुत महसूस किया, पर लाचारी थी।

श्रीमोहन के प्रस्थान के बाद चन्द्रनाथ के स्नेह का एक ही आलम्बन रह गया, उसकी माँ। माँ की अपार कोमलता और वात्सल्य ने उसकी चेतना पर अमिट छाप डाली, और वह इन गुणों का अनुरागी बन गया। दुर्भाग्यवश कुछ ही दिन बाद, जब वह इण्टरमीडिएट फाइनल का विद्यार्थी था, उसकी माँ का देहान्त हो गया। चन्द्रनाथ किंकर्त्तव्य-विमूढ़ रह गया।

इसी बीच में एक बार उसकी श्रीमोहन से भेंट हुई। वह अब लखनऊ के एक कॉलेज में पढ़ता था और किसी काम से बरेली आ पहुँचा था। वह आकर चन्द्रनाथ के सामने बैठा; चन्द्रनाथ उसे एकटक देखने लगा। बोलने की प्रवृत्ति उसकी नहीं हो रही थी। इसके विपरीत श्रीमोहन बिना किसी आवेग के बड़ी शिष्टता से, 'आप' कहकर बातें कर रहा था। चन्द्रनाथ का हृदय भरा, था; श्रीमोहन की बातें, जिनका सम्बन्ध लखनऊ के वातावरण और उसके कॉलेज-जीवन से था, उसकी समझ में कम आ रही थीं। श्रीमोहन कह रहा था—'हमारे कॉलेज में सिर्फ किताबी पढ़ाई पर जोर नहीं दिया जाता, वहाँ खेल होते हैं, वाद-विवाद होते हैं, संगीत के क्लास होते हैं', इत्यादि। इसके विपरीत चन्द्रनाथ का मूक हृदय कह रहा था—'तुम आ गए, आ गए; तुम मेरे बिना कैसे रहे।···तुम्हें हमारा पिछला सम्बन्ध याद है? तुम वही हो न मेरे अत्यन्त प्रिय साथी···आओ, बहुत दिनों के बिछुड़े प्रिय, तुम्हें अपने अंक में भर लूँ··'चन्द्रनाथ को लगा कि श्रीमोहन पहले की अपेक्षा रूखा हो गया है—उसके चेहरे पर भी कुछ रूक्षता आ गई थी। उसका स्मृति-स्वप्न भंग हो गया। श्रीमोहन के जाने के बाद उसे बहुत दुःख हुआ—वह रो दिया। उसकी आदर्श प्रेम-प्रतिमा लुप्त हो चुकी थी; श्रीमोहन का अन्तर-बाह्य सब बदल चुका था।

माँ की मृत्यु और श्रीमोहन के इस व्यवहार ने उसे मार्मिक व्यथा पहुँचाई। उसे लगने लगा जैसे जीवन निःसार है, निरवलम्ब। उसका कहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी न लगता, मन उचटा-उचटा रहता। वह प्रेम की भूख से तड़प रहा था—एक प्रेम-पात्र पाने के लिए विकल था।

उसके भाई की शादी हो चुकी थी, माँ की मृत्यु से कुछ ही पहले। किन्तु माँ और श्रीमोहन की उपस्थिति में उसने भाभी के अस्तित्व को महसूस नहीं किया था। उसका एक कारण भी था—भाभी ने बुद्धि और सौहार्द दोनों का अंश कम पाया था।

चन्द्रनाथ की दो-तीन दूर की भाभियाँ भी थीं जो प्रायः पाँच-छह वर्ष पहले आई थीं। उनमें से एक चन्द्रनाथ को विशेष प्रिय थी। छै-सात घर के अन्तर से ही वे रहती थीं। माँ के साथ वह कभी-कभी उनके घर जाता था, कभी वे ही माँ के पास आती थीं। माँ की मृत्यु के बाद उसकी उनसे बहुत कम भेंट होती।

एक बार वे चन्द्रनाथ के घर आईं, और उसे बाहर से पास बुलवाया। थोड़े संकोच से वह उनके पास पहुँचा। बोलीं—'अब तो देवर, हमसे बात भी नहीं करते, कभी आते भी नहीं, न जाने किसकी फिकर में रहते हैं''कहीं दिल लग है क्या ?'

'अरे नहीं भाभी'''आप तो ऐसी बातें करती हैं।'

उसने भाभी को कथंचित् समग्रता में देखा, और उसके हृदय में एक नई-सी गुदगुदी हुई।

'देवर, शादी कब करोगे ?'

'क्या जरूरत है ऐसी', उसने संकोचपूर्वक कहा।

'हाँ, भाभी तो घर में हैं ही !' फिर बोली—'शादी कर लो, अकेले इनका जी नहीं लगता होगा। जब से चाचीजी मरी हैं मुझे ही यहाँ आना बुरा लगता है।'

भाभी के चले जाने पर वह रह-रहकर उनके स्निग्ध मधुर चेहरे की कल्पना करने लगा। भरे हुए अधरोष्ठ के पीछे कुछ बड़े किन्तु सघन दाँतों की कतार, बड़ी-बड़ी काली आँखें, स्वच्छ दर्पण जैसे कपोल, प्रशस्त ललाट''; चन्द्रनाथ को याद आया कि पहले भी वह इस मूर्ति से आकृष्ट हुआ है, और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उसकी मधुर हँसी से व्यामोहित। बहुत दिनों पहले जब भाभी नई-नई आई थीं, उन्हें उसकी माँ ने बुलाया था। कुछ संकुचित होते हुए भी, माँ के कहने पर, वह उनके निकट गया था और उन्हें देखकर, मूक विस्मय और अज्ञात लालसा का भार लिए, लौट आया था। उसके बाद जब-जब वे आतीं, वह यत्नपूर्वक उन्हें देखने की चेष्टा करता। कुछ दिनों बाद वह उन्हें भूल सा गया था।

इस बार भाभी से भेंट करने पर उसने महसूस किया कि उसे किसी की जरूरत है, किसी नारी की, प्रेयसी की····ऐसी प्रेयसी की जो भाभी जैसी स्निग्ध हो, उन्हीं-सी मधुर हँसनेवाली,···और श्रीमोहन-सी प्रतिभाशालिनी और चपल और वह यह भी चाहता था कि उस नारी में उसकी माँ के समान आश्रय और अवलम्बन देने की शक्ति हो, उसके प्रेम में वात्सल्य का योग हो। प्रेम और वात्सल्य ? उसे वस्तुतः ठीक आभास न था कि वह क्या चाहता है किन्तु एक बात निश्चित थी—अब उसे अकेला जीवन नीरस लगता था।

वह बी० ए० की परीक्षा दे चुका था। एक दिन उसके भाई ने कहा—'मेरा विचार है कि अब तुम्हारी शादी कर दी जाय, माँ के सामने तो नहीं हो सकी।' चन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। तभी से उसकी शादी के लि कोशिश होने लगी।

विवाह से पहले उसे सुशीला का फोटू दिखाया गया था। उसने पसं किया था—पसंद से कुछ अधिक। और इसके बाद सम्बन्ध स्थिर हो जाने प वह अहर्निश इस कल्पना में लीन रहता कि कब उसकी अभिलषित प्रणयिनी भेंट होगी।

बी० ए० के प्रथम वर्ष में ही उसका हरिशंकर से परिचय हो गया था किन्तु अभी तक भी यह परिचय उस मैत्री का रूप न ले सका था जिसमें व्यक्तित्व मिलकर एक हो जाते हैं।

पहली बार जब उसकी सुशीला से भेंट हुई तो वह बहुत प्रसन्न हुआ यह सत्य है कि वह उतनी अधिक सुरूपा न थी जैसी उसके कवि-हृदय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्पना की थी, पर वह काफी सुन्दर थी ; स्निग्ध और मधुर भी। चन्द्रनाथ के प्रेम-प्लावन को उसने सहज तृप्ति से स्वीकार किया, विभोर मधुरता से। चन्द्रनाथ सन्तुष्ट था।

किन्तु शीघ्र ही उसके निर्भर सन्तोष में असन्तोष का बीज पड़ा। सुशीला के शरीर, और हृदय, और स्वभाव से घनिष्ठ होते-होते वह उसके मस्तिष्क को टटोलने लगा। उसने पहले उसके अंग्रेजी-ज्ञान की परीक्षा लीं और पाया कि वह नितान्त अधूरा है ; इसके बाद हिन्दी-ज्ञान की जाँच की, वह भी सन्तोषप्रद न था। अब उसे चिन्ता पड़ी। वह ला-लाकर सुशीला को पुस्तकें देने लगा। एक सप्ताह के भीतर ही सुशीला के पास पुस्तकों का ढेर हो गया—कविता, उपन्यास, नाटक। चन्द्रनाथ सुबह-शाम सुशीला से पूछता—'क्या-क्या पढ़ लिया ?' सुशीला बतलाती—'यही तो पढ़ पाई हूँ, कहाँ समय मिलता है ?' धीरे-धीरे चन्द्रनाथ द्वारा लाई जानेवाली पुस्तकों की संख्या कम होने लगी। वह अधैर्य से प्रतीक्षा करने लगा कि कब तक सुशीला पहले की दी हुई पुस्तकें समाप्त करती है।

चन्द्रनाथ और सुशीला के इसी व्यक्तिगत तथा सम्पृक्त इतिहास की पृष्ठभूमि में उनके ऊपर के जीवनाध्याय का प्रारंभ हुआ।

●

: ३ :

एम० ए० का परीक्षा-फल आया। चन्द्रनाथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया। प्रत्याशित के घटित होने से चन्द्रनाथ को विशेष प्रसन्नता न थी ; किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुशीला फूली-फूली फिर रही थी और रमेश तथा सरला प्रसन्न थे। आज सवेरे ही बाबू शिवनाथ ने चन्द्रनाथ को वधाई देनेवालों के लिए मिठाई मँगाकर रख दी थी।

सब आए, किन्तु हरिशंकर नहीं आया। प्रतीक्षा करनेवालों की आशा पर पानी फेरना उसका साधारण नियम था। सुशीला ने आज सवेरे आठ बजे ही चन्द्रनाथ से कहा था कि 'आज आपके मित्र आएँगे, जरूर आएँगे।' तभी से वह उनकी बहुभाषिणी जीभ और अनतिसूक्ष्म उदर की तृप्ति के लिए साधन जुटा रही थी। किन्तु हरिशंकर नहीं आया। सुशीला के निराशा प्रकट करने पर चन्द्रनाथ ने कहा—मैंने तो पहले ही कह दिया था कि पंडित जी के आने का कोई निश्चय नहीं है।

किन्तु हरिशंकर आया—सुशीला की अन्तःसाक्षी क्या मिथ्या हो सकती थी? पर साँझ को साढ़े-पाँच बजे। चन्द्रनाथ ने कहा—हरी, कुछ देर हो गई।

लेकिन हरिशंकर के भाग्य में कोई देर नहीं हुई थी, यह शीघ्र ही प्रमाणित हो गया। अपनी अन्तरात्मा पर पूरा विश्वास करके सुशीला ने उसके हिस्से की सब चीजें अलग निकाल कर रख ली थीं।

खीर, मिठाई और पकौड़ियों से भरपूर उदर-तुष्टि करके हरिशंकर ने डेढ़ गिलास पानी पिया और फिर डकार लेकर कहा—महाशय चन्द्रनाथ मैं आपको बधाई देता हूँ और आपकी श्रीमती जी और भाभी जी को धन्यवाद।

फिर मौज में दूसरी कुर्सी पर टाँगे फैलाते हुए हरिशंकर ने कहा—लखनऊ ज्यादा रोचक जगह है या इलाहाबाद, तुम्हारा क्या ख़याल है?

'मुझे तो लखनऊ के जीवन का कोई अनुभव नहीं, पर मेरा अनुमान है कि इलाहाबाद का वातावरण ज़्यादा बौद्धिक है।... प्रयाग विश्वविद्यालय भी ज्यादा अच्छा समझा जाता है।'

'यह तो है ही, लेकिन रोचक लखनऊ का शहर ही अधिक है। ज्यादा सुन्दर भी है, दूसरे वहाँ की नज़ाकत...'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नहीं; लखनऊ से आगे मैं नहीं गया हूँ। इस बार सोचता हूँ; किसी बहाने पहुँचूँ।...लखनऊ बड़ी शानदार जगह है। स्टेशन कितना बढ़िया है, और फिर चिड़ियाघर, अजायबघर, अमीनाबाद पार्क....'

'अमीनाबाद पार्क तो मैंने देखा है; प्रयाग का अलफ्रेड पार्क उससे कहीं सुन्दर है। अमीनाबाद पार्क में फूल पत्ते तो हैं ही नहीं।'

'लेकिन महाशय, उसकी सररउण्डिग्ज़ कैसी बढ़िया हैं; बाजार, सिनेमा, सब-कुछ उतने हिस्से में मौजूद है।'

'मैं कहूँगा कि यही उसकी ख़राबी है।'

'मुझे एक घटना याद आ रही है। जब मैं लखनऊ गया तो एक मित्र मुझे कवि 'प्रभात' के घर लिवा गए। लम्बे-लम्बे केश, हृष्ट-पुष्ट शरीर, नशे में झूमती-सी आँखें... मुझे इन कवियों का वेश बड़ा आकर्षक लगता है।'

चन्द्रनाथ—(हँसकर)—छायावादी कवि बड़े शृंगार-प्रिय हैं।

'उन्हें होना ही चाहिए; नहीं तो वे कवि कैसे !...खैर, मैंने उनसे कहा कि मैं आपका कविता-पाठ सुनने के लिए आया हूँ। बड़े प्रसन्न हुए। नौकर को बुलाकर कहा, 'अरे इन लोगों के लिए चाय-वाय लाओ।' मैंने मना किया, पर उन्होंने कहा—'नहीं, नहीं; यह कैसे होगा,' और फिर वे कविताएँ सुनाने लगे।

'खूब बढ़िया गाते हैं क्या ?'

'बहुत सुन्दर; मैं तो बहुत प्रभावित हुआ, यद्यपि कविताएँ पूरी-पूरी समझ नहीं सका। लेकिन हमारे दाद देने के ढंग से कोई नहीं कह सकता था कि पूरा समझ नहीं रहे हैं।...खैर, थोड़ी देर में एक उनके मित्र-कवि आ गए; प्रभात जी ठहाका मार हँसे और कहा—'वाह! अब जमेगा।...भाई रजनी, ये लोग मेरी कविताएँ सुनने आए हैं; बड़े सहृदय हैं !'

'रजनीकान्त जी थे क्या ?'

'हाँ, वही थे। अब क्या था, बैठक जमने लगी। रजनी बाबू ने एक गीत सुनाया, फिर प्रभात जी ने, फिर रजनी बाबू ने। बीच में मिठाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

और चाय आई, हमलोगों ने खूब उड़ाई। बेचारे कवि लोग ही घाटे में रहे।— हमलोगों को कठिनाई यह हो रही थी कि किसकी कविता की कितनी दाद दें—हम जानते थे कि प्रभात जी जल्द नाराज हो जाते हैं। खैर, किसी तरह निभाते रहे। अन्त में रजनी बाबू के एक गीत की हमने बहुत प्रशंसा की। प्रभात जी सिर हिलाते हुए सुनते रहे; कुछ देर चुप रहे, फिर उन्होंने एक बड़ी ओजस्विनी कविता सुनानी शुरू की। एक तो कविता ही ओजस्विनी थी, फिर प्रभात जी का घन-गंभीर घोष; सभा बँध गया। रजनी बाबू लगातार सिर हिला रहे थे—लगता था कि प्रभात जी से डरते हैं। पढ़ते-पढ़ते प्रभात बाबू एकाएक उठकर खड़े हो गए (और यहाँ हरिशंकर भी उठकर खड़ा हो गया!) और जब कविता समाप्त होने को आई तो उन्होंने रजनी बाबू के कन्धे पर यों हाथ मारते हुए (और यहाँ हरिशंकर का हाथ चन्द्रनाथ के कन्धे पर पहुँच गया!) कहा, "यह—पछाड़ दिया रजनी को!" और फिर मुझसे, "कहो बच्चू, कैसी रही?" मैंने बड़े उत्साह से कहा—बहुत सुन्दर, बल्कि Sublime (उदात्त) आप महाकवि हैं!

चन्द्रनाथ हँस रहा था। हरिशंकर ने उपसंहार-सा करते हुए कहा—और महाशय रजनीकान्त बड़े संकोच में मग्न हो रहे थे—उनका चेहरा फ़क़ पड़ गया था।

हरिशंकर अभी तक खड़ा था, इससे चन्द्रनाथ को आशंका होने लगी कि कहीं वह चल देने की बात न करने लगे। अतः उसने स्वयं प्रस्ताव किया—हरी, घूमने चलो न?

'ओफ!' हरिशंकर ने कष्ट से कहा,—'अगर घूमने ही चलना था तो कुछ कम क्यों नहीं खिलाया—अच्छा, नदी की ओर चलो तो चल सकता हूँ; आज पूर्णिमा खिलेगी।'

चन्द्रनाथ— चलो, मैं तो अक्सर उधर ही जाता हूँ।

दोनों चल दिए।

हरिशंकर अब गंभीर होने लगा था। बोला—अब क्या इरादा है, महाशय चन्द्रनाथ; एम० ए० तो पास कर लिया, और फ़र्स्ट डिवीजन में?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नौकरी की तलाश'—चन्द्रनाथ ने संक्षेप में कहा।

'सो तो ठीक है, पर यदि नौकरी तुरन्त न मिले तो ?'

'तब तो कुछ सोचा नहीं है। जल्दी नौकरी करना जरूरी है। भाई साहब बहुत दिनों से आशा लगाए हुए हैं।'

'उनको आशा लगानी ही चाहिए, उन्होंने तुम्हें बड़ी कोशिश से पढ़ाया है।'

'माँ की अन्तिम इच्छा थी कि मैं खूब पढ़ूँ और डिप्टी कलेक्टर बनूँ।'

यह कहकर वह जैसे कल्पना में माँ का चित्र बनाकर देखने की चेष्टा करने लगा।

हरिशंकर—तुम किसी प्रतियोगिता परीक्षा में क्यों नहीं बैठते, चन्द्रनाथ ? डिप्टी-कलेक्टर नहीं, तो कुछ और ही बन रहोगे।

चन्द्रनाथ—क्या मुझे सरकार की गुलामी करने को कहते हो ?

'क्यों, तुम कांग्रेसी तो हो नहीं।'

'हरी, देशभक्ति का ठेका कांग्रेसियों ने ही नहीं ले रखा है।'

'यह नहीं चल सकता महाशय; जो कांग्रेस के साथ नहीं है वे उसके दुश्मन हैं।'

'शायद तुम्हें यह नहीं मालूम है कि मैं कांग्रेस का मेम्बर भी बन गया हूँ; किन्तु यह कोई महत्त्व की बात नहीं है। वस्तुतः राजनीति मेरा क्षेत्र नहीं है।
'तुम्हारा क्षेत्र क्या है, सुनूँ ?'

'हरी, अपना क्षेत्र चुनने में मैंने विशेष विमर्श से काम लिया है, ऐसा दावा मैं नहीं करता। मेरी प्रकृति मुझे जिधर खींच ले गई उधर ही मैं चल पड़ा। पर साथ ही मैं उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में बराबर सोचता रहा हूँ। तुम मेरा मतलब समझ ही रहे हो, मेरा रुझान साहित्य की ओर है।'

'साहित्य !' हरिशंकर ने अवज्ञासूचक स्वर में कहा, 'इस समय देश को तुम्हारे साहित्य की आवश्यकता नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हरिशंकर के इस नए स्वर एवं आक्षेप-वाक्य ने जैसे चन्द्रनाथ को झकझोर दिया। उसने तेज एवं सचेत स्वर में कहा—'किसके साहित्य की आवश्यकता है देश को, तुम्हारे ?'

हरिशंकर—साहित्य तुम्हारी या मेरी चीज नहीं है, चन्द्रनाथ, साहित्य सार्वजनिक सम्पत्ति है। देश के सामने इस समय एक ही प्रश्न है, आजादी, साहित्य को भी उस आजादी की ही साधना करनी चाहिए।

'क्या तुम यह कहना चाहते हो कि देश को सत्-साहित्य की आवश्यकता नहीं है ?'

'देश को उन सब चीजों की आवश्यकता है जो उसकी आजादी का साधन बन सकें। साहित्य हमें वहीं तक अपेक्षित है जहाँ तक वह हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सहायता देता है।'

चन्द्रनाथ—मेरा विचार है कि जीवन की सब ऊँची चीजें एक-दूसरे का साध्य और साधन दोनों ही होती हैं। एक ओर जहाँ साहित्य आजादी का साधन हो सकता है वहाँ दूसरी ओर वह उसका और स्वयं अपना साध्य भी है।

हरिशंकर—"कला-कला के लिए" यही कहते हो न ? यदि रोटी पकाना रोटी के लिये हो सकता तो साहित्य भी अपने लिये हो सकता। मैं मानता हूँ, साहित्य देश और समाज के लिये है, अपने लिये नहीं।

चन्द्रनाथ—हरी, मेरे निकट देश, समाज और आजादी आकर्षक ध्वनियाँ मात्र नहीं हैं और कला भी एक सुन्दर शब्द मात्र नहीं है। मेरी धारणा में आजादी और प्रगति उस स्थिति का नाम है जब हमारे देशवासी न सिर्फ जीवन की जरूरतें पूरी कर सकेंगे बल्कि उनसे ऊपर उठकर उच्च प्रकृति के विकास में तत्पर हो सकेंगे। कला मेरी दृष्टि में इस विकास का ही प्रतीक है। ऐसी स्वतंत्रता एवं समृद्धि को जिसमें सत्य के अन्वेषण एवं सौन्दर्य की साधना के लिए कोई स्थान नहीं है, मैं व्यक्ति या समाज के जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं होने देना चाहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'इसका मतलब यह है कि हमें आजादी के युद्ध से विरत होकर सुन्दर-मधुर काव्य की रचना में प्रवृत्त हो जाना चाहिए'—हरिशंकर ने अवहेलना की हँसी हँसकर कहा।

चन्द्रनाथ—नहीं, इसका मतलब हर्गिज यह नहीं है। इसका मतलब यह है कि लड़ाई की कटुता में पड़कर भी हम यथाशक्ति अपने असली उद्देश्य को न भूलें और कोई ऐसा काम न करें जिससे उस उद्देश्य को हानि पहुँचे। ऐसा न हो कि हमारी आजादी के सिपाही जो उच्च मनुष्यता की प्राप्ति और प्रतिष्ठा के लिये लड़ रहे हैं, स्वयं पाशव वृत्तियों के शिकार हो जायँ और अपने व्यक्तित्वों को मात्र लड़ाई लड़ने का साधन बना डालें…मेरी बात स्पष्ट समझ में आ रही है न ?

हरिशंकर—साध्य और साधन का यह भयंकर प्रभेद शायद मेरी बुद्धि के बाहर है। यदि आजादी साध्य है तो सिपाहियों को उसका साधन बनाना ही पड़ेगा।

चन्द्रनाथ—आज के युद्ध में सम्पूर्ण जनता को भाग लेना पड़ता है—और आजादी के युद्ध में तो यह वाञ्छनीय ही है। ऐसी दशा में यदि युद्ध द्वारा सम्पूर्ण जनता का नैतिक पतन हो जाय, वह प्रेम एवं पवित्रता के आदर्शों में विश्वास खो बैठे और पाशव वृत्तियों को स्वभाव बना ले, तो उच्च मनुष्यता की प्रतिष्ठा के लिये जगह ही कहाँ रह जायगी ? मेरी समझ में कला का यह प्रमुख काम है कि वह सदैव, युद्ध और अपत्तिके समय में भी, जनता की सद्-वृत्तियों को जगाए रखे और पुकार-पुकार कर लोगों के कान में यह डालती रहे कि वे वस्तुतः न्याय और प्रेम के साम्राज्य की स्थापना के लिए लड़ रहे हैं, केवल अन्न-वस्त्र अथवा भोगैश्वर्य के लिए नहीं। इस दृष्टि से कला युद्ध जैसे कुत्सित व्यापार को भी नैतिकता के ऊँचे धरातल पर ले जानेवाली सिद्ध हो सकती है।

हरिशंकर—यदि युद्ध कुत्सित व्यापार है तो उसे आदर्श-रूप सिद्ध करने का प्रयत्न दम्भ ही कहा जायगा। क्या यह तुम्हारी आदर्शवादिता के विरुद्ध नहीं है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चन्द्रनाथ—कोई व्यापार कुत्सित है या नहीं, यह प्रायः उसकी प्रेरक भावना पर निर्भर करता है। साहित्य इन्हीं भावनाओं को शुद्ध करने का प्रयत्न है। यदि हम आजादी की लड़ाई शुद्ध भावना से लड़ें तो हमारे युद्ध को कुत्सित नहीं कहा जा सकता।

हरिशंकर—देखो महाशय, मैं साहित्य की उपयोगिता स्वीकार करता हूँ, पर इस ग़लत रूप में नहीं। मैं युद्ध को उसके प्रकृत रूप में ही लेता हूँ; भावना-शुद्धि मेरी दृष्टि में विशेष महत्व नहीं रखती। सीधे शब्दों में मैं मानता हूँ कि हमारी सब क्रियाएँ अस्तित्व-रक्षा के लिए, जीवन-संग्राम में विजयी होने के लिए हैं, सहित्य भी इसमें अपवाद नहीं है।

चन्द्रनाथ—क्या मैं पूछ सकता हूँ कि इस संग्राम में प्रतिपक्षी कौन-कौन हैं ?

हरिशंकर—मैं नहीं समझता कि किसी को एक गुलाम देश में पैदा होकर इस विषय में अनभिज्ञ होने का अधिकार है।

चन्द्रनाथ—मैं कुछ अधिक स्पष्टीकरण चाहता हूँ, क्योंकि यह मेरे जीवन और मृत्यु का सवाल है। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे दो लड़नेवाले राष्ट्रों के कलात्मक आदर्श भी क्या भिन्न-भिन्न होंगे ? यदि इंगलैंड और जर्मनी में युद्ध छिड़ जाय तो उन देशों के कलाकारों का क्या कर्त्तव्य होगा ?

हरिशंकर—अपने-अपने देशों का साथ देना, वहाँ की जनता में उत्साह और प्राण फूँकना और उनके साहस व पुरुषत्व को जगाए रखना। मुझे इस सम्बन्ध में तनिक भी दुविधा या सन्देह नहीं है। देश के कवियों और कलाकारों को देश के सिपाहियों के साथ होना चाहिए, उनके साथ जो देश की स्वतंत्रता या आन के लिये लड़ रहे हैं; मधुवन में बैठकर मन-बहलाव के लिये मीठे गीत गाने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है।

यह कहकर हरिशंकर चुप हो गया, जैसे उसने एक बड़ी विजय पा ली हो। वह जनता था कि चन्द्रनाथ ने प्रकृति एवं प्रेम-संबंधिनी बहुत-सी कविताएँ लिखी हैं, इसीलिए उसने मधुवन के मीठे गीतों की ओर अवज्ञापूर्ण संकेत किया।

RajGuru Math, Shivala; Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कला में आनन्द देने की शक्ति है, वह मनुष्य को आनन्द देने के लिए भी है, इसे चन्द्रनाथ मानता है। किन्तु इस समय वह हरिशंकर के सामने इसका उल्लेख नहीं कर सकता और उसके प्रच्छन्न आक्षेप का उत्तर भी नहीं दे सकता, यह अनुभव करके वह कुढ़ने लगा। क्या सत्य को इतना विकृत करके उपस्थित किया जा सकता है कि वह अवहेलनीय लगने लगे ? क्षण भर रुककर उसने कहा—'हरी, तुम इसे मानोगे कि सब लड़ाइयाँ समान रूप में न्याय्य नहीं होतीं, और कलाकार को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह युद्ध-विशेष का समर्थन या विरोध करे।

हरिशंकर—'कलाकार को राष्ट्र से अलग होकर नहीं सोचने दिया जा सकता, महाशय ! राष्ट्र जो निश्चय करे उसे पूरा करना ही नागरिकों का कर्त्तव्य है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अलग सोचने लगा तो फल यह होगा कि कोई भी राष्ट्र के लिए त्याग करने को तैयार न होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने को सुरक्षित रखना चाहेगा, और ऐसी हालत में उस चीज को कर्त्तव्य समझेगा जो उसे त्याग और कष्ट के मार्ग से बचानेवाली है।' कुछ रुककर उसने कहा—'वस्तुतः इस प्रकार स्वयं सोचने की स्वतन्त्रता वही माँगते हैं जो त्याग और कष्ट से बचना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसी स्वतंत्रता का कोई अर्थ ही नहीं है।'

चन्द्र०—मैं नहीं मानता कि राष्ट्र को कलाकार या किसी अन्य के व्यक्तित्व पर ऐसा एकाधिपत्य होना चाहिए। मेरा विश्वास है कि कर्त्तव्य तथा न्याय-अन्याय के सम्बन्ध में राष्ट्रों के कर्णधारों की अपेक्षा कलाकार की दृष्टि अधिक स्वच्छ और विश्वसनीय होती है। यदि विभिन्न राष्ट्र परस्पर लड़ते-झगड़ते समय कलाकार की सम्मति नहीं लेते तो उसे भी अधिकार है कि वह अपनी कला को राष्ट्र का समर्थन न करने दे। वास्तव में मैं मानता हूँ कि कला का काम लड़ाना नहीं है—उसका कार्य मनुष्यों को एकता की भावना से अनुप्राणित करना है। दुनियाँ में हजारों चीजें मनुष्यों को एक-दूसरे से लड़ानेवाली हैं; यदि कला भी यही करने लगी यो मानव-जाति रसातल को चली जायगी।

हरिशंकर—इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हारी कविता देश की आजादी की लड़ाई से तटस्थ रह सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हरिशंकर की तर्क-प्रणाली में कोई चीज खटकनेवाली है, यह चन्द्रनाथ महसूस कर रहा है; पर वह उस चीज को स्पष्ट लक्षित नहीं कर पाता। खीझ कर उसने कहा—'यदि तुम अनर्थ को ही अर्थ समझते हो तो मुझे कुछ नहीं कहना है। लड़ाई का अर्थ जो तुम लेते हो उस अर्थ में वह मुझे किसी भी प्रकार ग्राह्य नहीं। किन्तु मैं मानता हूँ कि आजादी का युद्ध एक पवित्र युद्ध है, और उसे उसी "स्पिरिट" में लड़ना भी चाहिए। उसका कला और जीवन के चरम लक्ष्य से कोई विरोध नहीं है। और हमारे नेताओं ने तो उसे सत्याग्रह नाम देकर उच्चादर्शों की पंक्ति में ही बिठा दिया है।

नदी का तट आ गया था और चन्द्रनाथ का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हो गया था। इस समय उसकी दृष्टि पूर्वी क्षितिज की ओर थी, जहाँ पूर्णिमा का चाँद अभी-अभी मुँह उठाकर झाँकने लगा था। उसका पीला प्रकाश धीरे-धीरे शुभ्र हो रहा था और उसका झिलमिल प्रतिबिम्ब नदी-तट की लहरों में हिंडोला झूल रहा था।

चन्द्रनाथ रुककर खड़ा हो गया। हरिशंकर बढ़कर आगे चला गया जैसे उसे किसी की कुछ भी अपेक्षा न हो।

बढ़ते हुए बालक को देखकर जैसे माँ प्रसन्न होती है वैसे ही अनुक्षण कान्ति में बढ़ते हुए चन्द्रमा से प्रकृति उल्लसित हो रही थीं। पल भर में चन्द्रनाथ का हृदय विवाद की प्रखर रूक्षता को भूलकर अनिर्वचनीय माधुर्य से भर गया। पूर्णिमा का चाँद सिर्फ देखने की नहीं, हृदय में भर रखने की चीज है। पृथ्वी और आकाश के बीच में ऐसी आह्लादमयी ज्योति और कहाँ है? चन्द्रनाथ ने अनेक अवसरों पर इस चाँद को घंटों एकटक होकर देखा है, और आज भी वह उस पर से अपनी दृष्टि हटा नहीं पा रहा है। बीच में वह कभी-कभी सोच लेता है—क्यों चन्द्रमा मानव-हृदय को इतना आकर्षक लगता है, क्यों हमें उसकी ओर बरबस आँखें उठानी पड़ती हैं? जगह जगह सौन्दर्य का मोहक जाल बिछाकर प्रकृति हमें क्यों भुलाने की चेष्टा में लगी रहती है और क्यों हम उसके भुलावे में आ जाते हैं? हमारी अन्तःप्रकृति की यह कैसी दुर्बलता है? चाँद का सौंदर्य कैसा चिर-नवीन है, कैसा अद्भुत? युग-युग से मनुष्य उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखकर सम्मोहित होते आए हैं और युगों तक वह इसी प्रकार उन्हें मोहता रहेगा।····मनुष्य अपनी बनाई हुई चीजों से कितनी जल्दी ऊब जाता है, कितनी जल्दी उसके फैशन बदलते हैं!

अपनी सौन्दर्यानुभूति के भार को जैसे हल्का करने के लिए उसने हरिशंकर को पुकारा। हरिशंकर रुककर खड़ा हो गया।

'देखो, चाँद कितना सुन्दर है'—चन्द्रनाथ ने बढ़ते हुए कहा।

'बहुत सुन्दर, कवियों के देखने लायक।'

चन्द्रनाथ ने ध्यान नहीं दिया। दोनों कुछ देर घूमते रहे।

'हरी, अब लौटना चाहिए, भोजन को देर हो जायगी,' चन्द्रनाथ ने जैसे अपना काम समाप्त करके कहा।

हरि०—मुझे तो भोजन करना नहीं है, शाम को काफ़ी खा चुका हूँ।

चन्द्र०—और मैं? मैं तो तुम्हारी तरह किसी का मेहमान नहीं था।

हरिशंकर—कवियों को भी भूख लगती है, आश्चर्य है!

चन्द्रनाथ—(हँसकर)—'हाँ भाई, भूख तो लगती है और नियम से लगती है, दिन में तीन-चार बार। इससे इनकार करने से कैसे काम चलेगा।' फिर कुछ रुककर उसने कहा—'मनुष्य को रोटी की भूख लगती है, यह अवश्य ही कष्टप्रद है, पर इससे अधिक कष्टप्रद यह है कि उसे दूसरी भूखें भी लगा करती हैं। यदि मनुष्य सिर्फ रोटी पाकर सन्तुष्ट हो सकता तो उसकी इतनी समस्याएँ न होतीं, और न उसे इतना कष्ट ही होता। तब शायद उसका जीवन पशुओं की भाँति निर्द्वन्द्व होता। पर कठिनाई यही है कि उसकी बुभुक्षा सर्वतोमुखी और उसकी समस्याएँ अनन्त हैं—मानो उसे विधाता ने सन्तुष्ट होने के लिए बनाया ही नहीं है।'

यह कहने के बाद उसकी दृष्टि बरबस फिर आकाश की ओर चली गई, मानो वह चन्द्रमा की कपूरी शुभ्र ज्योति को पी लेना चाहता हो, मानो वह उस स्वच्छ-धवल दृश्य को सदा के लिए हृदय पर अंकित कर लेना चाहता हो।

और फिर नदी के प्रवाह पर हसरतभरी नज़र डालता वह हरिशंकर के साथ लौटने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रास्ते भर दोनों ने कोई बात नहीं की। लगभग पौन घंटे तक तेज रफ्तार से चलकर वे दोनों अपनी यात्रा के आरंभ-बिन्दु पर पहुँच गए।

'हरी, खाना खाकर जाना,' चन्द्रनाथ ने कोमल स्वर में कहा।

हरिशंकर ने इनकार किया और वह नमस्कार करके आगे बढ़ा। चन्द्रनाथ ने भी घर के दरवाजे में कदम रखा।

सहसा हरिशंकर ने पीछे मुड़ आवाज़ देकर चन्द्रनाथ से कहा—मैंने "नव-भारती" में तुम्हारी कहानी पढ़ ली थी।

चन्द्रनाथ ने घूमकर देखा तो हरिशंकर तेजी से अपने घर की ओर जा रहा था।

●

: ४ :

हरिशंकर का अन्तिम वाक्य विस्मय, विनोद, क्षोभ और निराशा के रूप में काफी देर तक चन्द्रनाथ के मस्तिष्क में गूँजता रहा।

उस छोटे शहर में पढ़नेवालों की कमी न थी, परन्तु उच्च शिक्षाप्राप्त साहित्यिक कम थे। बदायूँ या वेदामऊ की पवित्र नगरी में साहित्य पर अधिकार से बोल सकनेवालों में हरिशंकर का स्थान अन्यतम था। कथा-साहित्य में तो उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी था ही नहीं। बदायूँ के लेखकों में सिर्फ हरिशंकर की ही कहानियाँ उच्च कोटि के पत्रों में छप चुकी थीं, इसे हरिशंकर और चन्द्रनाथ ही नहीं, बदायूँ के सारे साहित्य-रसिक जानते थे। बदायूँ में यदि कोई चन्द्रनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की कहानी की आलोचना का अधिकारी था तो हरिशंकर और उसकी ही प्रशंसा चन्द्रनाथ को सन्तोष दे सकती थी।

परन्तु हरिशंकर ने उसकी कहानी पर कोई मत प्रकट नहीं किया, एक विशेष ढंग से उसकी उपेक्षा की, यह साधारण-सी घटना चन्द्रनाथ का हृदय-मंथन करने लगी।

क्यों कलाकार को उपेक्षा खलती है? क्यों कोई भी व्यक्ति उपेक्षित नहीं रहना चाहता? हरेक मनुष्य जैसे मानवता के सम्मुख अपने अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करने को व्याकुल है।

हरिशंकर ने कहा था—'देश को तुम्हारे साहित्य की आवश्यकता नहीं है।' मानो देश को स्वयं उसकी जरूरत नहीं है, उसका अस्तित्व निरर्थक है। साहित्य का अर्थ है, विशेष प्रकार की अनुभूति; वह अनुभूति यदि उसे सार्थक लगती है और अभिव्यक्ति के लिये प्रेरित करती है तो वह क्या करे? कैसे वह अपनी प्रकृति को दबाकर रखे, कैसे उसमें अविश्वास करे? अपनी अनुभूति के बाहर, हृदय के मर्मस्पन्दन से अलग, यह जानने का उपाय भी क्या है कि मानवता के लिए क्या अर्थवान् है, और क्या नहीं? उसे लगता है कि साहित्य वही निरर्थक हो सकता है जो मिथ्या है, झूठा है; जिसका आधार अनुभव न होकर उसकी भ्रान्ति या कल्पना-मात्र है। स्वयं उसने कभी ऐसा साहित्य लिखने की चेष्टा नहीं की—उसने जो कुछ लिखा है वह उस समय जब एक विशेष प्रकार की हलचल, एक विशेष प्रकार का दाह, एक खास तरह का उन्माद, एक अनिर्वचनीय आवेग उसके प्राणों अस्थिर-आंदोलित कर देता है।

लड़कपन से ही उसे घूमने का शौक रहा है—हरी-हरी घास के बीच बल खाकर अज्ञात दूरी में बढ़ती हुई पगडंडियों पर, शस्य-श्यामल खेतों की मेड़ों पर, सड़क के किनारे दूर तक फैली वृक्ष-पांतों की छाया में। वसंत में जब हरी घास से ढकी वन-भूमि में राशि-राशि पीले-सफेद फूल अकस्मात् निकल कर चमकने लगते तो उसके नेत्र उन्हें चकित उल्लास से देखते नहीं अघाते; निर्जन एकान्त में घास पर झुकी नितान्त हरे वृक्षों की स्निग्ध-कोमल शाखाएँ उसे बरबस निकट खींच लेतीं और विषैले कीड़ों का भय रहने पर भी, वह उनके विषम कुञ्ज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गृह में कुछ देर खड़ा हुए बिना न रह पाता। वनभूमि के वातावरण की कोमल-मधुर गन्ध उसके अन्तर तक को सिक्त कर देती, घने वृक्षों में छिपे विभिन्न पक्षियों का विविध कलरव उसके मस्तिष्क में मधुर तान की भाँति गूँजता। चन्द्रनाथ को छोटी चिड़ियों का विशेष मोह था, और जब कभी कोई चिड़िया अकस्मात् उड़कर इधर से उधर जाती तो वह अवाक् विस्मय से उसे देखता रह जाता।

उसे शुरू से ही नदी का तट प्रिय रहा है, और उनसे अठखेलियाँ करती हुई सवेरे-साँझ के सूर्य की और शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की किरणें। उसने सैकड़ों वार सूर्योदय देखा है और सैकड़ों वार जल में नहाता हुआ सूर्य का प्रतिविम्ब। प्रत्येक वार ये दृश्य उसे नितान्त नए, अद्भुत और आकर्षक लगे हैं; प्रत्येक वार वे उसमें नया उल्लास-आवेश जगाते हैं। एक कार्तिक की पूर्णिमा में, जब वह गढ़मुक्तेश्वर का मेला देखने गया था, वह घंटों कुछ गुनगुनाता हुआ गंगा जी के किनारे-किनारे घूमता रहा, और अपर्याप्त प्रकाश में न जाने क्या-कुछ अटकलों से डायरी में नोट करता रहा।

बरसात में जब गहरे-काले वादल पूर्व से पश्चिम की ओर द्रुत गति से दौड़ते जाते तो वह अनन्त विस्मय और अपरिमित आत्मीयता के भाव से उन्हें ताकता खड़ा रहता। जैसे उन वादलों की गति और वेग का उसके भीतर की धड़कनों से कोई घनिष्ठ सम्बन्ध हो।

अनुभूति के ऐसे क्षणों में वह काफी देर तक विभोर-विमुग्ध रहता और फिर यकायक गुनगुनाने और लिखने लग जाता। तब उसे लगता मानो हृदय का संगीत बरबस आँसुओं और छन्दों के रूप में फूट पड़ना चाहता है। कभी-कभी लिखते-लिखते उसकी आँखों में सचमुच आँसू आ जाते।

कुछ वर्षों वाद, हृदय और रक्त में नए आवेगों का आलोड़न होने पर, वह सहसा प्रेम-काव्य लिखने लगा। इस प्रेम का विषय था अज्ञात प्रियतम और उसकी प्रेरक समर्पण एवं तादात्म्य की मोहक भावना। हरी कुंजों और नदी-तट पर बैठकर, या फिर उनकी कल्पना करके, लिखता हुआ वह अक्सर महसूस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रता मानो कोई विराट सत्ता उसे अपने अनन्त क्रोड़ में लिये उसे लज्जा और नन्द से विह्वल बना रही है। और उसे महसूस होता कि वह सचमुच किसी प्रेम-पाश में बँध गया।

इस अनुभूति के बीच, न जाने कैसे, धीरे-धीरे नारी की चेतना का जन्म आ; असीम-अनन्त-विषयक भक्ति-काव्य के बदले वह क्रमशः लौकिक प्रेम के त लिखने लगा। हरिशंकर ने अवज्ञापूर्ण स्वर में इन्हीं गीतों की ओर संकेत या था। इससे पहले के काव्य का उसे विशेष आभास न था।

भोजन करते समय चन्द्रनाथ सुस्त था, यह सुशीला न देख सकी। भोजन बाद वह कुछ देर छत पर घूमता रहा। आकाश, पृथ्वी और हवा में दूध-जैसी ज्ज्वल चाँदनी भर रही थी। पड़ोस के घर में खड़े पीपल के पत्ते कोमल न्ति से चमक रहे थे। चन्द्रनाथ की चित्तवृति उस शुभ्र वातावरण में डूब तिर ही थी। उसके लिए यह अनुभूति चिर-परिचित और चिर-नवीन थी। क्रमशः सकी चित्तवृत्ति उस रसाकुल स्थिति में पहुँच गई जिसमें अन्तर का भार वस अभिव्यक्ति में फूटने लगता है। वह कुछ गुनगुनाने लगा, और फिर कागज-सल लेकर कमरे के छज्जे पर कुर्सी डालकर बैठ गया। वह कविता लिखने उपक्रम कर रहा था।

दस-पन्द्रह मिनट बाद सुशीला आई। वह प्रसन्न थी; शायद कुछ गुनगुना रही थी। आते ही उसने कहा—आपको भाई साहब बुला रहे हैं, सुना।

यह "सुना" कहना आवश्यक था, क्योंकि उसके उलाहना देने पर चन्द्र-थ कई बार यह कह चुका था कि "माफ़ करना, मैंने सुना न था।"

उसने सुना और दृष्टि उठाकर सुशीला की ओर देखा। उस दृष्टि में वाकुल अन्यमनस्कता थी, याचना थी।

न जाने क्यों सृजन की कठोर क्रिया सदैव दूसरों की सहानुभूति और करुणा अपेक्षा रखती है। आसन्न-प्रसवा मा के और कलास्रष्टा के उदास नेत्र मानो कों से कहते हैं—यह कष्ट तुम्हारे ही लिये तो है, कैसे तुम इसे समवेदना न ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किन्तु सुशीला परिस्थिति को बिल्कुल ही न समझ सकी। उ
दुहराया—'जल्दी जाइए, भाई साहब बुला रहे हैं; ज़रूरी काम है।' और
कमरे की चीज़ों को व्यवस्थित करती हुई फिर फिर गुनगुनाने लगी।

चन्द्रनाथ क्षुब्ध हो गया और उठकर चल दिया।

बाबू शिवनाथ चन्द्रनाथ से आठ-नौ साल बड़े थे। पिता के मरने पर
की सरपरस्ती का बोझ उनके कन्धों पर पड़ा। चन्द्रनाथ माँ का दुलारा
शिवनाथ भी उससे काफ़ी स्नेह रखते। उनकी छोटी-सी कपड़े की दूकान
आय साधारण थी, पर वे इस बात का सदैव ध्यान रखते थे कि चन्द्रनाथ
अपने शिक्षा-काल में आर्थिक कष्ट न हो। बी० ए० तक चन्द्रनाथ श्री
कालेज में पढ़ा, उसके बाद प्रयाग चला गया। वहाँ खर्च अधिक पड़ता
फिर भी उसे अनेक ग़रीब छात्रों की तरह कभी ट्यूशन नहीं करनी पड़ी।

चन्द्रनाथ के पहुँचने पर शिवनाथ ने उसे प्रथम श्रेणी में पास होने
बधाई दी और फिर पूछा—'अब क्या करोगे? क्या आगे पढ़ने का इरादा

भाई की इस आश्वस्त वाणी ने उसे क्षण भर को स्तब्ध कर दि
इतनी थोड़ी आय से वे किस प्रकार घर का खर्च चलाते हैं और कैसे
पढ़ाई का भार उठा लेते हैं, यह वह कभी नहीं समझ पाया है। वे सदैव
बिना संकोच में डाले मासिक खर्च देते रहे हैं। विभोर हृदय से भाई की
बचाते हुए वह बोला—'अभी तो मैंने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचा

शिवनाथ—सोचना तो होगा ही। मेरे एक मित्र कह रहे थे कि अगले
तुम्हारे ही कालेज में एक जगह खाली होगी।

चन्द्रनाथ—संस्कृत डिपार्टमेन्ट में?

शिवनाथ—हाँ।

चन्द्रनाथ—तब तो मेरे लिये सबसे ठीक यही होगा कि मैं इस वर्ष
करूँ। प्रिंसिपल साहब तो मुझसे काफी प्रसन्न रहते थे। कालेज की ख्याति
अच्छी है।

शिवनाथ—ठीक, तब तुम रिसर्च ही करो।

इतने में रमेश आ गया और चन्द्रनाथ से खेलने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लौटकर जब वह कमरे में पहुँचा तो लगभग दस बज रहे थे। सुशीला ड़ी उत्सुकता से बैठी उसकी बाट जोह रही थी। किन्तु चन्द्रनाथ उससे बेना बात किए छज्जे पर चला गया। वहाँ उसकी कुर्सी ज्यों-की-त्यों पड़ी थी। बैठकर वह काव्य-वीणा के टूटे हुए तारों को जोड़ने की कोशिश करने लगा।

आरम्भ के पन्द्रह-बीस मिनट बेकार हो चुकने पर उसकी लेखनी यकायक वाहमयी हो उठी और उसकी कविता पूरी हो गई।

सुशीला प्रतीक्षा कर रही थी। जब ग्यारह के घंटे बजे तब उसने कोमल वर में पूछा—'दूध ले आऊँ ?' चन्द्रनाथ ने उत्तर दिया—'अभी नहीं।'

वह अपनी बनाई हुई कविता की बार-बार आवृत्ति कर रहा था और सन्न हो रहा था। साहित्य-सृष्टि के बाद कलाकार के जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जब वह अपनी कृति को मात्र एक रसज्ञ पाठक की तटस्थ दृष्टि से खता है। उस समय उसकी प्रशंसा या आनन्द-भवना आत्म-श्लाघा की नहीं, णग्राहिता की ही द्योतक होती है। चन्द्रनाथ के जी में आया कि सुशीला को लाकर कहे, 'देखो, कैसी सुन्दर कविता बन पड़ी है', किन्तु संकोच ने उसे क लिया। सुशीला उसकी कविता को नहीं समझ सकेगी, यह भी वह अच्छी रह जानता था।

सुशीला के अनुरोध की अवहेलना करके उसने दूध नहीं पिया, सुशीला ने नहीं पिया। कुछ देर बाद लालटेन धीमी करके वह आँख मीचकर गया।

पति-पत्नी में व्यवधान होने का यह पहला अवसर था।

संभवतः सुशीला की समझ में नहीं आ रहा था कि क्यों पतिदेव उससे राज हो गए हैं। कुछ देर तक वह किंकर्तव्यविमूढ़ भाव से अपनी खाट पर रही, फिर उसने बाँह छूकर चन्द्रनाथ को जगाने और उठाने की कोशिश। उसकी ओर से किसी प्रकार का उत्तर न मिलने पर वह यकायक कियाँ भरकर रोने लगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ अपने में लीन था। वह सोच रहा था कि सुशीला जैसी अल्प और अबोध लड़की के साथ, एक-दो दिन नहीं, जीवनभर वह कैसे रह सकेगा उसकी विशेषांकवाली कहानी सुशीला ने कितनी देर से पढ़ी और पढ़ उसकी प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं कहा। वह उसकी कला के प्रति इतनी उदासीन कैसे हो सकती है ? तो क्या वह प्रशंसा चाहता था ? उसके मस्तिष्क ने तीव्र प्रतिवाद किया। चन्द्रनाथ झूठो प्रशंसा का लोभ करनेवालों में न था। फिर सुशीला की प्रशंसा से तो कुछ आता-जाता न था। साहित्यज्ञ में अत्यन्त विदुषी पत्नी की प्रशंसा का भी कोई महत्त्व न होता, सुशीला अनजान थी, आलोचना का क, ख, ग भी नहीं जानती थी। फिर ऐसा नहीं कि उसे प्रशंसा न मिली हो, स्वयं "नवभारती" के सम्पादक ने उस कहानी पर टिप्पणी की थी।

तो फिर सुशीला से वह क्या चाहता था ?

सुशीला उससे प्रेम करती है, उसमें अनुरक्त है, यह चन्द्रनाथ जा है। फिर यह असन्तोष क्यों ?

सुशीला सुन्दर है, सरल है, सुशीला है; उसमें कोई दोष तो है ही फिर क्यों उसे उसके साहचर्य से परितृप्ति नहीं मिलती ? चन्द्रनाथ बड़ी स्पष्ट से यह प्रश्न अपने सामने रख रहा है, पर उसे उसका कहीं समाधान दीखता। उसका सिर भारी हो गया और उसने अपनी चिन्ताधारा को रोक विश्राम लेने की चेष्टा की।

उसी समय उसे लगा कि सुशीला रो रही है।

कौतूहल-भरी आर्द्रता से उसने अपना सिर उठाया। सुशीला अपनी पर बैठी, गोद में मुँह छिपाए, हलकी-हलकी सिसकियाँ भर रही थी।

उसके मुख से निकला, 'अरे !', और उसने हाथ बढ़ाकर सुशीला सिर उसकी गोद से उठाने की कोशिश की।

किन्तु सुशीला ने सिर नहीं उठने दिया, वह और भी ज़ोर से रोने सहानुभूति का प्रदर्शन दुःख घटाता ही नहीं, बढ़ा भी देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह रोना कैसा ? चन्द्रनाथ सोच रहा था। यह समझती है, जैसे इसका कोई दोष ही नहीं है, मैं ही निर्दय हूँ। कैसी विडम्बना है !

वह कुछ देर को उदासीन हो गया। सुशीला चुपी नहीं, रोती रही।

अन्त में उसे उठना पड़ा, अपने हृदय को कठोर होते हुए देखना उसके लिए कठिन था। उसने बलपूर्वक सुशीला की बाहें पकड़कर उसे अपनी शय्या में लिटा लिया। सुशीला पति के वक्षःस्थल में सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगी। चन्द्रनाथ ने उसके आँसू पोंछे और उसे धीरे-धीरे थपथपाया। पर वह कुछ बोला नहीं। वह सुशीला से यह नहीं कह सका—'तुम निर्दोष हो।'

किन्तु सुशीला का कोई अपराध था, यह मानने को उसकी बुद्धि तैयार नहीं हो रही थी; पर हृदय में असन्तोष था।

वह सुशीला से क्या चाहता था ?

●

: ५ :

चार-पाँच दिन बाद हरिशंकर ने आकर सुनाया—मैं बरेली जा रहा हूँ।

चन्द्रनाथ ने कहा—इतनी जल्दी ! अभी से जाकर क्या करोगे ?

चन्द्रनाथ को हरिशंकर से जैसा लगाव था उसे प्रेम कहना सही न होगा; उसे हरिशंकर के रोचक व्यक्तित्व का विशेष प्रकार का मोह था। हरिशंकर के जाने का प्रस्ताव उसे बुरा लगा। उस कम अध्ययन के शहर में हरिशंकर उसे बौद्धिक अकेलेपन से बचाता रहता था। यद्यपि शहर के कुछ उत्साही छात्रों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ने एक "वाद-परिषद्" खोल रखी थी, पर चन्द्रनाथ को उससे विशेष दिलचस्पी नहीं थी। हरिशंकर की विशेषता यह थी कि वह यदि एक ओर वाद-परिषद् के सब प्रकार के सदस्यों का मनोरञ्जन कर सकता था, तो दूसरी ओर चन्द्रनाथ जैसे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का भी। उसकी सर्वत्र माँग रहती थी। वह बदायूँ की साहित्यिक गोष्ठी का अनिर्वाचित नेता था।

हरिशंकर ने उत्तर दिया—मुझे युक्तप्रान्तीय छात्र-संघ के सिलसिले में काफी काम करना है। तुम जानते हो, मैं उसकी रुहेलखण्ड शाखा का मंत्री बना दिया गया हूँ।

चन्द्रनाथ ने उदासीन स्वर में कहा—'अच्छा'; फिर कुछ रुककर वह बोला—'तुम्हारे विना बदायूँ बहुत सूना लगेगा।'

हरिशंकर—क्यों, श्रीमती जी तो हैं।....हाँ, तुम अब इलाहाबाद ही जाओगे न ?

चन्द्रनाथ—हाँ, अभी तो यही इरादा है। भाई साहब रिसर्च के लिये राज़ी हो गए हैं। सुना है, हमारे कालेज के संस्कृत-विभाग में जगह होगी।

हरिशंकर—सुना तो है पर कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। वहाँ तुम्हें तो अच्छा "चान्स" होगा।

चन्द्रनाथ—आशा तो है।

हरिशंकर—अरे तुमने एक बात नहीं सुनी ?

चन्द्रनाथ—क्या ?

हरिशंकर—वाह, मुख्य बात तो मैं कहना भूल ही गया। महाशय अरुणकुमार डिप्टी-कलेक्टर हो गए।

चन्द्रनाथ—सच ?

हरिशंकर—बिलकुल सच, मुझे तो बड़ा अचरज हुआ। तब तो हर कोई डिप्टी कलेक्टर हो सकता है।

अरुणकुमार हरिशंकर का सहपाठी रह चुका था। वह श्रीप्रसाद कालेज के प्रिंसिपल श्री शान्तिरंजन देव का भतीजा था। उसे हाकी और घोड़े की सवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का विशेष शौक था। बी० ए० में वह पहले वर्ष में उत्तीर्ण नहीं हो सका था, इसलिए एम० ए० में जब उसे द्वितीय श्रेणी मिल गई, तब उसके सहपाठियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे भी अधिक आश्चर्य की बात उसकी प्रतियोगिता में सफलता थी। यह सब मन में रखते हुए चन्द्रनाथ ने कहा—हरी, तुम कोशिश क्यों नहीं करते ?

हरिशंकर—कौन, मैं ? ना भाई, मुझे गवर्नमेन्ट क्यों चुना जाने देगी। अरुण-कुमार का निर्वाचन भी असंभव होता, यदि उन्हें अपने चाचा साहब का बल न होता। हाँ, तुम्हारी दूसरी बात है, तुम कांग्रेस के कार्यकर्ता नहीं हो और पढ़ भी सकते हो।

चन्द्रनाथ चुप रहा।

हरिशंकर—छात्र-संघ के सिलसिले में मुझे कानपुर जाना होगा।

चन्द्रनाथ—कब ?

हरिशंकर—दशहरे की छुट्टियों में। मुमकिन है, प्रयाग भी आऊँ। तुम तो कानपुर जाओगे नहीं ?

चन्द्रनाथ—कानपुर में कौन-से दल का अधिवेशन होगा ?

हरिशंकर—हमारे गान्धीवादी दल का। वहाँ अधिवेशन करने का एक खास मतलब है।

चन्द्रनाथ ने यह पूछने की आवश्यकता नहीं समझी कि वह मतलब क्या है। उसी समय डाकिया एक पत्र लेकर आया। हरिशंकर ने लिफाफा उसके हाथ से लेकर चन्द्रनाथ को दे दिया। पत्र सुशीला के नाम था। बाएँ कोने पर महीन अक्षरों में लिखा था— "साधना, शिवपुरी।"

'यह साधना देवी कौन हैं ?' हरिशंकर ने पूछा।

चन्द्रनाथ—ठीक मालूम नहीं, शायद उनकी कोई सखी हैं।

हरिशंकर—पत्र खोलकर देखो, क्या लिखा है।

चन्द्रनाथ—पराया पत्र मैं कैसे खोल सकता हूँ, कहीं नाराज होने लगें तो ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हरिशंकर—तुम भी निरे यों ही हो चन्द्रनाथ; अरे कहीं बीबी भी पराई होती है!

चन्द्रनाथ—मैं किसी का पत्र नहीं पढ़ सकता जब तक वह मुझे ऐसा करने का अधिकार न दे। ऐसे ही व्यवहार की स्वयं भी आशा करता हूँ।

यह कह उसने पत्र सुशीला के पास भिजवा दिया।

थोड़ी देर बाद हरिशंकर चल दिया। चन्द्रनाथ कुछ दूर तक उसे पहुँचाने गया, और फिर उसकी क्रमशः लुप्त होती हुई मूर्ति को सूनी दृष्टि से देखता हुआ वापिस आ गया।

कमरे में लौटकर उसने देखा कि वह अकेला है।

मेज़ पर एक मासिक पत्र पड़ा था; चन्द्रनाथ ने उसे उठाकर पढ़ने की कोशिश की, पर उसका जी नहीं लगा। सामने अलमारी में कुछ किताबें लगी थीं। चन्द्रनाथ का दावा था कि वह अपने अभिमत लेखकों के साहचर्य में घंटों बिता सकता है, पर आज वे सब पुस्तकें वास्तविक अर्थ में निर्जीव प्रतीत हो रही थीं। उनमें उष्णता नहीं थी, आह्वान नहीं था, आकर्षण नहीं था। अत्यन्त ऊँचे विचारों से परिपूर्ण होने पर भी वे उसके जीवन को समझने में नितान्त असमर्थ थीं। उसके अपने सुख-दुख के बारे में उनकी कोई राय नहीं थी, उस संबंध में उनसे कोई बातचीत भी नहीं की जा सकती थी। उन पुस्तकों के लेखक उन आकर्षक पशु-पक्षियों के समान थे जो खेलते-कूदते और इशारे करते हुए, बहेलिये द्वारा पकड़े और निष्प्राण किए जाकर, अजायबघर की चहार दीवारी में सजाकर रख दिए जाते हैं।

अभी रोटी खाने में देर थी। आज हरिशंकर बहुत सवेरे आया और सवेरे ही चला गया। चन्द्रनाथ को चारों ओर सूना-सूना दीख रहा था। अनायास ही उसके पैर भीतर की ओर उठे और वह धीरे-धीरे जीना चढ़कर सुशीला के कमरे में पहुँच गया।

आज वह बाल नहीं बना रही थी—देर की उससे निबट चुकी थी। इस समय वह चन्द्रनाथ के पलँग पर बैठी तकिए के गिलाफ पर "सुन्दर स्वप्न" काढ़ रही थी। पास ही अभी का आया लिफाफा रखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पति को देखकर मुस्कुराती हुई वह स्वागत को उठी। चन्द्रनाथ ने उसे बीच ही में पकड़ लिया।

सुशीला को विशेप जोर से हृदय से लगाकर उसने महसूस किया कि वह अकेला नहीं है। विवाह करने के बाद भी कहीं कोई अकेला रहता है! पत्नी के चुम्बन, कम-से-कम कुछ देर के लिए जीवन की सारी नीरसता, कठोरता और सूनेपन को अनुभव-जगत् से निर्वासित कर देते हैं।

पलंग पर बैठकर चन्द्रनाथ ने सुशीला से पूछा—क्या कर रही थीं?

'आपके लिए तकिए के गिलाफ काढ़ रही हूँ, ले जाएँगे न?'

'ओह! तो उसके लिए इतनी मिहनत करने की क्या ज़रूरत है। तुम अपना समय व्यर्थ मत किया करो। तकियों के कढ़े हुए न रहने से भी काम चल सकता है।'

सुशीला का मुख मलिन हो गया।

'यह पत्र किसका है?' चन्द्रनाथ ने लिफाफा उठाते हुए पूछा।

'उसी लड़की का है जिसने आपको सेब और शन्तरे खिलाये थे,' सुशीला उत्साहित होकर बोली, 'जिसने आपसे कहा था "खाना भी नहीं जानते"।'

'मैं इसे पढ़ सकता हूँ?'

'पढ़ लीजिए'—सुशीला ने ऐसे स्वर में कहा मानो चन्द्रनाथ ने पूछकर उसे कृतज्ञ बना दिया हो।

सहसा जीने में से ऊपर चढ़ते हुए रमेश की आवाज़ आई—"चाचा, रोटी खाने आओ।" सरला ने उस आवाज़ को दुहराया।

दोनों बालक अभी-अभी पास के मकान में से खेलकर आए थे।

चन्द्रनाथ लिफाफा लिए हुए नीचे उतर आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

: ६ :

रसोईघर में पहुँच कर चन्द्रनाथ ने पाया कि उसकी थाली परोसी हुई रखी है। वह तुरंत खाने को बैठ गया। रमेश और सरला भी उसके पास ही खाने के लिए डट गए।

जब तक चन्द्रनाथ घर पर रहता, रमेश यथासंभव उसके साथ ही बैठकर खाता। प्रायः रमेश और सरला अलग-अलग थालियों या तश्तरियों में खाते। रमेश नियमपूर्वक चन्द्रनाथ की थाली में से दाल, भाजी और रोटी लेकर खाता। चन्द्रनाथ की भाँति ही उसे चम्मच की आवश्यकता पड़ती, वह टमाटर भी कच्चे खाने लगा था।

चन्द्रनाथ कभी-कभी अपनी रोटी में से रमेश को हिस्सा देना भूल जाता, तब रमेश कहता—रोटी नहीं देते, अपने आप खाते चले जा रहे हो।

आज चन्द्रनाथ ने कई वार यह भूल की, यह रमेश और भाभी दोनों ने देखा। भाभी ने रमेश को सम्बोधन करके कहा—कैसा शैतान है रे, चाचा को खाने भी नहीं देता। ले मुझसे रोटी ले-ले।

लेकिन रमेश इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अम्मा से रोटी लेकर चाचा की भूल का प्रायश्चित्त वह क्यों करे?

जेठ की निस्तब्ध दोपहरी में चन्द्रनाथ फिर अकेला रह गया।

रोटी खाने के बाद कुछ देर के लिए रमेश और कभी-कभी सरला चन्द्रनाथ के बैठक-कमरे में आकर खेलते, और फिर माँ के निवट जाने पर भीतर चले जाते, तथा दोपहरी भर वहीं रहते। चन्द्रनाथ प्रायः उन्हें अपने अध्ययन-रूम में आने को प्रोत्साहित नहीं करता, उसे उनसे घर के भीतर या ऊपर छत पर ही मिलना पसंद था। बच्चों को बैठक में निमंत्रित करने का अर्थ कुछ भी काम कर सकने की आशा त्याग देना है, यह वह अनुभव से जान चुका था। इसीलिए दोपहरी में नितान्त अकेला महसूस करने पर भी वह उन्हें बुलाने से डरता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके लिखने-पढ़ने का कोई समय निश्चित न था, इसलिए उसे अपना एकांत बनाए रखने के लिए और भी सतर्क रहना पड़ता। आज वह चाहता था कि बच्चे आकर उसके एकान्त में विघ्न डाल दें, पर वे अकारण ही अपना नित्य नियम तोड़ेंगे, इसकी कोई संभावना न थी।

वह चाहता तो सुशीला के कमरे में जा सकता था। वहाँ जाने के लिये एक अलग जीना था जो उसकी बैठक से दूर न था। जीने के सामने आँगन पार करके रसोईघर था और उसकी ओर वह कमरा था जिसमें इस समय बच्चों सहित भाभी थीं। लू के डर से सब तरफ के दरवाजे बन्द होने के कारण भाभी उसे ऊपर जाते हुए देख लेंगी, इसकी सम्भावना कम थी। किन्तु उसकी ऊपर जाने प्रवृत्ति नहीं हुई। उसे दो घंटे पहले की सुशीला की दैन्यभरी बातें याद थीं। सुशीला में जैसे स्वतंत्र व्यक्तित्व है ही नहीं, जो उसके अकेलेपन को दूर कर सके। वह मानो मात्र सद्भावनाओं और सहज द्रवित स्नेह की पिटारी है जो अवसर होने पर आप्लुत कर सकती है, पर जो जीवन-पथ में उसके साथ चल नहीं सकती। उसका निर्भर स्पर्श क्लोरोफार्म की भाँति क्षण भर चेतना को आत्म-विस्मृत रख सकता है, पर उसे सहानुभूति के रस से सींचकर पुष्ट और गतिशील नहीं बना सकता।

चन्द्रनाथ के कमरे में एक ओर खाट बिछी पड़ी रहती है और उससे कुछ हटकर एक मेज और दो कुर्सियाँ। खाट के पास दो पुरानी अलमारियाँ हैं जिनमें किताबें भरी हैं। खाने के बाद कुछ देर वह केवल लेटा रहता है। फिर कोई पुस्तक उठाकर पढ़ने लगता है और आजकल गर्मियों में, पढ़ते-पढ़ते ही सो जाता है। प्रायः दो घंटे सो चुकने के बाद वह फिर कुछ पढ़ने की चेष्टा करता है अथवा कुछ लिखने में प्रवृत्त हो जाता है।

आज भी उसने इस नित्य क्रम की आवृत्ति करनी चाही; पर यत्न करने पर भी उसे नींद न आई। पढ़ने में भी मन नहीं लग रहा था, और उसने अनुभव किया कि उसे कुछ लिखना भी नहीं है। हारकर वह उठ खड़ा हुआ तथा एक ओर से कुर्सियाँ हटाकर टहलने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सहसा उसकी दृष्टि मेज़ पर रखे हुए लिफाफे पर पड़ी। सुशीला के पास होने की झिझक मिटाने के लिए वह पत्र को बिना पढ़े जल्दी से नीचे उतर आया था, मानो सुशीला कोई बन्धन ही न थी और वह उसके पास अछूता खड़ा था। इतनी देर तक उसे इस पत्र की याद क्यों नहीं आई, यह सोचकर उसे आश्चर्य हुआ।

पत्र उठाते ही उसका ध्यान अक्षरों की बनावट पर गया; पंक्तियों के सीधे क्रम ने भी उसे आकर्षित किया। उसका अपना लेख किसी प्रकार भी सुन्दर नहीं कहा जा सकता था, न वह पंक्तियाँ ही सीधी रख पाता था। सुशीला का लेख उसकी तुलना में कहीं अधिक सुन्दर था। और इस पत्र की लिखावट भी उसे नितान्त आकर्षक लग रही थी। पत्र के अक्षर मानो मोतियों की भाँति चमक रहे थे। सुन्दर लिखने का ठेका क्या इन्हीं लोगों ने ले लिया है ? ये शिवपुरी की लड़कियाँ कहाँ लिखना सीखती हैं ? कैसे वे इस तरह सुडौल, गोलाकार अक्षर बना लेती हैं ? वह पत्र पढ़ने लगा।

सुशीला को पत्र लिखने की आदत नहीं है, यह बात वह पिछले चार-छह महीनों के अनुभव से जान चुका था। पत्र-लेखिका ने इसी को लेकर चन्द्रनाथ और सुशीला के स्नेह को इसके लिए दोषी ठहराया था। सुशीला ने एक बार पुष्पलता पर जो अभियोग लगाया था, उसकी पात्र क्या वह स्वयं नहीं बन गई थी ? इसके आगे लिखा था—"जीजा जी ने ऐसी कौन सी मोहिनी डाल दी है जो तुम यहाँ-वालों को एकदम भूल गई हो ? चाची जी भी पत्र न पाने की शिकायत करती थीं.........अच्छा जीजी, तनिक बताओ 'वह' तुमसे क्या बातें करते हैं ? देखो कोई बात छिपाना नहीं, सच-सच लिख देना, मेरी अच्छी जीजी।" चन्द्रनाथ की विनोदवृत्ति उत्कलित होने लगी। क्यों इस लड़की को उसके और सुशीला के प्रेम-बन्धन के बारे में उत्सुकता होती है ? क्यों हम इतिहास और उपन्यास के पात्रों के जीवन और भावनाओं में रुचि लेते हैं ? मानो प्रत्येक मनुष्य सारे दूसरे मनुष्यों के जीवन में घुस जाना चाहते हो, उस जीवन को जी लेना चाहता हो ! और यह लड़की सुशीला को कितनी भोली समझती है !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब उसने पत्र की पीठ पर दृष्टि डाली। वहाँ उसे कुछ खास अपने सम्बन्ध से लिखा दीख पड़ा। वह जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा। 'मैंने "नवभारती" में जीजा जी की एक कहानी पढ़ी, इससे पहले मैं नहीं जानती थी कि वे कहानियाँ भी लिखते हैं। कविताएँ तो पत्र-पत्रिकाओं में पहले भी पढ़ी थीं। मुझे उनकी रचनाएँ बड़ी अच्छी लगती हैं। विशेषत: उनकी कविताएँ—उनमें न जाने क्यों इतनी वेदना रहती है। क्यों जीजी, क्या वे बहुत उदास रहते हैं? और क्या हमेशा सोचते रहते हैं? जीजी, उनकी एक कविता, व्यथागीत, पढ़कर तो मैं बहुत विचलित हो उठी थी; कुछ डर भी गई थी कि इनका कैसा हृदय है।......माता जी तुम्हें आशीर्वाद लिखवाती हैं। चाचा जी, चाची जी, प्रमोद और कमला सब अच्छे हैं।" फिर 'पुनश्च' के पश्चात् लिखा था—"जीजा जी तो मुझे भूल गए होंगे। जीजी, उन्हें पत्र लिखूँ तो उत्तर देंगे? मुझे अपने कोर्स की बड़ी चिन्ता है। मास्टर साहब अंग्रेजी ठीक नहीं पढ़ा पाते और पंडित जी से संस्कृत का पत्र यों ही चलता है।"

नीचे सुन्दर भँवरदार अक्षरों में हस्ताक्षर था, जिसके नीचे लकीर खींची गई थी। चन्द्रनाथ को किसी ने बतलाया था कि इस प्रकार नाम को रेखांकित करना अहंकार का द्योतक है। कुछ देर तक वह उसे देखता रहा, फ़िर उसने पत्र लिफ़ाफ़े में रख दिया। चन्द्रनाथ को इस लड़की की कुछ धुंधली-सी याद है। विवाह के अवसर पर वह उसे खिलाने के लिए शायद स्वयं थाल लाई थी। बाद में उसके पास कुछ सेब और शंतरे भी आ गए थे। वह छील-छील कर उसे शंतरे की फाँकें दे रही थी और चन्द्रनाथ बड़े निश्चिन्त भाव से खा रहा था, मानो इस प्रकार काम लेना उसका जन्म-सिद्ध अधिकार हो! कुछ देर बाद कृत्रिम खीझ या झुँझलाहट से साधना ने कहा था—'कुछ काम खुद भी तो कीजिए, अब मैं नहीं छीलती।' और इस पर उसे अधछिली फाँकें मुँह में ठूँसते देख वह कह उठी थी—'जीजा जी, आप खाना भी नहीं जानते।' इतनी बातों की उसे याद है, सुशीला भी इस याद को कभी-कभी ताजा बना देती है। कैसी साहसी है उसकी सखी जिसने चन्द्रनाथ को डांट दिया था! उस सखी से सुशीला का विशेष स्नेह है, यह भी वह जानता है। पर उस स्नेहमय उपालंभ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कर्त्री का चेहरा-मोहरा कैसा है, यह वह यत्न करने पर भी याद नहीं कर रहा था।

बैठक के एक दर्वाजे से जो हवा के लिए थोड़ा खुला था अब दक्खिन-पच्छिम की ओर गतिमान सूर्य की किरणें प्रवेश करने लगी थीं। चन्द्रनाथ ने उसे बन्द कर दिया। फिर वह पत्र को अपनी कमीज की जेब में रखकर खाट पर लेट गया।

किन्तु उसे नींद न आई। रह-रहकर उसे अभी पढ़े हुए पत्र का ध्यान होने लगा। पत्र उसकी जेब में है इसका उसे अच्छी तरह आभास था। धीरे-धीरे गर्मी तथा एकान्त दोनों के संवेदनों से दूर हटकर उसका ध्यान उसी में लीन हो गया।

उसे लगा जैसे वह पत्र किसी अस्पष्ट सुदूर से कोई मीठा-सा सन्देश लाया है और उसकी दुनिया मानो कुछ क्षण के लिए किसी अज्ञात दिशा में विस्तृत हो गई। वह बार-बार पत्र के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्ध की मानसिक पर्यालोचना करने लगा। इस पर्यालोचना से कभी उसके चेहरे पर मन्द मुस्कान झलक जाती, कभी वह गम्भीर हो जाता। यकायक मानो कुछ सोचकर उसने पत्र फिर निकाला और फिर पढ़ डाला और फिर गम्भीर मुद्रा से उसे मोड़कर रख लिया।

सहसा उसे कुछ और ध्यान हुआ। उसने अपनी कविताओं की एक कापी निकाली। इस कापी में उसने कुछ चुनी हुई कविताएँ नकल कर रखी हैं, और कतिपय पत्र-पत्रिकाओं में छपी हुई रचनाएँ ज्यों-की-त्यों फाड़कर चिपका ली हैं। उसकी 'व्यथा गीत' कविता इसी कापी में है। एक विचित्र झिझक से जो इस भाव की द्योतक थी मानो वह कोई दुःसाहस करने जा रहा हो, उसने उस कविता का पृष्ठ निकाल लिया और फिर क्षणिक विलम्ब के बाद उसे कठोर मनोयोग से पढ़ने लगा।

पहली बार पढ़ने से मानो संतोष नहीं हुआ, इसीलिए वह फिर दृढ़ संकल्प से कविता की आवृत्ति करने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस वार उसका स्वर कुछ अधिक तेज हो उठा था, उसका शरीर कांप रहा था, और उसके आरक्त चेहरे और उत्तेजित आँखों से मानो ठंडी चिनगारियाँ निकल रही थीं। कविता का आशय इस प्रकार था :—

व्यथा-गीत

मैं मनुष्य हूँ, भूमंडल का एक क्षुद्रकाय प्राणी, व्यथा की कहानी सब सुनें।

विश्व के अशेष प्राणधारी, पशु, पक्षी और जलचर ; दिशाओं के अधिष्ठाता और आकाश के देवता; मेरी व्यथा की कहानी आप सुनें।

ग्रह-उपग्रहों की किरण-लिपि में मेरी कथा संपूर्ण अन्तरिक्ष पर अंकित हो जाय, प्रभंजन के तेज झोंके मेरी ध्वनियों को सर्वत्र फैला दें; ब्रह्माण्ड के सारे पर्वत और समुद्र मेरे मर्म-चीत्कार से गूँजने लगें। मेरी व्यथा की कहानी आप सुनें।

युग-युग से जिस ज्वाला को मैं अपने भीतर छिपाए रहा हूँ, सदियों से जो, फूट-उमड़ने के लिये मेरे रक्त को तप्त और आलोड़ित करती रही है, उसकी विस्फोटक शिखाएँ आज आप के संचरण-पथ में भी स्फुलिंग फेंकें। मेरी करुण क्लिष्ट गाथा आप सुनें।

मैं पशु हूँ, पर देवताओं का स्थान चाहता हूँ; मैं क्षुद्र हूँ, किन्तु अनन्तता का लोभ करता हूँ; अकिञ्चन और दीन होते हुए भी मैं विश्व के सम्पूर्ण वैभव पर अरमान और आकाङ्क्षाभरी दृष्टि डालता हूँ।

मेरी आँखें दुर्बल हैं, पर मैं चौदहों भुवनों का सौन्दर्य देखने को विकल हूँ; मैं विश्व के अशेष संगीत को अपने तुच्छ कर्ण-छिद्रों में भर लेना चाहता हूँ। मेरी स्पर्शेन्द्रियाँ संसृति के अणु-अणु का आलिंगन करने को उत्कंठित रहती हैं।

मैंने पृथ्वी के कोने-कोने को खोज निकाला है; ग्रहों की गतिविधि से भी मैं अनभिज्ञ नहीं हूँ। मैं अतीत के प्रत्येक क्षण का कल्पना द्वारा प्रत्यक्ष कर लेना चाहता हूँ, और भविष्य की विस्तृत घाटी में मेरे स्वप्न अबाध दौड़ते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जीवन के उपहास्य आयाम और नगण्य दैर्घ्य से खिन्न हुआ मैं देश-काल उसका निरन्तर प्रसार किया करता हूँ।

मेरी वासनाओं का अन्त नहीं है, मेरी आकाङ्क्षाएँ अपरिमित हैं; मु कभी किसी प्राप्ति से सन्तोष नहीं होता।

मैं स्वार्थी हूँ, पर सर्वस्व-त्याग की कल्पना जगाया करता हूँ; ईर्ष्यालु हूँ किन्तु विश्व को सुखी बनाने के उपाय सोचता हूँ; घृणा और कपट से भरा हुअ मैं संसार में प्रेम-साम्राज्य की स्थापना के स्वप्न देखता हूँ।

मैं शान्ति का इच्छुक हूँ, पर युद्ध से विरत नहीं हो सकता; मैं दुखियों प सदय हूँ, पर उनके शोषण से बाज़ नहीं आ सकता; मैं समता, स्वतंत्रता औ भ्रातृभाव का हामी हूँ, पर अपनी उच्चता का दावा नहीं छोड़ सकता।

मैं घमंडी हूँ, क्षुद्र हूँ, अधम हूँ, फिर भी मैं अपनी श्रेष्ठता, सदाशय और न्याय-प्रियता में अविश्वास की संभावना से डर जाता हूँ।

मैं निकम्मा और रोग-ग्रस्त हूँ, तरह-तरह के दर्द से कराहा करता हूँ फिर भी अमरत्व की अरुण लालसा मेरे भीतर निरन्तर प्रज्वलित रहती है।

मैं विरोध-ग्रस्त हूँ, विरुद्धों का संगमस्थल, मेरे व्यक्तित्व के तत्त्व स विपरीत दिशाओं में दौड़ते हैं। मेरी भाव-भूमि सैकड़ों, हजारों द्वन्द्व-विका की उत्पीड़ित क्रीड़ास्थली है।

युग-युग के संघर्ष से मैं थक गया हूँ; विरोधी शक्तियों की चोट से मैं घाय हो गया हूँ। मेरी सोचने और उद्योग करने की सामर्थ्य शिथिल हो रही और मैं असहाय भाव से अन्तिम घड़ी की प्रतीक्षा-सी कर रहा हूँ।

मेरे दर्द को कौन समझेगा, मेरी व्यथा से किसे सहानुभूति होगी; कौन मे थकी हुई बुद्धि और आँखों को रास्ता दिखलाएगा?

मैं दुर्वल हूँ, मुझे शक्ति चाहिए; मैं अँधेरे में हूँ, मुझे प्रकाश चाहि मेरी श्रान्त-क्लान्त काया को आज किसी की सहानुभूति का अमृत-लेप चाहिए

मुझमें आज गर्व नहीं है, अहंकार नहीं है; मैं आप ही अपने पर करुण-दृ डाल रहा हूँ। मैं आज आशा-काङ्क्षा से विरत हूँ। घोर अविश्वास के ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में गिरा हुआ आज मैं पूछ रहा हूँ—विश्व में कहीं कोई मेरा है, कोई मेरी सहायता करेगा ?

× × ×

कविता की आवृत्ति ने उसे श्रान्त कर दिया और वह कापी बन्द कर के लेट गया। मानवता के जिस चिरन्तन द्वन्द्व का उक्त गीत में उल्लेख हुआ है उससे क्या वह कभी मुक्त हो सकेगा ? क्या कभी उसे शान्ति या समन्वय मिल सकेगा ? अथवा उसका अन्त करने के लिए उसे एक छोर की ओर झुक जाना पड़ेगा ? संसार के विचारक तो कुछ ऐसी ही सलाह देते रहे हैं—आश्चर्य है कि उनमें से कोई भी मानव-स्वभाव को उसकी संपूर्णता में स्वीकार नहीं कर सका है। उनमें कुछ ने उसके पशुत्व से घृणा की है, तो कुछ ने उसके देवत्व के स्वप्नों का उपहास; किसी ने अब तक यह नहीं बतलाया कि किस प्रकार इन दोनों के सन्तुलन से समंजस मानवता का निर्माण किया जाय। क्या ऐसा निर्माण असम्भव है ? यदि नहीं तो स्वयं उस निर्माण का उद्देश्य, उसका लक्ष्य या प्रयोजन क्या होगा ?

अपने अन्तिम प्रश्न पर वह हँसने लगा। मनुष्य की यह कैसी प्रवृत्ति है कि वह हर घटना का प्रयोजन खोजता है, और हर व्यापार का लक्ष्य स्थिर करके चलना चाहता है ! किन्तु क्या उसकी इस प्रवृत्ति का, उसकी इस दुर्वलता का शेष सृष्टि के स्वभाव या नियमों से कोई सम्बन्ध नहीं है ?

दार्शनिक प्रश्न एक बार उठकर मानो बैठना जानते ही नहीं, और उसका समाधान तो असंभव ही है, यह सोचकर वह बरबस अपना ध्यान दूसरी ओर मोड़ने लगा।

वह पत्र अभी उसकी जेब में ही है। साधना नाम कितना सरल है, जैसे सादगी का ही पर्याय हो, पर उसकी वाच्य वस्तु कितनी ज़टिल है, कितनी चपल ! उसने सुशीला से कैसे गूढ़ और निजी प्रश्न किए हैं, मानों उसमें और सुशीला में कोई भेदभाव, कोई अन्तर ही नहीं है ! दो व्यक्तियों का यह अन्तरंग भाव कैसा आकर्षक है ! और फिर वह पूछने लगा—क्यों उसने ऐसे प्रश्न किए हैं और क्यों वह उनका उत्तर चाहती है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अपनी कविताओं से स्वयं वही नहीं, कुछ दूसरे पाठक भी विचलित होते हैं, यह जानकर उसे विचित्र सन्तोष हुआ। फिर वह धीरे-धीरे, हृदय में एक मीठी गुदगुदी लिए, सो गया।

: ७ :

पूरे ढाई घण्टे बाद जब उसकी आँख खुली तब वह सहसा निश्चय नहीं कर सका कि वह कहाँ है। उसका सिर कुछ भारी हो रहा था और उसकी आँखें मानों अभी तक स्वप्न देख रही थीं।

इतने में बाहर गली में से आवाज—आई—"मलाई का बरफ"। बर्फ-वाला शब्द-प्रसारण की क्रिया में कुशल था और इन तीन शब्दों को क्षणों की लम्बाई में यथाशक्ति फैलाकर उच्चरित कर रहा था। उसके स्वर में प्रलोभन था, संगीत था, आह्वान था।

आँगन के भीतरी कोने से सरला ने वह आवाज सुनी और सुनते ही माँ से पैसे माँगे। वे पैसे ढूंढ़ने लगीं, तथा सरला बड़े अधैर्य से, बर्फवाले को पुकारती हुई इन्तजार करने लगी। दो-तीन मिनट तक जब माँ को पैसे नहीं मिले और सरला अधीर होने लगी तो माँ ने कहा—जाकर पहले बर्फवाले को रोक।

तीर की गति से, आँगन के सारे विघ्नों को लाँघती हुई, सरला चली। उसकी दृष्टि बैठक की ओर जाते हुए पथ पर थी, उसके कान बाहर की ओर लगे थे, और उसकी जिह्वा पर बर्फवाले की रट थी। अर्ध-विस्मृत अवस्था में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठे हुए चन्द्रनाथ ने सरला की वह प्रधावित मूर्त्ति देखी। अपनी अभिलाषा में तन्मय, लक्ष्य की ओर निश्चय और वेग से बढ़ती हुई बच्ची का वह रूप उसे बहुत रोचक लगा। बैठक के पास आते-आते सरला के स्वर की अधीरता और आकुलता कातरता में परिवर्तित होने लगी। अभी दरवाजे तक पहुँचने में देर थी; बर्फवाले का स्वर स्पष्ट न सुन सकने के कारण सरला का अर्ध-निराश कण्ठ-रव धीमा पड़ने लगा था, फिर भी वह अनवरत आवाज़ लगा रही थी। उसने निमेष भर के लिये चन्द्रनाथ पर दृष्टि डाली—उस दृष्टि में हलकी-सी याचना थी, अथवा सहानुभूति की आशा। फिर जैसे चन्द्रनाथ की तत्परता में अविश्वास-सा दिखलाती हुई वह स्वयं दर्वाजे के बाहर पहुँच गई।

परंतु बर्फ़वाला चला गया था, वह सरला की दृष्टि और कर्ण-पथ दोनों से ओझल हो चुका था। आशा के साथ ही सरला के धैर्य का बाँध टूट गया और वह ऊँचे स्वर में रो उठी।

उसके रुदन-स्वर ने चन्द्रनाथ की चेतना को मानो झकझोर कर जगा दिया। अब उसे मालूम हुआ कि सरला के व्यक्तित्व का यह गंभीर आलोड़न सिर्फ मनोविज्ञान के तृप्त निरीक्षण के लिए नहीं था; उसका एक उद्देश्य था, जो अब विफल हो चुका था। सरला को सिर्फ बर्फ ही खाने को नहीं मिला, सो नहीं; बर्फवाले को न पा सकने की घटना ने उनकी सारी सतर्कता और उद्योग को मानो अर्थहीन सिद्ध कर दिया था। निष्ठुर संसार में जैसे सरला की आकांक्षा और प्रयत्न का कोई मूल्य ही न था। जिस परिस्थिति ने सरला की संपूर्ण सत्ता को आन्दोलित कर दिया था, उसका नगण्य या उपेक्षणीय समझा जाना सरला के लिये घोर परिताप की बात थी। बालकों के दुःख और उसके हेतु की अपेक्षा लोग उनके रोने को ज्यादा महत्त्व देते हैं, शायद यह महसूस करती हुई ही वह यकायक रो पड़ी।

सरला के इस अभूतपूर्व संकट का काफी उत्तरदायित्व मुझ पर है, यह सोचकर अपने को धिक्कारता हुआ चन्द्रनाथ उठ बैठा और तेजी से उसे गोद में भर कर चुपाने का प्रयत्न करने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सरला के मचलने और धूल में लोटने के स्वभाव के कारण चन्द्रनाथ उसे कम गोद में लेता था। आज उससे अचानक आदर पाकर, बर्फ ला देने की प्रतिज्ञा के संकेत पर, उसकी गोद में चढ़ने को उत्सुक रहनेवाली सरला शीघ्र ही चुप हो गई।

चुप हो जाने पर भी वह काफी देर तक सुबकती रही। बाद के जीवन में चन्द्रनाथ इस घटना को अक्सर याद करता रहा, और उसने अपने को उसके लिये कभी पूर्णतया माफ नहीं किया। सरला उस समय छोटी थी, इसीलिए तो उसके सुख-दुख को भी छोटा नहीं समझा जा सकता था। एक दूसरा कारण भी हुआ जिससे चन्द्रनाथ को वह घटना याद रही। जब सरला चन्द्रनाथ की गोद में रो रही थी तो उसकी भाभी आवाज सुनकर बैठक के पास आ गई थी। पैसे उनके हाथ में थे। सरला के रोना बन्द करते-करते, जबकि अभी वह गहरी साँसें भर रही थी, वे उसे चन्द्रनाथ की गोद से लेकर भीतर चली गईं। वहाँ सरला को अनुकम्पा से थपथपाते हुए वे कुछ उपालंभ की बातें करने लगीं थीं। 'जिन भाई ने इतनी लगन और मेहनत से पढ़ाया है उनके बच्चों पर दो-चार पैसे खर्च कर देने से कोई कंगाल नहीं बन जायगा, यह तो दिल की बात होती है। इतना अपना-पराया समझना ठीक नहीं। दो-चार पैसे के बर्फ के पीछे मेरी नन्हीं बिटिया को इतना रोना पड़ा,' इत्यादि। चन्द्रनाथ ने बाद में जब सुशीला के मुँह से ये बातें सुनीं तो वह लज्जा और ग्लानि से गल गया।

किन्तु उस समय उसे इस प्रकार की कोई अनुभूति नहीं हुई। सरला के भीतर पहुँचने के साथ ही रमेश ऊपर से दौड़ता आया और जल्दी के स्वर में बोला—'चाची अपना दोपहर वाला पत्र माँग रही हैं।'

चन्द्रनाथ ने इधर-उधर खोजने की मुद्रा दिखाते हुए कहा—'पत्र तो खो गया रमेश!'

किन्तु रमेश इसे मानने को तैयार नहीं हुआ। जब वह स्वयं पत्र माँगने के लिए नियुक्त हुआ है, तो पत्र कैसे खो सकता है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्रनाथ ने अनुमान किया कि उसके पत्र माँग लेने की घटना ने ही सुशीला की दृष्टि में भी उसका मूल्य बढ़ा दिया है; जिसे एक व्यक्ति चाहता है वह चीज़ दूसरों को भी महत्वशाली जँचने लगती है। रमेश सुशीला को पत्र लेजाने का आश्वासन दे चुका है, यह भी उसे मालूम हुआ। अतः उसने पत्र रमेश के हवाले कर देना उचित समझा।

रात को सुशीला ने मधुर उलाहने के स्वर में कहा—आपने मेरा पत्र क्यों पढ़ा ?

'क्यों, कोई हर्ज हुआ; तुमने अनुमति तो दे दी थी।'

'वाह, अनुमति दी थी या ले ली गई थी। आप तो मुझे अपने पत्र दिखाते ही नहीं।'

'कौन-सा पत्र नहीं दिखाया ? तुम मेरे सब पत्र देख लिया करो।'

'वही, उस दिनवाला पत्र दिखलाइए।'

चन्द्रनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा। 'वह श्यामकुमारी का पत्र, वह मैं तुम्हें कैसे दिखा सकता हूँ, ठीक जैसे तुम्हारा पत्र उसे नहीं दिखा सकता !'

कुछ दिन पहिले सुशीला ने उक्त पत्र को लेकर रूठने का अभिनय किया था। किन्तु धीरे-धीरे वह चन्द्रनाथ के परिहास को समझ गई थी, इसलिए आज इच्छा रहने पर भी वह अपने कृत्रिम रोष का निर्वाह न कर सकी।

'यह साधना कैसी लड़की है ?' चन्द्रनाथ ने पूछा।

'जैसी सब लड़कियाँ होती हैं, जैसी मैं हूँ,' सुशीला ने उत्तर दिया। फिर बोली—'रंग आपसे कुछ उन्नीस है, देखने में लम्बी लगती है। ब्याह में देखा नहीं था ? बहुत उत्कंठा हो तो यहाँ बुलवा दूँ।'

चन्द्रनाथ—ऐसी उदारता करोगी तो कठिनाई में पड़ जाओगी। उस अवसर पर न जाने कितनी तो लड़कियाँ थीं, सब एक-से-एक सुन्दर, चतुर और····

सुशीला—और क्या ?

चन्द्रनाथ—यही कि तुम किस-किस को बुलाती फिरोगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुशीला—सबकी बात तो मैं नहीं कहती, लेकिन हाँ, रानी को बुला सकती हूँ। शायद एक-दो और आ सकें, पर मुझे याद भी तो नहीं कौन कौन थीं।

चन्द्रनाथ—रहने दो भई, तुम एक ही काफ़ी हो।

सुशीला—हाँ एक ही के लिए अन्न जुटाना कठिन हो रहा है, फिर···

चन्द्रनाथ ने प्रसंग बदलते हुए कहा—पिछले अगहन में जब हम गए थे तभी वह नहीं थी, क्यों ?'

'उन दिनों वह यहीं थी, अपने मामाजी के घर।'

'यहाँ ? उसके मामाजी कौन हैं ?'

'बाबू गोपाल-स्वरूप ; हाईस्कूल में मास्टर हैं।'

चन्द्रनाथ चौंक पड़ा। मास्टर गोपाल-स्वरूप को वह अच्छी तरह जानता है। जिस स्कूल से उसने मैट्रिक किया था, उसमें वे अंग्रेजी के शिक्षक हैं। कुछ दिन उन्होंने उसे पढ़ाया भी था, और वे उससे बहुत प्रसन्न रहते थे।

'साधना से तो तुम्हारी बहुत घनिष्ठता है, फिर उसे बुलाया क्यों नहीं ?'

'उन दिनों वह बीमार थी, और शिवपुरी में उसका इलाज नहीं हो सकता था। इसलिये वह यहीं चली आई थी।'

इसके बाद वह विस्तार से साधना के घर का मास्टर साहब तथा अपने घरवालों से सम्बन्ध बतलाने लगी। साधना को घर में सब रानी कहते हैं। अमीर माँ-बाप की अकेली सन्तान है इसलिए उसे सभी मानते हैं। मास्टर साहब भी। उनके ऊपर रानी के पिताजी ने अहसान भी किया है—उन्हीं की सहायता से वे एम० ए० तक पढ़ सके हैं। रानी के पढ़ाने-लिखाने का सारा भार मास्टर साहब पर ही है। वे इसका ध्यान भी बहुत रखते हैं; बराबर नई-नई किताबें खरीद कर उसे दे जाते हैं। रानी को पुस्तकों से प्रेम भी है। स्वयं सुशीला की उसे कभी किसी ने इतनी चिंता नहीं की।

साधना और सुशीला के घरों में भी बहुत घनिष्ठता है। साधना सुशीला के माता-पिता को चाचा-चाची कहती है और वह (सुशीला) भी साधना की माँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और बाबूजी को कुछ यों ही पुकारती है। वास्तव में वह साधना के पिता से शर्माती है, और उनके सामने कम पड़ती है। वे व्यस्त भी बहुत रहते हैं।

फिर कुछ रुककर उसने कहा—रानी के बाबूजी प्रमोद से बड़ी मुहब्बत करते हैं। रानी भी उससे बहुत स्नेह करती है। सच पूछो तो वह उनके सारे घर का लाडला है, आधे से ज्यादा समय वहीं बिताता है। इसका शायद मुख्य कारण यह है कि उनके घर में कोई छोटा बालक नहीं। रानी उसे पढ़ाती भी है।

'उनके और बच्चा हुआ ही नहीं क्या ?'

'नहीं, एक लड़का रानी के बाद हुआ था, पर जाता रहा। पहले भी शायद एक बच्चा हुआ था।...तभी तो सब लोग रानी को बड़ी खातिर से रखते हैं। उसकी सब ज़िदें पूरी की जाती हैं। पढ़ने-लिखने का भी बहुत ख्याल रखा जाता है। उसकी माता जी की इच्छा है कि साधना का विवाह बहुत बड़े घराने में हो। कभी-कभी उसके विवाह की बात सोचकर रोती भी हैं कि वे उसके बिना कैसे रह सकेंगी। भगवान् उन्हें एक लड़का दे दें तो बहुत अच्छा हो।'

कहते-कहते सुशीला की मुद्रा गंभीर हो गई, जैसे वह भगवान् का ध्यान करके प्रार्थना कर रही हो।

सुशीला की यह सरलता और सहृदयता चन्द्रनाथ को बहुत भली लगती है। उसका साधना और उसके घरवालों से इतना निकट सम्बन्ध है, यह उसे संतोष की बात लगी।

'साधना का पढ़ना तो जारी है न ?' उसने सुशीला से पूछा।

'हाँ, वह इस साल बी० ए० की तैयारी कर रही है।'

कुछ रुककर चन्द्रनाथ ने पूछा—तुम आगे पढ़ोगी सुशीला ?

सुशीला पढ़ने के लिए तैयार नहीं है, सो नहीं, पर उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। पढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि वह चन्द्रनाथ के साथ रहे, किन्तु उस दशा में वह कभी भी आफत में फँस सकती है, यह कहकर वह शर्मा गई।

चन्द्रनाथ सुशीला को बहुत सीधी और सरल समझता आया है, पर वह देखता है कि कभी-कभी वह भिन्न प्रकार की बातें भी कर डालती है। उसके व्यक्तित्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

में वक्रता का भी कुछ अंश है—वह जैसे नारी-स्वभाव का अंग है। सुशीला के साथ रखने की कठिनाइयों को सोचता हुआ वह चुप हो रहा। कुछ देर में उसने पूछा—साधना को पत्र कब लिखोगी ?

'कल ही लिख दूँगी।'

सुशीला पूछेगी कि उस-विषयक प्रश्न का क्या उत्तर लिखे यह सोचकर चन्द्रनाथ चुप हो गया। किन्तु उसने कोई जिज्ञासा नहीं की और चन्द्रनाथ को उससे पूछना पड़ा कि वह उसके पत्रोत्तर देने के सम्बन्ध में साधना को क्या लिखेगी।

'आप ही बताएँ क्या लिखूँ ?' सुशीला ने पूछा।

'तुम कहो क्या लिखोगी ?'

'आप जवाब देंगे, है न ?'

'हुश्, यह भी कोई उत्तर है। लिख देना—उन्हीं से पूछ लो, मैं किसी के जी की क्या जानूँ।'

सुशीला ने अगले दिन ऐसा ही लिख दिया।

●

: ८ :

धीरे-धीरे एक सप्ताह बीत गया पर साधना का पत्र नहीं आया। चन्द्रनाथ को यह अनुचित प्रतीत हुआ।

साधना ने पत्र क्यों नहीं डाला ? क्या उसने सुशीला के उत्तर को नकारात्मक समझा ? क्या उसमें परिहास करने की शक्ति बिलकुल ही नहीं है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात को सुशीला से उसने कहा—साधना ने तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं दिया, कैसी तुम्हारी सखी है !

सुशीला बोली—'कोई वजह हो गई होगी, नहीं तो वह उत्तर ज़रूर देती', और वह चुप हो गई। साधना के स्नेह में संदेह करने का उसे कोई कारण नहीं दीख पड़ा।

सुशीला का विश्वास झूठा नहीं था। दूसरे दिन डाकिए ने एक लिफाफा लाकर दिया जिस पर बाईं ओर साधना का नाम था। किन्तु पत्र सुशीला के नाम था। शायद लिफाफे के भीतर कोई पत्र उसके लिए भी हो, यह सोचकर चन्द्रनाथ ने उसे शीघ्र ही सुशीला के पास भिजवा दिया।

किन्तु पत्र उसके नाम नहीं है, यह उसे शीघ्र ही मालूम हो गया। और तब उसकी समझ में आया कि उसे इस प्रकार पत्र की प्रतीक्षा करने का कोई अधिकार नहीं था।

फिर भी रात को खाते समय वह सुशीला से पूछ बैठा—साधना ने पत्र में क्या लिखा है ?

'वह यहाँ आनेवाली है'—सुशीला ने संक्षेप में कहा।

'साधना यहाँ आ रही है, क्यों ?' उसने अकृत्रिम आश्चर्य से कहा, जैसे वह ऐसी खबर के लिए बिलकुल तैयार न हो।

'वह अपने मामाजी के साथ हरिद्वार जायगी। बड़ी चाचीजी भी जा रही हैं।'

'हूँ ! हरिद्वार में क्या आजकल कोई पर्व है ?'

'यही जेठ का दशहरा और पूर्णिमा। आप चलेंगे ?'

अन्तिम वाक्य बड़ी उत्कण्ठा से बोला गया था। चन्द्रनाथ की आर्थिक स्थिति अच्छी होती तो उसे जाने में कोई आपत्ति न होती। बात टालने के लिए उसने कहा—नहीं, मैं इतना धार्मिक नहीं हूँ। क्या साधना तीर्थ, व्रत आदि मानती है ?

'विशेष नहीं, फिर भी गंगाजी हर वर्ष जाती है और कभी-कभी व्रत भी रख लेती है। आप चलें तो बड़ा अच्छा हो।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। हरिद्वार उसने अच्छी तरह देखा और उसे पसंद भी है। स्कूलावस्था में एक-दो बार वह अपनी माँ के साथ वह एक-एक महीने तक ठहर चुका है। उन दिनों उसमें धार्मिक वृत्ति भी विशेष थी जो अब नहीं है। इस परिवर्त्तन पर विचार करके कभी-कभी उसे बहुत आश्चर्य होता है।

जब वह काफी छोटा था तो प्रतिवर्ष एक-दो जगह माँ के साथ कथा सुनने जाया करता था—भागवत की कथा, रामायण की कथा, अथवा माघ स्नान का माहात्म्य।। उन दिनों उसे पौराणिक आख्यान कितने रोचक लगते थे, और कितने सत्य! प्रह्लाद और ध्रुव की कथाएँ वह बड़े ध्यान से सुनता और सोचा करता कि वह भी उनकी भाँति भगवान् का भक्त बनेगा। उसके बाल-स्वप्न अब कहाँ गए और कहाँ गए वे दिन जब उसके आस-पास की दुनिया इतनी भव्य और सार्थक प्रतीत होती थी?

एक बार की बात उसे याद है। माघ-माहात्म्य सुनकर आने के बाद उसने माँ से कह दिया था कि सबेरे वह भी स्नान करेगा। किन्तु सुबह में वह सोता रह गया, और माँ ने भी इस खयाल से कि उसे जाड़ा लगेगा, उसे नहीं जगाया। इस पर वह माँ से खूब नाराज हुआ, और खूब रोया। फलतः दूसरे दिन से माँ उसे सूर्योदय से पहले जगाकर स्नान कराने लगी।

अन्तिम बार हरिद्वार गए उसे सात-आठ वर्ष बीत गए। इस बीच उसके जीवन में अनेक बड़े परिवर्तन हुए हैं। उसने माँ को ही नहीं, बचपन के सरल विश्वासों को भी खो दिया है। किन्तु फिर भी उसे हरिद्वार जाने की लालसा न हो, ऐसा नहीं है। उसने सुना है कि तब से हरिद्वार भी बहुत बदल गया है। उसके घाट का रूपान्तर हो गया है, उसे अधिक विस्तार प्राप्त हो गया है और जहाँ-तहाँ बिजली भी लग गई है। किन्तु उसके वहाँ जाने की इच्छा का कारण यह परिवर्तन नहीं है, वह वास्तव में कुछ पुराने दृश्यों को फिर से देखने के लिए उत्सुक है। वहाँ कतिपय घाट और कतिपय कुञ्ज-गृह हैं जहाँ बैठकर उसने अनेक बार गीत और कविता लिखने की चेष्टा की थी। क्या अब भी

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे स्थान वैसे ही होंगे, वैसे ही एकान्त, आकर्षक और मनोरम! क्या अब भी वे उसे पहले की भाँति पुंजीभूत सौन्दर्य से जान पड़ेंगे ?

हरिद्वार से कुछ दूर, भीमगोडे पर, उसे एक घाट विशेष प्रिय है। माँ के साथ एक बार वह भीमगोडे में ही ठहरा था। वह उक्त घाट पर नहाने गया था। लौटने में उसे देर हुई और इतने में वर्षा भी आ गई। अतएव वह कुंड के पास ही एक पुजारी जी के मकान में रुक गया। इतने में उसकी माँ उसे ढूंढने निकल पड़ीं। घोर वर्षा में भीगती हुई, चिन्ता से आकुल, वे क्षिप्र गति से घाट तक पहुँच गई थीं। उनकी वह स्नेह और जल से भीगी हुई मूर्ति उसे आज भी प्रत्यक्ष की भाँति दीख रही है।

वह पहले अपनी माँ के साथ हरिद्वार गया था और अब उसकी इच्छा हो रही है कि सुशीला को साथ लेकर फिर एक बार वहाँ के परिचित स्थलों को देखने जाय। किन्तु यह सम्भव नहीं दीखता और वह मन को समझाने को कह रहा है—आखिर यह कोई बात भी है, सुशीला के साथ यहाँ-वहाँ जाने से क्या मिल जायगा ? मैंने तो वे स्थान देखे ही हैं, और उनके स्मृति-चित्र भी अभी विशेष धुँधले नहीं हुए हैं।

जो दृश्य या स्थान हमें रोचक लगे हैं वहाँ नए-नए परिचितों को साथ लेकर पहुंचने की इच्छा क्यों होती है ? आज सुशीला नव-परिचिता है, कल को उसकी सन्तति बड़ी और समझदार होगी, फिर और अनेक लोगों से परिचय, प्रेम बढ़ सकता है, आखिर वह किस-किस के साथ जाकर इन कुंजों और घाटों को देखता फिरेगा ? यह सब सोचता हुआ और आर्थिक विवशता का विचार करता हुआ वह हरिद्वार के प्रसंग को मानस-भूमि से निर्वासित करने लगा। उसे खेद यही था कि इस भाँति वह सुशीला को किंचित् निराश कर रहा है।

तीन दिन बीत गए।

आज सवेरे से ही चन्द्रनाथ ठोड़ी आदि बनाकर निपटा बैठा है। उसे आशंका है कि कहीं उसे मास्टर गोपाल स्वरूप के घर न जाना पड़े। कल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साँझ उनके घर से आदमी आया था। उसने खबर दी थी कि साधना बीबी और उनकी माताजी आ गई हैं और उन्होंने सुशीला बीबी को अगले दिन बुलाने के लिए कहलाया है, स्वयं उनका जाना भी जरूरी होगा। चन्द्रनाथ ने उत्तर में कह दिया था—'असम्भव, मेरा जाना कैसे हो सकता है? हाँ वे जा सकती हैं।'

इस पर उस प्रगल्भ नौकर ने कहा था—'आप को जाना तो होगा ही बाबूजी, बाकी मास्टर साहब को खुद तकलीफ करनी पड़ेगी।'

चन्द्रनाथ को आभास हुआ कि नौकर की धमकी झूठी नहीं है। और आज सवेरे से वह उस धमकी-रूप दुर्घटना के वास्तविक होने की आशंका या प्रतीक्षा कर रहा था।

वह एक पुस्तक पढ़ रहा था। सहसा एक ताँगा आकर उसकी बैठक के पास रुका। चन्द्रनाथ के हृदय में धड़कन हुई, मानो उस ताँगे का उससे कोई सम्बन्ध हो। जितने में उसने झाँककर देखा उतने में दो व्यक्ति ताँगे में से उतरे। उनमें एक तो मास्टर साहब थे और दूसरी एक खद्दर-धारिणी स्वल्पकाय लड़की। चन्द्रनाथ को समझते देर नहीं लगी कि यह लड़की कौन है। साधना स्वयं सुशीला को बुलाने आई है, यह सोचकर उसका हृदय आर्द्र कृतज्ञता से भर गया।

बाहर गली में जाकर उसने मास्टर साहब को प्रणाम किया। मास्टर साहब ने आशीर्वाद किया। उसी समय चन्द्रनाथ ने उनके पीछे आती हुई निम्न-दृष्टि साधना का नमस्ते ग्रहण किया। नमस्ते करते समय साधना ने जिस दृष्टि से चन्द्रनाथ को देखा था वह दृष्टि जैसे उसके मन में टिक गई।

मास्टर साहब को बैठक में कुर्सी पर बिठाकर चन्द्रनाथ साधना को पहुँचाने के लिए भीतर चला। साधना आगे थी और चन्द्रनाथ पीछे। साधना को सुशीला के कमरे तक मार्ग दिखाना होगा, यह सोचकर वह संकुचित हो रहा था। सौभाग्य से सुशीला नीचे उतर आई थी। वह हँसती हुई साधना का हाथ पकड़कर उसे ऊपर लिवा गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या यह वही साधना है जिसने विवाह में उसे भोजन कराया था और उससे निःशंक परिहास किया था ? उस साधना में और इसमें कितना भेद मालूम पड़ता है । वह जितनी प्रगल्भ और चंचल थी यह उतनी ही संकोचशील और नम्र लगती है । क्या आठ-दस दिन पहले इसी ने पत्र डाला था ? सुशीला जिस अधिकार के ढंग से साधना को हाथ पकड़कर ले गई थी उससे चन्द्रनाथ को ईर्ष्या होने लगी ।

बैठक में आकर वह मास्टर साहब से बातें करने लगा । मास्टर साहब ने कहा—बहुत दिनों में मुलाकात हुई; तुम कभी स्कूल नहीं आते ?

'समय नहीं मिल पाता, मास्टर साहब !' चन्द्रनाथ ने संकोच से कहा ।

मास्टर साहब स्वयं बड़े संकोची हैं, और मितभाषी; इसलिए चन्द्रनाथ को विशेष सफ़ाई पेश करने की आवश्यकता नहीं पड़ी । वह उठकर भीतर पान लेने चला गया ।

जिस ताँगे में मास्टर साहब आए थे वह अभी वहीं खड़ा था । थोड़ी देर में उनका नौकर दूसरा ताँगा भी ले आया । मास्टर साहब ने साधना से कहलाया कि अब सबको चलना चाहिए ।

लेकिन अभी उन दोनों के आने में देर थी । शायद साधना को जलपान कराया जा रहा था, शायद सुशीला अभी कपड़े पहनकर तैयार नहीं हुई थी । वे दोनों क्या कर रही हैं, इस विषय में चन्द्रनाथ मन-ही-मन अनेक कल्पनाएँ करने लगा ।

सहसा मास्टर साहब ने चन्द्रनाथ से कहा—आप भी कपड़े पहन लीजिए ।

'मैं ?' चन्द्रनाथ ने सिटपिटा कर कहा, 'क्या मेरा जाना आवश्यक है ?'

मास्टर साहब ने नितान्त सीधे ढंग से कहा—उसमें हर्ज ही क्या है ? जीजी (साधना की माँ) ने विशेष आग्रह से कह दिया है ।

चन्द्रनाथ को जाना ही होगा । अपने शिक्षक का अनुरोध यों भी नहीं टाला जा सकता, विशेषतः जब वे इतने सरल हैं । पर तुरन्त ही उसे ध्यान हुआ कि उसके सब कपड़े सुशीला के कमरे में हैं । वह क्या पहन कर जाय ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

क्षण भर के लिए वह संकट में पड़ गया। फिर यह सोचकर कि दूसरे कपड़ों की जरूरत ही क्या है, जो पहले हैं वही ठीक हैं, बोला—'अच्छा, मैं चला चलूँगा।'

उस समय वह सिर्फ खादी की धोती और कुर्ता पहने हुए था, और उसके पैरों में चप्पल थे।

कुछ देर बाद साधना और सुशीला उतरीं, जीने, आँगन और वहाँ की हवा को मुखरित करती हुई। साधना ने मास्टर साहब के पास आकर पूछा—'जीजा जी चल रहे हैं न?' मास्टर साहब ने सिर हिलाया। इस पर साधना और सुशीला किंचित् क्षिप्र कदमों से चलकर ताँगे में जा बैठीं। मास्टर साहब और चन्द्रनाथ भी पीछे-पीछे पहुँच गए।

●

: ९ :

चन्द्रनाथ को लड़कियों से बातचीत और व्यवहार का अवसर नहीं मिला है, ऐसा नहीं। उसकी कोई अपनी बहिन नहीं है, पर आस-पास के सम्बन्ध से दर्जनों बहिनें हैं। उनमें कुछ तो चन्द्रनाथ से बहुत बड़ी हैं और उनके लड़के-लड़कियाँ उसके समवयस्क हैं। इसके अतिरिक्त तीन-चार भाभियाँ भी हैं ही। उनके शोर-गुल, हँसी-मजाक से वह अपरिचित नहीं है। भेद यही है कि उनमें से अधिकांश विशेष पढ़ी-लिखी नहीं हैं, और "माडर्न" भी नहीं। बदायूँ शहर भी ऐसा नहीं है जहाँ आधुनिकता का रंग गहरा हो। वस्तुतः प्रयाग जैसे नगरों की तुलना में वह अभी शताब्दियों पीछे है। प्रयाग में भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ी-लिखी लड़कियों से घनिष्ठ परिचय करने का अवसर उसे कम मिला है; यही कारण है कि वह अभी अपरिचित लड़कियों से सर्वथा सहज भाव से बातचीत नहीं कर पाता। इसका विशेष अनुभव उसे तब हुआ जब वह मास्टर साहब के घर में, दोतल्ले पर, एक अलग कमरे में, भोजन करने बिठाया गया। साधना की मामी खाना पका रही थीं और खिलाने का भार स्वयं साधना पर पड़ा था।

साधना की माँ पाँच-सात मिनट के लिये चन्द्रनाथ के पास आई और उससे उसके घरवालों का कुशल-प्रश्न पूछकर शीघ्र ही चली गईं।

साधना पूड़ियाँ ला रही थी। चन्द्रनाथ को लगा कि वह शाक-भाजी आदि लाने के लिए आवश्यकता से अधिक चक्कर काट रही है, मानो वह न कमरे के भीतर रुकना चाहती है, न बाहर। वह बार-बार आती हुई साधना के पैरों को देखता, उसके हाथों और चेहरे के निचले भाग तक दृष्टि ले जाता, पर उसे भरपूर न देख पाता। साधना भी मशीन की भाँति पूड़ी आदि लेकर आती, धीरे-से थाली में रखती और चली जाती। उसके चले जाने पर वह जैसे चोरी से मुँह उठाता और शीघ्रता से कमरे के चारों ओर दृष्टिपात करता, मानो उसे विश्वास हो कि कमरे के बाहर चली जाने पर भी साधना उसमें अपना कुछ अंश छोड़ जाती है। एक बार जब साधना घुस रही थी तो चन्द्रनाथ की आँखें दर्वाजे पर थीं। 'मैं देख ली गई हूँ', इस सन्देह मात्र से साधना का वदन-मंडल आरक्त हो उठा। वह फुर्ती से पूड़ी रखकर कमरे के बाहर निकल गई।

अबकी बार वह कुछ देर से आई। उसकी दृष्टि चन्द्रनाथ की थाली पर थी, और उसके होंठों में मुस्कराहट छिपी हुई थी। साधना के संभ्रम से चन्द्रनाथ को जैसे कुछ साहस मिल गया था। उसने थाली पर अपना हाथ रोककर कहा—अब मुझे पूड़ी नहीं चाहिए।

साधना कुछ बोली नहीं, उसने पूड़ी थाली में डाल दी।

चन्द्रनाथ ने कहा—यह जबर्दस्ती है।

साधना फिर नहीं बोली, पास पड़ा हुआ पंखा उठाकर झलने लगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ पर मानो एक नया संकट आ उपस्थित हुआ। पूड़ी देकर साधना ने एक विजय प्राप्त की थी; पंखा झलकर वह जैसे दूसरी विजय पाना चाहती थी। प्रगल्भता में पुरुष नारी की बराबरी कैसे कर सकता है! उसने कठिनता से साधना के चेहरे पर दृष्टि गड़ाकर कहा—रहने दीजिए; आप थक जायँगी।

साधना ने अविचल भाव से कहा—कोई हर्ज नहीं, अपनी ही तो हवा कर रही हूँ।

साधना जिस तरह पंखा घुमा रही थी उसे देखकर यह कहना कठिन था कि वह अपनी हवा कर रही है या चन्द्रनाथ की, पर चन्द्रनाथ जैसे उपकार के बोझ से अकुला रहा था। उसकी समस्या यह थी कि वह अपनी दृष्टि को कहाँ ले जाय। लगातार नीची दृष्टि रखना अस्वाभाविक है, इसे वह अच्छी तरह महसूस कर रहा था। उसे आशा थी कि साधना शीघ्र ही उठकर चली जायगी, अथवा बुला ली जायगी, पर वह आशा पूरी होती नहीं दीख रही थी। अतः उसने साहसपूर्वक पूछा—आपको अपने कोर्स की बहुत चिन्ता है?

'हाँ, चिंता तो होनी ही चाहिए'—वह सहसा गम्भीर होती हुई बोली, 'असल में कठिनाई यही है कि कोई ठीक शिक्षक नहीं मिल पाता। आपके लिये लौकी की सब्जी लाऊँ?'

'नहीं मुझे अब कुछ नहीं चाहिए। आपके संस्कृत-कोर्स में क्या-क्या पुस्तकें हैं?'

'उत्तर-राम चरित है, मेघदूत है, इतिहास·····'

'मेघदूत! भला इसे आप किससे पढ़ेंगी! उत्तर चरित भी कठिन है।'

'मेघदूत तो स्वयं पढ़ लेती हूँ'—साधना ने स्मितपूर्वक कहा, 'उत्तरचरित एक पंडित जी पढ़ाते हैं।'

'स्वयं पढ़ लेती हैं, अच्छा! अभी दूत आपके पास पहुँचा कि नहीं!'

'आप हँसी करते हैं, जीजा जी',—साधना ने सलज्ज भाव से मुस्कराते हुए कहा।

चन्द्रनाथ भी मुस्करा दिया।

वह भोजन समाप्त कर चुका था। शीघ्र ही दोनों कमरे के बाहर हो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ धोकर चन्द्रनाथ ज़ीने की ओर बढ़ना चाहता था कि साधना शीघ्रता से पान ले आई।

'आप जानती हैं, मैं पान नहीं खाता।'

'आज खा लीजिए,' साधना ने अविचलित भाव से कहा।

दो-चार सेकण्ड ठिठक कर चन्द्रनाथ ने पान ले लिया, और वह नीचे उतर गया। वहाँ मास्टर साहब भोजन से निवृत्त होते हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ देर बाद ऊपर से क़हावत आई कि "जीजा जी को घर न जाने दिया जाय। मास्टर साहब ने नितांत धीमे और सीधे स्वर में कहा—'इस समय दोपहरी में कहाँ जाएँगे, साँझ तक यहीं रहेंगे।'

यह तय हुआ था कि वह पाँच बजे के बाद जायगा। उससे पहले ही उसकी ऊपर बुलाहट हो गई। साधना जलपान लिए बैठी थी।

चन्द्रनाथ मिठाई खाना पसंद नहीं करता, यह जानकर उसके लिए फलों का ही विशेष प्रबंध किया गया था। उन पर दृष्टि डालते हुए चन्द्रनाथ ने कहा—ख़ैरियत है, आज शंतरे नहीं हैं।

'जी हाँ, लेकिन लोकाट हैं, कुछ काम आपको करना ही पड़ेगा,' कहकर साधना ने फलों की तश्तरी उसके पास पलंग पर रख दी। वह स्वयं इस समय चटाई पर बैठी थी और खरबूजे छील-काट रही थी।

कुछ देर में बोली—एक बात आप से कहूँ ?

चन्द्रनाथ—कहिए।

साधना—पहली बात यह है कि आप मुझसे 'आप' क्यों कहते हैं, मैं आपसे छोटी हूँ न ?

चन्द्रनाथ—यानी आप बात नहीं पूछ रही हैं, सफाई माँग रही हैं। और दूसरी बात क्या है ?

साधना—देखिए फिर आपने उसी तरह कहा, जाइए मैं नहीं पूछती।

चन्द्रनाथ—अच्छा अब ऐसी भूल न होगी। कहिये, क्या पूछना है ?

साधना नीचा मुँह करके हँसने लगी। चन्द्रनाथ चौंक पड़ा। 'ओह ! क्या मैंने फिर वही गलती की। अच्छा, अब कहो क्या पूछती हो।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'आप मेरी परीक्षा की तैयारी में कोई सहायता न देंगे ?'

'नहीं, क्यों नहीं। इससे पहले तो तुमने कभी कहा नहीं।'

'लेकिन मैं आपसे पढ़ सकूँ ऐसा सौभाग्य कहाँ; आप मिलें कहाँ ?'

चन्द्रनाथ ने कुछ सोचकर कहा—पूजा की छुट्टियों में यदि आऊँ तो प[ढ़ा] सकता हूँ।

वह लोक़ाट छीलकर खाने की कोशिश कर रहा था। साधना ने अप[ना] छीला हुआ लोकाट बढ़ाकर देते हुए कहा—लीजिए इसे खाइए, आप ठीक नहीं छील सकेंगे ?

'नहीं, मैं इतना अबोध नहीं हूँ; फिर हमेशा विवाह के बराबर खातिर तो नहीं हो सकती।' कहकर वह साधना का दिया हुआ लोकाट मुँह[में] रखने लगा।

'खातिर की इतनी इच्छा है तो फिर विवाह कर डालिए।'

'किसके साथ; शिवपुरी में कोई लड़की है ?'

साधना झेंप गई।

हमारे समाज में कुछ संबन्धियों को एक-दूसरे से परिहास करने [का] अधिकार होता है। चन्द्रनाथ और साधना का सम्बन्ध ऐसा ही था, और उसका उपयोग करने लगा था। वह अनुभव से जानता था कि ऐसी जगह कुछ न बोल सकने पर बेवकूफ बनने का भय रहता है; अपढ़ भाभियाँ तक कभी-कभी बना डालती हैं। अतः वह प्रयत्नपूर्वक जागरूक था। जीवन में सम्बन्धियों से हम कभी-कभी ही मिल पाते हैं; और वहाँ यह स्निग्ध-परि[हास] आत्मीयता को एक साथ ही प्रमाणित और पुष्ट करने का साधन बन जाता है।

कुछ क्षण दोनों चुप रहे।

'आपकी पूजा की छुट्टियाँ कितने दिन की होंगी ?' साधना ने पूछा।

'कम-से-कम पन्द्रह दिन की, ठीक नहीं कह सकता।'

'आपको अपने काम का हर्ज करना पड़ेगा।'

'नहीं, मेरे काम का क्या हर्ज होगा। फिर यह भी तो किसी दूसरे काम नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तो आप छुट्टियों में आएँगे—ज़रूर आइएगा।'

चन्द्रनाथ ने चकित भाव से कहा—ज़रूर ही आऊँगा, मुझे तो आना ही होगा—क्योंकि वही एक बड़ी छुट्टी होती है।

कुछ देर बाद वह चलने के लिए उठने लगा।

'आप जा रहे हैं ?' साधना ने निरर्थक-सा प्रश्न किया।

चन्द्रनाथ ने विस्मय के भाव से उसे देखा।

'आप और जीजी हमारे साथ हरिद्वार चलिए न,' जैसे भूली हुई बात याद करती हुई वह बोली, 'माता जी की बहुत इच्छा है।'

चन्द्रनाथ ने इस निमन्त्रण में बढ़ी हुई घनिष्ठता का अनुभव किया। उसे जाना नहीं है, इसलिए वह जल्दी से कोई बहाना ढूंढ़ने लगा। कहा—मुझे तो काफ़ी काम है, उन्हें आप ले जा सकती हैं।

वह चलने लगा। साधना ने पुनः पान देते हुए कहा—आज जीजी यहीं रहेंगी।

चन्द्रनाथ ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—'अच्छा।' उसके चलते-चलते साधना ने नमस्ते किया।

●

: १० :

वह रात चन्द्रनाथ को अपने कमरे में अकेले काटनी पड़ी। सुशीला का यह पहला वियोग उसे बहुत खला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काफ़ी देर तक उसे नींद नहीं आई और वह कभी साधना और कभी सुशीला के बारे में सोचता रहा।

साधना अभी बदायूँ में ही है—वह अभी हरिद्वार नहीं गई है—इसीलिए वह उसे अपनी समग्रता में दीख रही है। उसकी पूड़ी लाती हुई आकृति, उसकी पंखा करते समय की छवि, उसकी चन्द्रनाथ को विदा करने के क्षण की कुछ उदास चितवन, यह सब उसकी कल्पना में प्रत्यक्ष की भाँति घूम रहा है। साधना से उसकी बहुत कम बातें हुईं फिर भी मानो उसने अपने अनेक इंगितों से यह बता दिया कि वह एक विशेष अर्थ में उसकी अपनी ही है, पराई नहीं है।

और उसकी सुशीला? वह मानो आज कहीं खो गई है। इस समय जब वह अपने कमरे में नितान्त अकेला है, सुशीला सानन्द साधना से बातें कर रही होगी। भला वे दोनों क्या बातें करती होंगी?

वह सुशीला और साधना की तुलना करने लगा। शरीर की संक्षिप्तता में साधना कुछ लम्बी दीखती है, यद्यपि दोनों में विशेष अन्तर न होगा। नितान्त स्वच्छ महीन खद्दर की साड़ी साधना के शरीर पर पूर्णतया चिपटी रहती है जिससे उसका पतलापन छिप नहीं पाता। उसका रंग गेहुँआ और चेहरा कुछ लम्बा है। अपेक्षाकृत कम ऊँचा माथा चौड़ाई में अधिक विस्तृत दीखता है। उसके हाथ और कलाइयाँ लम्बी और पतली जान पड़ती हैं।

दोनों की आँखों और दृष्टियों में भी कितना अन्तर है! सुशीला के नेत्रों की विशेषता है निर्मल श्लक्ष्णता, साधना के, उदास गम्भीरता। तथापि कभी-कभी साधना की आँखें अप्रत्याशित रूप में स्निग्ध और प्रसन्न दीखने लगती हैं। कपोलों के मध्य भाग से नीचे की ओर साधना का चेहरा त्रिभुज-सा बनाता है। उसकी ठोड़ी अमांसल है, उसके होंठों की सीमा-रेखाएँ विशेष स्पष्ट हैं। इन दृष्टियों से सुशीला भिन्न है। उसके रक्तिम होंठ मुख्यत: अपने रंग के कारण अलग दिखते हैं, और उनके तथा ठोड़ी के बीच आकर्षक गढ़ा है। सुशीला मुक्त भाव से हँस सकती है, साधना को उसने अभी तक मुस्कराते ही देखा है।

सुशीला का व्यक्तित्व दर्शक पर स्निग्ध कोमलता की छाप डालता है, साधना का, नाजुक स्वच्छता की। सुशीला तुरन्त ही दूसरे व्यक्ति से घुली-मि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीखने लगती है, इसके विपरीत साधना का व्यक्तित्व, आत्मीयता की अभिव्यक्ति के क्षणों में भी, जैसे अपने अलगाव और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखता है।

सुशीला उसके कितनी पास है, और साधना उससे कितनी दूर, यद्यपि देश-काल की दृष्टि से वे दोनों आज एक ही जगह हैं !

सुबह को चन्द्रनाथ कुछ देर से सोकर उठा। उसके नीचे पहुँचते ही भाभी ने पूछा—क्या बहू को लिवाने के लिए किसी को भेजूं ?

चन्द्रनाथ—कोई जरूरत नहीं, उन्होंने स्वयं पहुँचवा देने का वायदा किया है।

लेकिन भाभी को यह बात नहीं जची। उन्होंने महरी को बुलाने भेज ही दिया। पर सुशीला नहीं आई, महरी से कहला दिया कि मैं शाम को आऊँगी।

भाभी ने चन्द्रनाथ को सुनाते हुए कहा—'वहू बड़ी जिद्दन है, अपने मन का काम करती है।' चन्द्रनाथ ने स्पष्ट देखा कि सुशीला दोषी है।

साँझ को दीपक जलने से कुछ ही पहले सुशीला आई। भाभी ने अप्रसन्न होकर कहा—आज ही क्यों आई बहू, मायकेवालों के सामने ससुरालवाले अपने थोड़े ही हो सकते हैं।

सुशीला एक विचित्र प्रसन्नता से चंचल हो रही थी। भाभी की बात का कोई जवाब न देकर वह ऊपर अपने कमरे में चली गई। भाभी पीछे कुछ कहती रहीं जिसे वह न सुन सकी। चन्द्रनाथ ने निश्चय किया कि आज वह सुशीला को डाँटेगा।

किन्तु निश्चय करना जितना आसान होता है उतना उसे व्यावहारिक रूप देना नहीं। वास्तव में क्रोध करना और यथार्थ रूप में डाँटना बौद्धिक व्यापार नहीं हैं, वे निश्चयात्मिका वृत्ति के सोए रहने पर ही ठीक अनुष्ठित होते हैं। रात को चन्द्रनाथ सुशीला के कमरे में काफ़ी देर से पहुँचा। देखा कि सुशीला कुछ फूली-फूली-सी बैठी है। सुशीला ने भाभी को अप्रसन्न कर दिया है, उसे इसका पश्चात्ताप होना चाहिए, यह सोचते हुए चन्द्रनाथ ने यथाशक्ति कठोर स्वर में कहा—आज भाभी नाराज हो रही थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'हाँ हो तो रही थीं, उनके पीछे क्या मैं अपने मायकेवालों को छोड़ दूँगी ?'

चन्द्रनाथ—छोड़ने को कोई किसी से नहीं कहता, लेकिन तुम्हें आज सवेरे आ जाना चाहिए था।

'जी नहीं, मुझे जाना ही नहीं चाहिए था, और आपको रात के बारह बजे आना था। इस देश में स्त्रियों की कोई कदर ही नहीं है।' कहते-कहते वह रोने लगी।

उसके रोने ने चन्द्रनाथ को स्तब्ध कर दिया। उसकी इतनी-सी बात का सुशीला इस प्रकार बुरा मान जायगी, इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। गृहस्थी में इतनी संवेदनशील लड़की के साथ कैसे रहा जा सकता है ? वह सुशीला को शान्त करने की चेष्टा करने लगा।

'आखिर कुछ वजह थी तभी तो मैं रह गई थी, कोई यों ही तो नहीं रुक गई जो सब बिगड़ने लगे'—सुशीला रोते-रोते बोली।

सुशीला के कहने के ढंग से लगा कि वह 'वजह' सचमुच महत्वपूर्ण थी। चन्द्रनाथ जानने के लिए उत्सुक हो उठा। सुशीला के आँसुओं को पोंछकर उसने उसके नेत्रों और कपोलों पर चुम्बन अंकित कर दिए।

सुशीला शीघ्र ही मान गई, कृत्रिम रोष और उपालंभ के स्वर में बोली—आप इतनी देर से क्यों आए ?

'ओह ! यह बात है, इसी के लिए इतनी नाराज हो रही थीं।' वह देर होने के कारण बतलाने लगा। उसे भाभी से कुछ काम की बातें करनी थीं, वह सरला और रमेश के साथ खेल रहा था, इत्यादि, किन्तु सुशीला का समाधान नहीं हुआ। चन्द्रनाथ को उसकी चिंता ही नहीं है, बैठकर भाभी के साथ गप करना ही अच्छा लगता है। उसे क्या पता कि सुशीला ने पिछली रात कितनी कठिनता से काटी; चन्द्रनाथ को तो खूब गहरी नींद आई होगी, इत्यादि।

चन्द्रनाथ प्रतिवाद करने की चेष्टा न करके चुपचाप सुनता रहा।

प्रणय-कलह समाप्त हो चुका था। शायद यह देखकर कि अब उपालंभ की बातों की रोचकता जाती रही, सुशीला प्रसंग बदलती हुई बोली—आपको मालूम है, मैं आज सवेरे क्यों रुक गई थी ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्रनाथ—साधना ने जबर्दस्ती रोक लिया होगा, और क्या।

सुशीला ने प्रतिवाद किया। साधना उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध थोड़े ही रोक सकती थी।

पति से कुछ अधिक आदर पाकर सुशीला खुल पड़ी। असली बात यह थी कि साधना की शादी होनेवाली है। उसकी भावी सास और ननद उसे देखने आई थीं, इसीलिए सुशीला रुक गई थी। साधना को लेकर उसकी माँ के बदायूँ आने की असली वजह यही थी, हरिद्वार तो बहाना मात्र था, जिससे साधना कोई गड़बड़ न करे।

साधना के विवाह का प्रस्ताव, न जाने क्यों, चन्द्रनाथ को अच्छा नहीं लगा। बोला—शादी कहाँ हो रही है, वर कैसा है?

'बरेली में कोई सेठ गोविन्ददास हैं, उन्हीं का लड़का है। बी० ए० पास है। बहुत बड़े आदमी हैं, बड़े जमीदार हैं, उन्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है। उसी की बहिन और माँ तो आई थीं। यह सम्बन्ध ठहर जाय तो साधना का भाग्य खुल जाय।'

साधना का विवाह एक सिर्फ बी० ए० पास युवक से हो, यह चन्द्रनाथ को उचित नहीं लगा। इस विषय में स्वयं साधना की क्या राय है, यह जानने को वह उत्सुक हो उठा। उसने सुशीला से पूछा—इस सम्बन्ध के लिए साधना राजी है?

'सो तो मैं ठीक नहीं जानती। साधना का हृदय तो अथाह समुद्र है, उसकी थाह पाना कठिन है। फिर भी मेरा ख्याल है कि वह राजी जरूर होगी। ऐसा घर और ऐसा सुन्दर वर और कहाँ मिलेगा।'

'क्या वर बहुत सुन्दर है, तुम्हें कैसे मालूम?'

'साधना की मामी कहती थीं, मामा जी खुद देख आए हैं। दूसरे, जिसकी माँ और बहिन इतनी सुन्दर हैं, वह सुन्दर जरूर होगा।'

वर सुन्दर है और धनी है; बहुत-सा रूप और बहुत-सा सौंदर्य; किसी भी लड़की को इससे संतुष्ट होना चाहिए। सब कुछ तो ठीक है, फिर भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ की अन्तरात्मा कहती है कि यह सम्बन्ध न हो, इसे नहीं होना चाहिए।

उसने अब दूसरा प्रसंग छेड़ दिया। मालूम हुआ कि पिछली रात सुशीला और साधना साथ-साथ सोई थीं और काफी देर तक जागती रहीं। साधना ने चन्द्रनाथ के सम्बन्ध में कोई विशेष बात नहीं की, सिर्फ यह पूछा कि वह सुशीला को कैसे रखता है और उसने कविता की कितनी किताबें लिखीं हैं ?

चन्द्रनाथ ने पूछा—तुमने क्या उत्तर दिया ?

'मैंने कहा मुझे ठीक मालूम नहीं। आप बतलाइए, तीन ही रजिस्टर हैं न ?'

चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—हाँ; और क्या कहा ?

'और कुछ नहीं, कहती थी कि अब वह आपसे जीजा जी नहीं कहा करेगी, शर्म लगती है।'

'फिर क्या कहेगी ?'

'कुछ नहीं, ऐसे ही बोल लिया करेगी।'

ऐसे ही बोल लेने की बात से चन्द्रनाथ को हँसी आ गई। शायद शिक्षा के बोझ से साधना की प्रगलभता कुछ कम हो गई है, अन्यथा गाँव की लड़कियाँ इतनी संयत नहीं होतीं। और यह सुशीला भी कितनी सरल है, कितने भोले ढंग से वह साधना के सम्बन्ध में उससे बात कर रही है! मानों उसे उसकी साधना या किसी अन्य लड़की की घनिष्ठता से विशेष सरोकार ही नहीं है! ऐसी सुशीला से कोई कैसे कभी विरक्त हो सकेगा और कैसे उसे धोखा ही दे सकेगा!

साधना ने सुशीला के चलते-चलते उससे यह कहा था कि वह चन्द्रनाथ को हरिद्वार चलने को राज़ी कर ले। लेकिन इस दिशा में चन्द्रनाथ का कोई उत्साह न देखकर सुशीला उसके वक्षःस्थल में मुँह छिपाकर सो गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

: ११ :

पन्द्रह दिन बाद चन्द्रनाथ ने पाया कि वह प्रयाग में है।

प्रयाग उसके लिये नई जगह हो, सो नहीं; फिर भी उसने मानो पहली बार देखा कि वह बदायूँ से बिलकुल भिन्न है। उसकी चौड़ी और दूर तक फैली हुई सड़कें, उसकी विरल आबादी, उसके घरों के चारों ओर छाई हुई हरियाली बदायूँ के तंग गली-कूचों, तिमंजले मकानों के जमघट और वनस्पति-शून्य वातावरण से और ही दृश्य उपस्थित करते हैं। प्रयाग का वह भाग जिसमें विश्वविद्यालय है जैसे शेष नगर से नितान्त अलग है। नया कटरा, बैंक रोड और यूनिवर्सिटी रोड से लेकर अल्फ्रेड पार्क तथा जार्ज टाउन तक मानो यूनिवर्सिटी का ही प्रसार और उसके छात्रों और शिक्षकों का साम्राज्य है। बीच-बीच में बाजार आ जाते हैं सही, पर कम-से-कम विश्वविद्यालय के छात्रों की दृष्टि में, उनकी सत्ता अपवादात्मक है। वे उनके क्रीड़ोद्यान के आवश्यक अंग नहीं हैं, अपितु उसमें कहीं-कहीं अकारण दीख पड़नेवाले बंजर भूमि-खंडों से प्रतीत होते हैं। उन्हें बचाकर भी आना-जाना हो सकता है।

विश्वविद्यालय का आंतरिक वातावरण घर के वातावरण से कितना भिन्न है! उसका परिवार बड़ा है, उसमें सहस्रों छात्र हैं; वे सभी शिष्ट हैं, उत्साही हैं, महत्वाकाङ्क्षी हैं। वे एक साथ कक्षा में बैठकर एक-सी समस्याओं पर विचार करते हैं; एक प्रकार की युक्तियों और तर्कों से प्रभावित होते हैं; एक तरह के हेत्वाभासों पर कौतूहल करते हैं। संसार के धुरंधर विचारकों ने कैसी भयंकर भूलें की हैं! महापुरुषों की विचार-भूमि में विचरण करते हुए, महत्तम आदर्शों का मूल्यांकन करने में सचेष्ट, ये विश्वविद्यालय के छात्र कैसे दिव्य, कितने अलौकिक हैं! बौद्धिक और आध्यात्मिक सूत्रों में बँधे हुए ये विद्यार्थी क्या संसार के सर्वश्रेष्ठ परिवार की सृष्टि नहीं करते?

बदायूँ की अबौद्धिकता चन्द्रनाथ को असह्य थी। हर वर्ष उसे वहाँ छुट्टियाँ काटना कठिन हो जाता। प्रयाग आते ही उसकी आत्मा जैसे उच्छ्-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वसित हो उठती है। प्रयाग उसकी निरीक्षण-शक्ति को तेज, कल्पना को प्रखर और आकांक्षाओं को ऊर्ध्वमुखी बना देता है। चिड़िया जैसे अपने अण्डों-बच्चों को परों के नीचे छिपाकर रखती है, वैसे ही घर हमारे व्यक्तित्व को मानो अपने स्नेह की चहार-दीवारी में सिकोड़ कर रखना चाहता है। घर में रहकर मनुष्य शांति पा सकता है, विश्राम पा सकता है, सुख पा सकता है, किंतु कल्पना की अप्रतिहत उड़ान और उच्चाकांक्षाओं का आलोड़न, यह घर में दुर्लभ है। घर व्यक्तित्व के संरक्षण की जगह है उसके विकास या संवर्धन की नहीं। इसीलिए चन्द्रनाथ की प्रसरणशील आत्मा वदायूँ के घिरे हुए वातावरण में घुटने-सी लगती है।

किंतु इस बार का प्रयाग आना उसे संपूर्ण रूप में लाभ ही नहीं लग रहा है; इस बार मानो उसका कुछ घर पर रह गया है। उसे सुशीला की याद आती है। उसकी स्नेहभरी आँखें, उसके हँसते हुए होंठ, उसके निर्मल कपोल, उसके चुम्बन, उसका स्पर्श—इनके स्मरण से उसका शरीर सिहर उठता है। उसे कभी-कभी वर्फ के लिए रोती हुई सरला का स्मरण हो आता है और कभी मचलते हुए रमेश का। और कभी-कभी, शायद इच्छा के विरुद्ध, साधना की याद आ जाती है—लता की तरह पतली, पहेली-सी गूढ़, काली गहरी आँखोंवाली, मुँह में ही मुस्कुराती हुई, क्षिप्रगति और मितभाषिणी। और तब उसे प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय के परिवार में कोई खास कमी या अभाव है।

चन्द्रनाथ ने अब तक छात्रों का जीवन कक्षा के भीतर से ही देखा था। उसने कालेज और यूनिवर्सिटी के वाद-विवाद भी सुने थे, पर वहाँ भी उसे छात्र-गण तार्किकों और विचारकों के रूप में ही दिखाई दिए थे। स्वयं अपने जीवन में वह एकांतप्रिय और अध्ययनशील रहा था। संसार के दार्शनिकों और साहित्यिकों की विचार-धारा में स्नान करते हुए उसे अपना इकलापन कभी नहीं खलता। विभिन्न विचारकों के मत और आदर्श उसके लिए जीवंत चीजें थीं, जिनके प्रकाश में वह जीवन की व्याख्या और संचालन करने को उत्सुक रहता। चिन्तन-शक्ति के व्यायाम से जीवन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदर्श को ढूँढ़ निकालना और फिर उस आदर्श के अनुकूल, वैयक्तिक और सामाजिक भूमिकाओं में, जीवन को चलाना, यही वह शिक्षा का उद्देश्य समझता था। उसका विश्वास था कि विश्वविद्यालय के सभी छात्र शिक्षा को इस दृष्टि से देखते हैं। इसीलिए शिक्षा-कालीन जीवन के सम्बन्ध में उसकी ऊँची धारणा थी।

एम० ए० के बाद प्रयाग में आकर उसने देखा कि उसके संगी-साथी सब विशीर्ण हो गए हैं; उसने अपने को अकेला-सा पाया। ऐसी दशा में संभवतः हॉस्टल में रहना अच्छा होता, लेकिन अन्वेषक विद्यार्थियों के सामान्य नियमानुसार, उसने अलग मकान में रहना ही पसंद किया। संयोग से उसे दो और छात्र भी मिल गए। तीनों ने मिलकर जार्जटाउन में एक छोटी काटेज किराए पर ले ली। चन्द्रनाथ के इन दो साथियों में एक कॉमर्स के एम० ए० थे और डिप्टी-कलेक्टरी की प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे थे। उनका नाम वीरेन्द्र कुमार सक्सेना था। पं० शिवानन्द मिश्र दूसरे साथी, एम० ए० फाइनल के विद्यार्थी थे। साँवले, लम्बे, हँसमुख वीरेन्द्र और गेहुँआ रंग, अपेक्षाकृत ठिंगने शिवानन्द में एक ही साम्य था—दोनों गप करने के प्रेमी थे। मथुरा जिले के मिश्र जी को व्रजकाव्य से विशेष अनुराग था, कानपुर के सक्सेना को चाय और सिनेमा से; फिर भी दोनों में खूब पटती थी, दोनों मित्र थे।

चन्द्रनाथ का दोनों से शीघ्र ही अन्तरंग परिचय हो गया। इस शीघ्र परिचय का कारण शिवानन्द का कविता-पाठ था। उसके स्वर से पढ़े हुए कवित्तों को सुनकर चन्द्रनाथ ने कहा—वाह मिश्र जी! आप खूब पढ़ते हैं। कोई अपना बनाया कवित्त भी सुनाइए।

शिवानन्द ने कृष्ण के प्रति गोपियों के उपालंभ का भावपूर्ण कवित्त सुनाया। वीरेन्द्र और चन्द्रनाथ दोनों ने प्रशंसा की।

कुछ दिनों बाद चन्द्रनाथ ने जाना कि शिवानन्द सिर्फ सरल व्रज-काव्य-रसिक ही नहीं है, वह खड़ी बोली के काव्य का कटु आलोचक भी है। द्विवेदी-युग के खड़ी बोली के काव्य में माधुर्य नहीं है, और छायावादी काव्य में प्रसाद-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गुण नहीं है, और प्रवाह और स्वाभाविकता तो हैं ही नहीं; इससे सिद्ध होता है कि खड़ी बोली काव्य-रचना के लिये उपयुक्त नहीं—यही शिवानन्द की आलोचना का सारांश था।

'लेकिन मिश्र जी, अब व्रजभाषा में तो कविता नहीं हो सकती', चन्द्रनाथ ने कहा।

'क्यों नहीं हो सकती? जैसे व्रजभाषा प्रदेश-विशेष की बोली है, वैसे ही खड़ी बोली भी है।

'बात यह है कि गद्य और पद्य की दो भाषाएँ नहीं हो सकतीं; ऐसा विभाग कृत्रिम होगा।'

किन्तु शिवानन्द का समाधान नहीं हुआ; स्वयं चन्द्रनाथ को भी अपने उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ। शिवानन्द इस बात पर जोर देता रहा कि व्रज की ललित-कोमल बोली कविता का माध्यम बनी रहे, वह गद्य का माध्यम भी रहे, यह कहने का साहस उसे नहीं हुआ।

चन्द्रनाथ बदायूँ का रहनेवाला है, वहाँ की मातृभाषा भी व्रज है, यद्यपि पढ़े लिखे लोग अब क्रमशः उसका व्यवहार छोड़ रहे हैं। जिस भाषा ने शताब्दियों तक असंख्य देशवासियों के कंठ और हृदय पर राज्य किया है आज सहसा वह क्यों इस प्रकार तिरस्कृत हो रही है? यह प्रश्न उस समय चन्द्रनाथ के मन में आया, पर वह उसका कोई उत्तर न पा सका।

बहुत दिनों बाद, बदायूँ के एक बड़े जलसे में भाग लेते हुए, जब कि वक्ता लोग शुद्ध खड़ी बोली में भाषण कर रहे थे, ऊपर का प्रश्न उसके मन में फिर उठा। तब उसे प्रतीत हुआ कि गद्य-पद्य के माध्यम का यह परिवर्तन एक क्रान्तिकारी परिवर्तन था जिसके कारणों की खोज महत्त्व रखती है।

तब उसने सोचा—व्रजभाषा के इस अभूतपूर्व ह्रास का क्या कारण हुआ है, और क्या वही कारण भारतीय संस्कृति के ह्रास का भी नहीं है।

व्रज के कवि यदि अपनी भाषा में लिखते रहते, और ऐसा साहित्य लिखते जो नए युग की ज़रूरतों को पूरा करता, नए युग की आत्मा को प्रकाशित

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता, तो कोई कारण न था कि वह आधुनिक पाठकों को आकृष्ट न करता। किन्तु व्रजभाषा अपने कवियों को वैसी प्रेरणा न दे सकी—अपने स्वर और प्रकार को बदलने की अपेक्षा उसने मृत्यु या अधोगति को पसन्द किया। परिवर्तन से डरकर अतीत को पकड़े रहनेवाली संस्कृतियाँ भी इसी प्रकार मरती हैं।

यह सब उसने बाद को सोचा, तब जब वह बड़ी गम्भीरता से भारतीय संस्कृति के जीवन-मरण की समस्या से उलझ रहा था। इस समय, शिवानन्द की भावनाओं का ध्यान रखते हुए, वह स्पष्ट रूप में यह नहीं कह सका कि—अब व्रज की कविता मर चुकी है।

एक दिन शिवानन्द ने एक प्रसिद्ध कवि की पुस्तक लाकर चन्द्रनाथ से उसके कुछ पद्यों का अर्थ समझाने को कहा। चन्द्रनाथ ने उन पद्यों पर दृष्टि डालकर कहा—मैं इन पद्यों का अर्थ नहीं लगा सकूँगा, मिश्रजी, अपने प्रोफेसर से पूछिए।

शिवानन्द ने हँसकर कहा—यही आपके आधुनिक कवियों की कविता है जिसे आप एम्० ए० तक पढ़कर भी नहीं समझ सकते।···प्रोफेसर समझा सकते तो आप से क्यों पूछता? वे लोग तो यह कहकर छुट्टी ले लेते हैं कि यह रहस्यवाद है।

चन्द्रनाथ—आपका क्या विचार है, क्या यह रहस्यवाद नहीं है?

शिवानन्द— लोग कहते हैं तो जरूर रहस्यवाद होगा। लेकिन एक बात समझ में नहीं आती, आज के रहस्यवादी कवि इतना बनठन कर और ऐसी नजाकत से क्यों रहते हैं।

चन्द्रनाथ मुस्कुराने लगा।

'आप रहस्यवादी कविता नहीं लिखते क्या?'

चन्द्रनाथ—मैं यह तो नहीं जानता कि रहस्यवादी काव्य क्या होता है, पर बचपन में निर्गुण-विषयक भक्ति-काव्य अवश्य लिखता था। अब वह विश्वास नहीं रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शिवानन्द—विश्वास नहीं रहा, इसका मतलब ?

चन्द्रनाथ—कोई वैसा गूढ़ मतलब नहीं है। मेरी यह समझ में नहीं आता कि इस युग में रहते हुए इन कवियों को ईश्वर की सत्ता में सन्देह कैसे नहीं होता।

शिवानन्द—यह आप विचित्र बात कह रहे हैं, यदि ईश्वर नहीं है तो इस दुनियाँ को बनाया किसने ?

'और यदि ईश्वर है तो क्या उसे ऐसी ही दुनियाँ बनानी चाहिए थी, मिश्रजी ?' चन्द्रनाथ ने सूखी हँसी हँसकर कहा।

'लेकिन रहस्यवादी कविता तो रवीन्द्रनाथ भी कहते थे, और वे भी ईश्वर को मानते थे।'

रवीन्द्रनाथ का नाम सुनकर वह कुछ सोचने लगा।

रवीन्द्र के जीवन-दर्शन से सहानुभूति न रखते हुए भी वह उनके काव्य में रस पाता है, इसी से उसे लगता है कि काव्य का आकर्षण किसी खास जीवन-दर्शन का अपेक्षी नहीं है। कविता, शायद, व्यक्तित्व के कुछ ऐसे निगूढ़ स्तरों को छूती है जहाँ दार्शनिक और सांस्कृतिक, भिन्नताएँ किसी अतर्कित प्रक्रिया से एक हो जाती हैं—जहाँ मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है, किसी खास धर्म या दर्शन का अनुयायी नहीं। और उसे लग रहा है कि वह कविता जो सिर्फ रहस्यवाद का नाम लेकर ही अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित कर पाती है, वस्तुतः श्रेष्ठ कविता नहीं हो सकती।

शिवानन्द से उसने कहा—जिस समय रवीन्द्रनाथ का मस्तिष्क बन रहा था उस समय ईश्वर में विश्वास करना कठिन न था, और उस समय रहस्यवादी काव्य भी अस्वाभाविक नहीं लगता था। पर आज की बात दूसरी है, अब एक महायुद्ध हो चुका है और दूसरे की तैयारियाँ हो रही हैं। आज यह मानने का साहस कम होता है कि मनुष्य का रक्त-रंजित इतिहास हेगेल या रवीन्द्र के परब्रह्म की अभिव्यक्ति है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आप की बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती; महायुद्ध और रहस्यवाद में भला क्या सम्बन्ध हो सकता है ! युद्ध तो पहले भी हुए हैं लेकिन उन्होंने कबीर और रवि बाबू को रहस्यवाद लिखने से नहीं रोका।...हाँ, मैं यह मान सकता हूँ कि छायावादी कवि वास्तव में रहस्यवादी नहीं हैं क्योंकि उनका जीवन वैसा अनासक्त नहीं है जैसा कबीर तथा तुलसी आदि भक्त कवियों का था।'

चन्द्रनाथ—(हँसकर)–वही तो, मेरा मतलब भी वही है। मेरा अनुमान है कि छायावादी काव्य मुख्यतः प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है, और ऐसा काव्य लिखना कोई अपराध नहीं है।

: १२ :

चन्द्रनाथ को इस समय सब से ज्यादा चिंता इन बात की थी कि वह कुछ कमा सके। भाई के न कहने पर भी वह यह अच्छी तरह जानता था कि उन्हें उसका आर्थिक भार वहन करना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है।

उसने अपने कई साथियों को टचूशन करके भोजन, फीस आदि का प्रबन्ध करते देखा था। टचूशनों में फँसे रहने के कारण ही ये छात्र अच्छे नम्बरों से पास नहीं होते थे, यह वह जानता था। इसीलिए उसने अब तक कभी टचूशन करने की कोशिश नहीं की। समाज हमारे प्रमाणपत्रों को देखना चाहता है, पर उन परिस्थितियों को नहीं जिनमें हम उन्हें प्राप्त करते हैं। विद्यार्थियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi.Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

की ग़रीबी पर से सावधानी-सहित अपनी दृष्टि हटाकर हमारे परीक्षक औ हमारा समाज उनकी प्रतिभा का निष्पक्ष निर्णय करने का दावा करते हैं।

टच्यूशन कैसे ढूँढ़ी जाती है, यह चन्द्रनाथ एकदम नहीं जानता। उस अपनी कठिनाई कॉटेज के सदस्यों पर प्रकट की। शिवानंद ने निराशा-व्यंज स्वर में कहा—आजकल टच्यूशन मिलना बहुत कठिन हो गया है। फिर अभी त शुरू साल है, विद्यार्थी प्रायः परीक्षा पास आने पर ही शिक्षक की खो करते हैं।

चन्द्रनाथ की आशा-लता पर वज्र-प्रहार हुआ, यदि टच्यूशन न मिली त वह क्या करेगा ? वह कविता की दो-तीन पुस्तकें लिख चुका था, पर अनुभव उसे बता दिया था कि कविता का रुपए के रूप में कोई मूल्य नहीं है। पत्र-संपाद कविताओं को खाली पृष्ठ भरने का साधन समझते हैं, वे उन्हें छाप कर कवियों को काफी अनुगृहीत कर देते हैं; और प्रकाशकों का यह निश्चित मत कि काव्य-पुस्तकें बिकतीं नहीं, इसलिए रुपया देकर कापीराइट लेना जोखि का काम है। वे यदि किसी लेखक की काव्य-कृति यों ही लेकर भी छापने क तैयार हो जायँ तो उसे उनका कृतज्ञ होना चाहिए। चन्द्रनाथ ने इस प्रका उपकृत होने से इनकार कर दिया था, इसीलिए उसकी पुस्तकें अभी तक प हुई थीं। ऐसी परिस्थिति में टच्यूशन ही उसका अवलम्ब थी।

चन्द्रनाथ को चिन्तित देखकर वीरेन्द्र ने ढाढ़स देते हुए कहा—घबरा नहीं, मिस्टर चन्द्रनाथ, मेरे एक मित्र है मिस्टर नागर; "अग्रगामी" औ "नेशन" के संवाददाता हैं, बड़े प्रभावशाली आदमी हैं। मैं उनसे कहूँगा; जरूर आपके लिए टच्यूशन ढूँढ देंगे।

चन्द्रनाथ आश्वस्त होकर प्रतीक्षा करने लगा।

चार-पाँच दिन बाद चन्द्रनाथ जब यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में था, त उसने वीरेन्द्र को एक अपरिचित युवक के साथ आते देखा। पास पहुँचक वीरेन्द्र ने दोनों का परिचय कराया—'यह हैं मेरे मित्र मिस्टर रामचन्द्र नाग बी० ए०, एल० एल० बी० फ़ेल, और यह हैं मिस्टर चन्द्रनाथ इलाहाबाद

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फर्स्ट क्लास एम० ए० ।' चन्द्रनाथ ने बड़े संकोच से उठकर नागर से हाथ मिलाया ।

नागर स्वस्थ, चंचल और तेज बोलेनेवाला व्यक्ति है। एक ही मिनट के परिचय में वह घरेलू स्वर में बात करने लगा।

'आपने एम० ए० किस विषय में किया है ?'

'संस्कृत में'

'और बी० ए० में आपके क्या विषय थे ?'

'दर्शन, अंग्रेजी साहित्य और संस्कृत ।'

'आप कविता भी करते हैं ?' नागर ने अपने दूध जैसे स्वच्छ दाँतों से हँसने की चेष्टा करते हुए पूछा ।

'कभी-कभी लिख लेता हूँ', चन्द्रनाथ ने संकोच से कहा ।

'आपकी कविताएँ मासिक पत्रों में निकलती हैं ?'

'कभी-कभी ।'

'कोई पुस्तक भी निकली है ?'

'अभी तक तो नहीं ।'

नागर के हाथ में एक पतले मासिक पत्र की कुछ प्रतियाँ थीं। चन्द्रनाथ उनके बारे में पूछना ही चाहता था कि उसने एक प्रति उसे देते हुए कहा—'देखिए यह पत्र है "छात्र वाणी"; इसके लिये कविता, लेख आदि देना ।'

चन्द्रनाथ "छात्रवाणी" के पृष्ठ उलट कर देखने लगा।

'अच्छा चलें,' कहते हुए नागर ने बीरेन्द्र की ओर देखा, 'टयूशन हम इन्हें दिला देंगे ।'

वह नमस्कार करके तेज़ी से लाइब्रेरी के बाहर हो गया ।

'विचित्र व्यक्ति मालूम होते हैं'—चन्द्रनाथ ने नागर पर टिप्पणी की ।

'विचित्र नहीं, साहब, इसकी यूनिवर्सिटी पर धाक है। सब प्रोफेसर और यहाँ तक कि वाइसचांसलर भी इसे मानते हैं। वैसे बहुत शरीफ़ आदमी है; दोस्ती निभानेवाला और दोस्तों के काम आनेवाला। मेरा तो हमेशा काम कर देता है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'यह "छात्रवाणी" कब से निकल रही है ?'

'अभी इसी महीने से ! यह आपके हाथ में पहला अंक है। दूसरा पन्द्रह अगस्त तक निकलेगा। यह नागर की ही करामात है साहब, कि यूनिवर्सिटी के छात्रों का एक पत्र निकलने लगा।'

'काम सचमुच साहस का है। इसके ग्राहक कितने बन गए होंगे ?'

'ठीक नहीं मालूम; पर नागर है बड़ा तिकड़मी आदमी। देखिए इस पहले अंक के लिए उसने कितने विज्ञापन जुटा लिए हैं। इसके अतिरिक्त उसकी ग्राहक बनने की प्रार्थना को कम-से-कम कोई अध्यापक तो ठुकरा न सकेगा।'

चन्द्रनाथ की समझ में नहीं आया कि अध्यापकों पर नागर का इतना प्रभाव किसलिए है। उसमें विशेष प्रतिभा तो मालूम होती नहीं—वीरेन्द्र ने ही बतलाया था कि वह बी० ए० में बड़ी कठिनता से पास हो सका था, और एल्० एल्० बी० तो पास कर ही नहीं सका। वह विशेष अच्छा वक्त भी नहीं लगता। फिर उसकी शक्ति और प्रसिद्धि का क्या रहस्य है ?

किन्तु उसे नागर की क्षमता की वास्तविकता का आभास पाने के लिए ज्यादा दिनों इन्तजार नहीं करना पड़ा। दो-तीन दिन बाद ही नागर ने वीरेन्द्र के माध्यम से उसे खबर दी कि उसने ट्यूशन ढूँढ ली है। चन्द्रनाथ ने उच्छ्वसित कण्ठ से उसे धन्यवाद दिया। नागर ने "छात्रवाणी" के प्रथम पृष्ठ के लिए कविता माँगी थी जो चन्द्रनाथ ने प्रसन्नता से दे दी। कई दिन बाद भेंट होने पर नागर ने चन्द्रनाथ से पूछा—

'क्या रिसर्च के काम से तुम्हें बिलकुल फुर्सत नहीं मिलती ?'

चन्द्रनाथ—नहीं, ऐसा तो नहीं है।

'तो फिर तुम "प्रोग्रेसिव क्लब" (प्रगतिशील परिषद्) के मेम्बर क्यों नहीं बन जाते ?'

क्लब-जीवन से जो चन्द्रनाथ बचा रहता था उसका कारण उसकी आर्थिक तंगी थी; प्रत्येक संस्था का सदस्य होने में कुछ खर्च करना पड़ता है। किन्तु नागर से वह यह बात नहीं कहना चाहता था। नागर ने उसे ट्यूशन दिलाई थी, इसलिए उसने क्लब का सदस्य बनना स्वीकार कर लिया।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वीरेन्द्र ने एक दिन फुर्सत में बैठकर चन्द्रनाथ को नागर की चरित्र-गाथा सुनाई। उसका सारांश इस प्रकार था। नागर एक असाधारण व्यक्ति है—उसके परीक्षा-फलों से उसका महत्त्व आँकना नितान्त गड़गड़ बात है। नागर को इस बात का दावा है—और यह दावा ठीक है—कि वह "प्रतिभा" की उपस्थिति को तुरंत ही पहचान लेता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति नागर की दृष्टि से कभी छिपा नहीं रह सकता, और जो नागर की दृष्टि से छिपा रहे वह प्रतिभाशाली नहीं है। नागर बड़ा विद्वान् या विचारक है, सो नहीं; उसे स्वयं भी यह भ्रम नहीं है। पर उसमें वह दिव्य दृष्टि जरूर है—ऐसा नागर का ही नहीं, वीरेन्द्र का भी विश्वास था—जो "आदमी" को पहचान लेती है। नागर प्रतिभाशालियों को पहचान ही नहीं लेता, वह उन्हें प्रोत्साहन और सहायता देता है। उनके लिए प्रेस अर्थात् पत्रों में प्रोपैगेण्डा करना, यह उसके प्रोत्साहन का महत्त्वपूर्ण ढंग है, पर केवल यही नहीं। नागर के ढंग विविध और वैचित्र्यपूर्ण हैं। योग्य व्यक्तियों को प्रसिद्धि प्राप्त कराना, यही नागर के जीवन की पुण्यचर्या है। नागर कांग्रेसी है, पर उसे कांग्रेस के बाहर के आदमियों को अनुगृहीत करने में कोई एतराज नहीं है। वह लिबरलों पर भी कृपा करता है, हिन्दुओं पर भी, मुसलमानों पर भी। प्रयाग विश्वविद्यालय के तो दर्जनों छात्र उसके ऋणी हैं। प्रयाग के अनेक नेताओं पर भी उसका आभार है।

नागर इच्छा होते ही किसी के यश को बना या बिगाड़ सकता है, तभी तो उसका इतना आतंक है। छोटे और बड़े किसी के लिये भी, जो थोड़ी-सी भी महत्त्वाकाङ्क्षा रखता है, नागर नगण्य नहीं है।...किन्तु नागर से व्यवहार रखने में सावधानी की जरूरत है; वह बड़ा मानी व्यक्ति है, कभी अपमान या उपेक्षा नहीं सह सकता।

वीरेन्द्र ने चन्द्रनाथ को नागर का एक पत्र दिखाया। पत्रों में और बात-चीत में भी नागर को अपना नाम लेकर बोलना पसन्द है। चन्द्रनाथ ने देखा कि नागर ने पत्र में "मैं" की जगह "नागर" का प्रयोग किया है, और प्रथम पुरुष की क्रियाओं के बदले अन्य पुरुष की क्रियाओं का। वीरेन्द्र के पूछने पर कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'क्या यह पत्र अच्छा नहीं है ?' चन्द्रनाथ ने समर्थन-सूचक सिर हिलाया। उसकी यह भी समझ में आ गया कि क्यों नागर के पत्र उसके मित्रों को अच्छे लगने चाहिए। उनमें पद-पद पर फूट पड़नेवाला नागर का अखण्ड अभिमान वाचक को आत्मनिष्ठ दुर्बलता से मानो ऊपर उठा देता है। कोई आश्चर्य नहीं यदि नागर के मित्र उसे असाधारण व्यक्ति समझें।

नागर किसी काम को अधूरा छोड़ना नहीं जानता—वीरेन्द्र के अनुसार यह नागर का बहुत महत्त्वपूर्ण गुण है। वह जिस काम या व्यक्ति के पीछे लग जाता है उसे ठिकाने लगाकर छोड़ता है। वह आपको प्रसिद्ध करेगा, या बदनाम; उसके संसर्ग में आकर आप भूले हुए नहीं रहेंगे। 'इसलिये आप "प्रोग्रेसिव क्लब" के मेम्बर जरूर बन जाइए, मिस्टर चन्द्रनाथ। नागर जो कुछ कहता या करता है वह बहुत सोच-समझकर; मैं कहता हूँ कि आप थोड़े दिनों में मशहूर हो जाएँगे।'

: १३ :

दो-तीन दिन बाद ही चन्द्रनाथ को "प्रोग्रेसिव क्लब" के मंत्री से सदस्य बनने के लिए निमंत्रण मिला। एक दिन मंत्री जी ने उससे विश्वविद्यालय में स्वयम् भेंट भी की। फलतः वह सदस्य बन गया। मंत्री जी से तथा अन्य स्रोतों से भी उसे क्लब के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें मालूम हुईं। यह क्लब कई दृष्टियों से असाधारण था। चार-पाँच वर्ष पहले उसका जन्म हुआ था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उसका एक ही मंत्री चला आता था। मंत्री महाशय का नाम था मन्मथकुमार। वह असामान्य उत्साही छात्र था। क्लब का मंत्रित्व करते-करते ही की छात्रावस्था बीती थी। उसने बी० ए० किया, एम० ए० किया और रिसर्च का विद्यार्थी था। विश्वविद्यालय के सब प्रोफेसरों को वह जानता। प्रायः सब उल्लेखनीय प्रोफेसरों को वह अपने क्लब में बुला चुका था। के अनेक नेताओं को भी वह आमंत्रित कर चुका था। प्रयाग में आने पर गण उसके फन्दे से कम बच पाते; जिसे वह बुलाना चाहता उसके पास एक, तीन या अधिक बार जाने में कोई संकोच या आयास नहीं मानता। क्लब रजिस्टर में उसके सुयोग्य मंत्री द्वारा लिखित प्रत्येक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के ाँ पदार्पण करने का पूरा विवरण मिल सकता था। विशेषतः किसने क्लब र उसके सदस्यों के सम्बन्ध में कब और क्या कहा, यह मन्मथकुमार ने माणिक रूप से दर्ज कर रखा था। महापुरुषों से क्लब को मिले हुए यह माणपत्र नए भरती होनेवाले सदस्यों को वर्ष के आरम्भ में सुना दिए ते थे।

"प्रोग्रेसिव क्लब" हर एक के लिए नहीं था—यह उसकी दूसरी विशेषता । उसमें प्रायः उन्हीं छात्रों को सदस्य बनाया जाता था जो अपने विद्यार्थी-वन में असाधारण रह चुके थे, जिन्होंने प्रथम श्रेणी में परीक्षाएँ पास की ं, पदक पाए थे। इस नियम के कुछ अपवाद भी थे, जिनमें स्वयं मंत्री होदय मुख्य थे।

क्लब के सदस्यों में काफी विविधता थी। उनमें ग्रेजुएट भी थे, अंडर-जुएट भी। उनकी अवस्थाओं में भी काफी अंतर था, सोलह-सत्रह से लेकर ताईस-अट्ठाईस तक। राजनीति, अर्थशास्त्र, साहित्य, दर्शन, विज्ञान—सभी रुचि रखनेवाले छात्र थे। सदस्यों में एक-दो कवि थे; एक प्रसिद्ध आलोचक, जो "समालोचक" पत्र का संपादन करते थे। दो महिला-सदस्याएँ भी थीं। ल सदस्यों की संख्या पच्चीस के लगभग थी।

ऐसे क्लब का सदस्य बनाए जाने पर वीरेन्द्र ने चन्द्रनाथ को बधाई दी। नों समझते थे कि इसका श्रेय नागर को है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नागर मन्मथकुमार का मित्र था, अथवा यों कहिए कि मन्मथकुमार के मित्रों और प्रशंसकों में से था। इसमें मन्मथकुमार का लाभ था। कभी-कभी क्लब के व्याख्यानों का उल्लेख अपने पत्रों में कर देता था। कभी व्याख्याताओं के फोटो भी निकल जाते थे।। इससे मन्मथकुमार गर्व का अनुभव होता था। उसने अपने व्यक्तित्व को क्लब में पूर्णतया कर दिया था। नागर और मन्मथकुमार का यह स्वर्ण-सुगन्ध योग ही क्लब इतना प्रसिद्ध और प्रभावशाली बना सका था।

वीरेन्द्र ने क्लब की बावत कविता करनी शुरू की। विश्वविद्याल सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क "प्रोग्रेसिव क्लब" में हैं। पिछले तीन वर्षों में लोग बी० ए० में प्रथम अथवा प्रथम श्रेणी में पास हुए हैं उन अधिकांश उक्त क्लब के सदस्य हैं। एम्० ए० के फर्स्ट क्लास भी उसी में भरे हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी के कतिपय प्रसिद्ध कवि आलोचक उसके मेम्बर हैं। वास्तव में "प्रोग्रेसिव क्लब" से किसी क्लब की तुलना नहीं हो सकती।

"प्रोग्रेसिव क्लब" की यह स्तुति चन्द्रनाथ को बड़ी विनोदपूर्ण उसकी दृष्टि में न तो फर्स्ट क्लास ही कोई बड़ी चीज थी, न कवि आलोचकगण। फिर भी इस प्रशंसा ने उसकी कल्पना को स्पर्श किया हिंदी-साहित्य के बारे में लम्बी-लम्बी स्कीमें बनाने लगा। तात्का हिंदी-साहित्य में, चन्द्रनाथ के अनुसार, सबसे बड़ी कमी यह थी कि अधिकांश लेखकों में सर्वभौम दृष्टिकोण का अभाव था। उनकी मह काङ्क्षाएँ प्रायः प्रांत के बाहर नहीं जाती थीं, और यदि गईं भी तो बंगा आगे उनकी गति नहीं थी। विश्वजनीन समस्याओं से उलझने का साह उनमें न था। हिंदी-लेखक अपने को संसार के लेखकों के बीच रखकर देखते, देखने का साहस भी नहीं करना चाहते, यह बात चन्द्रनाथ के स्थल पर चोट करती थी। जिस उत्तराखण्ड ने व्यास और वाल्मीकि, कालिदास, सूर और तुलसी को उत्पन्न किया है, उसके लेखकों में आज दैन्य क्यों है? आज वे विश्व की समस्याओं के बोझ से आकुल और

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

झाने को उत्साही क्यों नहीं हैं ? जीवन के विराट् नाटक से तटस्थ रहकर वे कोरे साहित्यिक वादों और "टेकनीक" की चिन्ता में अपनी शक्ति और य खो रहे हैं ? हिन्दी-साहित्यिक गोष्ठियों में "अमुक बड़ा है या अमुक" की र्चा रहती; किसी हिन्दी लेखक का विश्व-साहित्य में, स्वयं भारतीय हित्य में भी, कोई स्थान है, इस प्रश्न में कोई अभिरुचि नहीं रखता। स्वयं न्दी-लेखकों को भी इसकी कोई चिन्ता या लज्जा नहीं थी, उन्हें पारस्परिक तिस्पर्धा से ही छुट्टी न थी। चन्द्रनाथ ने दो प्रसिद्ध कवियों के सम्बन्ध में न रखा था कि वे एक-दूसरे को नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं छोड़ते, द्यपि व्यवहार में दोनों मित्र कहे जाते हैं। बिना विश्व-जीवन में अभिरुचि र साहित्य का आदर्श सम्मुख रखे हिन्दी-साहित्य की यथार्थ उन्नति नहीं सकती, ऐसा उसका विश्वास था।

आलोचना-साहित्य की दशा और भी खराब थी। साहित्य और उससे बद्ध मनोवैज्ञानिक, नैतिक एवं दार्शनिक समस्याओं पर दायित्वपूर्ण चिन्तन रनेवालों का अभाव-सा था। प्राचीन अलंकार-शास्त्रों का प्रभाव घट रहा ा, किन्तु उनके स्थान में नए-पुराने योरपीय वादों की दुहाई देना फैशन हो ला था। हिन्दी-लेखक योरपीय शास्त्रों—वहाँ के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, र्थिक और सामाजिक सिद्धान्तों से नया-नया परिचय प्राप्त कर रहे थे, सलिए उनकी प्रतिक्रिया बहुधा कुतूहल और प्रशंसा के भाव से आक्रान्त रहती, और उसमें बौद्धिक एवं नैतिक सन्तुलन का अभाव रहता। अपेक्षाकृत अधिक रिश्रम से प्राप्त होने के कारण उन्हें योरपीय ज्ञान-विज्ञान का प्रत्येक अंश वराट् और भव्य लगता। विश्व के विचार-क्षेत्र में स्वच्छन्द विचरण कर कनेवाले कम थे। अभी हिन्दी-लेखकों का पूर्व और पश्चिम दोनों की अनुभव-राशि से अपूर्ण परिचय था, और वे जीवन एवं जगत् को अपनी आँखों से खने के अभ्यस्त नहीं बन पाए थे। कुछ लेखक इस नियम के अपवाद भी थे, र वे, उपयुक्त वातावरण के अभाव में, अपनी प्रतिभा पुष्ट और पल्लवित नहीं कर पा रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ ने सोचा कि वह प्रोग्रेसिव क्लब के उत्साही सहयोगियों की सहायता से भारतीय मस्तिष्क के इस बहुमुखी दैन्य को दूर करने की कोशिश करेगा। हमें सिर्फ नूतनता के कारण योरप के किसी सिद्धान्त को ग्रहण नहीं कर लेना चाहिए। विज्ञान की कृपा से जो हमारे अनुभवक्षेत्र का विस्तार हो गया है, उससे परिचित होकर उसकी व्याख्या करने की क्षमता प्राप्त करने के लिए ही विश्व-साहित्य का अध्ययन है, दूसरों की व्याख्या को देखते ही स्वीकार कर लेने के लिए नहीं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक उच्च कोटि का पत्र निकालना होगा। ग्राहकों की समस्या नागर हल कर लेगा (इस नागर की शक्ति पर आश्चर्य किए बिना कौन रह सकता है?)। हिन्दी में अब वह उच्चकोटि की निष्पक्ष आलोचना का आरंभ होना चाहिए। हमारा पत्र दलबन्दियों से एकदम ऊपर होगा। उसमें सिर्फ उच्चतम कोटि रचनाएँ छापी जाएँगी, और प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जायगा। आखिर लेखकों के भी तो पेट हैं....

सबसे ज्यादा आनन्द की बात चन्द्रनाथ के लिए यह आशा थी प्रोग्रेसिव क्लब के माध्यम से वह कुछ साहित्यिक मित्र पा सकेगा। न क्यों साहित्यकार अपनी रचना "किसीको" दिखाना चाहता है; साहित्य-सृष्टि के उल्लास-भार को जैसे वह अकेले वहन नहीं कर सकता! कितनी तत्परता से वह अपने जीवन में ऐसे व्यक्ति के प्रवेश की बाट जोहता है जो उसके भावुक हृदय को प्यार की दृष्टि से देख सके; जो उसके कलात्मक उच्छ्वास से कभी न ऊबे जैसे प्रेमी-युगल पारस्परिक प्रेमालापों से; जो उससे यही कहता रहे—"अभी और बोलो, मेरे हृदय में तुम्हारी वाणी के लिए अनंत जिज्ञासा, अनंत प्यास है।"

अपने मित्र को कलाकार क्या दे सकता है? अपनी मृदुता और अपनी भावनाओं का कोमल उपहार। मित्र की उपस्थिति में कला-सृष्टि हृदय का आदान-प्रदान, आत्म-समर्पण की क्रिया, बन जाती है। तब उसमें परिश्रम नहीं होता, तब उसका परिश्रम मानो आध्यात्मिक रति के आनन्द में जाता है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्या चन्द्रनाथ को ऐसा मित्र मिलेगा ? वह अपने कल्पना-स्वप्न में मुस्कुरा था।

उसी समय शिवानन्द ने बाहर आकर दो पत्र दिए; एक प्रोग्रेसिव क्लब मंत्री का था और दूसरा, चन्द्रनाथ ने आनन्दपूर्ण विस्मय से देखा—धना का।

उसने पहले मन्मथकुमार का पत्र खोला। आगामी रविवार को क्लब की क होगी, कोई सज्जन "भारत का भविष्य" पर चर्चा पढ़ेंगे, और उसमें न्द्रनाथ की उपस्थिति प्रार्थित है, यही उस पत्र का सारांश था। पढ़कर न्द्रनाथ ने वह पत्र कुतूहली शिवानन्द को दे दिया। दूसरा पत्र पढ़ने के लिए ह काटेज के कच्चे आँगन में चला गया।

हरिद्वार जाकर साधना ने चन्द्रनाथ के नाम पत्र लिखा था जिसका उसने टा-सा उत्तर दिया था। प्रस्तुत पत्र उसी का प्रत्युत्तर था और शिवपुरी से ला गया था। पत्र इस प्रकार था:—

सम्मान्य भाई जी,

आपका छोटा-सा पत्र हरिद्वार में मिला था। उसे पाकर क्यों और कितनी प्रसन्न हुई थी, कहना कठिन है। तब से अब तक 'आपको पत्र लखना है' इस भावना में लीन रही हूँ। आपको एम० ए० में प्रथम श्रेणी ने की कोई खुशी नहीं हुई, पर मुझे तो हुई। इसलिए मैं बिना बधाई दिए हीं रह सकती थी। मेरे लिए तो प्रथम श्रेणी दूर की चीज दिखाई देती ; कभी-कभी पास होना भी समस्या दीखती है।... "आपने लिखा कि मैं ाई-संबोधन लिखकर आपसे हँसी करने का अधिकार छीन रही हूँ, सो क्या ाई-बहिन हँसी नहीं करते ? हाँ; वह हँसी कुछ दूसरे ढंग की हो सकती ।....फिर जीवन केवल हँसी के लिए ही तो नहीं है।....कभी-कभी मस्तिष्क तरह-तरह के प्रश्न उठ खड़े होते हैं। तब खोजती हूँ कि कोई शिक्षक मिल ाय जो उनका समाधान कर दे, अथवा कोई साथी मिले जिसके साथ ालोचना-प्रत्यालोचना कर लूं। भाई जी, मुझे लगता है कि आपको पाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मेरे ये दोनों अभाव पूरे हो गए हैं। किन्तु आप घाटे में रहेंगे, अपनी लता से मैं आपको निरन्तर परेशान करती रहूँगी'।

आपने दर्शन पढ़ा है, इसलिए पूछती हूँ—जीवन किसलिए है ? मानव की क्या सार्थकता है ? और उसमें भी नारी का जीवन किसलिए है ? सृष्टि विधाता की भूल नहीं है क्या ? और हमारे नैतिक भेद क्या नहीं हैं ? भलाई-बुराई का मूलाधार क्या है ? और एक आपको रुचिकर पूछूँ—जीवन में साहित्य का क्या प्रयोजन है ?

यहाँ बरसात लग गई है—बहुत दिनों से बादल घुमड़ रहे हैं। ऐसे में हमारी जीजी को अकेले छोड़ जाना आपका अन्याय ही कहा जायगा, जीजी यहाँ आ जायें तो अच्छा हो। वे यहाँ किसी परीक्षा की तैयारी भी सकेंगी। अकेले जी घबराता है। अभी और क्या लिखूँ ? क्या आप अमूल्य समय खर्च करके इस एकाकिनी बहिन को पत्र भेजने का ध्यान र उत्तर की प्रतीक्षा में,

आपकी बहिन,
साधना।

पत्र पढ़ते समय चन्द्रनाथ की देह में आनन्द का हलका कम्पन फैल था। जीवन में पहली बार उसे ऐसा पत्र मिला है, और उसकी समझ में आता कि किस प्रकार वह अपनी प्रसन्नता को प्रकट करे। साधना का पत्र पढ़कर, जो उसने सुशीला के नाम लिखा था, उसके हृदय में इस के प्रति थोड़ा-सा कौतूहल हुआ था, शायद इसलिए कि उसने उसकी के संबंध में कुछ सम्मति प्रकट की थी। उस कौतूहल का निवारक हों कारण ही उसे मास्टर साहब के घर उसका आतिथ्य स्वीकार करना लगा था। इसके बाद साधना हरिद्वार चली गई। चन्द्रनाथ ने सुशीला से था कि वह चाहे तो हरिद्वार जा सकती है, पर सुशीला अकेली जाने को न हुई। बोली—'मैं आपके बिना जाकर क्या करूँगी, मैंने क्या हरिद्वार नहीं है।' चन्द्रनाथ को यह सुनकर सन्तोष हुआ और उसकी हरिद्वार

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रने की ग्लानि बहुत कुछ दूर हो गई। हरिद्वार से साधना ने सुशीला के थ ही उसके नाम एक छोटा-सा पत्र भेजा। पत्र में उसने चन्द्रनाथ को 'पूज्य ई जी' कह कर संबोधित किया था और यह आशा प्रकट की थी कि वह ध्ययन-क्षेत्र में उसका पथ-प्रदर्शन करने का कष्ट करता रहेगा। उत्तर में द्रनाथ ने लिखा था—'मुझे इस प्रिय कार्य से कोई आपत्ति नहीं हो सकती, ल्कि आनन्द होगा, पर तुम भाई बनाकर मुझ से हँसी करने का अधिकार यों छीन रही हो ?' बाद को उसे लगा कि उसने वैसा उत्तर लिखकर अच्छा हीं किया।

साधना ने उसके उस उत्तर को विशेष महत्व न देकर उसे फिर भाई-बोधन से याद किया है, यह उसे प्रिय लग रहा है। पत्र का आत्मीयता का र उसे और भी अच्छा मालूम पड़ रहा है। अब तक उसे साधना कुछ काल्प-क सी, असामान्य सी, कुछ दूर की चीज़ लगती थी, रहस्य के आवरण में छपटी हुई। आज वह जैसे उस आवरण को भेदकर, अपने सीधे लौकिक रूप , अप्रत्याशित तेजी से उसके पास आ पहुँची है। वह इस आकस्मिक परि-र्तन के लिए पूरी तरह तैयार न था।

तो, अब से साधना उसकी बहिन है। यह बहिन क्या होती है, यह वह र्णरूप में नहीं जानता, क्योंकि उसके कोई अपनी बहिन नहीं हैं; और जिन हिनों को वह जानता है वे रुचि एवं विचारों से काफी भिन्न, काफी दूर हैं। फर भी वह इस सम्बन्ध की मधुर आत्मीयता से अपरिचित नहीं है। और आज जैसे वह इस सम्बन्ध को और भी निकट एवं गहरे रूप में महसूस कर रहा है। उसे लग रहा है कि यह सम्बन्ध नितांत सीधा और स्वाभाविक है, मानो उसका और साधना का यह चिरंतन संबंध है—वह अन्यथा हो ही नहीं सकता था।

साँझ को वह जब पत्र लिखने बैठा तो उसकी कल्पना के सम्मुख एक लम्बी, दुबली लड़की की मूर्ति थी। वह मूर्ति सुन्दर न थी, न असुन्दर, उसका चेहरा स्पष्ट नहीं था। वह जैसे 'बहिन' शब्द की घनीभूत प्रतिध्वनि मात्र थी। उसने लिखा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मेरी बहिन,

तुम्हारा सुन्दर पत्र मिला। तुमने जगह-जगह 'भाई'—शब्द लिख इच्छा होती है कि मैं भी इस पत्र को सिर्फ 'बहिन' संबोधन से भर आज मुझे यह शब्द कितना मधुर लग रहा है। इतनी जल्दी तुम मुझे अपनी लगने लगोगी, यह मैंने नहीं सोचा था। ⋯बहिन के मुख से 'पू और "सम्मान्य" दोनों ही विशेषण अच्छे नहीं लगते। आशा है, प्रथम को दूसरे को भी अपने पत्रों के शब्द-कोष से निकाल दोगी।⋯बहिन की लता से परेशान होने का जो सौभाग्य मिला है, उससे वंचित न हो जाऊँ, डर है; क्योंकि बहिन के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर देना शक्ति के बाहर जान है। तुम्हारे प्रश्न मानो मेरे ही अन्तर के प्रश्नों की प्रतिध्वनि हैं। साथ सोचा जा सकता है, इसके अतिरिक्त किसी समाधान की आशा न कर संभव है, बहिन-भाई के सम्मिलित चिन्तन से संसार का कुछ लाभ हो। किसलिए है, यह मैं नहीं जानता; शायद कोई नहीं जानता; शायद वह एक-दूसरे को स्नेह-सिक्त करने तथा उस भावना से आनंदित होने के लिए कम-से-कम युद्ध और घृणा उसका उद्देश्य नहीं है।

देखता हूँ, बहिन को भाई की अपेक्षा जीजी का अधिक पक्षपात है। क्या सहन ही करना पड़ेगा? और इतनी जल्दी अकेलेपन से इतना क्यों? जीजी को बुला सकती हो, पर कहीं कोई विशिष्ट प्रबंध करना तो श्यक नहीं हो गया है?⋯क्यों बहिन, यह "एकाकीपन" का रोग कैसे जाता है? मुझे भी यही शिकायत है।

तुम्हारा भाई,

चन्द्रनाथ

पत्र को एक बार पढ़कर उसने लिफाफे में बन्द कर दिया और लिखकर उसे छोड़ने चला। पोस्ट ऑफिस से वह सीधा पार्क की ओर हो गया। रास्ते भर उसका हृदय एक विचित्र आवेग से आन्दोलित था।

चन्द्रनाथ को साधना के प्रश्न कुछ काल्पनिक-से लगे थे, मानो वह पर प्रकट करना चाहती हो कि वह ऐसी कठिन समस्याओं से उलझती

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

है। इसीलिए उनपर अधिक लिखने की उसकी प्रवृत्ति न हुई। बाद के जीवन में उसे क्रमशः पता लगता गया कि साधना सचमुच ऐसे प्रश्नों पर बड़ी गम्भीरता से सोचती रहती है।

आज पार्क उसे अधिक सुन्दर लग रहा था और फूल अधिक मोहक; पेड़ों की हरीतिमा भी कुछ अधिक निखरी हुई प्रतीत हो रही थी।

जीवन के अनेक वर्षों में न जाने कितने दिन आते और चले जाते हैं। पता नहीं, महाकाल में उनका हिसाब रहता है या नहीं, पर हमारे क्षुद्र इतिहास में उनका उल्लेख प्रायः नहीं मिलता। उनमें से अधिकांश की स्मृति हमारे अन्तःपटल से सर्वथा विलुप्त हो जाती है; यद्यपि उनके संस्कार, अज्ञात तटवर्ती वृक्षों के फूल-पत्तों की तरह, हमारी चेतना-धारा में दूर तक बहे चले आते हैं।

किन्तु कुछेक दिन या क्षण ऐसे भी होते हैं जिनमें यह जीवन-सरिता, नई वेगवती धाराओं के मिलने से, यकायक नये रूपों और नई दिशाओं में बहने लगती है। चेतना के प्रवाह पर यह दिन और क्षण मानो शाश्वत भावावर्तों के पद-चिह्न छोड़ जाते हैं।

चन्द्रनाथ की चेतना के इतिहास में आज का दिन कुछ ऐसा ही था। एक नया फूल खिलने से वाटिका की जैसी दशा होती है, कुछ वैसी ही उसकी चित्त-वृत्ति थी। आज उसकी भावभूमि में एक नई नारी-मूर्ति ने बहुत ही अंतरंग, कोमल, स्निग्ध और स्वच्छ सम्बन्धग्रन्थि के रूप में प्रवेश किया था जिससे उसका सारा अस्तित्व अनिर्वचनीय ढंग से आन्दोलित हो उठा था।

उस रात को सोते समय वह रह-रहकर सोच रहा था कि 'अब मुझे एक बहिन मिल गई है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

:१५

रविवार को चन्द्रनाथ क्लब की मीटिंग में उपस्थित होने गया। वह ठी समय पर पहुँचा था, लेकिन अभी सब सदस्य आ नहीं पाए थे। एक व वस्त्रावृत मेज के चारों ओर बेंत की कुर्सियाँ पड़ी थीं, जिनमें से कुछ पर आ हुए सदस्य बैठे थे। मेज पर मिठाई और नमकीन की तश्तरियाँ लगाई रही थीं।

मंत्री ने उपस्थित सज्जनों से चन्द्रनाथ का परिचय कराया। फिर व चन्द्रनाथ के पास ही बैठकर क्लब के उद्देश्यों और आदर्शों की व्याख्या क लगा। समय-समय पर क्लब के संबंध में प्रकट की गई प्रशंसात्मक सम्मति का कुछ अंश भी चन्द्रनाथ ने सुना।

उसने देखा कि क्लब के सदस्यों में उसके प्रति कोई विशेष उत्सुकता भाव नहीं है। अधिकांश सदस्य सम्पन्न घरों के जान पड़ते थे। वे आपस तीन-तीन, चार-चार की टुकड़ियों में बँटे बातें कर रहे थे। कुछ सदस्य गरी भी लगते थे, यद्यपि वेषभूषा की दृष्टि से उनमें कोई कमी न थी। कीमती सू बूटों का आवरण रहते हुए भी उनकी दरिद्रता उनके कांतिशून्य चेहरों, ओजही वाणी और समर्थन-सूचक संकेतों से मानो बरबस झलकी पड़ती थी। हमा सामाजिक आदर बहुधा हमारे कपड़ों पर निर्भर रहता है; इसीलिए विश्व विद्यालयों और कालेजों के छात्र दूध, घी आदि से खर्च बचाकर अच्छे क पहनने की कोशिश करते हैं। शरीर की अपेक्षा वस्त्रों की ज्यादा चिन्ता हमा सभ्यता का आवश्यक अभिशाप है।

चन्द्रनाथ ने देखा कि वहाँ उसके अतिरिक्त प्रायः सभी लोग कोट-पतल पहने हैं। विशेषतः धोती पहने उस समय वही अकेला था। दो-एक सदस्यों खादी या लट्ठे के पाजामे भी पहन रखे थे। क्लब के अधिकांश सदस्य किसी किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे थे—जैसा कि चन्द्रनाथ ने ब

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

को जाना, अतः उन्हें कोट-पतलून का सहज अभ्यास था। इसके अपवाद तीन-चार ही थे। शायद इसी कारण चन्द्रनाथ अपने तथा अन्य सदस्यों के बीच एक विशेष प्रकार की दूरी का अनुभव कर रहा था।

क्लब-संबंधी आवश्यक परिचय देने के कुछ देर वाद मंत्री जी उठ गए थे। चन्द्रनाथ चुपचाप बैठा अन्य सदस्यों की बातें सुनने लगा। उसकी बाईं ओर के कतिपय सदस्य ज़ुबेदा और कान्ता नाम की दो अभिनेत्रियों के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे। उन सदस्यों में, जैसा कि उसने बाद में जाना, एक सिनेमा के आलोचक थे, दूसरे आलोचक बनने के आकाङ्क्षी। आलोचक महोदय ज़ुबेदा के विशेष प्रशंसक थे, दूसरे सज्जन कान्ता के।

आलोचक महोदय कह रहे थे—कुछ भी कहो मिस्टर दुबे, कान्ता कभी ज़ुबेदा का मुकाबला नहीं कर सकती। मुस्लिम सौन्दर्य में ही कुछ विशेषता होती है। ज़ुबेदा का "कट" (मुख की रचना) जितना निर्दोष है उसका गला उतना ही मधुर। कान्ता के गाने में वह दर्द नहीं।

'मैं मानता हूँ कि कान्ता का "कट" उतना पर्फेक्ट (पूर्ण) नहीं है, लेकिन उसके चेहरे में एक "डाइनेमिक ब्यूटी" (गतिशील सौन्दर्य) है, जो कि हिन्दू नारी की विशेषता है। ज़ुबेदा कभी कान्ता की "इन्नोसेण्ट लुक्स" (सरल छवि) को नहीं पा सकती। उसके चेहरे में उतनी विविधता भी नहीं है। रही गाने की बात, सो मैं गीतात्मकता को एक "एक्ट्रेस" का अनिवार्य गुण नहीं मानता। सच पूछिए तो स्टेज पर बहुत-सा गाना एकदम कृत्रिम लगता है।'

'अपनी-अपनी रुचि है, मिस्टर दुबे, मुझे विना गाने की फिल्म में मज़ा ही नहीं आता। मेरी राय में संगीत फिल्म-कला का प्राण है।'

'वास्तविक जीवन में हम गाकर बात नहीं करते, मिस्टर भटनागर, और न हम बोलते-बोलते गाने ही लगते हैं। मुझे यह 'प्रैक्टिस' बहुत ही कृत्रिम लगती है,' दुबे ने अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा।

इतने में एक अन्य सज्जन आ गए जो दुबे के विशिष्ट मित्र थे। उन्होंने दुबे का समर्थन किया। अब अभिनेत्रियों के प्राइवेट जीवन की चर्चा होने लगी। इधर कुछ दिनों से कान्ता चित्रपट से गायब थी—अफवाह थी कि उसकी एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लखपती व्यक्ति के साथ शादी होनेवाली है। इससे सिनेमा-प्रेमियों में ब
निराशा और क्षोभ था। मिस्टर दुबे ने इस घटना की ओर संकेत करके कहा–
'यह एक "नेशनल लॉस" है।'

कुछ अन्य सदस्य एक स्थानीय महिला-विद्यालय के अधिकारियों के चरि
पर टीका-टिप्पणी कर रहे थे। विद्यालय के एक उच्च पदाधिकारी ने कि
लड़की के प्रति दुर्व्यवहार किया था, जिसके प्रतिवाद-रूप में उसने अनश
प्रारंभ कर दिया था। शहर में उस पदाधिकारी की निंदा हो रही थी औ
विद्यालय की भी कड़ी-से-कड़ी आलोचना की जा रही थी। एक सदस्य जिनक
नाम श्रीधर पाण्डेय था और जो खादी का कुर्ता-पाजामा पहिने हुए थे, कह र
थे—'ऐसे व्यक्तियों को तो पब्लिक में केनिंग (बेंत की मार) की सजा होन
चाहिए, इन्होंने हमारे देश को बर्बाद कर दिया है।'

दूसरे सदस्य ने कहा—भई, ऐसी घटनाएँ तो अनिवार्य हैं। आज-कल की
लड़कियाँ भी सीता-सावित्री तो हैं नहीं।

श्रीधर—सीता-सावित्री तो वे तब बनें जब आप उन्हें वैसा बनने दें
भारत की स्त्रियाँ आज भी उतनी पतित नहीं हुई हैं जितने कि पुरुष। इ
लड़की का "केस" ही इसका प्रमाण है।

'स्वयं गांधी जी ने कहा है कि आजकल की लड़की आधे दर्जन प्रेमिय
की "जूलियट" बनना चाहती है,' प्रथम सदस्य ने कहा।

श्रीधर—इस तरह की लड़कियाँ समाज में बिलकुल नहीं हैं, यह मैं नह
कहता। वास्तव में यह पश्चिम की शिक्षा का असर है। किन्तु हमारे देश क
अधिकांश स्त्रियां अभी तक पश्चिम की हवा से अछूती हैं। मैं तो कहूँगा वि
स्त्रियों के पथ-भ्रष्ट होने के जिम्मेदार मुख्यतः पुरुष होते हैं।

इस पर एक अन्य सदस्य ने कहा—'विश्व-विद्यालयों में, शायद इस
खिलाफ़ ही देखने में आता है। मिस मुखर्जी का किस्सा आपने सुना है?' अन्ति
वाक्य श्रीधर की अपेक्षा दूसरे सदस्यों को अधिक सम्बोधित किया गया था।

एक नवागत सदस्य, जो बड़ी दिलचस्पी से यह विवाद सुन रहे थे, सहस
श्रीधर से बोले—'आप जरा पथभ्रष्ट होने की व्याख्या करेंगे? पथभ्रष्ट होना

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्या बला ? स्त्री-पुरुष के स्वाभाविक सम्बन्ध पर आप नाक-भौं क्यों सिकोड़ते हैं। खुद महात्मा गांधी इन चीजों से बचे तो रहे नहीं, अब चाहे कुछ कहें।'

इस पर प्रथम दो वक्ता हँसने लगे। श्रीधर ने उत्तेजित होकर कहा—आपलोग छोटे मुँह बड़ी बात करते हैं। आप महात्मा जी के चरित्र की आलोचना करने योग्य नहीं हैं।' उत्तर में श्रोता सदस्य फिर हँसने लगे।

चन्द्रनाथ को श्रीधर से सहानुभूति हुई, पर उसने हस्तक्षेप करना उचित न समझा।

अब सबका ध्यान एक तीसरी ओर आकर्षित हो गया। "समालोचक" के संपादक कीर्तिकांत वाजपेयी अभी-अभी आए थे और कुछ अन्य सदस्यों के साथ बड़े उत्साह से बातें कर रहे थे। जिस प्रश्न पर बहस हो रही थी वह यह था कि कविता की पुस्तकें क्यों नहीं बिकतीं।

एक सज्जन कह रहे थे—सच बात तो यह है कि लोगों की कविता में रुचि कम होती है, मुझे तो उपन्यास बहुत पसंद हैं।

दूसरे सदस्य ने कहा—वाह ! आप अपनी रुचि से जनता की अभिरुचि की माप नहीं कर सकते। कविता से मानव-जाति अपने आदि काल से प्रेम करती आई है। उपन्यास तो अब की चीज है।

इस पर एक तीसरे सदस्य ने कहा—जी नहीं, कहानी-कला भी बहुत पुरानी है।

'कहानी और आधुनिक उपन्यास में बहुत भेद है,' पहले वक्ता ने कहा।

'असली बात यह है कि छायावादी कविता समझ में कम आती है,' चौथे सदस्य ने कहा।

'वास्तविकता कुछ और है'—वाजपेयी जी ने गंभीरतापूर्वक कहा—हमारे कवि पूरी तरह "मॉडर्न" नहीं हैं, इसीलिए उनकी कविता रोचक नहीं होती। वही पुराने विषय, वही पुराने छन्द। हिन्दी-काव्य "टेकनीक" में बहुत पीछे है, इसमें इलियट, लारेन्स, पाउण्ड आदि की नवीनता कहाँ है ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इतने में एक ठिगने, लम्बे केशवाले सज्जन ने प्रवेश किया। सबने 'आ
हिमांशु जी, आइए' कहकर उनका स्वागत किया। हिमांशु जी एक प्रसिद्ध प्र
वादी कवि हैं, यह चन्द्रनाथ जानता था; पर इससे पहले उसने उन्हें दे
न था।

'काव्य पुस्तकें कम क्यों बिकती हैं' यह प्रश्न जब हिमांशुजी के सा
रखा गया तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा—यह आप मुझसे क्यों पूछते
वाजपेयी जी से पूछिए, यह जो पुस्तकें बिकवाएँगे, वे बिकेंगी।

कीर्तिकांत ने स्वाभाविक गंभीरता से कहा—इस विषय में मेरा हिमांशु
से थोड़ा मतभेद है। हिमांशु जी काव्य में Content (विषय वस्तु) पर
जोर देते हैं, मैं Form (बाह्य रूप-रेखा) को भी महत्त्व देता हूँ। यों
हिमांशुजी फार्म के भी अन्यतम मास्टर हैं।

इसी समय दो महिलाओं ने प्रवेश किया। दो-तीन छात्र उनके साथ
महिलाओं में एक का नाम था मिस प्रेमलता और दूसरी का कुमारी आशाल
दोनों में प्रेमलता बड़ी थी। प्रेमलता आगे थी और दाईं ओर एक सदस्य-छा
बातें करती आ रही थी। उसका वर्ण शुभ्र और स्वर मधुर था। अव
१८-२० वर्ष की मालूम पड़ती थी। उसके सुगठित शरीर से यौवन की का
फूटी पड़ती थी। धनुषाकार भँवों के नीचे बड़ी-बड़ी निर्मल आँखें जि
कभी-कभी लम्बी बरुनियोंवाले पलक अकस्मात् गिर जाते थे; अरुणाभ क
और गुलाब की नई पंखुड़ियों जैसे होंठ जिनपर लिप्स्टिक फेरी गई थी। मां
गोरे हाथ और बाँहें। आशा अपेक्षाकृत छोटी थी, शरीर और अवस्था दोनों
रंग फीका सफेद, नाक लम्बी और पतली, माथा अष्टमी के चाँद जैसा अर्ध
आँखें छोटी किन्तु चमकीली। उसके होंठों पर आकर्षक श्यामता की छाया
प्रेमलता के मुख पर मोहक आभिजात्य का भाव था, आशा के चेहरे
सुकुमार बौद्धिकता था; एक में यौवन की तरल कान्ति थी, दूसरी में छात्रा
की जिज्ञासु सौम्यता; एक की भाव-भंगी में स्पन्दित चपलता थी, दूस
स्थिर तटस्थता। चन्द्रनाथ कुतूहल से इस विषम जोड़े को देखने लगा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सबने 'आइए-आइए' कहकर उनका स्वागत किया। प्रेमलता ने मुस्कुराते हुए स्वागत का उत्तर दिया और बैठकर बड़ी तत्परता से मंत्री तथा अन्य छात्रों से बातें करने लगी। आशा चुपचाप उसके बराबर बैठ गई। अधिकांश सदस्यों की आँखें अब इसी दिशा में खिँच गईं।

आगे चाय का प्रोग्राम था। चन्द्रनाथ का किसी सदस्य से विशेष परिचय न था इसलिए उसे अन्य सदस्यों से सेवा-विनिमय बड़ा कठिन और अस्वाभाविक जान पड़ा। वह बड़े संकोच से खाने लगा। दो-एक अन्य सदस्य भी थोड़ा संकोच कर रहे थे; शायद वे भी नए थे। कुछ सदस्य बड़े इत्मीनान से प्रेमलता से बातें करते हुए खा-पी रहे थे, मानो सारी मिठाई और चाय उन्हीं के लिए थी। प्रेम-लता उनकी बढ़ाकर दी हुई प्लेटों में से मिठाई आदि लेकर उन्हें कृतार्थ कर रही थी। आशा धीरे-धीरे, चुपचाप, खा रही थी। प्रेमलता कभी-कभी अपनी तश्तरी की मिठाई ज़बर्दस्ती आशा की प्लेट में डाल देती थी।

चाय खत्म होने के बाद मंत्री ने प्रस्ताव किया कि मीटिंग का काम शुरू होना चाहिए। सब सदस्य गंभीर हो गए। एक राजनीति के भावी डॉक्टर को सभापति चुनकर कार्यवाही प्रारंभ की गई।

पर्चा पढ़नेवाले थे श्रीयुत राधामोहन नागर। यह वही सज्जन थे जिन्होंने कहा था कि कविता में जनता की रुचि नहीं होती। अपनी भूमिका में राधामोहन ने कहा—'भारत के भविष्य से मेरा मतलब किसी काल्पनिक सुनहले स्वप्न से नहीं है, जो दैवी प्रेरणा से पृथ्वी पर यथार्थ रूप में उतार दिया जायगा। हमें संभावित भविष्य के बारे में सोचना है, ऐसे भविष्य के जिसके निर्माण में हम भारतवासी मनुष्यों का कुछ हाथ हो सकता है। यदि हम अपने देश के लिए एक सुन्दर भविष्य की कल्पना करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि उस भविष्य को वस्तु-जगत् में लाना भी हमारा ही काम है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम ऐतिहासिक शक्तियों के विरुद्ध जा सकते हैं, या उनकी उपेक्षा कर सकते हैं। हमारे हाथ में सिर्फ इतना ही है कि हम उन शक्तियों को समझकर उनमें जो प्रगतिशील प्रवृत्तियाँ हैं, उनके साथ अपने प्रयत्नों को जोड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दें।' आगे चलकर वक्ता ने कहा—'आज हिन्दुस्तान गुलाम है, यह सब प्रकार से पद-दलित और दीन है। इसकी गिनती दुनियाँ के सबसे गरीब देशों में है। आज भारत-निवासियों को दोनों समय पेट भरके भोजन भी नहीं मिलता। इसका कारण आप सब जानते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यशाही हमें पीस रही है, और हमारे पूँजीपति दोस्त हजार ढंग से उस साम्राज्यशाही की सहायता और पुष्टि कर रहे हैं!'

चन्द्रनाथ से दो सीट के अन्तर पर श्रीधर बैठा था; उसके पास ही दुबे तथा भटनागर थे। प्रेमलता श्रीधर तथा दुबे के ठीक सामने थी और श्रीधर मानो उधर देखना बचाने के लिए ही बड़ी तत्परता से वक्ता की ओर अवधान दिए हुए था। राधामोहन ने निबन्ध में अग्रसर होते हुए कहा—'हमें साम्राज्यशाही से लोहा लेना है, और जो संस्थाएँ या वर्ग उसके सहायक हैं, उनसे भी हमें लड़ना है। प्रश्न यह है कि उनसे लड़ने का ठीक उपाय कौन-सा है। उचित प्रोग्राम होने पर ही हम स्वातंत्र्य-युद्ध में सफलता की आशा कर सकते हैं। इस समय देश की सर्वमान्य संस्था कांग्रेस है, और जैसा कि सब लोग जानते हैं, कांग्रेस अहिंसात्मक आन्दोलन की समर्थक है। कांग्रेस के महामान्य डिक्टेटर गांधी जी का विश्वास है कि हम सत्य और अहिंसा द्वारा शासकों का हृदय-परिवर्तन करके उनसे स्वराज्य ले सकते हैं। बहुत दिनों से यह आन्दोलन चलता और असफल होता आ रहा है, और उसी अनुपात में उसके पक्ष में प्रचार भी होता आ रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि भारतीय पूँजीपति इस आन्दोलन का जोरों से समर्थन करता रहा है।' यहाँ वक्ता ने क्षण भर रुककर धीमे स्वर में कहा—'किन्तु यह केवल आश्चर्य की ही नहीं, शंका की भी बात है। वास्तविकता यह है कि गांधीजी असली क्रान्ति से डरते हैं, और क्योंकि पूँजीवाद को भी क्रान्ति कड़वी लगती है, इसलिए वे भी गांधी का साथ दे रहे हैं। किन्तु इस नीति से भारतवर्ष कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता। जब तक गांधीवाद जीवित है तब तक भारतीय दासता भी सुरक्षित है।'

श्रीधर का चेहरा विकृत हो चला था और उस पर अवज्ञासूचक मुसकान प्रकट होने लगी थी। एक सदस्य उससे कुछ कानाफूसी करने लगे थे। इस

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

की कुछ भी परवाह किए विना राधामोहन का निबन्ध-पाठ आगे बढ़ता जा रहा था। उसने पढ़ा—'सत्य और अहिंसा शब्द निर्बल कानों को भले ही अच्छे लगें, पर उनका राजनैतिक और आर्थिक वास्तविकताओं से कोई संबन्ध नहीं है। वस्तु-जगत पर शक्ति या अधिकार प्राप्त करने के लिए हमें उसके परिचालक नियमों की जानकारी प्राप्त करनी होती है, उन नियमों की जो यथार्थ का नियंत्रण करते हैं, किन्हीं काल्पनिक आदर्शों की नहीं। मानव-प्रकृति का नियामक कानून यह है कि मनुष्य कभी अपनी इच्छा से अपनी शक्ति और भोग-सामग्री को नहीं छोड़ सकते। जैसा कि मार्क्स ने वतलाया है, मानव-इतिहास को समझने की कुंजी वर्गयुद्ध है। शासक और शासित, शोषक और शोषित वर्गों का युद्ध ही इतिहास है, आदि काल से यह वर्ग-युद्ध होता आया है। खेद है कि गांधीवादी इस सीधे तथ्य को नहीं समझते। वे नहीं जानते कि कोई शासक-वर्ग विना युद्ध के अपनी शक्ति नहीं छोड़ सकता। शासक-वर्ग से शक्ति छीनी जाती है, माँगी नहीं जाती। और उसका एकमात्र उपाय है अपने को अधिक-से-अधिक संगठित एवं सबल बनाना। हमारे सदियों के धार्मिक संस्कारों ने हमें वास्तविकता की ओर से अन्धा बना दिया है और गांधीवाद उस अन्धेपन से अनुचित लाभ उठा रहा है।

'आज गांधीजी ने कांग्रेस और भारतवर्ष को अपनी धार्मिक सनकों की प्रयोगशाला बना रखा है। इस धार्मिकता के कारण ही हम सदियों से गुलाम हैं। हमारे अध्यात्म और अहिंसा ने हमें चौपट कर दिया। लेनिन ने कहा है कि धर्म जनता की शराब है। धर्मशिक्षा द्वारा जनता को धैर्य और सहिष्णुता की शिक्षा देकर क्रांति करने से रोका जाता है। धर्म-शिक्षा, अहिंसा और सत्य का शोर, क्रांतिकारी शक्तियों का गला घोंटने के लिए हैं। हमें इनसे सावधान होना है।' इस पर कुछ सदस्यों ने उत्तेजित होकर "हियर-हियर" की आवाजें दीं। राधामोहन ने पर्चे को खत्म करते हुए कहा—'अहिंसा से न कभी आजादी मिली है, न मिल सकती है। भविष्य के स्वतंत्र भारत में इन धार्मिक ढोंगियों के लिए कोई स्थान न होगा। हम चाहते हैं एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना जिसमें दलित वर्ग दलित नहीं रहेंगे, जिसमें मजदूरों अर्थात् गरीबों का राज्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

होगा, जिसमें दलित लोगों में शिक्षा होगी, वर्ग-चेतना होगी। हम प्राइ सम्पत्ति और पूँजीवाद को नष्ट करना चाहते हैं। हमारा आदर्श सोवियत है। रूस ही आज एक प्रगतिशील राष्ट्र है। हमारा भारतवर्ष भी ऐसा राष्ट्र बनने का स्वप्न देख रहा है। आइए, हम इस स्वप्न को सच्चा बनाने उद्योग करें।'

पर्चा सप्ताह होने पर सबने करतल ध्वनि की। नागर हँसी से खिले चे से बैठ गया। प्रेमलता ने मृदु हास्य करते हुए पूछा—आपके समाज-संगठन स्त्रियों का क्या स्थान होगा?

राधामोहन ने उत्साहपूर्ण स्वर में उत्तर दिया—'हमारे राष्ट्र में स्त्रियों पूर्ण स्वतंत्रता होगी, वे पुरुषों की गुलाम न होंगी, जैसी कि आज हैं।' इस सबने "हियर, हियर" करके तालियाँ पीट दीं।

अब प्रश्नों और बहस की बारी थी। "प्रोग्रेसिव क्लब" का एक नियम भी था कि प्रत्येक सदस्य को कुछ-न-कुछ बोलना चाहिए। सभापति के ओर से सदस्यों ने बोलना शुरू किया।

प्रथम सदस्य ने कहा—मेरा वक्ता से अंतिम लक्ष्य के बारे में कोई मत नहीं है। लेकिन मेरा मत है कि भारतवर्ष में पहले प्रजातन्त्र स्थापित चाहिए। साम्यवाद दूसरा कदम होगा। अभी हमें राष्ट्र की सब शक्तियों ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध संगठित करना चाहिए।

दूसरे सदस्य ने कहा—मैं अपने से पहले के वक्ता से सहमत हूँ। मुझे भय है कि यदि हमने स्पष्ट रूप में साम्यवाद को ध्येय बनाया तो भारत बहुत-सी शक्तियाँ हमारे विरुद्ध हो जायँगी।

तीसरे सदस्य ने राधामोहन से पूछा—क्या आप अहिंसात्मक आन्दोल नीति के तौर पर भी अपनाने के विरुद्ध हैं?

राधामोहन—हाँ, मुझे इसमें पूर्ण संदेह है कि अहिंसात्मक आन्दोलन भी दशा में सफल हो सकता है।

पूर्ववक्ता ने कहा—मेरा विचार है कि, क्योंकि हम लोग निःशस्त्र हैं, लिए हमें इस समय अहिंसात्मक आन्दोलन का ही आश्रय लेना होगा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दूसरे सदस्य ने इसका समर्थन किया, साथ ही पूछा—यदि ब्रिटेन और जर्मनी में युद्ध हो तो हमारी सहानुभूति किस ओर होनी चाहिए ?

एक अन्य सदस्य ने कहा—हमारी सहानुभूति का मूल्य ही क्या है, हमें अपनी समस्या हल करने की चेष्टा करनी चाहिए ?

पूर्व सदस्य ने कहा—और यदि रूस अँग्रेजों के साथ हो तब ?

एक दूसरे व्यक्ति ने कहा—और यदि रूस जर्मनी के साथ हो तो ?

इस पर खासा कुहराम मच गया। राधामोहन ने कहा कि रूस का जर्मनी के साथ होना वर्ग-युद्ध के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। पूर्ववक्ता ने कहा कि राजनीति में सिद्धांतों का स्थान बहुत गौण है, यदि अंग्रेज रूस से संधि न कर सके तो रूस-जर्मनी का मिलाप अनिवार्य है।

अब चन्द्रनाथ के आस-पास के सदस्यों के बोलने की बारी थी। कुछ सदस्य श्रीधर से बोलने का आग्रह कर रहे थे, उधर मंत्री जी ने चन्द्रनाथ से बोलने को कहा। सहसा श्रीधर बोलने को खड़ा हो गया, कुछ सदस्यों ने ताली पीट दी। इससे श्रीधर में साहस-वृद्धि होती दिखाई दी। बिना किसी 'फार्मेलिटी' के उसने कहना शुरू किया—'आज के वक्ता ने अपने पर्चे में गान्धी जी पर कुछ व्यक्तिगत आक्षेप किए हैं, मैं इसके सख्त खिलाफ हूँ। आप गान्धीवाद की आलोचना कर सकते हैं, लेकिन यह किसी को अधिकार नहीं है कि गान्धी जी के व्यक्तित्व पर दोषारोपण करे। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि हिन्दुस्तान के लिए जितना त्याग गान्धी ने किया है उतना किसी दूसरे आदमी ने नहीं। कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट लोग बातें कितनी ही करें, पर उनसे कुछ करते-धरते नहीं बनता। काम काम से चलता है न कि बातों से; इसलिए मैं आज के पर्चे का विरोध करता हूँ।'

इस वक्तृता ने, विशेषतः उसके अन्तिम वाक्य ने, लोगों को हँसा दिया। एक सदस्य ने धीमे किन्तु सुनने योग्य स्वर में दुहराया—'काम-काम से चलता है, खूब !' प्रेमलता हँसने लगी और आशा के होठों में भी मुस्कुराहट आ गई। पीछे चन्द्रनाथ ने जाना कि श्रीधर कांग्रेस का एक साधारण-शिक्षित कार्यकर्त्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है जिसे लोग कभी-कभी क्लब में खींच लाते हैं। कुछ लोग उसे अनवरत चिढ़ाने की फिक्र में रहते हैं।

मंत्री जी ने फिर चन्द्रनाथ से बोलने का आग्रह किया। उसने सोचा कि आज वह नहीं बोलेगा, कुछ इसीलिए कि बहुत दिनों से वह कहीं बोला था और उसका वक्तृता देने का अभ्यास छूट-सा गया था; और इसलिए भी कि आज वह तटस्थ वृत्ति से क्लब के सदस्यों का अध्ययन करना चाहता था। किन्तु जब मंत्री ने उससे "कुछ भी" कह देने का आग्रह किया तो वह इन्कार न कर सका। सबको सम्बोधन कर के कहा—'मैं साम्यवाद अथवा समाजवाद का विरोधी नहीं हूँ और न रूस के प्रयोग को अश्रद्धा की दृष्टि से ही देखता हूँ फिर भी मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि मुझे गान्धी की राजनीति से कुछ अधिक पक्षपात है। मैं मानता हूँ कि अन्ततः गान्धी जी का मार्ग ही मानवता के सही कल्याण का मार्ग है। मुझे भय है कि आज के विवाद में गान्धीवाद के प्रति न्याय नहीं किया गया है। कुछ गलतफ़हमियाँ भी हैं। पहली गलतफ़हमी यह समझना है कि गान्धीवाद मात्र स्वराज्य लेने का अस्त्र है। यह ठीक है कि गान्धी जी स्वराज्य के काङ्क्षी हैं तथा आर्थिक विषमताओं को कम करना चाहते हैं; पर उनका लक्ष्य इससे कहीं अधिक व्यापक है। वह लक्ष्य है मानव समाज से घृणा और अन्याय को हटाकर प्रेम तथा भ्रातृभाव की स्थापना करना। इसीलिए वे युद्ध तथा हिंसात्मक क्रान्ति के विरुद्ध हैं। वैर से वैर उत्पन्न होता है; हिंसा से हिंसा-वृत्ति उत्तेजित होती है। हिंसात्मक संघर्ष का अनिवार्य परिणाम उभय पक्षों का नैतिक पतन, घृणा, द्वेष एवं प्रतिकार की भावना का प्रसार है; इसलिए गान्धी जी उसके एकान्त विरोधी हैं। उनका विश्वास है कि...

इस पर सभापति ने टोकते हुए कहा—मेरे विचार में आप विषयान्तर में जा रहे हैं। सवाल यह है कि क्या गान्धीवाद हिन्दुस्तान को आजादी दिला सकता है।

चन्द्रनाथ—मैं उसी विषय पर आ रहा हूँ।....गान्धी जी का विश्वास है कि मानवता की सुख-शान्ति के लिए उसका नैतिक परिष्कार अनिवार्य रूप से अपेक्षित है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वह शीघ्रता से विषय के उत्तरार्द्ध पर आ गया—'गान्धीवाद के सम्बन्ध में दूसरी ग़लतफहमी यह है कि वह अपने आन्दोलन की सफलता के लिए शत्रु के हृदय-परिवर्तन पर निर्भर करता है। यह ठीक नहीं। वास्तव में अहिंसात्मक युद्ध का मुख्य और प्रभावशाली अस्त्र असहयोग है। गान्धी जी का विश्वास है कि बिना हमारे सहयोग के कोई भी अत्याचारी हम पर अत्याचार करने में सफल नही हो सकता। भय या किसी दूसरी नैतिक दुर्बलता के कारण अत्याचार का विरोध न करके, उसे चुपचाप सह कर, हम उसके प्रसार में सहायक होते हैं। यदि मज़दूर पूँजीपतियों से सहयोग न करें तो पूँजीशाही का एक दिन में अन्त हो जाय, और यदि हिन्दुस्तानी सहयोग न करें तो ब्रिटिश गवर्नमेंट एक दिन भी हमारे देश में न टिक सके। नैतिक अधःपतन के कारण ही हिन्दुस्तान गुलाम हुआ है और अकेली नैतिक शक्ति से वह आज़ाद हो सकता है। जिस देश या जन-समुदाय में नैतिक बल है उसे कोई भी शक्ति दबाकर नहीं रख सकती।'

'यदि मज़दूर मिलों में काम न करें तो खायँ क्या ?' एक सदस्य ने बैठे-ही-बैठे कहा।

चन्द्रनाथ—इस समस्या का समाधान रचनात्मक कार्य है।

इस पर राधामोहन ने अवज्ञा-सूचक हँसी से कहा—रचनात्मक कार्य यानी चर्खा; दो हजार वर्ष पहले का खुट्टल हथियार। चर्खा चलाकर कोई अपना पेट भी शायद ही भर सके। इसके विपरीत साम्यवाद का ध्येय केवल गरीबों का पेट भरना नहीं है; वह चाहता है कि दुनियाँ के किसान-मजदूर आज की भाँति पद-दलित न रहकर सुख-समृद्धि का जीवन व्यतीत करें।

चन्द्रनाथ ने नम्र स्वर में कहा—गान्धी जी का मुख्य उद्देश्य अन्याय और अत्याचार को रोकना है। इसके बाद मनुष्य अपने परिश्रम के अनुसार सुख की सामग्री प्राप्त कर सकेंगे।

'लेकिन अत्याचार को रोकना साधन है, साध्य नहीं; साध्य है विश्व के जन-जीवन में सुख और समृद्धि की स्थापना। और यह तभी सम्भव है जब उत्पादन के साधनों पर जनता का प्रभुत्व हो'—राधामोहन ने कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ—मैं वक्ता की भावनाओं का आदर करता हूँ। लेकिन हमें देखना होगा कि किस प्रकार जनता, विशेषतः भारत की जनता, अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकती है। हिंसात्मक संघर्ष के पक्षपाती यह भूल जाते हैं कि हम निरस्त्र हैं, और ब्रिटिश साम्राज्यशाही शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित। मैं तो कहूँगा कि कहीं भी किसी भी युग में यह हर्गिज आवश्यक नहीं कि न्याय की शक्तियाँ अधिक बलवान भी हों, और अत्याचारी की जीत हो ही न सके। ऐसी दशा में युद्ध का फैसला सदैव 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का फैसला होगा।

राधामोहन—तभी तो हम कहते हैं कि हमारा प्रमुख कार्य जनता को संगठित और सशक्त बनाना है।

चन्द्रनाथ—लेकिन इसकी क्या गारंटी है कि वह शोषकों और अत्याचारियों से अधिक सशक्त बन सकेगी;और इसका क्या भरोसा है कि रूस इंगलैण्ड अमरीका आदि की सम्मिलित शक्तियों पर विजयी हो सकेगा?

राधामोहन—इसकी गारंटी ऐतिहासिक प्रगति के नियम हैं।

चन्द्रनाथ—इन नियमों के सम्बन्ध में मनुष्य की सर्वज्ञता में सन्देह किया जा सकता है। वास्तव में, गांधी जी के अनुसार, मानव-समाज का लक्ष्य न तो वर्ग-विशेषों की हार-जीत है, न भोग-सामग्री का अनियंत्रित प्रसार। इसके विपरीत मनुष्य का वास्तविक सुख पारस्परिक प्रेम और सद्भाव की वृद्धि में है।

मीटिंग ने काफी समय ले लिया था, इसलिए सभापति ने शीघ्रता से कार्यवाही समाप्त करने का निश्चय किया। राधामोहन के स्पष्ट विश्लेषण की प्रशंसा करके उन्होंने कहा—हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हमारी जनता द्वन्द्वात्मक जड़वाद के मूल सिद्धान्तों को समझे और अपनाए। तभी सफल नेतृत्व उत्पन्न होगा और तभी भारत स्वतन्त्र होगा। इसके अतिरिक्त जनता के कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। हमारे शत्रु संगठित हैं, और शक्तिमान हैं, वे अपने स्वार्थों को खूब समझते हैं। (हास्य) हमें भी उनके विरुद्ध संगठित सशक्त और समझदार बनना पड़ेगा। इसके बिना हमारी जीत असंभव है।

●

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

:१५:

क्लब से बाहर होते-होते चन्द्रनाथ के पास श्रीधर आ पहुँचा। श्रीधर का रंग गहरा साँवला है, होंठ पान से लाल, और शरीर खूब स्वस्थ। उसके उभरे हुए सीने और मांसल बाँहों पर खादी का कुर्ता खूब फबता है। और उसके साथ पाजामा पहने हुए वह कुछ करने को उद्यत-सा मालूम पड़ता है। उसके चेहरे एवं चाल में कोई दुविधा का भाव नहीं है। क्लब में जो वह बोलते हुए संकोच का अनुभव कर रहा था उसका कारण शायद क्लब की अपार बौद्धिक ख्याति थी।

चन्द्रनाथ के समीप आकर उसने कहा—आपके विचार मुझे बहुत अच्छे लगे। आप गांधीजी के अनुयायी हैं ?

'शायद मैं अनुयायी किसी का नहीं हूँ, पर गान्धी जी का प्रशंसक अवश्य हूँ।'

'वह एक ही बात है; आपने आज कम्युनिस्टों को खूब उत्तर दिए।'

चन्द्रनाथ चुप रहा। श्रीधर कहता गया—कम्युनिस्ट लोग बड़े खराब हैं, मांस-मछली किसी से परहेज नहीं करते। ईश्वर तक को तो मानते नहीं। कई-एक महाशय तो गोमांस तक खा जाते हैं। भला ये लोग अहिंसा और सत्याग्रह को क्या समझेंगे ?

चन्द्रनाथ—कम्युनिस्ट ईश्वर और परलोक को नहीं मानते और यह विश्वास रखते हैं कि मनुष्य को इस दुनियाँ में अधिक-से-अधिक सुख से रहना चाहिए।

श्रीधर—नास्तिक हैं पूरे; यह भी तो ख्याल नहीं करते कि गोमांस-भक्षण से हजारों आदमियों का दिल दुखता है। कहिए इनमें और मुसलमानों में क्या भेद है ? बल्कि मैं तो कहूँगा कि जो लोग हिन्दू होकर गोमांस खाते हैं, वे ज़्यादा बुरे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ—वास्तव में कम्युनिस्ट हिन्दू नहीं हैं, न उनका किसी अन्य ध में ही विश्वास है। इसलिए अपने दृष्टिकोण से वे कह सकते हैं कि गोमां खाना बुरा नहीं है। वे लोग तो कहेंगे कि प्राचीन आर्य भी गाय की बलि दे और शायद, गोमांस खाते थे।

श्रीधर—क्या सचमुच आर्य लोग ऐसा करते थे ? मुझे तो विश्वास नहीं होता। आप का क्या ख्याल है।

चन्द्रनाथ संकट में पड़ गया। उसने पढ़ा है कि संकट में अतिथि का ए नाम गोघ्न भी है—वह जिसके लिए गाय की हत्या की जाय। अन्य प्रमा भी उसे मिले हैं। किन्तु श्रीधर का जी दुखाना उसे इष्ट न था। बोला—कु अन्वेषक तो कहते हैं कि ऐसा था, पर इतने पुराने जमाने के सम्बन्ध में निश्च करना कठिन होता है। दूसरे, आप का यह कहना तो ठीक ही है कि आ उनके ऐसा करने से बहुत लोगों का जी दुखता है।

श्रीधर—'बिलकुल यही बात है। भला ऐसे लोग जनता का नेतृत्व क्या करेंगे, जनता तो उनसे कोसों दूर भागेगी।' फिर कुछ रुककर उसने कहा— 'एक कम्यूनिस्ट नेता कहा करते हैं कि हिन्दू धर्म बिलकुल बेकार धर्म है, उस कोई अच्छाई है ही नहीं।'

चन्द्रनाथ—किसी के ऐसा कहने से हिन्दू धर्म का कुछ बिगड़ता नहीं वास्तव में हिन्दू धर्म बड़ा उदार और व्यापक धर्म है; उसने प्रायः सब प्र के धर्म-शिक्षकों से लाभ उठाने का प्रयत्न किया है। आप देखते हैं न, हि जाति में कितने पंथ और मार्ग हैं और कितनी तरह की पूजा-उपासना प्रच है। पर साथ ही हमें मानना होगा कि हिन्दू समाज में बहुत-सी खराबियाँ बैठी हैं।

श्रीधर—इससे तो कोई इनकार नहीं करता। महात्माजी भी इसे मान हैं। देखिए उन्होंने अछूतोद्धार के लिए कितना यत्न किया है।

'आप अछूतोद्धार में विश्वास करते हैं और हरिजनों के साथ खा-पी हैं ?' चन्द्रनाथ ने किंचित् आश्चर्य से पूछा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्रीधर—पहिले कुछ संकोच होता था, पर धीरे-धीरे अभ्यास हो गया है। फिर अपने जेनरल (सेनानायक) का अनुशासन तो मानना ही चाहिए।

दोनों इंडियन प्रेस के पास पहुँच चुके थे।

श्रीधर ने कहा—तो अब मैं चलता हूँ।

'अच्छा। आपका डेरा किधर है ?'

'मैं म्योर हॉस्टल के सामने जो होटल है उसी की एक कोठरी में रहता हूँ। कभी मेरे यहाँ आने की कृपा करें; बल्कि अभी चलें।'

'इस समय तो देर हो गई है। फिर किसी दिन आप के साथ चलूँगा।'

रात को चन्द्रनाथ ने अपनी डायरी में लिखा—आज मैं पहली वार प्रगतिशील क्लब की बैठक में गया ? क्लब की जैसी ख्याति है वैसा आयोजन भी है, काफी आटोप भी। सदस्य प्रायः अधीत और मेधावी हैं, और विभिन्न रुचियों एवं विचारों की बौद्धिक सजीवता का वातावरण, यद्यपि कुछ सदस्यो का दैन्य, क्लब के वातावरण में "फिट" होने की अभिलाषा, अखरती थी।''''सदस्यों में तर्कप्रियता अधिक है, सत्य का आग्रह कम; देश की चिन्ता, शायद, उतनी भी नहीं। वहाँ की विवाद की स्पिरिट संक्रामक है, वह वरवस पकड़ लेती है।'''पार्टी स्पिरिट भी प्रबल है, विशेषतः कामरेड लोगों में। उनकी दृष्टि में जो उनका मत नहीं मानता वह विरोधी है, शत्रु है; ऐसा व्यक्ति कितना भी शिष्ट और सरल क्यों न हो, कामरेड लोग उसके प्रति सहिष्णु नहीं हो सकते। उसे नीचा दिखाने के लिए वे किसी भी अस्त्र का प्रयोग कर सकते हैं—तर्क का, कुतर्क का, व्यंग्य का, ताने का !''''दो महिला सदस्याएँ भी आई थीं। उनमें एक विशेष सुन्दर है—जरूरत से ज्यादा सुन्दर ! इतना रूप भी होता है ! शरीर जैसे आदर्श साँचे में ढाला गया हो, और प्रत्येक अवयव लम्बे अवकाश में बैठकर कलात्मक रुचि से बनाया गया हो। शुभ्रतर कपोल, सरस रक्तिम होंठ (ये लड़कियाँ प्राकृतिक रंग से सन्तुष्ट न होकर लिपिस्टक क्यों लगाती हैं ?—बिलकुल अच्छा नहीं लगता), सघन शुभ्र दशन-पंक्ति, बड़ी-बड़ी आँखें, बड़ी बरौनियाँ और नितान्त काली स्निग्ध भवें। ये लोग शृंगार-सज्जा में भी कुशल हैं, कैसे इस प्रकार भुरभुरे, बल खाये हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

केश बनाए जाते हैं!—बदायूँ में तो कभी ऐसी केश-रचना नहीं दीखती विश्वविद्यालय में भी दो-ही-चार लड़कियाँ ऐसे केश बनाए देखी गई हैं।… कितने आत्म-विश्वास और स्वच्छन्दता से वे बातें करती हैं; जैसे पूर्णतया जानती हों कि उनका प्रत्येक गति-लेश मोहक है!….उसकी उपस्थिति सदस्यों पर निश्चित प्रभाव डाल रही थी।…समाज में प्रगल्भता-पूर्वक विचरण करने में रूप सहायक होता है।…आशालता, अपेक्षाकृत छोटी, कम उजले रंग की उतनी सुरूप नहीं, पर उसमें दूसरे आकर्षण का अभाव नहीं। उसकी चमकीली आँखें वक्ताओं और वक्तृताओं को अधिक समझतीं, और उसमें अधिक अभिरुचि लेती प्रतीत होती थीं।….श्रीधर, एक भिन्न कोटि का व्यक्ति—उसकी बौद्धिक अपरिपक्वता। रास्ते में बातचीत। उसके सरल विश्वासों एवं पक्षपातों पर प्रहार करना निष्ठुर लगा। पक्षपात बनते-बिगड़ते हैं, यह वह नहीं जानता। प्राचीन आर्य गोमांस खाते थे, यह सत्य उसे अप्रिय है। कभी-कभी सत्य कैसे निर्मम रूप में सामने आता है!….सत्य की अपेक्षा मनुष्य को अपने विश्वास अधिक प्रिय होते हैं, क्यों? क्यों मनुष्य पुराने विश्वासों को इतने जोर से पकड़ता है? और मिथ्या विश्वासों को ठेस लगने से कष्ट अनुभव करता है?… डार्विन के विकासवाद ने ईसाई-जगत् को कितना कष्ट दिया! और क्योंकि मनुष्य के सब विश्वास अपूर्ण सत्य हैं, इसलिए उसे सदैव यह कष्ट सहना पड़ेगा। सत्य कितना कठोर है!

× × ×

मंगलवार की सुबह में पड़ोस के एडवोकेट के बंगले से आते हुए शिवानन्द ने यकायक चन्द्रनाथ को बधाई दी।

'क्या बात हैं मिश्र जी?' चन्द्रनाथ ने चकित होकर पूछा।

'आज के "अग्रगामी" में आपकी स्पीच का उल्लेख है।'

'कौन-सी स्पीच?'

'वही जो आपने प्रगतिशील क्लब में दी थी, रविवार को। देखिए, मैं "कटिंग" ले आया हूँ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चन्द्रनाथ ने "कटिंग" पर दृष्टि डाली। अखबार में सिर्फ नाम आ जाना इतनी बड़ी बात है, यह उसे नहीं मालूम था। पत्र में सिवाय इसके कुछ नहीं था कि उस दिन के मुख्य बोलनेवाले कौन-कौन थे। उसने अवज्ञा-सूचक हँसी से कहा—भला इसमें बधाई देने की ऐसी कौन बात है। यह मंत्रीजी की कृपा होगी।

'मंत्री जी की नहीं, नागर की कहिए; अब आप बहुत जल्दी प्रसिद्ध हो जाएँगे।'

'प्रसिद्ध होना क्या इतनी स्पृहणीय चीज है, मिश्र जी !'

'फिर वही आदर्शवाद, आखिर जीवन में स्पृहणीय है क्या ? यश की इच्छा को तो मिल्टन ने भी एक उदात्त दुर्बलता माना है। आप उसे अस्वीकार क्यों करना चाहते हैं ?'

'मैं यह नहीं कहता कि मुझमें यश की इच्छा नहीं है, पर साथ ही मुझे भरोसा है कि झूठी कीर्ति मुझे कभी अच्छी नहीं लगेगी। कला का जो आदर्श मेरी कल्पना के सामने है उस तक न पहुँच सकने पर केवल यश से मुझे सन्तोष होगा, यह नितान्त सन्दिग्ध है।'

'अर्थात् आप कला के एक आदर्श तक भी पहुँचना चाहते हैं और यश भी। भला यश पाने के लिए आपने अब तक क्या किया है ?'

'नागर से मित्रता'—चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा। फिर बोला—'यश के लिए कुटिल प्रयत्न करने से आदर्श की साधना में बाधा पड़ती है, इसे क्या आप नहीं मानते ?'

'मैंने कभी किसी आदर्श की पूजा या साधना नहीं की, इसलिए इस विषय में कोई प्रामाणिक वक्तव्य देने में असमर्थ हूँ। पर मैं जानता हूँ कि आजकल बिना प्रयत्न के पचास रुपए की क्लर्की भी नहीं मिलती, यश और प्रसिद्धि तो बड़ी चीज है। महात्मा नागर का भी ऐसा ही विश्वास है।'

नागर के पहले महात्मा का विशेषण सुनकर चन्द्रनाथ हँसने लगा।

'आप हँसते हैं,' शिवानन्द ने कहा, 'लेकिन वास्तविकता यही है। संसार में साधना की अपेक्षा आडंबर अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है। मिस्टर नागर को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक बार अपनी एक पुस्तक छपने देनी थी। उसके प्रकाशन के संबंध में बा करने के लिए वे एक माँगी हुई "कार" में बैठकर इण्डियन प्रेस गए जि प्रकाशक या मैनेजर पर रोब बैठे, और समझे कि सचमुच कोई महत्त्व लेखक उसके पास आया है। फल यह हुआ कि पुस्तक अच्छे टर्म्स पर छापने ले ली गई।'

'क्या पुस्तक थी वह ?' चन्द्रनाथ ने किंचित् आश्चर्य से पूछा।

'पुस्तक कोई मौलिक और महान् कलाकृति न थी, देश के कुछ प्रसि नेताओं की शिक्षा-संबंधी स्पीचों का संग्रह था।'

यह कहकर मानो अज्ञात शून्य के प्रति अवज्ञा का भाव दिखाता हु शिवानन्द चुप हो गया।

इधर कुछ दिनों से शिवानन्द चन्द्रनाथ के ज्यादा पास आ गया था शिवानन्द का जीवन प्रायः ग़रीबी और नैराश्य में बीता था; चन्द्रनाथ सहानुभूतिपूर्ण भाव ने उसे बरबस आकृष्ट किया। धीरे-धीरे उसने चन्द्रनाथ अपने जीवन की बहुत-सी बातें बतलाईं। चन्द्रनाथ की भाँति शिवानन्द के पि का देहान्त भी अनेक वर्ष पहले हो चुका था। पिता के हिस्से की सम्पत्ति प्रा उसके एक चाचा ने हड़प ली और जो कुछ बचा भी था वह मुकदमेबाजी खर्च हो गया। मैट्रिक करने से पहले ही शिवानन्द और उसकी माता असह हो गए। तब से कई वर्षों तक वह ट्यूशनों द्वारा ही अपने पढ़ने तथा बूढ़ी मां भरण-पोषण का भार वहन करता रहा। हाल ही में उसकी माँ का देहावस हो गया है, और अब वह इस दुनियाँ में अकेला है। परिस्थितियों के आघ ने शिवानन्द को निराशावादी, नियति का विश्वासी और यथार्थवादी ब दिया है।

एक और कारण भी शिवानन्द तथा चन्द्रनाथ की घनिष्ठता बढ़ने का हु यह कारण साहित्यिक था। एक दिन शिवानन्द ने चन्द्रनाथ से उसकी कविता की कापी पढ़ने को माँगी, चन्द्रनाथ ने मना किया। उसे विश्वास था शिवानन्द किसी आधुनिक कवि की रचनाओं को पसन्द नहीं करेगा क्यों उसे आधुनिक भावनाओं से कोई सहानुभूति नहीं है; उसने रसखान, सूर औ

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

की बलवती कल्पना से निर्मित कालिन्दी-कूल और करील के कुंजों के अतिरिक्त संसार की किसी वास्तविकता का अनुभव नहीं किया है। किन्तु शिवानन्द ने हठ करके उसकी एक कापी ले ली और एक दिन दो-ढाई घंटे बैठकर उसे संपूर्ण पढ़ डाला। चन्द्रनाथ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब शिवानन्द ने बताया कि उसकी कविताएँ समझने में उसे तनिक भी कठिनाई नहीं हुई और वे उसे अच्छी लगीं।

उस दिन से चन्द्रनाथ की दृष्टि में शिवानन्द की रसज्ञता के प्रति आदर बढ़ गया। शिवानन्द में श्रेष्ठ आलोचक का और कोई गुण हो या नहीं, पर वह सहृदय है; वह अच्छे काव्य को पढ़ते ही सीधे ढंग से पहचान लेता है। चन्द्रनाथ को यह देखकर और भी प्रसन्नता हुई कि शिवानन्द ने प्रायः उन्हीं कविताओं को ज्यादा सुन्दर बतलाया जो स्वयं उसे अच्छी लगती थीं। केवल व्रजभाषा के महाकवियों को पढ़कर साहित्यिक अभिरुचि का ऐसा सुन्दर विकास हो सकता है, यह विश्वास उसे अब तक नहीं था। उसने स्वयं व्रज-काव्य थोड़ा ही पढ़ा था।

यह सहृदयता कितनी दुर्लभ है, इसका उसे काफी अनुभव था। अधिकांश आलोचकों में अच्छे-बुरे साहित्य को पहचानने की क्षमता बहुत कम होती है; वे प्रायः अपनी इस कमी को साहित्यिक "वादों" से पूरा करना चाहते हैं। वे यह नहीं जानते कि आलोचना के नियम अंधों को आँखें नहीं दे सकते। शास्त्रों के सिद्धान्त वस्तुस्थिति की व्याख्या के लिए होते हैं। जिस प्रकार विज्ञान के सिद्धान्त वस्तु-जगत् की व्याख्या के प्रयत्न हैं, उसी प्रकार आलोचना के सिद्धान्त भी साहित्यगत सौन्दर्य की व्याख्या के प्रयत्न मात्र हैं। सहृदय आलोचक उनसे बँधता नहीं, वह उन्हें अन्तिम भी नहीं मानता। वह कला में सब सिद्धान्तों का व्यतिक्रम करनेवाला नवीन सौन्दर्य देखने को नित्य उत्सुक रहता है। सिद्धान्तों की परिधि में बँधे रहनेवाले हृदय-हीन आलोचक, जो कलागत सौन्दर्य को देख ही नहीं सकते, कला के सबसे बड़े शत्रु हैं।

कला के ये शत्रु प्रायः उसके राज्य के सदर फाटक पर ही पहरा देते रहते हैं, इसका अनुभव चन्द्रनाथ को हाल ही में हुआ था। उसने एक साथ कई पत्रों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

में छपने के लिए कविताएँ भेजी थीं, एक-साथ इसलिए कि वह प्रतिमास इसका ध्यान नहीं रख पाता। उन कविताओं पर विभिन्न संपादकों ने भिन्न-भिन्न ढंगों से कृपा की थी। सभी कविताएँ छापी गई थीं। एक प्रसिद्ध पत्र ने कविता के शीर्षक में, जो कविता की अर्धपंक्ति थी, "न" की जगह "मत" कर दिया था, पद्यों का क्रम बदल दिया था, तथा अन्य परिवर्तन भी किए थे। एक पत्र ने स्थानाभाव के कारण कविता की अंतिम छह पंक्तियाँ हटा दी थीं और उनके बदले कुछ पंक्तियों में भाव-परिवर्तन कर दिया था, जिससे कविता वहीं समाप्त होती दीख पड़े। एक अन्य पत्र ने कविता की दो-दो पंक्तियों को एक पंक्ति में छापकर छह पंक्तियों के पद्य को चार पंक्तियों में "फ़िट" कर दिया था। इन परिवर्तनों से चन्द्रनाथ बहुत क्षुब्ध हो उठा था और सोचने लगा था कि क्या उसे मासिक पत्रों में कविताएँ भेजना वन्द ही करना पड़ेगा।

शिवानंद से जब उसने इसकी चर्चा की तो उसने कहा—'आप यह क्यों भूल जाते हैं कि सम्पादक की अभिरुचि का केन्द्र उसका पत्र है, न कि आपकी कविता; प्रायः पत्र के रिक्त स्थान भरने के लिए कविताएँ छापी जाती हैं और इसीलिए उनमें काट-छाँट भी की जाती है।'

'लेकिन कविता का अंग-भंग करने से तो पत्र का ही सौंदर्य बिगड़ता है।'

'आप समझते हैं, सम्पादकों को यह देखने की बुद्धि होती है कि कविता का सौंदर्य नष्ट हो रहा है? और क्या जनता में ही इतना विवेक होता है?'

'जनता में विवेक उत्पन्न करने के लिए ही तो पत्र है।'

'जी नहीं, यही तो आप भूल करते हैं। अधिकांश पत्रों का उद्देश्य होता है किसी दल या कुछ व्यक्तियों को ऊपर उठाना, या नीचे गिराना (ये दोनों क्रियाएँ प्रायः साथ-साथ चलती हैं।)....फिर अधिकांश पत्र-सम्पादकों में खुद ही साहित्यिक विवेक नहीं होता।'

'ऐसा है तो उन्हें सम्पादक नहीं बनना या बनाया जाना चाहिए, क्योंकि यह पद बड़े दायित्व का है। नए कलाकारों का प्रकाश में आना बहुत-कुछ पत्र-पत्रिकाओं पर निर्भर करता है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

'चाहिए तो सब कुछ, पर होता कहाँ है ? आप जानते हैं कि दस-पन्द्रह वर्ष पहले उन कवियों की रचनाएँ, जो आज युग-प्रवर्तक समझे जाते हैं, पत्र-पत्रिकाओं से वापस चली आया करती थीं। और यह सिर्फ इसी युग या देश की बात नहीं है।'

'इसका कुछ अनुभव मुझे भी है। एक समय था जब मैं सोचता था कि अच्छे पत्रों में मेरी रचनाएँ कभी छपेंगी ही नहीं। मन में खीझता भी बहुत था। खराब स्टैण्डर्ड के पत्रों में भेजना मुझे पसन्द न था।'

'अच्छा, आपको अपनी रचनाओं पर पारिश्रमिक मिलता है ?'

'कविताओं पर ? कभी नहीं।'

'और लेखों पर ?'

'लेख अब तक मैंने सिर्फ दो भेजे हैं, पारिश्रमिक माँगा न था।'

'इसीलिए मिला नहीं, खूब ! माँगते तो शायद लेख "सधन्यवाद" वापस ही आ जाते। मेरे साथ ऐसा हुआ है।'

'क्या हिन्दी-पत्र कविताओं पर पारिश्रमिक देते हैं ?'

'प्रायः नहीं, शायद यह समझा जाता है कि कविता लिखने में विशेष परिश्रम नहीं होता। लेखों पर भी पारिश्रमिक तब मिलता है जब वे सम्पादक के किसी मित्र के हों।'

'कविता लिखने में परिश्रम नहीं होता, यह आपसे किसने कहा ? छोटी-से-छोटी कविता एक-डेढ़ घंटे से कम में नहीं लिखी जाती और उसे लिखने के बाद कुछ ऐसा नशा हो जाता है कि प्रायः दो घंटे तक कोई भी बौद्धिक काम नहीं किया जा सकता।...लेख में भी चार-पांच घंटे लगते हैं, लेकिन लम्बी कविता इससे अधिक ही समय लेती है।'

'लेकिन कविता पत्र-पत्रिकाओं के कई कालम तो नहीं भरती, मिस्टर चन्द्रनाथ, उस पर कैसे पारिश्रमिक दिया जा सकता है !'

'कविता मनुष्य की सबसे संक्षिप्त वाणी है; उसकी पंक्तियों के आकार और संख्या से उसकी अनुभूति के विस्तार को नहीं नापा जा सकता।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'लेकिन यह बात पत्र-संपादकों के और उससे भी अधिक पत्र-संचालकों के दिमाग में कभी नहीं धँस सकती, कभी नहीं !'

'इसका अर्थ यह है कि हमारे समाज में कोरा कवि अपना पेट नहीं भर सकता।'

'पुस्तकें छपने पर उसे कुछ भले ही मिल सके, पत्र-पत्रिकाओं से तो आशा नहीं है। सो उसकी भी उम्मीद कम है क्योंकि कवि लोग अक्सर अपनी पुस्तकें मुफ्त प्रकाशन को दे देते हैं।'

'लेकिन उन्हें ऐसा करना नहीं चाहिए।'

'करते ही हैं; जिनके पास धन काफी है और कभी-कभी मनोविनोद के लिए कविता लिख लेते हैं, वे सोचते हैं, चलो नाम हो जायगा, पुस्तकें यों ही दे दो।'

'और गरीब लेखक ? वे क्या करें ?'

'वे कविता लिखना बन्द कर दें; कुछ और लिखें।'

'खूब ! दुर्भाग्य यह है कि अच्छे लेखक, वे लेखक जो सचमुच कला के लिए जन्म लेते और जीते हैं, अक्सर गरीब पैदा होते हैं।'

'इसके लिए तो भगवान दोषी हैं, प्रकाशक या सम्पादक नहीं।'

'दोषी कोई हो, लेकिन प्रतिभा की इस उपेक्षा का फल सम्पूर्ण राष्ट्र, बल्कि मानवता को भोगना पड़ता है।'

'लोग कविता को इतना महत्त्व नहीं देते,' शिवानन्द ने अविश्वास के भाव से हँसकर कहा।

'नहीं महत्त्व देते, तभी तो मनुष्य दिन-प्रतिदिन बर्बर होता जा रहा है, संवेदना-हीन, दूसरों के दुख-दर्द के प्रति पूर्णतया उदासीन। तभी तो हमारा जीवन इतना निरानंद, इतना यांत्रिक हो गया है······और आकाश में युद्ध के बादल उमड़ रहे हैं। मनुष्य मनुष्य से सहानुभूति नहीं करता, राष्ट्र राष्ट्र से। दो वर्ष पहले मुसोलिनी ने एबीसीनिया का दलन किया, और अब हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया का ? यदि मानव-संवेदना यही रही, यदि काव्य-साहित्य

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

द्वारा उसका परिष्कार न हुआ, यदि मनुष्य मनुष्य न बन सका, तो मानव-सभ्यता का नाश हो जायगा।'

शिवानन्द ने चकित होकर कहा—मेरा बहुत से मित्र कवियों से सम्पर्क रहा है लेकिन वे तो काव्य की उपयोगिता की ऐसी ऊँची धारणा नहीं रखते।

'कवि अपने महत्त्व के सम्बन्ध में अनभिज्ञ हो सकता है, मिश्रजी; लेकिन इससे उसका महत्त्व कम नहीं हो जाता। बिना जाने भी फूल गन्ध देता है। किन्तु यदि कवि को अपने दायित्व का ज्ञान हो तो उसके बहकने की कम संभावना रहेगी।'

'मैं तो अब तक समझता था कि कविता केवल मनोविनोद के लिए है। भला बिहारीलाल के दोहों ने कौन ऐसा सभ्यता का उपकार किया है?'

'इसीलिए मैंने कहा कि कवि को अपनी जिम्मेदारी का ज्ञान होना चाहिए। आप यह क्यों भूल जाते हैं कि कवियों में वाल्मीकि, तुलसी और कालिदास की भी गिनती है।'

'वाल्मीकि और तुलसी ने अवश्य ही देश का कल्याण किया है, लेकिन कालिदास तो शृंगारी कवि है?'

'कालिदास केवल शृंगारी कवि नहीं है, मिश्रजी, उसने रघुवंशियों के नैतिक सौन्दर्य का भी विरुद गाया है।......केवल शृंगारी कवि भी हममें मानव-व्यक्तित्व का मोह तो उत्पन्न करता है, हमें निर्मम पशु होने से तो बचाता है।'

'सचमुच, यह आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। तब तो आपकी राय में बिहारी और दूसरे वैसे कवियों को पढ़ना कोई बुरी बात नहीं है।'

'हर्गिज नहीं; किन्तु केवल उन्हीं को पढ़ने से व्यक्तित्व का एकांगी विकास होगा।'

'यह माना जा सकता है।.......मैंने इसलिए यह प्रश्न उठाया कि मेरे कुछ छायावादी मित्र रीतिकालीन कवियों को अक्सर खरी-खोटी सुनाया करते हैं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वीरेन्द्र बहुत देर से शिवानन्द को चाय पीने के लिये बुला रहा था। शिवानन्द ने उठते हुए उस व्यक्ति के स्वर में, जो पेट भर भोजन करके सन्तुष्ट महसूस करता है, कहा—आज आपने कुछ बातें बड़े मार्के का कहीं; अब मैं अपने मित्रों को घनानन्द और बिहारी का प्रेमी होने की सफाई तो दे सकूँगा।

●

: १६ :

"प्रोग्रेसिव क्लब" की तीन बैठकों में सम्मिलित हो चुकने पर चन्द्रनाथ ने यह स्वाभाविक निष्कर्ष निकाला कि उसके सदस्यों में राजनैतिक अभिरुचि प्रधान है। गुलाम देश में ऐसा होना आवश्यक है, अनिवार्य है, यह सोचकर वह सन्तुष्ट ही था। पर उसे एक शिकायत थी, यह कि सदस्य लोग भारतवर्ष की अपनी समस्याओं पर स्वतंत्र विचार न करके प्रायः राजनैतिक वादों की परिधि में घूमा करते हैं। फलतः उन्हीं सिद्धान्त-सूत्रों की आवृत्ति बार-बार की जाती जिससे बौद्धिक एकरसता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है।

इस बार मन्त्री महोदय ने सूचना भेजी कि अगली मीटिंग का विषय "प्रगतिशील साहित्य" है। चन्द्रनाथ इस सूचना से प्रसन्न हुआ।

नियत समय पर वह मीटिंग में पहुँचा। पर्चा पढ़नेवाले थे "समालोचक" के प्रसिद्ध सम्पादक श्री कीर्तिकान्त वाजपेयी, सभापतित्व का भार श्री हिमांशु पर पड़ा था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हिमांशु जी ने वाजपेयी जी पर बोलते हुए कहा—'शायद आज के वक्ता का परिचय देने की आवश्यकता मुझे नहीं पड़ेगी। सम्भवतः मेरी अपेक्षा उन्हें आप ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं। (हास्य)। वे क्लब के अधिक पुराने सदस्य भी हैं। वस्तुतः इस क्लब में मुझे खींच लाने का श्रेय उन्हीं को है। मैं उनके सम्बन्ध में केवल इतना ही कहूँगा कि वे प्रयाग-विश्वविद्यालय की सर्वश्रेष्ठ सन्तानों में से हैं, उन्होंने हाल ही में "समालोचक" पत्र निकालना शुरू किया है जिसने अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण और ऊँचे स्टैण्डर्ड से हिन्दी-भाषियों का ध्यान आकर्षित करना शुरू कर दिया है। हिन्दी-साहित्य को उनसे बड़ी आशाएँ हैं।

'आज जो पर्चा पढ़ा जायगा उसका विषय "प्रगतिशील साहित्य" है। इधर वाजपेयी जी ने अपने पत्र में प्रगतिवाद पर लेख-माला निकाल कर साहित्य-क्षेत्र में हलचल पैदा कर दी है। यहाँ मैं आपको बता दूँ कि मैं स्वयं उनके दृष्टिकोण से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। कुछ दिन पहले तक मैं एक छायावादी कवि था और कल्पना-प्रधान रोमांटिक साहित्य को ही सब कुछ समझता था। लेकिन सौभाग्यवश अब मेरी दृष्टि यथार्थ की ओर मुड़ी है। अब मैं मानता हूँ कि वर्ग-युद्ध मानव-जीवन तथा मानव-इतिहास की सबसे बड़ी, बल्कि एक-मात्र वास्तविकता है, और जिस साहित्य में उसकी झलक नहीं है, वह साहित्य, साहित्य नहीं, निरर्थक प्रलाप है। वह मानव-जाति की उन्नति में कोई योग नहीं दे सकता।'

हिमांशु जी की परिचयात्मक भूमिका पर किसी ने विशेष उत्साह प्रकट नहीं किया; कारण यह था कि सदस्यगण ऐसी चीजों के अभ्यस्त हो गए थे। वर्ग-युद्ध की वास्तविकता का उल्लेख भी किसी को चमत्कृत न कर सका, पादड़ी के उपदेश की भाँति सबने चुपचाप उसे सुन लिया। इसके बाद वाजपेयी जी मुस्कुराते हुए उठे; हिमांशु जी के वक्तव्य से वे सर्वाधिक प्रभावित प्रतीत होते थे।

उन्होंने अपनी आवश्यक भूमिका में कहा—'हिमांशु जी ने मेरी बड़ी प्रशंसा की है, यह उनके सौजन्य एवं गुणग्राहिता का परिचायक है। उनका यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहना गलत है कि आप उनकी अपेक्षा मुझे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं हिमांशु जी से, एक सफल छायावादी कवि के रूप में, आप बहुत पहले परिचित हैं और आज उनकी कला पर आप और भी अधिक मुग्ध हैं वास्तव में उनका कलात्मक भविष्य बहुत उज्ज्वल है।'

इसके बाद उन्होंने पर्चा पढ़ना आरम्भ किया। उसका सारांश इस प्रकार था—'खड़ी बोली हिन्दी में अबतक जो साहित्य लिखा गया है उसमें छायावादी काव्य का मुख्य स्थान है। यह काव्य मुख्यतः मध्यम वर्ग के उन शिक्षित लोगों की कृति है जो बेकारी से पीड़ित अथवा जीवन-संग्राम में असफल होने के कारण वास्तविक जगत से भागना चाहते हैं। छायावादी काव्य की मूल प्रवृत्ति यह पलायन प्रवृत्ति है। हमारे कवि जीवन की वास्तविकता से डरते हैं वे आदर्शवादी और अध्यात्मवादी बन जाते हैं। यह आदर्शवाद और अध्यात्मवाद मिथ्या सपनों की सृष्टि के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जीवन की मौलिक आवश्यकताओं, युग की असली जरूरतों की ओर इन लेखकों की दृष्टि ही नहीं जाती। इसका मूल कारण इतिहास के आर्थिक आधार और वर्ग-युद्ध के सिद्धान्तों का अज्ञान है।'

इसके बाद वक्ता ने समकालीन कवियों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया अर्थात् प्रतिक्रियावादी या प्रगति-विरोधी, अचेतन प्रगतिवादी और चेतन या जागरूक प्रगतिवादी। 'क्रान्ति और परिवर्तन के विरोधी, मौजूदा स्थिति के समर्थक लेखक प्रतिक्रियावादी हैं। अचेतन प्रगतिवादी प्रायः वे हैं जो परिवर्तन तो चाहते हैं, पर वर्गयुद्ध के सिद्धान्त से अनभिज्ञ हैं। वर्ग-युद्ध की वास्तविकता को समझकर क्रान्ति के जो अग्रदूत निश्चित एवं दृढ़ स्वर में गा रहे हैं वे ही तृतीय श्रेणी में गिने जा सकते हैं। ऐसे कवियों में हिमांशु जी का एक विशेष स्थान है। हर्ष की बात है कि छायावाद के प्रसिद्ध लेखक अब प्रगति की ओर आकर्षित हो रहे हैं।'

वक्ता के बैठ जाने पर राधामोहन नागर ने व्यंग के स्वर में पूछा—आपने गांधीवादी लेखकों पर कुछ नहीं कहा, उनके सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कीर्तिकांत ने गम्भीरता से कहा—गांधीवादी भी उतने ही महान् हैं जितने कि छायावादी, बल्कि उनसे अधिक। दोनों ही वस्तु-जगत से बहिष्कृत सत्य को पाने के लिए कल्पना का साम्राज्य रचते हैं। और गांधी में तो महानता का चरम विकास हुआ है—वस्तु-जगत से बहिष्कृत सत्य मूर्तिमान होकर धरती पर उतर आया है।

राधामोहन ने मानो किसी अनिर्दिष्ट प्रतिपक्षी को छेड़ने लिए कहा—क्या आपकी सम्मति में प्रगतिशील साहित्य में विश्व-प्रेम, सत्य और अहिंसा जैसे "महान्" सिद्धान्तों का कोई स्थान नहीं है ?

कीर्तिकान्त ने जोश भरे स्वर में कहा—नहीं। प्रेम, अहिंसा, क्षमा, मानवता आदि के नारे शोषक वर्ग ने अपनी स्वार्थ-रक्षा के लिए प्रचारित किए हैं। मुझे उन निरीह लेखकों से जो पूँजीवादी प्रचार के शिकार हो गए हैं बहुत सहानुभूति है, परन्तु मैं उनकी रचनाओं को सहन नहीं कर सकता।

अब कोई बोलने को नहीं उठ रहा था। सभापति ने कई सदस्यों से अनुरोध किया पर कोई तैयार न हुआ। कीर्तिकान्त के मुख पर गर्वपूर्ण सन्तोष की झलक थी, किन्तु राधामोहन असन्तुष्ट दिखाई देता था। अभी, शायद उसे विवाद का पूरा आनंद नहीं मिल पाया था। उसने सभापति से कुछ कहा और उन्होंने खद्दरधारी युवकों से बोलने का विशेष अनुरोध किया।

श्रीधर तथा एक अन्य ऐसे सदस्य ने इनकार कर दिया। अब केवल चन्द्रनाथ ही अवशिष्ट रह गया। क्लब में प्रायः तीन प्रकार के सदस्य थे; एक वे जो अपने को निश्चित रूप में कम्युनिस्ट कहते थे; दूसरे वे जिनका झुकाव गाधीवाद की ओर था; और तीसरे वे जिनका राजनैतिक मत निर्दिष्ट न था, जो इस संबंध में उदासीन या लापर्वाह थे। चन्द्रनाथ की सदस्यता के अल्पकाल में ही मेम्बर लोग उसके विरोधी और प्रशंसकों में बँटने लगे थे। कम लोग थे जो उसके प्रति उदासीन हों। इस दृष्टि से पहली और आज की मीटिंग में बृहत् अन्तर था। आज बहुत-से सदस्यों ने उससे बोलने का सम्मिलित अनुरोध किया। वह अस्वीकार न कर सका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

खड़े होकर उसने कहा—साहित्य और उसके प्रयोजन की व्याख्या जीव और उसके लक्ष्य की व्याख्या से कम दुरूह नहीं है। दोनों एक दूसरे संवन्धित भी हैं। जिस जीवन-दर्शन में मनुष्य केवल पशुओं में एक पशु है और उसका ध्येय इन्द्रिय-परितृप्ति है उसके अनुसार साहित्य का एक आदर्श होगा और जो दर्शन मानव-जीवन को उच्च प्रकृति के विकास का क्षेत्र मानता है उसके अनुसार साहित्य का आदर्श भी भिन्न होगा। सौभाग्य या दुर्भाग्यवश मैं दूसरे दर्शन का विश्वासी हूँ। मेरी मान्यता है कि साहित्य की प्रवृत्ति मानव-प्रकृति के विकास लिए है। मानव-जीवन और उसके परिवेश में जो कुछ शुभ तथा सुन्दर है, उसमें साहित्य हमें लीन करता है; उसमें हमारे अस्तित्व को प्रसारित कर देता है; और जो अशुभ एवं असुन्दर है उसके प्रति साहित्य हममें विरक्ति उत्पन्न करता है। इस प्रकार साहित्य मानव-प्रकृति के परिष्कार और मानव-जीवन के ऊर्ध्वनयन का साधन है।

'अ टिपीकली बूर्जुआ कन्सेप्शन'—राधामोहन ने मंद किन्तु स्पष्ट स्वर में कहा। कुछ सदस्यों का ध्यान उधर गया, पर चन्द्रनाथ ने उसे अनसुना करते हुए कहा—

'इससे एक बात स्पष्ट है, यह कि साहित्य दायित्वशून्य कल्पना का खिलवाड़ नहीं है। अतः मैं आज के निवंध-पाठक से इस बात सहमत हूँ कि श्रेष्ठ साहित्य कभी पलायनवादी नहीं होता। यहाँ मैं आप से निवेदन करूँ कि मेरी अपनी राय में कल्पना-प्रधान छायावाद और अत्यन्त व्यावहारिक गांधीवाद में कोई सादृश्य या सम्बन्ध नहीं है।'

सहसा राधामोहन ने, जो शायद उपेक्षित महसूस कर रहा था, उठकर कहा—मुझे लगा रहा है कि आप असली प्रश्न को बचा रहे हैं। आपने अभी तक यह नहीं बताया कि साहित्य का युग से क्या सम्बन्ध होता है और प्रगतिशील साहित्य किसे कहते हैं।

चन्द्रनाथ—'मेरी दृष्टि में श्रेष्ठ साहित्य और प्रगतिशील साहित्य एक ही वस्तु हैं और साहित्य का युग से अनिवार्य सम्बन्ध होता है। साहित्य शून्य में ही नहीं लिखा जाता, वह मानव-जीवन में ही अनुस्यूत मूल्य-सत्वों (Values) को

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

छानबीन करता है।' फिर कुछ रुककर उसने कहा—'साहित्य की एक प्रेरक शक्ति मानव-हृदय और मानव-व्यक्तित्व से सहानुभूति है, और मनुष्य सदैव एक विशेष वातावरण में रहता है। अतः साहित्यकार की दृष्टि बरबस युग और उसकी जरूरतों पर जानी चाहिए। साहित्यकार मानव-सुख-दुख से उदासीन नहीं रह सकता। विशाल मानव के हृदय में जहाँ कहीं भी दर्द है, कसक है, वहाँ साहित्यकार की दृष्टि पहुँचनी चाहिए, वहाँ उसका हृदय पहुँचना चाहिए। वहाँ उसकी वाणी को मुखर हो उठना चाहिए। सच्चा कलाकार कभी अन्याय को अन्याय और अत्याचार को अत्याचार कहने से नहीं हिचकता। पर साथ ही उसे ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं उसकी वाणी पाठकों की पाशव वृत्तियों की उत्तेजना न दे, उनकी क्षुद्र प्रेरणाओं को प्रोत्साहित न करे, उनमें घृणा और प्रतिशोध जगाकर उनकी उच्च प्रकृति को क्षत न करे।...वह अन्याय और स्वार्थपरता का विरोध इस ढंग से करता है कि उनसे कष्ट पानेवाला व्यक्ति स्वयं अन्यायी और स्वार्थी न बन जाय। अन्ततः साहित्य की प्रवृत्ति सत्य और प्रेम का पथ प्रशस्त करने के लिए है।'

राधामोहन—यह सब बूर्जुआ नारे हैं।

इस पर चन्द्रनाथ ने उत्तेजना से कहा—यदि सचमुच ऐसा है तो मैं बूर्जुआ सभ्यता का विनाश हर्गिज नहीं चाहूँगा।

इस पर राधामोहन के निकटवर्ती एक सदस्य ने धीरे से कहा—'शेम-शेम' (शर्म-शर्म)। सदस्यगण चकित होकर इस व्यक्ति को देखने लगे। सभापति ने उससे शान्त रहने की प्रार्थना करते हुए कहा कि सबको अपना मत प्रकट करने का अधिकार होना चाहिए।

चन्द्रनाथ ने उसी उत्तेजना में कहा—लेकिन मैं कहता हूँ कि ये बूर्जुआ नारे नहीं हैं, ये मानवता के नारे हैं, मानव-हृदय की आवाज हैं, उसके पवित्रतम क्षणों की पुकार हैं। योरप में और भारतवर्ष में, पूँजीपति में और मजदूर में, मानव-हृदय सदा से इन्हीं के लिए तड़प रहा है। मानव-हृदय की सबसे बड़ी भूख न्याय और प्रेम की भूख है, साहित्य इसी भूख को अभिव्यक्ति देता और उसे जगाए रखता है। साहित्य ने, कला ने हमें बर्बरता से ऊपर उठाया है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मनुष्य को कोमल और सहृदय बनाने के लिए ही उसकी साधना रही है। ईश्वर के वास्ते आज उसकी साधना को उलटी दिशा में न मोड़िए, साहित्य में क्रूरता और पशुत्व की उत्तेजना को प्रोत्साहन न दीजिए, हिंसा और परुष आवेगों को लेकर सभ्यता या कला में कभी प्रगति नहीं हुई है।

सदस्यगण पूर्ण अवधान से उसकी बात सुन रहे थे। अधिकांश की, और उनमें आशा तथा प्रेमलता भी थीं, आँखें उसके मुख पर लगी थीं। उसके समाप्त करने पर दो क्षण खामोशी रही, फिर सहसा कीर्तिकांत बोलने के लिये खड़ा हुआ। उसने कहा—'मेरे मित्र ने जो तर्क प्रगतिशील साहित्य के विरुद्ध उठाए हैं उनसे हम सब अच्छी तरह परिचित हैं। उन्होंने कोई नई बात नहीं कही है। शुद्ध साहित्य, और वह भी संस्कृत साहित्य के विद्यार्थी रहने के कारण यदि वे प्रस्तुत आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं को न समझ पाए तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। लेकिन आज तो बच्चा-बच्चा इन सवालों को समझता है। अब वह दिन गए जब हमारी भोली जनता पूँजीपतियों के और प्रचारकों की मीठी-चुपड़ी बातों से लुभा जाती थी। अब यह बहुत दिनों तक छिपाकर नहीं रखा जा सकता कि कौन प्रगतिशील शक्तियों के साथ है और कौन उनके विरुद्ध। मेरे मित्र ने अन्त में एक तर्क दिया है, उसका उत्तर देना मैं आवश्यक समझता हूँ। उन्होंने कहा कि परुष आवेगों द्वारा कभी सभ्यता या कला में प्रगति नहीं हुई है। मैं पूछता हूँ कि प्रेम और अहिंसा द्वारा संसार में कौन-सी प्रगति हुई है। मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें कोमलता से इतना प्रेम क्यों है। मैं डंके की चोट करता हूँ कि आज हम हिंसा और रक्तपात से तनिक भी नहीं डरते और ईंट का जवाब पत्थर से देने को तैयार हैं। मेरी समझ में परुषता अथवा पुरुषत्व की निन्दा ह्रास का चिह्न है, न कि विकास का।'

वक्तृता समाप्त होते-होते "हियर हियर" (सुनो-सुनो) करते हुए कुछ सदस्यों ने ताली पीट दी। देखा गया कि आशा और प्रेमलता ने उस उत्साह में कोई योग नहीं दिया।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

:१७:

क्लब के बाहर पहुँचने पर श्रीधर चन्द्रनाथ के पास आकर बोला—आपकी आज की स्पीच की कई लोग प्रशंसा कर रहे हैं, सचमुच आप बधाई के पात्र हैं।

चन्द्रनाथ अपने विचारों में डूबा हुआ था। श्रीधर की बात सुनकर उसने पहले क्षण में कहा—'अच्छा।' और फिर बोला—'मैं प्रशंसा अथवा वाहवाही के लिए वक्तृता नहीं देता, श्रीधर बाबू, और न मुझे ऐसा भ्रम ही है कि मुझे वक्तृता देना आता है। वास्तव में वक्तृत्वकला का परिचय तो कीर्तिकान्त जी ने अच्छा दिया। जहाँ उनका निबन्ध नितान्त स्पष्ट था वहाँ उनका अन्तिम वक्तव्य भाषण-कला का अच्छा नमूना था।'

श्रीधर—क्या सचमुच आपका ऐसा खयाल है, मुझे तो उनके विचार जंचे नहीं।

चन्द्रनाथ—विचारों के असहमत होने का यह अर्थ नहीं कि आप किसी के वास्तविक गुणों को भी न देखें। सत्य को स्वीकार करने से नहीं डरना चाहिए, यह आप ही के गान्धी जी की शिक्षा है।

श्रीधर—आप गांधी जी को मेरा क्यों बनाते हैं, आप स्वयं भी तो उनके अनुयायी हैं।

चन्द्रनाथ—मैं उनका अनुयायी बनने योग्य नहीं हूँ, क्योंकि मैं उनकी सब बातों को मानकर चलने की सामर्थ्य नहीं रखता।

श्रीधर—क्या मतलब? क्या कुछ बातों में आप गांधी जी से मतभेद रखते हैं।

चन्द्रनाथ—उदाहरण के लिए मैं उनके इस सिद्धान्त को नहीं मानता, अथवा मानकर नहीं चल सकता, कि सन्तति-निरोध के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। चर्खा चलाना भी मुझे रुचिकर काम नहीं लगता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्रीधर—'गांधी जी कभी-कभी अतिवाद पर पहुँच जाते हैं।' फिर ठहर कर उसने कहा—'गांधी जी के जीवन-काल में ही गांधीवाद समाप्त जायगा, ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं।'

चन्द्रनाथ ने चौंककर श्रीधर की ओर देखा और उसके मुख से निकला—'क्या ?'

श्रीधर—मैं ठीक ही कह रहा हूँ, इस दुनियाँ में सत्य और अहिंसा सिद्धांत कभी पनप सकेगा, इसमें घोर सन्देह है।

यह कहकर, अपनी मुख-भंगी के आशावाद को चुनौती-सी देता हुआ वह अपने डेरे की ओर मुड़ गया। चन्द्रनाथ भी उसकी उस मुद्रा का अनुचिन्तन करता हुआ जार्ज-टाउन की दिशा में बढ़ने लगा। शीघ्र ही उसके चलने रफ्तार तेज हो गई।

जब वह अपनी कॉटेज में पहुँचा तो बहुत आन्दोलित था। रह-रह श्रीधर का अन्तिम वक्तव्य उसके कानों में गूँज रहा था, और क्रमशः उ मस्तिष्क से चलकर वह उसके हृदय का मन्थन करने लगा था। बार उसकी कल्पना के आगे क्लब के विवाद का दृश्य खड़ा हो रहा था।

आज की मीटिंग में उसकी वक्तृता पर "शेम, शेम" की आवाज़ उ गई थी, उसके जीवन में यह एक अभूतपूर्व अनुभव था। पर उसके क्लेश मुख्य कारण यह न था। संवेदनशील होते हुए भी वह अपने मानापमान इतना महत्व देने का अभ्यासी न था। उसके कष्ट का प्रमुख हेतु कुछ और था वह सोच रहा था उस वातावरण के सम्बन्ध में जो उसे आज क्लब में दिख दिया था। उसमें इतनी तीव्र घृणा, इतनी कठोरता और निर्ममता क्यों है? भयंकर भावनाओं का उद्गम कहाँ है? उनका पर्यवसान कहाँ है? अन्त मानव-जाति किस ओर जा रही है?

घृणा, घृणा, घृणा! मानवता के श्वास-प्रश्वास में आज इतनी घृणा है? क्या इसका कभी अन्त होगा? क्या मनुष्य कभी एक दूसरे के रक्त प्यास से विरत होंगे?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वर्ग-संघर्ष—युद्ध—परस्पर-कदन, क्या सचमुच यही मानव-जीवन और इतिहास का नियम है ? क्या इसी रक्त-नाटक को खेलने के लिए मनुष्य विचार और बुद्धि का संवल लेकर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुआ है ? और क्या इसी के प्रचार के लिए कला है ?

मनुष्य मनुष्य पर अत्याचार क्यों करता है ? और कैसे वह दूसरे मनुष्यों से उत्कट घृणा कर पाता है ?

और यह अत्याचार तथा घृणा हैं किस लिए ? इनका लक्ष्य क्या है ? किस उद्देश्य से मनुष्य इन ज्वालाओं को अपने भीतर जलाता है ?

और उसने जैसे एक पारदर्शी क्षण में देखा कि मनुष्य के सारे संघर्ष, सम्पूर्ण ईर्ष्या-द्वेष और घृणा का मूल भौतिक सम्पत्ति है।

वह उत्तेजनावश कॉटेज के आँगन में पहुँच गया था, और तेजी से आगे-पीछे घूम रहा था। सहसा वीरेन्द्र ने आकर पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रखा।

चन्द्रनाथ ने चौंककर देखा। वीरेन्द्र ने कहा—आपको एक बुरी खबर सुनाऊँ ?

'कहिए, क्या बात है।'

'आपको मालूम नहीं, आपकी प्रेमलता देवी को बिजली मार गई।'

क्षण भर स्तब्ध रहकर वह हँस पड़ा। बोला—वाह ! अभी तो मैंने उन्हें क्लब में देखा था, तब से····

वीरेन्द्र ने विश्वास दिलाने के स्वर में कहा—मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ, रात आपने बादलों की गड़गड़ाहट सुनी थी, और बाद में कड़ाक से आवाज हुई थी··· ?

'तो क्या हुआ ?'

'रात वीमैन्स हॉस्टल के पास बिजली गिरी और एक लड़की बेहोश हो गई।'

यह कहकर वह शिवानन्द को आवाज लगाता हुआ बाहर की ओर चला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यह वीरेन्द्र भी विचित्र व्यक्ति है, उसे कहानियाँ गढ़ना खूब आता है। सुई को फावड़ा बना देना उसके बाएँ हाथ का खेल है। छोटी-छोटी घटनाओं पर ऐतिहासिक महत्व आरोपित करने को उसकी कल्पना सदैव सजग रहती है। उसकी प्रकृति का यह हलकापन चन्द्रनाथ को प्रिय है।

आज कई दिन बाद आकाश में तारे दीख रहे थे। चन्द्रनाथ विस्मयभरी दृष्टि से उन्हें देखने लगा, जैसे वे रहस्यमय अस्तित्व के प्रति शून्य में खिंचे हुए अनन्त प्रश्न-चिह्न हों। कुछ देर बाद वह फिर अपनी टूटी हुई विचार-शृंखला को जोड़ने के लिए हाथ में लेने लगा। उसी समय शिवानन्द के साथ पुनः वीरेन्द्र आ पहुँचा।

'अब की बार सचमुच आपको बुरी खबर देनी है।' वीरेन्द्र ने कहा, 'यद्यपि आप मेरी बात का यकीन नहीं करेंगे।'

'अविश्वास करना मेरा स्वभाव नहीं है, रात जरूर बिजली गिरी होगी!'

'और लड़की भी जरूर बेहोश हुई थी, मैं इसकी साक्षी दे सकता हूँ' शिवानन्द ने कहा। 'अब इन्हें दूसरी खबर भी सुना दो, मिस्टर वीरेन्द्र।'

'खबर बहुत "सीरियस" है, मिस्टर चन्द्रनाथ, वीरेन्द्र ने गम्भीर होकर कहा, 'यानी हिटलर ने सचमुच पोलैंड पर हमला बोल दिया, यह रेडियो का बयान है।'

'और ब्रिटेन तथा फ्रांस जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनेवाले हैं' शिवानन्द ने जोड़ा।

'और रूस और जर्मनी में पैक्ट हो गया, नानग्रेशन पैक्ट, मिसरा जी, इसकी हिन्दी क्या होगी?'

'अनाक्रमण-सन्धि!' शिवानन्द के स्वर और मुद्रा से लग रहा था मानो उसके लिए कोई घटना अप्रत्याशित नहीं, वह इन सबके लिए पहले से तैयार था।

तुरन्त वे दोनों चल दिए। वीरेन्द्र को शायद उक्त खबर का प्रचार करना था और शिवानंद को ट्यूशन पढ़ाने जाना था।

काटेज के आँगन में चन्द्रनाथ फिर अकेला रह गया।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हिटलर के पोलैण्ड पर आक्रमण करने की बात को उसने जैसे सुनकर भी नहीं सुना। वह फिर अपने पहले विचारों से उलझने लगा।

कुछ देर बाद उसने अपनी डायरी उठाकर लिखा।

मानव-जीवन का मौलिक नियम प्रेम है या संघर्ष ? यह महत्वपूर्ण प्रश्न है।

मनुष्य के सुख का सबसे बड़ा स्रोत क्या है—धन ? शक्ति ? या प्रेम और सौहार्द ?

गांधीवाद खतरे में है—यह वक्तव्य सिर्फ गांधी के प्रति नहीं, उस सबके प्रति जो जीवन को जीने योग्य बनाता है अनास्था का सूचक है। आश्चर्य है कि खुद गांधी के अनुयायी वैसी अनास्था को पालते हैं।

जब तक कला जीवित है, कलाकार जीवित है, तब तक गांधीवाद की असलीयत—प्रेम और सत्य की प्रेरणा—कैसे मर सकती है ? उसे कैसे मरने दिया जा सकता है ?

उस दिन वह जब सोने को लेटा तो बहुत शान्त महसूस कर रहा था। रात भर वह बिना स्वप्न की नींद सोया। सबेरे उठकर जब उसने अखबार हाथ में लिया तो उसे याद पड़ा कि योरप में युद्ध छिड़ गया है। आक्रमण के विवरण ने उसकी कल्पना को और भी उत्तेजित किया। उसकी शांति भंग होने लगी। उसे लगा मानों मानवात्मा अपने जड़-विषयक लोभ से प्रेरित होकर आत्म-हत्या की तैयारी कर रही हो।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

:१८

आज सबेरे से ही चन्द्रनाथ साधना के पत्र की प्रतीक्षा कर रहा है। जीवन-समुद्र की अन्तर्धारा की भाँति व्यावहारिक सतह पर न दीखने पर उसका साधना से सम्बन्ध उसके भाव-जगत् के तापक्रम में परिवर्तन उपस्थि करता रहता है।

शिवपुरी से पत्र आने-जाने में प्रायः आठ दिन लग जाते हैं, चन्द्रना इसका हिसाब रखता है। कल साँझ ही पत्र आ सकता यदि साधना उसी दि उत्तर लिख देती जिस दिन उसे पत्र मिला होगा। किन्तु प्रायः वह उसी दि उत्तर नहीं लिखती। उसे क्या मालूम कि चन्द्रनाथ उसके पत्र की कि उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करता है। पत्र का महत्व उसे पाते समय मालूम होता लिखते समय नहीं। डाकिए को देखकर यह किसकी इच्छा नहीं होती कि उसका पत्र लाया हो? पर हम भूल जाते हैं कि यह डाकिया हमारे दूस को भी दिखाई देता है। हमें स्वप्न में भी यह खयाल नहीं होता कि हम पत्र का कुछ महत्व है और कोई उसकी प्रतीक्षा करता होगा। यही परिस्थिति है जिसमें अहंकारी मनुष्य अपना उचित से कम मूल्य लगाता

अब तक साधना के चार पत्र आ चुके हैं। पहले दो पत्र समय से गए थे, पर अन्तिम दो ने प्रतीक्षा कराई थी। अबकी बार फिर उसी अनु की आवृत्ति हो रही है। प्रेषक की उदारता और स्नेह के अतिरिक्त पत्रों पाने की अवधि ही कहाँ है?

क्लब की अगली मीटिंग की सूचना मिल चुकी है, पर चन्द्रनाथ को तनिक भी उत्साह नहीं है। अब तक क्लब की कई बैठकों में वह सम्मि हो चुका था। वहाँ उसे क्या सुनने को मिलता है? तरह-तरह के वाद और युक्तियाँ। दो-तीन वर्ष पहले वह स्वयं भी बड़ा तार्किक था। उस समय और विपक्ष के लिए युक्तियों का संग्रह उसका प्रमुख व्यापार था; तब इसमें विचित्र रस मिलता। शाब्दिक विजय जीवन का मुख्य ध्येय

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पड़ती। पर आज उसकी दृष्टि में सारी तर्क-प्रणाली मानो यकायक अर्थहीन बन गई है। अतीव उत्साह और जोश से आगे रखी जाने पर भी जैसे युक्तियों का वक्ता के व्यक्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं होता; वे श्रोता के अन्तर का स्पर्श भी नहीं कर पातीं। उनका समस्त व्यापार मानो बाहरी सतह तक सीमित रहता है ;श्रोता और वक्ता में कोई आन्तरिक संबंध उनके द्वारा स्थापित नहीं होता ! क्लब का सारा वाद-विवाद चन्द्रनाथ के एकाकी व्यक्तित्व को उष्णता देने में असमर्थ रहता है।

स्पष्ट ही वह अब कुछ और चाहता है—वह चाहता है जीवन की उन गहराइयों का स्पर्श जहाँ सब प्रकार के विवादों की जड़ें रहती हैं, अथवा जो सब विवादों से ऊपर हैं। साधना के सम्बन्ध में उसे कुछ वैसा ही स्पर्श मिलता है ; तभी तो वह इतनी उत्कण्ठा से उसके पत्र की बाट जोह रहा है।

साधना के पत्र मात्र कागज और स्याही नहीं होते, वे केवल सार्थक ध्वनियों का समूह भी नहीं हैं। वह अपने पत्रों में जैसे अपने को ही भेज देती है। उन्हें पढ़कर जीवन का स्पर्श होता है। सुशीला भी पत्र भेजती है, लेकिन उनकी ध्वनि कुछ दूसरी होती है। वह कहती है—'मैं आपसे दूर हूँ, आप मुझसे दूर हैं।' उसके पत्र मानो आकाशगत दूरी को आकार देते हैं। उन्हें पढ़कर हृदय में एक कसक उठती है, मीठा-सा दर्द होता है, और फिर वे भूल-से जाते हैं। प्रयाग आकर ही चन्द्रनाथ यह जान सका है कि उसे सुशीला से 'प्रेम' है।

किन्तु साधना के पत्र दूसरे ढंग के हैं; उनका संवादी स्वर संयोग है, वियोग नहीं। प्रत्येक नए पत्र में साधना जैसे उसके अधिक पास आ जाती है; प्रत्येक पत्र वह इस भाव से लिखती प्रतीत होती है मानो वह उसकी ओर बढ़ रही है। इस 'बढ़ने' या दूरी कम होने का आभास चन्द्रनाथ को साधना का पत्र पाने पर ही होता है, जैसे उसके हाथ में विशेष कुछ नहीं है, जैसे इस दूरी को तय करना साधना के ही वश की बात है।

साधना के प्रारम्भिक पत्र अपेक्षाकृत सीधे और सरल थे, पर बाद के पत्रों में उसकी जटिलता और साहित्यिकता क्रमशः बढ़ने लगी। स्नेह और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विश्वास की आंच से हमारे व्यक्तित्व पर जमा हुआ व्यावहारिक एक आवरण पिघलने लगता है, और उसके भीतर तहें दीखने लगती हैं। पत्र में जो साधना मात्र बहिन के नाम से आई थी वह जैसे अब अपने नाम की जटिलता में चन्द्रनाथ के सामने तरुण कलिका की भांति खुल रही है। बहिन अब भी है, किन्तु इससे केवल उसके प्यार के सामाजिक क्षेत्र का पता चलता है, उसकी तीव्रता और गहराई का नहीं।

और उस स्नेह में गहराई के साथ कुछ और भी है, जिसका नाम संभव नहीं है। साधना अब उसे "पूज्य" या "सम्मान्य" नहीं लिखती; "भाई" भी कम लिखा करती है। उसका संबोधन अब सर्वथा घरेलू हो है; अब उसका रूप है "भैयाजी" अथवा "भैया"। पत्र के बीच में जब शब्द आ जाता है तो चन्द्रनाथ को लगता है, जैसे कोई उसे पास ही होकर संबोधित कर रहा है, ऐसे स्वर में जो पूर्ण परिचय, पूर्ण अपनेपन बोधक है। तब वह एक अपूर्व प्राप्ति के अनिर्वाच्य आनन्द से सिहर उठता और अपने इस नए संबंध की पवित्रता और मार्मिकता से विभोर हो है। और उस समय वह सोचता है—इस अपनी बहिन के लिए मैं क्या कर कैसे उसपर अपना स्नेह प्रकट करूँ।

तब कभी-कभी वह तुरन्त ही पत्रोत्तर लिखने बैठ जाता है। तरह के संबोधन उसके मस्तिष्क में आते हैं—'मेरी बहिन', 'मेरी अपनी ब इत्यादि; पर न जाने क्या सोचकर वह अपने आवेग को दबा लेता है नितांत सीधे संबोधन से पत्र शुरू कर देता है—'बहिन'। और फिर भी में कुछ मर्मस्पृक् उद्गार निकल पड़ने पर सोचता है—कोई दूसरा इस पत्र पढ़ ले तो ? न जाने कोई क्या समझे ! ओफ़ ! इस दुनियाँ में हम कितने स्वतंत्र हैं।

साधना उसके पत्र की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करती है, यह उसे अवि नहीं है। पर स्वयं उसे उसके पत्रों की कितनी प्रतीक्षा रहती है, यह शायद नहीं जानती। एक पत्र में साधना ने लिखा है—'आप मुझे लम्बे-लम्बे पत्र करें, नहीं तो...मैं रूठ जाऊँगी।' इस मधुर धमकी ने उसे सतर्क कर दि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और वह कोशिश करता है कि पत्र लिखने के लिए अधिक समय निकल आए।

साधना हँसी करने का कोई अवसर नहीं छोड़ती, यह चन्द्रनाथ को प्रिय लगता है। स्वयं भी उसकी इच्छा रहती है कि उसका पत्र पढ़ते समय वह कम-से-कम एक बार हँसे—या मुस्कुराए; और वह लिखते समय उस मधुर व्यापार की कल्पना भी कर लेता है। देशगत सामीप्य से वंचित यह मानसिक संबंध उसे विचित्र तृप्ति देता है।

प्रयाग से लिखे हुए पहले पत्र का उत्तर देते हुए साधना ने लिखा था—'अब मुझे खुद ही पूज्य और सम्मान्य लिखना उचित नहीं लगता क्योंकि दिन-प्रतिदिन (बडों के संसर्ग से)स्वयं मैं भी तो बड़ी हो रही हूँ ! आपको अब मैं सचमुच ही अपनी लगने लगी हूँ, क्यों ? पहले क्या लगती थी ? मुझे तो आप, जब से देखा है तभी से, अपने लगते हैं। नहीं तो इतना परिश्रम करके मैं किसी को सन्तरे खिलानेवाली नहीं हूँ।'

उत्तर में उसने लिखा—'क्या झूठमूठ भी अपना लगना होता है ? तुमने शायद ऐसे ही समझा होगा।' साधना का उत्तर भी अभियोग-रूप था—'बहिनों को झूठा समझने का अधिकार शायद भाइयों को होता है !'

हँसी के स्थलों से कुछ हटकर पत्र विविध आलोचनाओं में उलझ पड़ते हैं, और कभी-कभी अप्रत्याशित गहराइयों में उत्तर जाते हैं। एक बार उसने प्रश्न किया—'यह अपनापन क्या चीज़ है ?' साधना ने लिखा—'सोचकर उत्तर दूँगी।'

अगले पत्र में उसने एक फोटो का उल्लेख किया था—'तुम्हारी जीजी ने एक अपना और तुम्हारा सम्मिलित फोटो, जो संयोगवश मैंने एक बार देख लिया था, मेरे माँगने पर भेज दिया है। देखता हूँ, गाँव की लड़कियाँ काफी भोली होती हैं।' इसके उत्तर में साधना ने लिखा—'कितनी प्रतीक्षा के बाद आपका स्नेहलेख मिला, जैसे कुछ देर को आप ही मिल गए। हाँ भैया !···क्या अपना और मेरा फ़ोटो मिलाकर कह सकते हो कि दोनों एक ही माँ की सन्तानें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हैं। पढ़ा ही था अब अनुभव कर रही हूँ कि आनन्द में भी पीड़ा और पीड़ा में आनन्द होता है। क्या यही तो "अपनापन" नहीं है?'

'क्या यही तो अपनापन नहीं है?' चन्द्रनाथ अपने प्रश्न के इस समाधान को काफी देर तक मन में दुहराता रहा। और आज उसे फिर याद आ रही है। अपने प्रति साधना की स्नेह-व्यंजनाओं से कभी-कभी हृदय में एक विचित्र दर्द-सा क्यों उठता है? उसके जीवन में यह एक अनुभव है। कष्ट और आनन्द का यह सम्मिश्रण क्या है? क्या सचमुच अपनापन है, प्रेम है?

और उसे लगता है मानो वह अनन्त काल से ही अपनेपन की के लिए प्रार्थी रहा है। मानों यह उसकी एक चिरंतन प्यास थी जो अब नजर आ रही है। अपनी इस तृप्ति के अपार सुख को वह कैसे सहन करे?

उसे दीख रहा है—मानो मानव-जाति का प्रत्येक सदस्य, प्रत्येक इसी प्यास से विकल है। प्रत्येक व्यक्ति प्यार चाहता है, सहानुभूति चाहता है, चाहता है किसी के मुख से सुनना कि 'तुम मेरे हो, मुझे प्रिय हो।' आश्चर्य बात है कि भीड़ भरे मानव-समाज में हजारों मनुष्य परस्पर ठेलते हुए एक-दूसरे की इस प्यास को नहीं बुझा पाते।

इस सर्वव्यापी प्यास का उद्‌गम कहाँ है, और उसका क्या उपयोग क्या वह किसी तरह मानवता की इस प्यास, इस जलन और पीड़ा को कर सकता है? क्या कला उसे यह करने में सहायता दे सकती है?

चन्द्रनाथ को इस पत्र का उत्तर देने में देर लगी। उसने उसे कई बार और पुनः पत्रोत्तर लिखने से पहले पढ़ा। यह लड़की इतना सुन्दर पत्र लिख लेती है? 'दोनों एक ही माँ की सन्तानें हैं' यह सुन्दर वाक्य कहाँ खोज लिया गया है? और वह सुन्दर भी क्यों है? क्यों यह हृदय पर कोमल चोट करता है? एक माँ के जाये भाई बहिन तो इतने दुर्लभ नहीं हैं क्या एक-दूसरे के इतने निकट होते हैं? उनमें क्या इतनी ही प्रीति होती शायद सगे भाई-बहिनों को एकरक्तता का रहस्यमय तन्तु बांधे रहता है, पर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सचेतन मनुष्य के जीवन में रक्त-सम्बन्ध को इतना महत्त्वपूर्ण होना चाहिए ? सुशीला से भी तो उसका कोई रक्त-सम्बन्ध नहीं है……।

'हम एक ही माँ की सन्तानें हैं' मानो यह सिर्फ कहने का ढंग है कि हम एक अनिर्वचनीय अर्थ में एक हैं, एक-दूसरे के हैं। यह एक-पन की भावना क्यों इतनी मोहक, इतनी मादक लगती है ? 'कोई मेरा है और मैं किसी का हूँ' यह भाव मानव-हृदय को क्यों पागल बना देता है ?

उसने उत्तर में लिखा—'बहिन, तुम्हारा अत्यन्त प्यारा पत्र पाया। पढ़-कर कुछ वैसा ही कष्ट हुआ जिसका तुमने संकेत किया है। तुम कविता करती हो या नहीं, मुझे नहीं मालूम, पर तुम्हारा हृदय अत्यन्त कोमल है।……जीवन भर बहिन के स्नेह और विश्वास का पात्र रह सकूँ, यही प्रार्थना है। कभी भाई-बहिन एक साथ भी रहेंगे ? या सदैव काग़ज़ के लेख के रूप में ही मिलोगी ?' इस पत्र में कोई ऐसी बात न थी जिसे विशेष रूप में उत्तर की अपेक्षा हो, फिर भी वह साधना के पत्र की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। काग़ज़ और स्याही से निर्मित पत्र सुहृदों के पास के कौन-सी निधियाँ लेकर आता है ?

●

: १६ :

प्रगतिशील क्लब की अगली मीटिंग में चन्द्रनाथ नहीं गया। वाद-विवाद में वहाँ जो कटुता उत्पन्न हो जाती है उसकी स्मृति उसके मन में वहाँ के वातावरण के प्रति विरक्ति उत्पन्न करने लगी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वीरेन्द्र उस दिन अपने किसी मित्र के घर 'ब्रिज' खेलने गया था। को पाँच बजे के बाद जब वह लौटा तो उसने चन्द्रनाथ को आँगन की छाया निरुद्देश्य ढंग से घूमते पाया।

'आज आप क्लब नहीं गए ?' उसने विस्मय के स्वर में पूछा।

'नहीं, आज चित्त कुछ यों ही हो रहा था।'

'क्यों क्या घर की याद आ रही है ?' वीरेन्द्र जानता था कि चन्द्र विवाहित है और इस परिस्थिति को लेकर अक्सर हँसी कर लेता था।

'नहीं,' चन्द्रनाथ ने ईषत् हास्य से कहा।

वीरेन्द्र ने प्रस्ताव किया—आज आप हमारे साथ सिनेमा देखने आपकी तबीयत लग जायगी। फिल्म भी अच्छा आया हुआ है।

सदा की भाँति आज भी चन्द्रनाथ ने निषेध किया, पर अन्त में वी का अनुरोध विजयी हुआ।

दोनों चल दिए। मार्ग में वीरेन्द्र ने एक मित्र की तलाश की, पर वह सिद्ध हुई।

आज "नर्तकी" नामक खेल होनेवाला था। सिनेमा, घर में भीड़ वीरेन्द्र को फर्स्ट क्लास के टिकट लेने पड़े। दोनों जाकर सब से पीछे के बैठ गए। खेल शुरू होने में थोड़ी देर थी।

चन्द्रनाथ के पास की कतिपय सीटों को रूमाल आदि रखकर घेरते वीरेन्द्र ने कहा—मुमकिन है कुछ दोस्त लोग आ पहुँचें, पहले से इन्तजाम रखना चाहिए।

शीघ्र ही इस सतर्कता की सार्थकता सिद्ध हो गई। कुछ मिनट ही बीते सहसा वहाँ के कृत्रिम अन्धकार को भेदता हुआ पीछे का पर्दा उठा और एक का महीन कण्ठ-रव सुनाई दिया। दर्शक समाज में से कुछ की आँखें पीछे गईं। वीरेन्द्र ने हाथ पकड़कर चन्द्रनाथ को बताया, 'आप की प्रेमलता आई हैं।' बात करते हुए प्रवेश करना प्रेमलता की आदत थी, वह क्लब में प्रायः इसी प्रकार पहुँचती थी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चन्द्रनाथ ने पीछे देखा। प्रेमलता उसके पास आ पहुँची थी। साथ में आशा भी थी। वह संभ्रम में उठकर खड़ा हो गया और उसके मुख से निकला—आइए।'

प्रेमलता उसके पास ही बैठ गई। आशा ने उसके बराबर की सीट ली।

'आज आप मीटिंग में नहीं आए ?' प्रेमलता ने बात शुरू की।

'जी नहीं, आज मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, चन्द्रनाथ ने किंचित् संकोच से कहा। फिर जैसे आत्म-विरोध की आशंका से उसने जोड़ा—'यहाँ भी मेरे यह मित्र मुझे खींच लाए हैं।' यह कहकर उसने वीरेन्द्र की ओर इंगित किया।

वीरेन्द्र का ध्यान इधर ही था। उसने तुरन्त प्रेमलता को लक्ष्य करके कहा—

'देखिए यह झूठ कह रहे हैं। इन्हें मालूम था कि आप आएँगी, इसीलिए चले आए। आप लोगों के लिए सीटें भी रिजर्व कर ली थीं।'

'ओह ! बहुत धन्यवाद।' कहती हुई प्रेमलता जोर से हँस पड़ी। आशा भी हँसने लगी। चन्द्रनाथ भी बिना मुस्कराए न रह सका। उस हास्य ने वीरेन्द्र और प्रेमलता का परिचय करा दिया।

'आज क्लब में आप की "एब्सेन्स" (अनुपस्थिति) हम सब को बहुत खल रही थी। मैंने कई बार इधर-उधर देखा कि आप कहीं आ गए हों, पर आप कहाँ दीखते।'—प्रेमलता ने चन्द्रनाथ को लक्ष्य करके कहा।

'मेरी तबीयत ठीक न थी', उसने दुहरा दिया।

'कैसी तबीयत है आपकी, सिर में दर्द है क्या ? आप पढ़ते बहुत हैं।'

चन्द्रनाथ चुप रहा।

'आप की पिछली मीटिंग की स्पीच मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं उस विषय पर आप से कुछ "डिस्कशन" (आलोचना) करना चाहती थी। आशा भी कुछ प्रश्न पूछने को कहती थी, क्यों आशा ?'

आशा ने संकोचपूर्वक सिर हिलाकर समर्थन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वीरेन्द्र ने कहा—तो फिर आप कल हमारे यहाँ आइए न, हमें भी डिस्कशन सुनने को मिल जायगा। क्यों मिस्टर चन्द्रनाथ ?

चन्द्रनाथ—ठीक तो है।

प्रेमलता ने चन्द्रनाथ पर दृष्टिक्षेप करके कहा—आप ही हमारे यहाँ आइए न ?

चन्द्रनाथ—जैसी आपको सुविधा हो। आप और वीरेन्द्र बाबू मिलकर तय कर लीजिए।

वह अकेले प्रेमलता के यहाँ जाने की सम्भावना से संकुचित हो उठा था, इसलिए उसने ऐसा भाव दिखाया जैसे वीरेन्द्र का साथ होना आवश्यक हो। वीरेन्द्र ने प्रेमलता से कहा—कम-से-कम एक बार तो हमारे ग़रीबख़ाने पर तशरीफ़ लावें, हम तो पहुँचा ही करेंगे।

प्रेमलता ने हँसकर कहा—अच्छी बात है, मैं आऊँगी।

खेल शुरू हुआ। अन्धकार में कोई किसी को साफ दिखलाई नहीं देता था, लेकिन, शायद, प्रत्येक को इसका अस्पष्ट आभास था कि उसके पड़ोसियों पर खेल का क्या भौतिक प्रभाव पड़ रहा है। आशा चुपचाप, पत्थर की मूर्ति की तरह, सिनेमा के पर्दे पर आँखें गड़ाए थी। वीरेन्द्र की दृष्टि कभी-कभी चित्रपट से हटकर प्रेमलता की दिशा में घूम जाती थी। चन्द्रनाथ के नेत्र चित्रपट पर थे, लेकिन कान बरबस प्रेमलता की गति-विधि को सूँघ रहे थे। सबसे ज्यादा क्रियाशील प्रेमलता थी। सिनेमा के दृश्य उसे स्पष्ट ही सबसे अधिक विचलित कर रहे थे। बौद्धिक उत्तेजना या प्रेरणा की तरह शारीरिक हलचल को भी मनुष्य दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। प्रेमलता के उद्वेलित शरीर की चपलता का भार, सदैव की तरह, आशा को सहना पड़ रहा था। वह कभी उसका हाथ पकड़कर खींचती, कभी उसका कंधा झकझोर देती, कभी अपनी धीमी, अस्पष्ट, सुरीली आवाज़ से उसके कान में कुछ कहकर हँस पड़ती।

एक बार आशा ने उसे झिड़क दिया। अब प्रेमलता शांत होकर खेल देखने लगी। अपने बाईं ओर यकायक खामोशी का वातावरण पाकर चन्द्रनाथ

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को कुतूहल हुआ, उसने प्रेमलता की दिशा में देखा। उसी समय प्रेमलता भी उसकी ओर देखने लगी। चन्द्रनाथ ने संकोचवश अपनी दृष्टि तेज़ी से पर्दे की ओर घुमा दी। कुछ मिनट खामोशी में बीत गए।

एक प्रेम-दृश्य सामने आया। नर्तकी अपने प्रेमास्पद को, जो पहले एक मठाधीश का ब्रह्मचारी था, बस में करने के लिए कुछ कोमल संकेत कर रही थी। खेल के भीतर यह एक नाजुक क्षण था। सारे दर्शक मुग्ध भाव से पर्दे की तस्वीर को देख रहे थे। हॉल में सम्पूर्ण सन्नाटा था। उसी समय चन्द्रनाथ को कुर्सी की भुजा पर रखे हुए अपने हाथ पर एक दूसरे हाथ का स्पर्श मालूम पड़ा।

उसके शरीर में विद्युत्कंपन-सा फैल गया। उसे तुरन्त ही मालूम हो गया कि यह प्रेमलता का हाथ है। वह उसके हाथ को अपने कोमल कर-स्पर्श से दबा रही थी।

क्षण भर को चन्द्रनाथ आत्म-विस्मृत हो गया, वह सहसा अपने कर्तव्य का निश्चय नहीं कर सका। फिर उसने धीरे-से अपना हाथ हटाकर अपनी गोद में रख लिया।

प्रेमलता निश्चित भाव से आशा से खेल की आलोचना करने लगी।

खेल समाप्त होने पर वीरेन्द्र ने दोबारा प्रेमलता को अपने निमन्त्रण की याद दिखाई। प्रेमलता ने हँसते हुए कहा—मुझे अच्छी तरह याद है, और याद रहेगा; लेकिन कल नहीं, परसों; तीन बजे, नोट कर लीजिए।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

: २० :

मंगलवार को दिन के दो बजे से कुछ पहले ही प्रेमलता और आशा ने काटेज में प्रवेश किया।

चन्द्रनाथ आज विश्वविद्यालय नहीं गया था। हफ्ते में एक-दो दिन वह प्रायः काटेज में ही बिता देता है, अन्वेषण-कार्य से बाहर कुछ लिखने-पढ़ने के लिए। आज जो वह वहीं रहा उसका प्रच्छन्न कारण उक्त अतिथियों के आने की सम्भावना ही थी। फिर भी उनके आगमन ने उसे संभ्रम में डाल दिया, क्योंकि अभी तीन बजने में बहुत देर थी।

वह हड़बड़ा कर उठा और दोनों का स्वागत करते हुए उन्हें कुर्सियों पर बैठने का संकेत किया। उसके यहाँ काठ के चमकीले फर्निचर के बदले स्थानीय कारीगरों का बनाई हुई मोटे बेंत की कुर्सियाँ और उसी की मेजें थी वे भी सेकण्ड हैण्ड जो सस्ती होने के कारण खरीद ली गई थीं। आज से पहले उसका इस बात पर कभी ध्यान नहीं गया था। आज उसने बड़ी तीव्रता से यह अनुभव किया कि उसका घर उन विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करने योग्य नहीं है।

'क्या आज विश्वविद्यालय से जल्दी छुट्टी मिल गई?' उसने मुस्कुराने की चेष्टा करते हुए कहा।

'हाँ, मेरी तो अध्यापिका नहीं आई थीं और आशा को मैं खींच लाई।'

'वीरेन्द्र बाबू लगभग एक घण्टा पहले गए हैं और ढाई, पौने तीन बजे तक आने का कह गए हैं', कहकर चन्द्रनाथ ने महसूस किया कि उसने कोई विशेष बुद्धिमानी की बात नहीं कही।

प्रेमलता ने कहा—'कोई हर्ज नहीं, आप तो हैं' और फिर इधर-उधर देखकर— कितना सादा जीवन है आपका, और बाप रे! कितनी पुस्तकें इकट्ठी कर रखी हैं। मेरा तो देखकर ही सिर चकराने लगे।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चन्द्रनाथ—रिसर्च के लिए काफी पढ़ना पड़ता है।

वास्तव में यह बात झूठ थी क्योंकि अधिकांश पुस्तकों का रिसर्च के विषय से कोई सम्बन्ध न था।

'तभी तो आप इतनी सुन्दर वक्तृताएँ देते हैं।......आपकी उस दिन की स्पीच मुझे बहुत अच्छी लगी'। मुझे भी ऐसा बोलना सिखा दीजिए न।'

'नहीं...यों ही...मैं तो स्पीच देना बिलकुल नहीं जानता।'

'यों कहिए कि सिखाना नहीं चाहते।'

चन्द्रनाथ कोई उत्तर न दे सका।

परसों रात से चन्द्रनाथ बराबर प्रेमलता के सम्बन्ध में सोचता रहा है। वह कितनी सुन्दर है, कितनी मोहक। उसके उस स्पर्श का क्या अर्थ हो सकता है?

प्रेमलता उसके सामने बैठी है। आज से पहले कभी नारी-मूर्तियाँ उस काटेज में नहीं देखी गई थीं। और फिर मूर्तियाँ भी कैसी, आपातत: असाधारण। वह कभी-कभी प्रेमलता के तरुण कमल जैसे मुख पर दृष्टि डाल लेता है, पर संकोच से वहाँ दृष्टि ठहरा नहीं पाता। इसके विपरीत आशा की दिशा में दृष्टि रखना उसे ज्यादा सरल लग रहा है।

सहसा प्रेमलता कुछ याद करके चौंक पड़ी। 'वाह! मैं अपनी नोटबुक और पत्रों के अंक तो गाड़ी में ही भूल आई।...मैं आपको दिखाने के लिये अपनी कुछ रचनाएँ लाई थी।....आशा बहिन! ड्राइवर से जरा कहकर मँगवा तो लो।'

यह काटेज एक बड़े बँगले के पीछे स्थित थी, दोनों के आने-जाने का रास्ता एक ही था, और दोनों एक ही व्यक्ति की सम्पत्ति थे। बाहर सड़क से अन्दर काटेज तक आनेवाला मार्ग काफी लम्बा था और वीरेन्द्र के कमरे के निकट ही खत्म होता था। वहीं कहीं गाड़ी खड़ी थी। आशा उठकर उसकी दिशा में चल दी।

प्रेमलता और चन्द्रनाथ अकेले रह गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उसका दिल धड़कने लगा, सिनेमा की घटना याद करके। यह प्रगल्भ लड़की न जाने क्या कहने-करने लगे। वह संकोच से गड़ा जा रहा था।

सहसा प्रेमलता ने मुस्कुराते हुए कहा—मालूम होता है, आप को अध्ययन से बिलकुल फुर्सत नहीं मिलती, बाल तक काढ़ने की नहीं।

चन्द्रनाथ ने मानो सुना ही नहीं, वह साहस-पूर्वक उसकी मधुर मुस्कुराहट को देखने की चेष्टा कर रहा था। प्रेमलता कह रही थी—उस दिन क्लब की मीटिंग के बाद जब आप चले तो मैंने बहुतेरा चाहा कि आप से कुछ बात करूँ, लेकिन आप जैसे अपने अन्दर डूबे हुए थे। दो-एक और सदस्य भी आप से बातचीत करना चाहते थे।

चन्द्रनाथ फिर कोई उत्तर न दे सका, चुपचाप कभी प्रेमलता की ओर और कभी आँगन की दिशा में देखता। उसकी बिलकुल समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। उस सम्मोहक रूप-शिखा की उपस्थिति में दृष्टि से अधिक उसका मस्तिष्क चौंधियाया हुआ जान पड़ता था।

'आपको उस दिन का खेल कैसा पसन्द आया?' प्रेमलता तिरछी गर्दन करके पूछ रही थी। उसका दाहिना कपोल हाथ के रूमाल पर टिक रहा था।

'अच्छा था, पर कहीं-कहीं अस्वाभाविक हो गया था।···नर्त्तकी का बाद का अभिनय कुछ कम सफल रहा।'

'यही मैंने कल आशा से कहा था, मेरी और आपकी ठीक एक सम्मति है।'

आशा आ पहुँची। अब प्रेमलता चन्द्रनाथ को अपनी रचनाएँ दिखाने लगी। पहले उसने वे रचनाएँ दिखानी शुरू कीं जो मासिक-पत्रों में स्थान पा चुकी थीं। इन रचनाओं की संख्या कोई अधिक नहीं थी। पिछले तीन वर्षों में प्रेमलता की जो कृतियाँ छप चुकी थीं उनमें एक निबन्ध "स्त्री-स्वातन्त्र्य" पर था, एक कहानी थी और एक एकांकी नाटक। कहानी पर लेखिका को विश्वविद्यालय की प्रतियोगिता में पुरस्कार भी मिल चुका था। चन्द्रनाथ ने दृष्टि डालकर अंकों को अपने पास रखते हुए कहा—'मैं इन्हें पढ़कर लौटा दूँगा।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'हाँ, कोई हर्ज नहीं', प्रेमलता ने अपने मोहक स्वर में विशेष मिठास भरते हुए कहा और फिर अपनी नोटबुक उठाती हुई बोली—इसमें मेरी कविताएँ हैं।

'आप कविता भी करती हैं', कहते हुए चन्द्रनाथ ने बड़ी उत्कंठा से नोटबुक अपने हाथ में ले ली।

इतने में दाईं ओर ताला खटकने की आवाज हुई। 'शायद वीरेन्द्र आ गए', चन्द्रनाथ ने व्यक्त प्रसन्नता से कहा।

शीघ्र ही वीरेन्द्र वहाँ आ पहुँचा, पहुँचते ही उसने बड़े तपाक से प्रेमलता और आशा को नमस्ते किया। फिर विलम्ब हो जाने पर खेद प्रकट करके बोला—कहिए आप लोग क्या बातें कर रहे थे ? (चन्द्रनाथ से) आपके हाथ में यह नोटबुक कैसी है ?

'इसमें आपकी कविताएँ हैं', चन्द्रनाथ ने प्रेमलता की ओर संकेत करके कहा।

वीरेन्द्र ने नोटबुक अपने हाथ में ले ली और कविताओं पर दृष्टि डालते हुए कहा—आप कविताएँ तो बड़ी सुन्दर लिखती हैं, मिस प्रेमलता।

प्रेमलता ने उसे धन्यवाद दिया।

'दो-एक कविताएँ पढ़कर सुनाएँ तो मजा आए।'

प्रेमलता ने चन्द्रनाथ की ओर देखकर कहा—आप के सामने मैं क्या कविता पढ़ूं, पहले आप अपनी रचनाएँ सुनाएँ।

वीरेन्द्र ने कहा—पहले हम आपकी कविता सुनेंगे, मिस प्रेमलता। मिस्टर चन्द्रनाथ फिर सुनाएँ।

इस पर प्रेमलता अपनी 'वियोगिनी' शीर्षक कविता पढ़ने लगी। बाद में चन्द्रनाथ को मालूम हुआ कि यह प्रेमलता की मित्र-मण्डली द्वारा सबसे अधिक प्रशंसित कविता थी। कतिपय पद्य पढ़ने के बाद वह रुकी, इस आशा में कि उसकी प्रशंसा की जाय। वीरेन्द्र ने कहा, 'बहुत सुन्दर'; लेकिन चन्द्रनाथ चुप रहा। प्रेमलता ने अनुत्साहित होकर कहा—इस समय पढ़ने में जी नहीं लगता, पच्चीस तारीख को कवि-सम्मेलन में पढ़कर सुनाऊँगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

वीरेन्द्र ने पूछा—यह कवि-सम्मेलन कहाँ होगा ?

'आपको नहीं पता, हमारी हिन्दी-परिषद् अनन्त चतुर्दशी के दिन वृहत् कवि-सम्मेलन का आयोजन कर रही है। (चन्द्रनाथ से) आपको भी उसमें सम्मिलित होना पड़ेगा।'

चन्द्रनाथ—मुझे ? मैं तो कविता-पाठ करना जानता ही नहीं।

'नहीं साहब आपको जाना ही होगा···आप नहीं जानतीं, मिस्टर चन्द्रनाथ बहुत बढ़िया कविता-पाठ करते हैं,' वीरेन्द्र ने कहा।

चन्द्रनाथ—इस झूठ से कोई लाभ है····भला कब आपने मुझे कविता-पाठ करते सुना है ?

वीरेन्द्र—बाक़ायदा तो शायद नहीं सुना है, लेकिन सुबह-शाम गुनगुनाते हुए तो अक्सर सुन लेता हूँ।

प्रेमलता—आपको चलना ही पड़ेगा, मिस्टर चन्द्रनाथ, क्योंकि क्लब की ओर से मैं आपका नाम दे चुकी हूँ।

आशा अभी तक मेज पर पड़े "लीडर" के पन्ने उलट रही थी। प्रेमलता के कविता-पाठ में वह दिलचस्पी लेती नहीं दिखाई दी थी। कवि-सम्मेलन की चर्चा के बाद खामोशी होने पर वह अकस्मात् प्रेमलता को सम्बोधित कर बोली—जीजी, उस स्पीच के बारे में आलोचना नहीं होगी।

'हाँ, यह तो हम भूल ही गए', प्रेमलता ने कहा, 'मैं तो कविता के प्रवाह में ऐसी बह जाती हूँ कि····'

आशा का बोलना चन्द्रनाथ के लिए एक घटना थी। आज पहली बार उसने उसका स्वर मानो ठीक से सुना। यह लड़की बड़ी मितभाषिणी है। क्लब में वह बिलकुल चुप बैठी रहती है, और कभी प्रश्न करना हुआ तो लिखकर भेज देती है। उत्तर सुन लेने या समझ लेने की सूचना वह प्रायः सिर के स्पन्दन या नेत्रों के संकेत से ही देती है। संकेत द्वारा ही वह प्रायः किसी स्पीच के प्रति आदर या अवज्ञा का भाव भी प्रकट करती है। उस दिन सिनेमा में भी उसे किसी ने बोलते नहीं सुना। नमस्ते भी वह इशारे से ही करती है। अतः आज

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जब उसने अपनी ओर से चन्द्रनाथ की वक्तृता पर आलोचना करने का प्रस्ताव किया तो उसने दोहरी कृतज्ञता महसूस की, और वह आशा को आदर देने के लिए पूर्णतया उसकी ओर आकृष्ट हो गया।

'क्या मेरी वक्तृता के सम्बन्ध में आपको कुछ आपत्ति है ?' उसने विशेष रूप से आशा को लक्ष्य कर कहा।

आशा—मैं उसके कुछ अंशों को समझ नहीं सकी हूँ।

चन्द्रनाथ—आप अपनी कठिनाइयों का निर्देश कीजिए, मैं यथाशक्ति उन्हें दूर करने की चेष्टा करूँगा।

आशा—आपकी वक्तृता से यह स्पष्ट नहीं हुआ कि आप क्रान्ति की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं या नहीं।

चन्द्रनाथ—यदि क्रान्ति का अर्थ ऐसा परिवर्तन है जो बदली हुई परिस्थितियों में मानव-हित के लिए जरूरी है तो उसकी आवश्यकता स्वीकार करनी ही चाहिए।

'आप हिंसात्मक क्रांति में विश्वास करते हैं या नहीं ?'

'नहीं, क्योंकि मैं हिंसा में विश्वास नहीं करता।'

'क्या आप यह नहीं मानते कि शासक-वर्ग बिना युद्ध के अपनी शक्ति नहीं छोड़ सकता ?'

इतने में वीरेन्द्र ने प्रेमलता से कहा—मिस प्रेमलता, चलिए जरा मेरे दफ़्तरखाने पर तशरीफ़ ले चलिए। जब तक ये लोग शंका-समाधान करें तब तक हम लोग दो-चार कप चाय पीकर गरम हो लें।

'सच, मौसम बहुत ठण्डा है क्या ?' प्रेमलता ने हँसकर कहा।

वीरेन्द्र—आपने विज्ञापन नहीं पढ़ा, गरमी में गरम चाय ठण्डक पहुँचाती है।

प्रेमलता और वीरेन्द्र चले गए, कुछ क्षण को वातावरण जैसे सूना हो गया। चन्द्रनाथ ने पाया कि आशालता सहसा कुछ सलज्ज और निम्नमुखी हो गई है। अब उसने उस लड़की को कुछ अधिक ध्यान से देखा। वह समानान्तर चौड़ी रेखाओं से बनी किनारी की सफेद साड़ी पहने है और नीले-स्लेटी रंग के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चेक डिजाइन का ब्लाउज। ठोड़ी के दाहिनी ओर, कपोल के निम्न भाग में हलकी स्याही की बूँद जैसा मसा है। उसके होंठों पर नीलिमा और श्यामता के मिश्रण जैसा रंग है। ओष्ठ और नासिका की मध्य दीवार के बीच साफ़ किंचित् गहरी नाली है।

'आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया'—कहते-कहते आशा ने क्षण-भर को आँखें उठाईं, और फिर नीची कर लीं।

चन्द्रनाथ—आपका प्रश्न यह मान लेता है कि मनुष्य केवल एक निश्चित ढंग से प्रतिक्रिया कर सकता है। इसके विपरीत मेरी धारणा है कि मानव-व्यापार अनेक पथों में, कभी-कभी विरोधी दिशाओं में प्रवाहित हो सकते हैं। इसलिए न हम व्यक्ति की प्रगति के सम्बन्ध में निश्चित भविष्यवाणियाँ कर सकते हैं, न व्यक्ति-समूहों और इतिहास की। इतिहास में सशस्त्र क्रान्तियाँ भी हुई हैं और ऐसी भी जिनमें रक्तपात प्रायः नहीं हुआ, इंगलैण्ड में पार्लमेण्ट की शक्ति का क्रमिक विकास दूसरी तरह की क्रान्ति का उदाहरण है। पिछले महा-युद्ध के बाद वहाँ जनतांत्रिक चुनाव-प्रणाली से ही मजदूरों की सरकार बन गई थी। हमारे देश में भगवान् बुद्ध की शिक्षाओं द्वारा ऐसी ही रक्तपात-शून्य क्रान्ति उपस्थित हुई थी।

आशा चुप रही। कुछ देर में बोली—यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपकी लाइब्रेरी का निरीक्षण करना चाहती हूँ।

'अवश्य कीजिए', कहकर चन्द्रनाथ उठकर खड़ा हो गया।

'आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं', आशा ने उठते हुए कहा, 'मैं स्वयं देख लेती हूँ।'

कहकर वह धीरे-धीरे कमरे के भीतर घुसी, चन्द्रनाथ बाहर ही बैठ गया।

चन्द्रनाथ की लाइब्रेरी में पुस्तकें ढेर हैं। पर कैसी अस्तव्यस्त दशा में हैं वे! खुले बेंत के दो शेल्फों पर प्रायः दोहरी कतारों में लगी हुई, उनमें कुछ धूल भी भर ही जाती है। तरह-तरह की पुस्तकें हैं वहाँ, साहित्य की, दर्शन की, इतिहास और राजनीति की, पर वे विषय-क्रम से सँजोई हुई नहीं हैं। कई बार

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ ने चाहा है कि सब पुस्तकों की एक सूची बना ले, और उन्हें विषया-नुसार क्रम में रख दे, पर वैसा करने का अवकाश ही नहीं मिलता। विशेषतः उसकी खाट के सिरहानेवाले शेल्फ में पुस्तकें एकदम बेतरतीब पड़ी रहती हैं। चन्द्रनाथ किसी एक पुस्तक को आधे-पौन घण्टे से अधिक नहीं पढ़ पाता, अतः एक ही बैठक में पढ़ने के लिए उसे अनेक विषयों की कई पुस्तकों की जरूरत पड़ जाती है।

आशा एक-एक जगह काफी देर रुक-रुक उसकी पुस्तकें देख रही है, इससे चन्द्रनाथ के मन में विशेष प्रकार की गुदगुदी हो रही है। मानो कोई उसके व्यक्तित्व के अन्तरंग कक्ष में घुसकर उसकी तहों की परीक्षा कर रहा हो!

बीस-पच्चीस मिनट बाद आशा बाहर आई। बोली—आपका "टेस्ट" बड़ा विस्तृत है, बड़ा अच्छा संग्रह है।

फिर कहा—क्या आप समझते हैं कि साहित्यकार को राजनैतिक दलों में शरीक नहीं होना चाहिए ?

चन्द्रनाथ—जर्मन कवि गेटे का यही विचार है। स्वयं मैं कभी ऐसे दल में स्वस्थ महसूस नहीं करता। कांग्रेस के ध्येय और संघर्ष-प्रणाली से मुझे सहानु-भूति है, पर कांग्रेसियों के बीच भी मुझे बहुत भला नहीं मालूम पड़ता।.... मुझे लगता है कि राजनीति कुछ ज्यादा बाहरी चीज है, व्यक्तित्व की बाहरी सतह को छूनेवाली, प्रायः राजनैतिक कार्यकर्त्ता बड़ी स्थूल और छिछली मनोवृत्ति के लोग होते हैं।

आशा—सभी लोग तो नहीं।

चन्द्रनाथ—गांधी और नेहरू जैसे नेता वैसे नहीं हैं, यह मैं जानता हूँ। पर उनका सम्पर्क सुलभ कहाँ है ? मुझे लगता है कि साहित्य मानव-व्यक्तित्व के अधिक सूक्ष्म और कोमल पक्षों को छूता है।

आशा कुछ कहना चाहती थी कि इतने में प्रेमलता और वीरेन्द्र वहाँ पहुँच गए। प्रेमलता ने शिकायत के स्वर में कहा—'आशा! तुम तो किसी भले आदमी के सिर ही हो जाती हो।' (चन्द्रनाथ से) 'आप भी कहते होंगे कि किससे पाला पड़ा है, आशा देखने में ही सीधी है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ—नहीं-नहीं, मुझे तो इनसे बात करके बड़ा आनन्द हुआ।

आशा—मैं आपकी बात पूरी-पूरी समझ गई हूँ, ऐसा नहीं; पर मैं उस पर ध्यान-पूर्वक विचार करूँगी।

यह कहते-कहते वह उठ खड़ी हुई। उधर वीरेन्द्र चन्द्रनाथ का हाथ खींचते हुए कह रहा था—आप लोग मानेंगे नहीं; कम-से-कम इसका तो खयाल करें कि मिस प्रेमलता के हाथों की बनाई हुई बेसन की पकौड़ियाँ ठण्डी हुई जा रही हैं।

सब लोग वीरेन्द्र के कमरे में पहुँचे। वहाँ स्टोव आदि पकाने का सामान अस्त-व्यस्त दशा में फैला पड़ा था। टेबिल पर चाय की केतली आ गई थी और पकौड़ियों से भरी तश्तरियाँ भी लगाई जा चुकी थीं। प्रेमलता प्यालों में चाय ढालने लगी। वीरेन्द्र ने तश्तरियाँ बढ़ाते हुए कहा—लीजिए (कवयित्री) प्रेमलता देवी का प्रसाद है!

आशा ने गम्भीरता से कहा—सचमुच जीजी! तुम पकौड़ियाँ बना लेती हो, यह मुझे नहीं मालूम था।

वीरेन्द्र—यह सब भले आदमियों की संगत का फल है, मिस आशा; बस, आगे चुपचाप खाने का प्रोग्राम है।

प्रेमलता ने पकौड़ी मुँह में ठूँसते हुए कहा—यदि खाने के साथ पकाने का श्रेय भी मिल जाय तो क्या हर्ज है। वीरेन्द्र बाबू सचमुच बड़े गुणी हैं।

वीरेन्द्र—देखिए भण्डाफोड़ न कीजिए, मिस प्रेमलता, योंही कोई शादी का पैग़ाम नहीं भेज रहा है। लोग समझते हैं, लड़के में जाने क्या-क्या ऐब हैं।

चन्द्रनाथ—लेकिन हलवा-पकौड़ी बना सकना तो कोई दोष नहीं है; इससे तो पत्नी को सुविधा ही होगी। (प्रेमलता से) मैं आपको बता दूँ कि वीरेन्द्र बाबू हलवा भी अच्छा बनाते हैं; आज न जाने क्यों आप पर कृपा नहीं हुई। आप शादी के लिए ज़रूर इनकी सिफ़ारिश करें।

वीरेन्द्र—मिस प्रेमलता चाहें तो खुद भी कृपा कर सकती हैं; हमें तो कोई एतराज़ है नहीं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रेमलता ठहाका मार कर हँस पड़ी। बोली—'खूब, वीरेन्द्र बाबू, इसीलिए मुझे यहाँ निमंत्रित किया है। अभी मुझे एम्० ए० तो कर लेने दीजिए।'

वीरेन्द्र—तो बात पक्की रही। हम इन्तज़ार करने को तैयार हैं। मिस्टर चन्द्रनाथ आप गवाह हैं।

सब हँसने लगे। चायपानी के कुछ देर बाद प्रेमलता और आशा चलने को उद्यत हुईं। चन्द्रनाथ ने प्रेमलता के समीप पहुँच कर धीरे-से कहा—आप की कविताओं में कहीं-कहीं छन्द-संबंधी शिथिलता दीखती है; कहें तो उन्हें ठीक करने की कोशिश करूँ।

प्रेमलता ने कटाक्षपूर्वक कहा—अवश्य, अवश्य; मैं बहुत कृतज्ञ होऊँगी।

●

: २१ :

नागर द्वारा संपादित 'छात्रवाणी" का तीसरा अंक निकला। चन्द्रनाथ को उसकी एक प्रति वीरेन्द्र के माध्यम से मिली। वीरेन्द्र ने उसे देते हुए कहा—इसमें आपकी पिछली मीटिंग की स्पीच का सारांश छपा है और आपकी बड़ी प्रशंसा की गई है।

"छात्रवाणी" में विश्वविद्यालय से संबद्ध क्लबों तथा सोसाइटियों का विवरण छपता रहता है। इसका उद्देश्य उनके सदस्यों की 'छात्रवाणी" में अभिरुचि उत्पन्न करना है, यह वीरेन्द्र ने बतलाया।

जिस दिन प्रगतिशील साहित्य पर बहस हुई थी उस दिन रामचन्द्र नागर वहाँ बिलकुल ही नहीं गया था। संभवतः उसे मंत्री से उस दिन प्रकट किए गए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

विचारों का आभास मिला होगा, यह सोचते हुए चन्द्रनाथ ने अपनी वक्तृता का सारांश देखने के लिए पत्रिका के पन्ने उलटने शुरू किए। अवश्य ही वह नागर के प्रति कृतज्ञ अनुभव कर रहा था।

परन्तु जब उसने अपनी स्पीच से संबद्ध अंश को पढ़ा तो उसका मनोभाव एकदम बदल गया। नागर ने उसके विचारों को सर्वथा विपरीत रूप में समझा और व्यक्त किया था। उसने लिखा था—'निबन्ध-पाठक के बाद सबसे महत्व-पूर्ण वक्तृता हिन्दी के प्रसिद्ध उदीयमान कवि और लेखक श्री चन्द्रनाथ की हुई। आपने प्रगतिशील साहित्य का असली रूप समझाते हुए इस बात पर खेद प्रकट किया कि हिन्दी के वर्तमान लेखक न तो इतिहास के आर्थिक आधार और वर्ग-संघर्ष के सिद्धान्तों को समझते हैं और न फ्रायड के चेतना-विश्लेषण-वाद से ही सुपरिचित हैं। इस दृष्टि से वे विदेशी लेखकों से बहुत पीछे हैं।'

उक्त वक्तव्य को पढ़कर चन्द्रनाथ को बड़ी खीझ और खेद हुआ। वीरेन्द्र से बोला—'नागर महाशय ने यह क्या किया है? उन्हें यह सूझी क्या? मैंने जो कुछ कहा था उससे बिलकुल भिन्न बातें उन्होंने मेरे नाम के साथ जोड़ दी हैं। इससे मेरे विचारों के सम्बन्ध में कितना भ्रम फैलेगा!'

'आप क्या कह रहे हैं? क्या यह "आइडियाज़" (विचार) आपने प्रकट नहीं किए थे? तब फिर किसने किए थे?'

चन्द्रनाथ—संभव है, यह मंत्री जी की भूल हो; उन्होंने शायद मेरे वक्तव्य को समझा नहीं।

वीरेन्द्र—आप चिंता न करें मिस्टर चन्द्रनाथ, अगले अंक में नागर "करे-क्शन" (संशोधन) कर देगा।

अगले दिन विश्वविद्यालय में चन्द्रनाथ की नागर से भेंट हुई। नागर ने हँसते हुए उससे पूछा—'क्या सचमुच आपके विचारों का गलत परिचय दिया गया है? क्या आप प्रगतिशील साहित्य के विरुद्ध बोले थे?'

चन्द्रनाथ—पहले आप यह बतलाइए कि यह भूल आप से हुई है या मंत्री जी से?

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नागर—इससे आपको क्या मतलब ? मेरे पत्र में छपा है तो जिम्मेदारी मेरी है। आखिर आपके अपने विचार क्या थे, सुनूं तो।

चन्द्रनाथ—मेरी प्रगतिशील साहित्य की धारणा कुछ भिन्न है; पर उसे संक्षेप में नहीं कहा जा सकता।

नागर—पर मैंने जो विचार आपके नाम से लिखे हैं वे कुछ खराब तो हैं नहीं; आप नाहक इतना परेशान होते हैं।

चन्द्रनाथ—परेशानी का पर्याप्त कारण है; प्रत्येक व्यक्ति अपने ही विचारों के लिये ज़िम्मेदारी महसूस करना चाहता है।

नागर ने असहिष्णु होकर कहा—अच्छा महाशय, आगे से फिर ऐसी ग़लती नहीं होगी; इस बार माफ़ी दें। इससे ज़्यादा और मैं क्या कह सकता हूँ।

चन्द्रनाथ चुप हो गया, पर उसकी मुखभंगी से यह स्पष्ट था कि वह काफ़ी असन्तुष्ट है। उस रोज़ सारे दिन वह विशेष खिन्न रहा। इस खिन्नता का एक कारण यह भी था कि नागर ने अपनी भूल पर कोई हार्दिक दुःख प्रकट नहीं किया था।

धीरे-धीरे बाद के जीवन में वह जानता गया कि अखबार में किसी का नाम आना उसके लिये सचमुच महत्त्व की बात होती है, कि जनता सचमुच केवल इस प्रकार नाम देखकर प्रभावित होती है और यह कि अखबार में थोड़ी-बहुत ग़लत रिपोर्ट निकलने की पर्वाह नहीं करनी चाहिए। वर्त्तमान समय में अखबारों की कितनी अधिक शक्ति है, इसका भी उसे अधिकाधिक परिचय होता गया। किन्तु उस समय नागर की उस लापरवाही, और उससे भी अधिक उसकी अनुतापशून्य मनोवृत्ति को, वह एकदम क्षमा नहीं कर सका। उस समय वह यह हर्गिज़ नहीं मान सकता था कि दुनियां में सत्य के आग्रह से किसी तरह की हानि और झूठ से समझौते द्वारा किसी तरह का लाभ भी हो सकता है—यदि हो भी सके तो वह ऐसे हानि-लाभ की चिन्ता करने को तैयार नहीं है।

वह अखबारों और नागर जैसे व्यक्तियों के महत्त्व से सर्वथा अनभिज्ञ था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

:२२:

नागर से जिस दिन भेंट हुई थी उसकी साँझ में चन्द्रनाथ बैठा प्रेमलता की रचनाएँ पढ़ रहा था। इस व्यापार द्वारा वह संभवतः अपनी मानसिक खिन्नता को दूर भगा देना चाहता था।

पढ़ने के बीच में उसे साधना का पत्र मिला। उसने जल्दी से उसे पढ़कर रख लिया। स्पष्ट ही पत्र का स्वर उसकी तात्कालिक मनोवृत्ति के अनुकूल न था।

वह प्रेमलता की रचनाएँ पढ़ रहा था और साथ ही उसके व्यक्तित्व की भावना भी कर रहा था।

वीरेन्द्र के कमरे में जब सब लोग चाय पी रहे थे तो चन्द्रनाथ की दृष्टि बरबस प्रेमलता की गति-विधि को सूँघ रही थी। यथाशक्ति वीरेन्द्र तथा आशा से बातचीत करने का प्रयत्न करते हुए भी वह स्वयं अपने से अपनी यह दुर्बलता नहीं छिपा सका था। आज जैसे वह जान-बूझ कर उस दिन के उस दृश्य का रस ले रहा था।

कष्ट और अवसाद की स्थिति में कभी-कभी मन का आत्म-नियंत्रण शिथिल हो जाता है।

थोड़ी देर में वह प्रेमलता को भूलकर, उसके मानसिक प्रत्यक्षीकरण से विरत होकर, उसकी रचनाओं के पढ़ने में लीन हो गया।

रचनाएँ उसे विशेष प्रभावित नहीं कर रही थीं। लेखों में एक का विषय था, "नारी की स्वतंत्रता", उसमें विचारों की अपेक्षा बालिकोचित उत्साह ही अधिक था। लेखिका ने विवाहित स्त्रियों की दीनता और परवशता का विनोदपूर्ण चित्र खींचते हुए उन्हें अविवाहित रहने की सलाह दी थी। यदि पुरुष अविवाहित रह सकते हैं तो स्त्रियाँ क्यों नहीं? विवाह के बाद पुरुष की दासी बनकर रहने की अपेक्षा अविवाहित स्वतंत्र जीवन कहीं श्लाघ्य है। कहानी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रोमांटिक थी, और कालेज जीवन से सम्बन्ध रखती थी। उसकी नायिका थी सुषमा, जो तमाशा देखने के लिये एक साथ दो मित्र छात्रों से प्रेम करती थी, और उनके प्रेम-पत्र पाने पर उन्हें अपनी अन्तरंग सखी के सामने पढ़-पढ़कर हंसती थी। सुषमा की प्रेरणा से दोनों मित्रों में मनमुटाव हो गया और अन्त में वे झगड़ पड़े। एकांकी की कथावस्तु भी इसी कोटि की थी।

रात को चन्द्रनाथ प्रेमलता की कविताएँ लेकर बैठा। प्रेमलता ने स्वयं कहा था कि उसकी सबसे अधिक रुचि काव्य में है, अतः चन्द्रनाथ को आशा हुई कि शायद कविताएँ उच्चतर कोटि की होंगी। संग्रह की पहली कविता 'वियोगिनी' थी, उसके कुछ पद्य प्रेमलता ने उस दिन पढ़े थे। पहले दो पद्य सुन्दर थे, उनमें भाव और भाषा की सुकुमारता थी। तीसरे पद्य में उसे उस दिन छन्दोभंग का आभास हुआ था। उसने उसे फिर पढ़ा, छन्द का विपर्यय स्पष्ट था। लेखिका ने न जाने कैसे पद्य के उत्तरार्द्ध में एक मात्रा अधिक कर दी थी। आगे के दो पद्य छन्द की दृष्टि से ठीक थे पर उनके भावों की पूर्व पद्यों से तनिक भी संगति नहीं बैठती थी। उनमें निबद्ध भावनाएँ भी साधारण थीं। बाद के पद्य अपेक्षाकृत अच्छे थे।

चन्द्रनाथ ने बड़ी कठिनता से, मूल भाव की रक्षा करते हुए, तीसरा पद्य ठीक किया। किन्तु चौथे-पाँचवें पद्यों का वह क्या करे? उनके बदले उसे दो नए पद्य बनाकर रखने पड़े।

अब वह दूसरी कविताएँ पढ़ने लगा। उनमें भी प्राय: ऐसी ही कमियाँ थीं। फेर यही था कि अच्छे पद्यों का अनुपात "वियोगिनी" की अपेक्षा कम होता था। उसने देखा कि उन सबको ठीक करना असंभव है।

कविताओं की नोटबुक बन्द करते हुए उसके मुख से निकला, "मीडियाकर!" (नितान्त साधारण!) उसके मस्तिष्क ने कहा— उससे भी कम।

उसे लगा कि उसकी दृष्टि में प्रेमलता का व्यक्तित्व सहसा भिन्न प्रतीत होने लगा है। इस लड़की के बाह्य और अन्तर में कितना असामञ्जस्य, कितना अन्तर है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इस असामञ्जस्य और भिन्नता की प्रतीति से उसका अन्तर्मन निराश और खिन्न होने लगा था।

काफी देर वह चुपचाप, सूने मन से पड़ा रहा।

और वह सोच रहा था—प्रेमलता जैसी लड़की के सम्बन्ध में जो सिनेमा में वैसी ही हरकत कर सकती है, उसने यह आशा ही क्यों रखी कि उसका मस्तिष्क परिष्कृत हो सकता है! उसने चन्द्रनाथ के प्रति वह संकेत किया इसलिए नहीं कि वह उसके बौद्धिक एवं सांस्कृतिक व्यक्तित्व के प्रति आकृष्ट है—वह उस व्यक्तित्व को समझने योग्य ही कहाँ है?—बल्कि इसलिए''' कि वह उसकी प्रख्यापित आदर्शवादिता को सिर्फ स्टेज की चीज समझती है''' उसे, अपने अन्तर्मन से दम्भी और मिथ्यावादी मानती है।

यह सोचकर उसे क्षोभ और खीझ हुई।

उसे एक दूसरे प्रकार की खीझ हुई; क्यों नहीं विधाता ने इस लड़की को अधिक सुरुचि और प्रतिभा दी!

वह उठाकर एक पुस्तक पढ़ने की कोशिश करने लगा, पर उसका जी न लगा। अब वह मस्तिष्क को शून्य रखने की चेष्टा करता हुआ लेट गया।

सहसा उसे साधना के पत्र की याद आई, मानों ऊब और अरोचकता के अन्धकार में बिजली कौंध गई। उसे आश्चर्य हुआ कि वह अब तक उस पत्र को भूले रहा, उसे अपने प्रति क्रोध भी हुआ।

साधना ने लिखा था—'आपने पूछा है कि क्या हम लोगों का सान्निध्य सदा पत्रों के माध्यम से ही होगा''''मेरी इच्छा तो बहुत है कि भाई के साथ रहूँ और उनका सारा ज्ञान-भंडार टटोल डालूँ, पर कब और कैसे, यह समझ में नहीं आता। भैया! आप तो जानते ही हैं, हमारा समाज स्त्रियों पर कितना कड़ा नियन्त्रण रखता है।''''''''फिर भी मेरा मन कहता है कि इस लम्बे जीवन में हम लोग कभी-न-कभी अवश्य साथ रहेंगे—हमारे स्नेह में इतनी शक्ति अवश्य होनी चाहिए।

चन्द्रनाथ ने पत्र दो बार पढ़ डाला।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रेम की शक्ति के सम्बन्ध में उसने बहुत-कुछ सुना है, स्वयं कविता में लिखा भी है, पर क्या वह सब विश्वास करने योग्य है? उसे साधना की सरलता पर अनुकम्पा हो रही है।

किन्तु कुछ देर बाद वह सोच रहा था—हम दोनों को अवश्य ही साथ रह सकना चाहिए, बहुत-सी मीठी बातें करने के लिए, बहुत सोचने के लिए; बहुत-सी योजनाएँ बनाने के लिए। आखिर ऐसा क्यों नहीं हो?

और यह समाज, उन्हें बाधा देने वाली शक्ति—इसे किसने बनाया है, और क्यों? इसकी उपयोगिता क्या है? इसके असंख्य बन्धन, अनगिनत विधि-निषेध, किस प्रयोजन की पूर्ति के लिए हैं? यदि समाज का शासन व्यक्ति के जीवन को सुखी नहीं बनाता, उसे अबाधित नहीं बहने देता, तो फिर वह किस की सुविधा, किसके सुख के लिए है? व्यक्तियों से भिन्न भी क्या समाज की कोई सत्ता है?

विधि और निषेध का मूल क्या है? क्या मानव व्यक्तियों का सुख-दुःख ही उनका आधार नहीं है? कितने आश्चर्य की बात है कि समाज हमारे लोभ, ईर्ष्या और दम्भ पर, हमारे अज्ञान और मूर्खताओं पर, हमारे आलस्य और जड़ता पर वैसा कड़ा प्रतिबन्ध नहीं लगाता जैसा कि हमारे प्रेम पर। क्लेश और सन्ताप के स्रोतों को उसने अबाधित छोड़ दिया है, आनन्द के स्रोतों पर ही क्रूर दृष्टि है। वह उस लोभी वणिक् पर रोक नहीं लगाता जो गरीब और मूक किसान से अपरिमित व्याज वसूल कर लेता है, न उन असंख्य सरकारी कर्मचारियों पर जो पद-पद पर रिशवतें लेते हैं, न अमीरों के अहंकार और आत्मोपासना पर; आनन्द के सबसे निर्मल उत्स प्रेम पर, नर-नारी के कोमल भाव-बन्धन पर ही, उसकी कड़ी सन्देह-दृष्टि है। हिंदू समाज ने मानो अपनी सारी चापल्कता, समस्त अनुशासन-प्रियता को, विश्व के अशेष पापाचारियों से बचा कर, अबला नारी पर केन्द्रित कर दिया है—उसकी पुलिसमैनी दृष्टि सदैव नारी का ही अनुगमन करती रहती है। मानो हिन्दुस्तान का सबसे शंकनीय जीव, उसका सबसे अधिक भ्रष्ट प्राणी, नारी ही है! नारी विश्वसनीय नहीं है, नारी जिम्मेदार प्राणी नहीं है!···साधना उसके पास नहीं रह सकती, क्यों?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्या इसलिए कि वह अबोध है ? अथवा गैरजिम्मेदार है ? देश के कितने स्त्री पुरुष साधना जैसी बुद्धि रखते हैं ?....यह कैसा समाज है जहाँ स्थूल-से-स्थूल भ्रष्ट से भ्रष्ट आचरण के पुरुष को जितनी आजादी है, उसकी जितनी नैतिक साख है, उतनी श्रेष्ठतम प्रतिभाशालिनी नारी की नहीं।

और यहाँ नारी की प्रशंसा होती है—भारतीय नारी की स्तुति ! कैसा अपूर्व समाज है यह !

क्यों वह और साधना समीप रहने के सुख से वंचित रहें, एक-दूसरे की प्रेरणा से, सहायता से ? जीवन में आनन्द के, सुख के स्रोत सीमित हैं—क्यों एक ऐसे सुख से, जो उनके लिए सर्वोच्च सुख हो सकता है, यत्नपूर्वक दूर रखे जाय ? वह बड़ी स्पष्टता से यह प्रश्न बार-बार अपने सामने रखा रहा है पर उसे उसका कोई उचित समाधान नहीं दीखता।

वह सोच रहा है कि साधना के पत्र का उत्तर लिखे, लेकिन वह उसे क्या लिखे ? यह कि हमारा-तुम्हारा एक जगह, एक साथ रहना खतरनाक है। हम भारतवासियों को अपनी स्त्रियों की शुद्धता का, सतीत्व का गर्व है, और इस गर्व को अक्षुण्ण रखने के लिए यह जरूरी है कि हम उन्हें पिंजरे में बन्द करके रखें, घर की चहारदीवारी में, पिता की, पति या पुत्र की निगरानी में; भले ही उन पिता, पति या पुत्र का अपना चरित्र ठीक न हो.......।

चन्द्रनाथ उस समय साधना को पत्र नहीं लिख सका।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

:२३:

२५ सितंबर, अनंत चतुर्दशी। कल शाम ही वीरेन्द्र ने सूचना दी थी कि आज कवि-सम्मेलन होगा, और काटेज में मिस प्रेमलता के आने की सम्भावना है। स्वयं वीरेन्द्र बड़ी तत्परता से इस आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्त में जब वह आई तो चन्द्रनाथ ने पाया कि वह, अपनी पूर्व इच्छा के विरुद्ध, काफी प्रसन्न भाव से उसका स्वागत कर रहा है। प्रेमलता के साथ आशा भी थी।

चन्द्रनाथ ने आशा को लक्ष्य कर कहा—आप भी आई हैं।

आशा ने संकुचित मुस्कुराहट से कहा—जी हाँ; मैंने सोचा आपका कविता-पाठ सुनूं।

चन्द्रनाथ—मेरा अनुमान था कि आपकी काव्य में विशेष रुचि नहीं है।

प्रेमलता—विशेष रुचि तो सचमुच नहीं है; "पालिटिक्स" की स्कालर है न।""आपने मेरी रचनाएँ देखीं ?

'हाँ' कह कर चन्द्रनाथ ने उसकी सब चीजें निकालीं, कविताओं की कापी सबसे ऊपर थी। "वियोगिनी" कविता में संशोधन देखकर प्रेमलता ने पहली साँस में कहा—'धन्यवाद'; किन्तु बाद को वह गलत पद्यों को लेकर तर्क करने लगी।

चन्द्रनाथ के यह कहने पर कि उस पद्य में छन्द-निर्वाह नहीं हो सका है, वह उसे गाकर पढ़ने की चेष्टा करने लगी। उसकी इस हठपूर्ण असंगीतज्ञता पर चन्द्रनाथ को बड़ा आश्चर्य और क्षोभ हुआ।

'आप कितनी कविताएँ पढ़ेंगी ?' उसने निरर्थक-सा प्रश्न किया।

प्रेमलता ने कहा —'एक'। इस पर वीरेन्द्र बोला—'वाह ! यह आपकी पसन्द पर थोड़े ही निर्भर होगा। "आडियन्स" (श्रोता लोग) दूसरी कविताओं के लिए जिद करेंगे तो क्या आप मना कर देंगी ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ ने कहा—नहीं, आपकी यही कविता सर्वश्रेष्ठ है, आप इसी को पढ़ें।

सब लोग कवि-सम्मेलन के स्थान पर पहुँचे। एक बड़े हॉल में तीन समानान्तर कतारों में बेंचें पड़ी थीं। काफी श्रोता या दर्शक इकट्ठे हो चुके थे। कुछ बेंचें कवियों के लिए और कुछ महिलाओं के लिए अलग रिज़र्व थीं। वीरेन्द्र के कहने पर भी चन्द्रनाथ कविगणों की बेंचों पर न बैठ सका; वह ठीक उनके पीछे बैठ गया। प्रेमलता हँसती हुई महिलाओं की कतार में सबसे आगे की बेंच पर जा बैठी। कई कार्य-कर्ता छात्र घूम-फिर कर उसके आस-पास आने और उससे बातें करने लगे।

चन्द्रनाथ ने देखा कि प्रबन्ध-कार्य में नागर प्रमुख भाग ले रहा है। कीर्तिकान्त, हिमांशु जी तथा क्लब के अन्य कई सदस्य भी मौजूद थे। वे सब रंग-मंच के आस पास खड़े या घूम रहे थे।

कुछ ही समय में हॉल श्रोताओं से खचाखच भर गया। उनमें से अधिकांश विश्वविद्यालय के छात्र थे। चन्द्रनाथ की दृष्टि कभी पीछे जाती और कभी आगे, कभी वह श्रोताओं की भीड़ की गति-विधि का निरीक्षण करता, कभी आगत कवियों और प्रबन्धकों की। हॉल में घुसते-बैठते हुए छात्र काफी शोर मचा रहे थे। बैठे लोगों में ऐसे कम थे जो चुप और शान्त हों। कहीं दो-तीन छात्र नीचे सिर झुकाकर विशिष्ट छात्राओं की ओर संकेत करते हुए बातें कर रहे थे, कहीं प्रबन्ध-कर्ताओं पर उच्च स्वर में टीका-टिप्पणी हो रही थी। कुछ छात्र डेस्कों पर ऊँचे बैठे हुए सिगरेट का धुआँ उड़ा रहे थे, तो कुछ इधर-उधर घूमते, हँस-हँस कर बातें करते, दर्शकों का ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। कुछ छात्र बैठने की जगह न मिलने के कारण बेंचों तथा दीवारों के बीच में खड़े थे, और कुछ बाहर खिड़कियों में से झांक-झूंक रहे थे।

कार्यवाही प्रारम्भ होने में देर थी क्योंकि अभी सभापति, कवि रजनीकान्त, नहीं आए थे। छात्र-मंडली अधीर होने लगी। सर्वत्र कानाफूसी होने लगी और बातचीत का शोर भी बढ़ने लगा। कुछ प्रगल्भ छात्र आवाजें दे-देकर कार्यवाही

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रारम्भ करने की माँग करने लगे। जब इससे कार्य चलता नहीं दीखा तो कुछ ने तालियाँ पीट दीं।

चन्द्रनाथ का दिल धड़कने लगा। इस उच्छृंखल भीड़ में वह कैसे कविता पढ़ सकेगा? सहसा नागर ने खड़े होकर आगत लोगों से शान्त रहने की प्रार्थना की। क्षण भर को वे चुप हो गए, पर दो-तीन मिनट बाद ही फिर शोर होने लगा।

जन-समूह से भरे हुए उस वातावरण में लग रहा था मानो लोगों की व्यक्ति-गत सत्ताएँ खो गई हों। एक विचित्र प्रकार का कोलाहल, एक विचित्र प्रकार की गंध, एक विचित्र प्रकार की उत्सुकता, भय और संजीदगी हवा में भर रही थी। वहाँ खड़े हुए और घूमते हुए व्यक्ति मानो मानव-हृदय और मानव-मस्तिष्क से भिन्न किसी अन्य सत्ता के प्रति प्रतिक्रियाशील थे।

उपस्थितों के अधैर्य ने प्रबन्धकों को मजबूर किया कि वे कार्यवाही आरम्भ करें। हिमांशुजी को अस्थायी सभापति बनाकर कविता-पाठ के लिए कवियों का आह्वान होने लगा।

कवि-सम्मेलन के साधारण नियम के अनुसार पहले अपेक्षाकृत नए या कम प्रसिद्ध कवियों की बारी थी। एक-एक करके कवि-छात्र बुलाए जाने लगे। चन्द्रनाथ उन गायक कवियों की मुद्राओं का निरीक्षण करने लगा। सबसे पहले आनेवाला छात्र कवि काफ़ी अभ्यस्त था; चन्द्रनाथ ने पहले भी उसका कविता-पाठ सुना था। किन्तु तब अपेक्षाकृत एक छोटी गोष्ठी में उसने कविता-पाठ किया था। उस अवसर पर वह काफ़ी आत्म-विश्वास और नियंत्रण के साथ अपनी कविता सुना सका था। आज उसमें उतना आत्म-नियंत्रण एवं संतुलन नहीं दिखाई देता था। आत्म-विश्वास के बदले उसके चेहरे पर अव्यक्त घबराहट और जल्दबाजी का भाव था। कविता सुनाने के बाद जब वह चलने लगा तब ही, श्रोताओं की हलकी करतल-ध्वनि के बीच, उसे मुस्कुराते हुए देखा गया।

उसके बाद जो दो छात्र आए वे अपेक्षाकृत कम अवस्था के थे; कहीं अधिक घबराए हुए, और डरे हुए-से। उन्हें देखकर चन्द्रनाथ के हृदय में वात्सल्य-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मिश्रित अनुकम्पा का संचार हुआ। खैरियत हुई कि श्रोताओं ने, विशेष रस न लेते हुए भी, उनके काव्य-पाठ को सुन लिया।

इसके बाद आधे घंटे के भीतर कई कवियों की रचनाएँ सुना दी गईं। एक-दो को छोड़कर उनमें हर-एक का प्रायः वैसा ही भय एवं आकुलता का भाव रहा जैसा कि शुरू के कवियों का। और चन्द्रनाथ सोच रहा था—वह कौन सी प्रेरणा है जो इन युवकों को ऐसे मानसिक तनाव की स्थिति में खींच लाती है? इन गायकों में कितने हैं जिन्हें कृतज्ञता और अनुग्रह के भावों से शून्य यह जनता याद रखने का आयास करेगी?

सहसा कीर्तिकान्त ने चन्द्रनाथ का नाम पुकारा। उसका हृदय कोड़ा खाए हुए घोड़े की तरह कुलाँचें भरने लगा। प्रेमलता ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा और कहा—'उठिए'। वीरेन्द्र बोला—'घबराने की कोशिश न कीजिएगा; जोर से पढ़ें।' नाम दिया जा चुका था; चन्द्रनाथ ने देखा कि बचने का कोई उपाय नहीं है। बलि-पशु की भाँति वह सभापति की वस्त्रावृत चौकी की ओर चला।

वहाँ बैठकर वह काँपने लगा; शरीर से पसीना छूटने लगा था। उसे लग रहा था जैसे वह किसी अतर्कित, असहानुभूतिपूर्ण निर्वैयक्तिक सत्ता के सामने बिठा दिया गया है। उसे कविता पढ़ने के अवसर बहुत कम मिले हैं, और इतनी बड़ी भीड़ के सामने तो कभी नहीं। उसने महसूस किया कि वह किसी तरह कविता नहीं पढ़ सकेगा, किसी तरह भी नहीं।

उसी समय कवि रजनीकान्त के आगमन की सूचना मिली; चन्द्रनाथ को जैसे साँस लेने का अवसर मिला। उसकी दृष्टि प्रेमलता और आशा की दिशा में गई। आशा की दृष्टि तटस्थ थी, जैसे उसे किसी के आने की विशेष परवाह न हो; किन्तु प्रेमलता बड़ी तल्लीनता से प्रवेश करते हुए रजनीकान्त को देख रही थी।

रजनीकान्त के आने पर हिमांशु जी नाटकीय ढंग से उठ खड़े हुए और उनसे सभापति का आसन ग्रहण करने का आग्रह करने लगे। रजनीकान्त ने आनाकानी की, उस पर हिमांशुजी ने बाँह पकड़कर उन्हें तकिए के पास बिठा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दिया। दर्शकों ने करतल-ध्वनि की। क्रमशः जन-मंडली का हर्ष-कोलाहल कम हुआ। चन्द्रनाथ के संकट का समय फिर पास आने लगा।

अब तक वह नोटबुक के पृष्ठ लौट रहा था, मानो पढ़ने के लिये कविता छाँट रहा हो। अब सहसा एक पृष्ठ खोलकर वह रुक गया। कुछ क्षण बाद वह अपनी कविता पढ़ रहा था।

धीमे स्वर में शुरू करके धीरे-धीरे उसकी आवाज ऊँची होती गई, और वह क्रमशः अपनी स्वाभाविक संगीतपूर्ण लय में गाने लगा। गीत की गहरी संवेदना ने उसे अन्य संवेदनों से विरत कर दिया, इसलिए कुछ क्षण बाद उसे वह भूल गया कि वह किसी जन-समूह के सामने गा रहा है।

उसके पढ़ते समय कोई "वाह" का नारा नहीं लगा, न किसी ने ताली बजाई। समाप्त करने पर जैसे उसे अपने वातावरण का ध्यान हुआ और वह उठकर अपनी जगह की ओर चलने लगा। इसी बीच में लोग करतल-ध्वनि करने लगे थे। सीट पर पहुँचने पर वीरेन्द्र ने बाक़ायदा पीठ ठोंककर उसे शाबाशी दी। तब उसे यह आभास हुआ कि उसका कविता-पाठ असफल नहीं हुआ।

वह इतना विचलित था कि अपने बाद में आनेवाले कवि को ठीक से नहीं सुन सका। उसके बाद आनेवाले कवि को पढ़ने के ढंग में कोई अतर्कित कमी थी जिससे लोग कविता शुरू होते ही असंतोष-सूचक तालियाँ पीटने लगे। सभापति के विशेष अनुरोध पर वह कविता सुनी गई। चन्द्रनाथ की सम्मति में वह विशेष कविता वहाँ पढ़ी गई बहुत-सी कविताओं से श्रेष्ठ थी।

अब प्रेमलता की बुलाहट हुई। स्त्री-कवियों की इस समय वही एकमात्र प्रतिनिधि थी। उसके उठकर खड़े होते-होते हॉल में कुछ क्षणों को पूर्ण खामोशी छा गई। सब लुब्ध भाव से उसे देख रहे थे। आज प्रेमलता सब दिन से अधिक आकर्षक दीख रही थी। हलके गुलाबी ब्लाउज पर मोतिया रंग की बनारसी साड़ी उसके शरीर से चिपट रही थी। गले में "डायमण्ड कट" नेकलेस थी और कानों में नवीनतम डिजाइन के "ईयरिंग", जो मृदु स्पन्दन से मानो नितान्त शुभ्र कपोलों और गर्दन की ओर संकेत कर रहे थे। भँवें विशेष काली

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और होंठ अधिक लाल दीख रहे थे। गर्दन के पीछे तथा कन्धों पर सघन किन्तु बिखरे हुए केश नितान्त आकर्षक लग रहे थे।

वह धीरे-धीरे चौकी के पास पहुँची, स्वच्छ दाँतों से मन्द हँसती हुई। उसके पहुँचते-पहुँचते कीर्तिकान्त ने आकर उससे कुछ बात की; प्रेमलता ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। पश्चात् वह बिना किसी संकोच या भूमिका के, उच्च स्वर में "वियोगिनी" कविता गाने लगी, मानो कोई तन्त्री तीव्र झनकार से बज उठी हो। प्रत्येक एक-दो पद्यों के बाद लोग वाह-वाह करने लगे। कविता समाप्त होने पर बड़े जोर से तालियाँ बजीं।

अब दूसरी कविता की पुकार हुई। चन्द्रनाथ ने आश्चर्य-मिश्रित भय से देखा कि प्रेमलता बिना प्रतिवाद के तैयार हो गई। उसका वीणा-कंठ फिर एक बार उस बड़े "हॉल" में गूँजने लगा। पद्यों की छन्द-रचना सदोष थी, कई पंक्तियाँ निरर्थक थीं, किन्तु प्रेमलता को इसकी कोई चिन्ता न थी। वह बड़े उत्साह से ऊँचे स्वर में पढ़ रही थी। श्रोता लोगों का पूर्ण ध्यान उसकी ओर था। वे उसके रूप को अधिक देख रहे थे, या स्वर को अधिक सुन रहे थे, कहना कठिन था; पर वे सब थे बहुत उत्सुक, और उनके चेहरों पर अकृत्रिम उल्लास का भाव था। कविता-पाठ समाप्त होने पर तुमुल करतल-ध्वनि हुई, जिसमें सभापति तथा हिमांशु जी ने भी योग दिया। नागर और कीर्तिकान्त का उत्साह भी उल्लेखनीय था।

प्रेमलता लौटकर अपनी जगह आई। वीरेन्द्र ने उसे बधाई दी। उसने मुस्कुराते हुए चन्द्रनाथ की ओर देखा, लेकिन उसे वहाँ से कोई प्रशंसात्मक उत्तर नहीं मिला। आन्तरिक प्रेरणा के बिना महिलाओं तथा अशक्त लोगों की प्रशंसा करने की कला से वह सर्वथा अनभिज्ञ था।

अब हिमांशु जी का नाम लिया गया। उनके आते ही तालियाँ पिट गईं।

हिमांशु जी का साहित्यिक जीवन काफी वैचित्र्यपूर्ण रह चुका था। पहले वे "वासना के गीत" गाते थे, फिर वे "वेदना के कवि" बने, हाल ही में वे द्वन्द्वात्मक जड़वाद के विश्वासी बन गए थे। तब से उनका प्रिय विषय वर्ग-संघर्ष हो गया था। इधर उन्होंने मित्र कीर्ति-कान्त की प्रेरणा से छन्दों एवं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शैली के नवीन प्रयोग भी शुरू कर दिए थे। इसके लिये "समालोचक" में उनकी खूब प्रशंसा होने लगी थी। कविता पढ़ने से पहले उन्होंने छोटी-सी वक्तृता दी। उसमें उन्होंने बताया किस प्रकार गत बीस वर्षों के हिन्दी-काव्य में संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुतायत है और इसलिए प्रवाह का अभाव है, किस प्रकार वह नवीन आदर्शों के स्पर्श से वंचित है और सामन्त युग की चीज मालूम पड़ती है। फिर उन्होंने कुछ तत्कालीन अँगरेजी कवियों का नाम लेकर बताया कि किस तरह वे भाषा, छन्दों और शैली में नवीन प्रयोग कर रहे हैं। 'मैंने उन्हीं की तरह की कुछ नई चीजें देने की कोशिश की है', यह कहकर वे अपनी एक नवीनतम रचना सुनाने लगे।

रचना-मुक्त छन्द में थी, शीर्षक था 'तूफानी रात'। चन्द्रनाथ जानता था कि मुक्त छन्द का निर्वाह कठिन काम है, इसलिए वह बड़े ध्यान से सुनने लगा। किन्तु यत्न करने पर भी वह उसमें कोई सांगीतिक संगति या एकता नहीं पा सका। बीच-बीच में कुछ पंक्तियाँ संगीतमय थीं अवश्य, पर उनका पूर्वापर से क्रियात्मक सम्बन्ध नहीं दीखता था। कविता का अर्थ भी संगीत की तरह विच्छिन्न था।

श्रोताओं को वह कविता पसन्द नहीं आई, पर हिमांशुजी के गौरव से चुप रहे। कविता समाप्त होने पर एक-दो व्यक्तियों के अतिरिक्त, जिनमें कीर्तिकान्त और प्रेमलता भी थे, किसी ने ताली नहीं पीटी। अब हिमांशुजी एक दूसरी कविता सुनाने लगे जो कुछ दार्शनिक थी। उसका भी विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। तब उन्होंने एक वेदना-गीत सुनाया जो पसन्द किया गया। अन्त में अपनी एक प्राचीन कविता सुनाकर वे निवृत्त हो गए। श्रोताओं ने तुमुल करतल-ध्वनि की।

अब केवल कवि-सभापति रह गए थे। रजनीकान्त काफी वर्षों तक छायावादी तथा रहस्यवादी कवि रहे थे। इधर कुछ दिनों से उनके विश्वासों में एकायक परिवर्तन हो गया था, और अब उनकी रचनाएँ मुख्यतः भौतिकवाद के समर्थन में लिखी जा रही थीं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वे कुशल गायक थे। उनकी एक प्रमुख समस्या श्रोताओं को हिमांशुजी के प्रभाव से मुक्त करना था। बड़े सांगीतिक प्रयत्न से उन्होंने एक गीत गाया पर जनता से प्रत्याशित प्रशंसा नहीं मिली। अब उनके कतिपय मित्र प्रशंसक उनसे विशिष्ट रचनाएँ सुनाने का अनुरोध करने लगे। एक ने उनकी एक पुस्तक भी खोल कर रख दी।

रजनीकान्त असमंजस तथा कृतज्ञतापूर्ण विनय के भाव से उनके सुझाव सुन रहे थे। अन्त में वे खुली पुस्तक में से चुनकर एक रचना पढ़ने लगे। हिमांशु जी की भाँति उन्होंने भी विभिन्न युगों और वादों की कविताएँ सुनाईं।

चन्द्रनाथ को उन काफी पढ़े-लिखे श्रोताओं और कवियों का व्यवहार बड़ा अद्भुत लगा। उसे प्रतीत हुआ जैसे उनके निकट काव्य-कला का कोई मान, कोई स्टैण्डर्ड नहीं है, और न उनके निकट काव्य-साहित्य जीवन के लिए कोई गहरी सार्थकता ही रखता है। उसे उन कवियों से सहानुभूति हुई जो ठीक से गा नहीं सकते थे। उसकी दृष्टि में कतिपय वे कवि भी, जो बहुत अच्छा गाते थे, सहानुभूति के पात्र थे क्योंकि कवि-सम्मेलनों में बहुत वर्षों से प्रशंसित होते हुए वे कभी यह नहीं जान सके कि उनकी कमियाँ क्या हैं, और लगातार एक ही धरातल की रचनाएँ करते रहे थे। उसे इसमें भी संदेह हुआ कि उस सम्मेलन से श्रोताओं की काव्य-रुचि का कुछ भी विकास हुआ होगा। कवियों की वाद-परस्ती भी उसे बड़ी स्थूल और हास्यास्पद वस्तु जान पड़ी।""उसे लगा कि तरह-तरह के वादों, शैलियों, टेकनीकों और शब्द-विन्यासों के विधान से थकी हुई काव्य-चेतना क्रमशः जीवन की गहराइयों से सम्पर्क छोड़ती जा रही है।

कवि-सम्मेलन समाप्त हो चुका था। कीर्तिकान्त ने उठकर परिषद् की ओर से कवियों और उपस्थित महानुभावों को धन्यवाद दिया, साथ ही उल्लेखनीय कवियों के विषय में कुछ प्रशंसा-सूचक वाक्य भी कहे। इन भाग्यशाली कवियों में प्रेमलता भी थी; चन्द्रनाथ का नाम नहीं था।

हॉल से निकलते ही चन्द्रनाथ से शिवानन्द आ मिला। वीरेन्द्र प्रेमलता से बातें कर रहा था। दोनों को छोड़कर आशा चन्द्रनाथ के पास आई और

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बोली—'आज के सुन्दर कविता-पाठ के लिए आपको बधाई।' और वह बिना किसी प्रकार के उत्तर की प्रतीक्षा किए अपनी गाड़ी की ओर चल दी। शिवानन्द ने चन्द्रनाथ से कहा—आज सचमुच आपका काव्य-पाठ बहुत अच्छा रहा, जनता काफ़ी प्रभावित हुई; आरम्भ अच्छा है।

चन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोच रहा था—क्या कलाकार के जीवन की सम्पूर्ण सार्थकता इसी में है कि लोग उसे प्रशंसनीय समझें?

विश्वविद्यालय के फाटक से बाहर निकलते समय चन्द्रनाथ को एक परिचित मूर्ति प्रयाग स्टेशन की दिशा में जाती हुई दिखाई दी। उसे देखते हुए उससे मुँह से अनायास ही निकला—'हरिशंकर!'

: २४ :

रास्ते में शिवानन्द ने चन्द्रनाथ से पूछा—आपने अभी किसे आवाज़ दी थी?

चन्द्रनाथ ने हरिशंकर का परिचय देते हुए कहा—बड़े रोचक आदमी हैं। काफी वाचाल और बहुत मनोरंजक बातें करनेवाले। मुझसे बिलकुल उलटे समझिए। वैसे अधीत व्यक्ति हैं। वे शीघ्र ही आपके मित्र बन जाएँगे, और आप उनसे कभी ऊब न सकेंगे।

'ओहो! तब तो उनसे जरूर परिचय करना चाहिए', शिवानन्द ने कहा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हरिशंकर को देखकर चन्द्रनाथ में सहसा उससे मिलने की तीव्र अभिलाषा जग गई। छात्रों से भरे रहने पर भी प्रयाग में उसे अभी तक वैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिला था। जार्जटाउन की ओर द्रुत-गति से जाता हुआ वह सोच रहा था—हरिशंकर कहाँ मिले। यदि शिवानन्द साथ न होता तो शायद वह घर की ओर न आता, बल्कि विपरीत दिशा में उसी ओर चल देता जहाँ हरिशंकर दिखाई पड़ा था।

वह यह भी सोच रहा था कि—हरिशंकर मेरे पास क्यों नहीं आया। शायद उसे मेरा पता मालूम न था। और पत्र लिखकर पूछना तो उसकी प्रकृति के विरुद्ध है।

चन्द्रनाथ जानता था कि हरिशंकर को लाइब्रेरी नामक संस्था से विशेष प्रेम है, ऐसी लाइब्रेरी से जहाँ पत्र-पत्रिकाएँ बहुत-सी देखने को मिलें। अतः वह प्रायः "दरभंगा हाल" का चक्कर लगाने लगा। दो ही दिन के परिश्रम के बाद उसे अपने अभीष्ट व्यक्ति के दर्शन हो गए।

'कहिए महाशय चन्द्रनाथ ! अच्छी तरह तो हैं', हरिशंकर ने तपाक से चिर-परिचित स्वर में कहा।

उस स्वर ने जैसे चन्द्रनाथ में नया जीवन संचरित कर दिया। वह बरबस मुस्कुराया, पर कोई ठीक उत्तर न दे सका। विशुद्ध शिष्टाचार की बातों का, विशेषतः जब वह शिष्टाचार मित्रों की ओर से प्रकट किया जाय, उत्तर देते उसे नहीं बनता। उसने निहायत अरोचक स्वर में कहा—'हाँ'। फिर कुछ याद आने पर बोला—'लेकिन यह तो बताइए आप ठहरे कहाँ हैं ?'

उसने सोचा था कि हरिशंकर के मिलते ही वह उससे यह प्रश्न करेगा और उसे अपने पास न ठहरने का उलाहना देगा।

'ठहरने की क्या पूछते हो भाई, कहीं ठहर गए। मित्र लोग बड़े मिहरबान हैं। तुम्हारा तो पता नहीं मालूम था, इसलिए मिस्टर रामविलास सेठ के साथ ठहर गया।'

हरिशंकर के नितान्त स्वाभाविक स्वर से चन्द्रनाथ को महसूस हुआ, मानो उसका उलाहना अर्थहीन था। 'यह सेठ जी कौन हैं ?' उसने उपालंभ-शून्य जिज्ञासा से पूछा।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'बरेली के एक प्रसिद्ध रईस हैं, या रईस के सुपुत्र हैं, जो भी समझो। वहाँ से बी० ए० किया है, अब यहाँ 'लॉ' में नाम लिखाया है। अरे वही सेठ जो एक बार दीवाली के भोर जुआ खेलते पकड़े गए थे; ओहो, तुम सेठ को नहीं जानते !'

चन्द्रनाथ खामोश रहा।

'और सबसे खास बात सेठ के सम्बन्ध में यह है कि उनकी मिस प्रेमलता के साथ शादी होने वाली है।'

'प्रेमलता के साथ ?' चन्द्रनाथ ने चौंक कर कहा, 'कौन प्रेमलता ?'

'वही तुम्हारे क्लब की सदस्य प्रेमलता, जिन्होंने उस दिन कविता सुनाई थी।

चन्द्रनाथ सुनकर विस्मय से अवाक् रह गया, जैसे प्रेमलता की, अथवा किसी की भी शादी कोई अनहोनी घटना हो। साथ ही उसका हरिशंकर से मिलने का उल्लास भी शिथिल होने लगा। कवि-सम्मेलन के अवसर पर हरिशंकर उपस्थित था, फिर भी उसने चन्द्रनाथ से मिलने की कोशिश नहीं की! यह इतनी साधारण बात न थी कि मात्र उलाहने से उसके अनौचित्य का संकेत कर दिया जाय।

किन्तु हरिशंकर के अम्लान मुख पर दृष्टि जाते ही वह जैसे उसके उस दिन के व्यवहार को कुछ क्षण के लिए भूल गया। 'तुम इस वक्त प्रयाग कैसे आए हो ?' उसने पूछा, 'छात्रसंघ के जलसे में तो अभी देरी है।'

'जलसे में तो देरी है, पर अभी यहाँ का हाल-चाल लेना जरूरी है। तुम तो कम्युनिस्ट लीडरों के बारे में बहुत-कुछ जानते होगे ?'

'लीडरों के बारे में मुझे विशेष जानकारी नहीं। हमारे क्लब में भी यद्यपि बहुत से सदस्य साम्यवादी विचारों के हैं, फिर भी यह कहना कठिन है कि उनमें से कितने कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हैं। यही बात विश्वविद्यालय के बारे में कही जा सकती है।'

'यह नागर कैसा आदमी है ?' हरिशंकर ने विषय बदलते हुए पूछा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'अच्छा आदमी है, प्रभावशाली व्यक्ति है। क्यों, कुछ काम है ?'

'नहीं काम क्या होता; रामविलास ने उसका जिक्र किया था……नापर के राजनैतिक विचार क्या हैं ?'

'जहाँ तक मुझे पता है वह किसी खास पार्टी का सदस्य नहीं है। यों तो वह खद्दरपोश भी है, और साम्यवाद के प्रति असहिष्णु भी नहीं।'

क्षण भर बाद उसने पूछा—'प्रेमलता देवी की शादी कब होगी ?'

'यह प्रेमलता के पिता पर निर्भर होगा। सेठ तो अभी ही तैयार हैं आज ही। शायद होली बाद तक हो।'

'प्रेमलता के पिता कौन हैं ?'

'वाह महाशय चन्द्रनाथ ! हरिशंकर ने मृदु हास्य से कहा, 'आप इलाहाबाद में रहते हैं और इतना भी नहीं जानते। प्रेमलता के पिता हैं बाबू ताराचरण एडवोकेट; एलगिन रोड पर रहते हैं। प्रेमलता उनकी पहली पत्नी की सन्तान है। किसी जमाने में मिसेज ताराचरण के सौंदर्य की वैसी ही धूम थी जैसा आज मिस प्रेमलता की है।……प्रेमलता की एक बहिन और है, मिस आशालता; वह भी तो क्लब की मेम्बर है ?'

चन्द्रनाथ ने हूँ-कार किया।

'जानते हो, आशालता प्रेमलता की सौतेली बहिन है, एडवोकेट साहब की दूसरी पत्नी की सन्तान; दुर्भाग्यवश वे भी जल्दी ही स्वर्ग को सिधार गईं। ……इसलिए भी एडवोकेट साहब लड़कियों को विशेष प्यार करते हैं और उनकी स्वतन्त्रता में अनुचित हस्तक्षेप नहीं करते।'

कुछ देर बाद चन्द्रनाथ ने कहा—'कल हमारे यहाँ आना, आओगे न ? विश्वविद्यालय की छुट्टी भी है।'

'आऊँगा, शाम चार बजे के क़रीब, जार्जटाउन मुझे वैसे भी जाना था।'

'किसलिए, किसी से मिलने को ?'

'हाँ, एक प्रकाशक महोदय से मिलना है। उनसे बात तो हो चुकी है। मेरी कहानियाँ छापने को वह तैयार हैं।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अन्तिम बात किंचित् गर्वपूर्ण लापरवाही से कही गई। चन्द्रनाथ के पूछने पर हरिशंकर ने प्रकाशक का नाम बतलाया, बाँके बिहारी। चन्द्रनाथ कुछ सोचने लगा। शीघ्र ही दोनों मित्र अलग हो गए।

:२५:

चन्द्रनाथ को कुछ धुँधला-सा खयाल था कि जार्जटाउन में कोई प्रेस है, लेकिन उस प्रेस का मालिक कोई बाँकेविहारी है और वह हिन्दी-पुस्तकों का प्रकाशन भी करता है, यह वह बिलकुल नहीं जानता था। इसलिए जब हरिशंकर ने उसके घर के पास स्थित उक्त संस्था की इतनी जानकारी प्रकट की तो वह उसकी प्रतिभा पर अचरज किए बिना नहीं रह सका। हरिशंकर को यहाँ अभी दिन ही कितने हुए हैं! इतने थोड़े समय में वह यहाँ के सम्बन्ध में जितना जान गया उतना चन्द्रनाथ पिछले दो-ढाई वर्षों में भी नहीं जान पाया था। नागर और प्रेमलता से उसका परिचय इसी वर्ष हुआ है, हरिशंकर प्रयाग में कदम रखते ही उन्हें जान गया। और आशा! उसे अभी तक ठीक आभास न था कि वह प्रेमलता की बहिन है, और सौतेली बहिन है, दोनों में कितना अन्तर है!

साँझ में उसने वीरेन्द्र से पूछा—'आप बाँकेबिहारी पब्लिशर को जानते हैं?'

'थोड़ा-थोड़ा जानता हूँ, पर नागर की उससे अच्छी जान-पहचान है। क्यों, आप कुछ छपवाएँगे?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

'कुछ इरादा तो है।'

'तो आपको नागर की मारफ़त बात करनी चाहिए।'

नागर के उल्लेख से चन्द्रनाथ चुप हो गया।

साधना इधर कई पत्रों में पूछ चुकी है कि चन्द्रनाथ अपनी कविताएँ क्यों नहीं छपवाता। पिछले पत्र में यह प्रश्न माँग के रूप में आया है, अतएव वह सोचने लगा है कि उसे अवश्य इस सम्बन्ध में कुछ अच्छे प्रकाशकों से बात करनी चहिए। कवि-सम्मेलन के दिन रजनीकान्त और हिमांशु जी ने बड़े आडम्बर से अपनी पुस्तकों में से कविताएँ पढ़ी थीं, यह भी उसे याद था। पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस प्रकार प्रकाशकों से बातचीत करे। और पत्र-व्यवहार से कोई प्रकाशक उस जैसे अज्ञात अथवा अल्पज्ञात कवि की परवाह करेगा, इसका उसे विश्वास न था। नागर से सहायता की याचना करने का तो सवाल ही नहीं रह गया था।

दूसरे, दिन जब हरिशंकर आया तो चन्द्रनाथ वीरेन्द्र के ही कमरे में बैठा था। हरिशंकर की प्रतीक्षा में वह आज लाइब्रेरी नहीं गया था। उसने वीरेन्द्र और हरिशंकर का परिचय कराने की चेष्टा की, पर वास्तव में यह अनावश्यक सिद्ध हुआ। वीरेन्द्र ने हरिशंकर से कहा—'मैं आपकी बहुत-कुछ तारीफ सुन चुका हूँ।' और जब हरिशंकर से वीरेन्द्र के सम्बन्ध में कहा गया कि 'आप एम० काम्० हैं, और प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं,' तो वह बीच ही में बोल उठा, 'बस-बस, बाकी बातें तो साफ़ नज़र आ रही हैं।' इस पर वीरेन्द्र हँस पड़ा और उसने हरिशंकर से हाथ मिलाया।

थोड़ी ही देर की बात-चीत के बाद हरिशंकर और वीरेन्द्र घनिष्ठ मित्र बन गए। शाम को चार बजे, शिवानन्द के आ जाने के बाद, जब वे लोग चाय पी रहे थे, तो कोई देखकर यह नहीं कहा सकता था कि हरिशंकर से वीरेन्द्र की अपेक्षा चन्द्रनाथ का परिचय ज्यादा पुराना है। चन्द्रनाथ की अपेक्षा शिवानन्द भी हरिशंकर का अधिक अवधान पा रहा था।

चाय के बाद फिर गप्प होने लगी। अब मुख्य वक्ता हरिशंकर था। उसकी बातचीत का प्रधान विषय संसार के नर-नारी होते थे। जीवन में उसने कि

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किस प्रकार के व्यक्तियों को कैसी-कैसी चित्र-विचित्र परिस्थितियों में किस तरह व्यवहार करते देखा है, इसे हरिशंकर नमक-मिर्च लगाकर कहना जानता था। श्रोता लोग सुनकर हँसते, उनके हँसने का प्रायः वही कारण होता जो बरसात में फिसलकर गिर जानेवाले को देखने पर होता है। हरिशंकर में एक गुन और था, वह उपस्थित समाज के मनोनुकूल अनुभव या कहानियाँ चुनना जानता था। चन्द्रनाथ ने देखा कि आज हरिशंकर उनसे भिन्न विषयों पर बातचीत चला रहा था जिन पर वह केवल उसके सामने बोलता था। चन्द्रनाथ के सामने प्रायः वह साहित्य और साहित्यिकों की चर्चा करता, आज उसके विषय कुछ भिन्न और विविध थे। आज वीरेन्द्र और शिवानन्द की उपस्थिति में उसने जैसी बातें कीं वैसी चन्द्रनाथ ने उसके मुख से पहले कभी नहीं सुनी थीं।

जब हँसते-हँसते सब थक चुके, और चाय भी हजम होने को आई, तो हरिशंकर उठकर चन्द्रनाथ के साथ उसके कमरे में पहुँचा। वहाँ उसने तीन-चार कलकतिया केलों का, जो पीछे की खिड़की में रखे दीख रहे थे, नाश्ता किया। उसके बाद कुछ देर तक वह इधर-उधर घूमता हुआ कमरे की चीजों और पुस्तकों का निरीक्षण करता रहा। मेज पर एक लिफाफा पड़ा था, उसके बाईं ओर अंग्रेजी में लिखा था—'साधना के पास से'। हरिशंकर पढ़कर सरल भाव से बोला—'अच्छा! अब मिस साधना तुम्हें भी पत्र लिखने लगीं!'

'हाँ, तुम्हारे चले जाने के कुछ ही दिन बाद उससे परिचय हो गया। बड़ी विचारशील और भावुक लड़की है।'

हरिशंकर ने आल्मारी की पुस्तकों को उलटते हुए पूछा—'इधर कुछ नई कहानियाँ नहीं लिखी हैं?'

'सिर्फ दो कहानियाँ लिख सका हूँ, कविताएँ कुछ ज्यादा लिखी हैं। देखता हूँ, एम० ए० करने के बाद भी लिखने का पर्याप्त अवकाश नहीं मिलता। रिसर्च आदि झंझटें लगी ही हैं।'

'रिसर्च झंझट नहीं है महाशय, वही तो ठोस काम है। स्कालर बन जाओगे।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'सो तो शायद मैं कभी नहीं बन सकूँगा।'

कुछ क्षण बाद उसने संकोच के स्वर में कहा—'तुम अपने प्रकाशक को मेरी कोई पुस्तक निकालने को तैयार नहीं कर सकते ?'

'क्यों नहीं ! तुम एक किताब मुझे दो। कविताओं के लिये तो वह शायद तैयार न हो—मैं जोर देकर कह भी नहीं सकता, क्योंकि मैं काव्य का मर्मज्ञ नहीं। हाँ, कहानियों के लिए कह सकता हूँ।'

'कहानियाँ ही सही,' कहकर उसने अपनी कहानियों का संग्रह निकाला और हरिशंकर के सामने रख दिया।

'मैं अभी ही बाँकेबिहारी को यह "मैन्यूस्क्रिप्ट" दे दूँगा। मेरा खयाल है कि परसों तक उससे इसका उत्तर मिल जायगा।'

●

: २६ :

तीसरे दिन फिर वीरेन्द्र का कमरा हरिशंकर की उपस्थिति से मुखरित हो रहा था। आज हरिशंकर नहीं आया था, उसके साथ बाँकेबिहारी प्रकाशक भी था। चन्द्रनाथ को भी वीरेन्द्र ने बुला लिया था।

'आज मिश्र जी दिखाई नहीं देते,' हरिशंकर ने वीरेन्द्र को लक्ष्य करके पूछा।

'मिसरा जी ट्यूशन पढ़ाने गए हैं, आपको सुबह ही याद कर रहे थे।'

'ज़रूर याद कर रहे होंगे, मैं हूँ भी तो प्रातः-स्मरणीय, क्यों महाशय चन्द्रनाथ ?'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ उत्तर में केवल हँस दिया। हरिशंकर ने उसका और बाँकेबिहारी का परिचय कराया। फिर बोला—'आप ही मेरी कहानियों का पहला संग्रह निकाल रहे हैं।'

'टर्म्स क्या हैं ?" चन्द्रनाथ ने दबे स्वर में पूछा।

इस पर हरिशंकर ने बाँकेबिहारी की ओर देखकर कहा—'टर्म्स की बात तो यही जानें, इस बारे में झगड़े की तो कोई गुंजाइश ही नहीं है। जो कुछ यह खुशी से और प्रसन्नता से और ईमानदारी दे देंगे वही।'

'इसमें छिपाने की क्या बात है, मिस्टर हरिशंकर, कह दीजिए पचास रुपए नकद या दस-फी-सदी रायल्टी, जो भी आपको पसन्द हो,' बाँकेबिहारी ने बीच ही में कहा। उसके भाव से लगता था जैसे वह इस सम्बन्ध में बिल्कुल स्पष्ट रहना चाहता है।

'टर्म्स तो विशेष अच्छे नहीं हैं', चन्द्रनाथ ने हरिशंकर को लक्ष्य कर कहा, 'रॉयल्टी बहुत कम है।'

इस पर बाँकेबिहारी ने उत्तेजित होकर कहा—'टर्म्स अच्छे नहीं हैं! अभी आपका प्रकाशकों से पाला नहीं पड़ा है। यह इनकी पहली किताब है और पहली किताब पर कोई इतने अच्छे टर्म्स नहीं दे सकता।....और अभी तो हम शर्मा जी की दर्जनों किताबें निकालेंगे। आप देखेंगे कि थोड़े ही दिनों में यह प्रेमचन्द जी की तरह मशहूर हो जाएँगे।'

वीरेन्द्र ने कहा—'इसमें कोई शक नहीं; शर्मा जी से हिन्दी-संसार को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं।'

बाँकेबिहारी ने उत्साहित होकर कहा—'शर्मा जी की कहानियों में एक खास गुण है, वह बड़ी जिन्दा तस्वीरें खींच सकते हैं। मुझे तो उनकी कहानियों में बड़ा मजा आया।'

वीरेन्द्र—'शर्मा जी खुद भी बड़े मजेदार आदमी हैं।'

वीरेन्द्र और बाँकेबिहारी की बातचीत सुनकर हरिशंकर सन्तोष से मुस्करा रहा था। उन लोगों के चुप हो जाने पर उसके बोलने की बारी आई। बातों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

के प्रवाह में बहता हुआ वह क्रमशः अपने उस "मूड" में आ गया जिसमें वह अपने गतिमय जीवन के रोचक अनुभवों को फिल्मी रीलों की भाँति प्रत्यक्ष करके रखता जाता था। बाँकेबिहारी की उपस्थिति उसे इस दिशा में और भी प्रोत्साहित करती जान पड़ रही थी। शायद वह यह सिद्ध करना चाहता था कि उसने उन लोगों के अनुमान से कहीं अधिक दुनियाँ देखी है और कहानी लिखना उसका जन्म-सिद्ध अधिकार है।

कहानियों में अधिकांश का विषय कालेजों तथा विश्वविद्यालय के "स्कैण्डल" थे। पाँच-सात दिन में ही हरिशंकर यूनिवर्सिटी की अन्तरंग समझी जानेवाली कथाओं से काफी परिचित हो गया था। यूनिवर्सिटी के गत कई वर्षों में प्रोफेसरों तथा छात्राओं आदि के सम्बन्ध में जितनी अफ़वाहें उड़ी थीं, उन सबसे वह अभिज्ञ था; छात्रों के कारनामे भी उसे अज्ञात न थे। एक अध्यापक महोदय अपनी लड़की के बारे में बहुत सतर्क रहते थे। नौकरों पर उन्हें विश्वास न था, अतः जब ट्यूटर पढ़ाने आता, तो स्वयं कुर्सी लेकर डटे रहते। हरिशंकर ने बताया कि किस प्रकार उस लड़की के पास ट्यूटर महाशय के कई पत्र बरामद हुए, जिनमें उनके तथा उसके गुप्त प्रेम का वर्णन था। एक दूसरे अध्यापक की स्त्री इधर बहुत मोटी हो गई थी; अध्यापक महोदय उनसे ऊबने लगे थे; इस कारण उनका गार्हस्थ्य जीवन कुछ दिनों से विशेष रोचक हो उठा था। हरिशंकर एक प्रसिद्ध कवि को जानता था जो खूब शराब पीते थे—उसके बिना लिख ही न सकते थे। एक बार शराब पीकर कई दिन लगातार वे एक वेश्या के घर पड़े रहे।

इसके बाद हरिशंकर होटलों के जीवन की चर्चा करने लगा। श्रोताओं के प्रशंसासूचक नेत्रों ने उसका साहस बढ़ा दिया था और उसने एक नितान्त अश्लील घटना सुनानी शुरू की। उसके बीच में ही चन्द्रनाथ उठकर खड़ा हो गया।

इससे पहले भी उसने एक बार उठने की चेष्टा की थी पर उसे वीरेन्द्र के अनुरोध से बैठ जाना पड़ा था। उसने देखा कि हरिशंकर पर इसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा; वह पूर्ववत् अपनी कहानियाँ सुनाता रहा। जब चन्द्रनाथ ने पाया

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कि स्थिति असह्य हो गई तो वह यकायक तेजी से उठकर अपने कमरे की ओर चल दिया।

चलते-चलते उसने बाँके बिहारी को कहते सुना—'वाह शर्मा जी खूब जिन्दगी देखी है।'

थोड़ी ही देर वाद वीरेन्द्र और हरिशंकर उठकर चन्द्रनाथ के कमरे में आ गए। वीरेन्द्र हरिशंकर से कह रहा था—'आपने मिस्टर चन्द्रनाथ को आज नाराज कर दिया। आप यह नहीं देखते कि किसके सामने बातें कर रहे हैं।'

उसके स्वर में जो प्रच्छन्न परिहास था वह चन्द्रनाथ से छिपा न रहा। हरिशंकर ने किसी प्रकार का उत्तर न देकर चन्द्रनाथ की कहानियों की फाइल बढ़ाकर उसे दे दी।

'यह "मैन्यूस्क्रिप्ट" क्या आप पढ़ने को ले गए थे ?' वीरेन्द्र ने हरिशंकर से पूछा।

'नहीं; असल में महाशय चन्द्रनाथ इन कहानियों को छपवाना चाहते थे, लेकिन बाँकेबिहारी राजी नहीं हुआ।'

'क्यों, क्या उसने कहानियाँ पसन्द नहीं कीं ?'

'बड़ा चंट आदमी है, देखकर बोला कि कहानियाँ "लाइफ़-लाइक" (जिन्दगी के अनुरूप) नहीं मालूम पड़तीं।'

वीरेन्द्र ने उस बात को वहीं समाप्त करते हुए कहा—'हमने सुना है, आपका मिस प्रेमलता से करीबी सम्बन्ध हैं; आपके एक दोस्त को उनके साथ शादी होनेवाली है।'

'कौन कह रहा था ?'

'कोई, सही, क्या यह फैक्ट (वास्तविकता) है ?'

हरिशंकर ने कहा—हाँ, फैक्ट है।

वीरेन्द्र—मिस्टर रामविलास ने मिस प्रेमलता को कैसे फांस लिया। क्या यह लव-मैरेज (प्रेम-विवाह) है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हरिशंकर—कमसे कम इतना निश्चित है कि रामविलास इस शादी के लिये बेहद उत्सुक हैं। रईस आदमी हैं, सुन्दर हैं, इसलिए प्रेमलता या उसके पिता की ओर से भी कोई आनाकानी नहीं हुई।

वीरेन्द्र—क्या मिस्टर रामविलास बहुत अमीर आदमी हैं ? उनके पिता क्या करते हैं ?

हरिशंकर—बड़े ज़मींदार हैं; बरेली के चार-छै रईसों में से हैं।

'तभी; लड़की फ़र्स्ट क्लास हाथ लग गई। प्रेमलता कवि भी अच्छी हैं।'

'और गाती भी खूब हैं', हरिशंकर ने जोड़ा।

'ग़ज़ब का गला है, आपने कहाँ सुना ?'

'उस दिन कवि-सम्मेलन में मैं मौजूद था।'

'इसके माने हैं आपको यहाँ आए एक हफ्ते के करीब हो गया। आपका कालेज क्या बन्द हो गया ?'

'कालेज शायद दो दिन बाद बन्द होगा, लेकिन लॉ की पढ़ाई की कौन चिन्ता करता है।'

'लॉ के बाद आप क्या करेंगे, प्रैक्टिस ?'

'अभी कुछ निश्चय नहीं है; मैं तो चाहता हूँ कि साहित्यिक काम करता रहूँ।'

'प्रकाशक तो आपने तगड़ा फाँसा है; इलाहाबाद में एक ही है।'

'बहुत तिकड़मी आदमी है; दूसरा कोई प्रकाशक इतने कम में मेरी कहानियाँ नहीं पा सकता।'

चन्द्रनाथ उनकी बातों में योग नहीं दे रहा था। कुछ क्षण बाद वीरेन्द्र अपने कमरे की ओर लौटने लगा; हरिशंकर वहीं खड़ा रहा उसी समय डाकिए ने आवाज़ दी। वीरेन्द्र उससे चिट्ठियाँ लेने लगा। उनमें एक चिट्ठी चन्द्रनाथ की पाकर वह फिर लौट पड़ा। हरिशंकर ने आगे बढ़कर उसके हाथ से लिफाफा ले लिया और चन्द्रनाथ के हवाले कर दिया।

पत्र साधना का था। हरिशंकर ने इसे देख लिया होगा, इसमें चन्द्रनाथ को सन्देह न था। वह उसे हरिशंकर की उपस्थिति में खोले या नहीं ? कुछ सोचकर उसने पत्र जेब में रख लिया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'क्या छुट्टियों में घर जा रहे हो ?' हरिशंकर ने पूछा।

'हाँ। और तुम ? तुम क्या बदायूँ बिलकुल नहीं जाओगे ?'

'मैं वहाँ दीवाली तक पहुँचूँगा, वाद-परिषद् के जलसे के मौके पर। अब की बार हमने प्रिंसिपल देव को आमन्त्रित करने का आयोजन किया हैं।'

'क्या सचमुच ? वे राजी हो गए ?'

'हाँ, मैं खुद उनके पास गया था। बड़ी मुश्किल से स्वीकृति ले सका। तुम तो जानते ही हो, वे कितने व्यस्त जीव हैं; सभा-सोसाइटियों के सभापतित्व से फुर्सत ही नहीं मिलती। कह रहे थे, उसी अवसर पर उन्हें कलकत्ते भी जाना होगा।'

'सचमुच तुमने बड़ा काम किया, बदायूँवालों को कृतज्ञ होना चहिए।' फिर उसने हरिशंकर से पूछा—'जो पुस्तक तुमने छपने दी है, उसमें क्या वेही कहानियाँ हैं जो मुझे दिखाई थीं ?'

हरिशंकर—'नहीं वे कहानियाँ तो बचकानी थीं; मैंने नष्ट कर दीं। यह सब तो हाल की लिखी हुई हैं।' फिर कुछ रुककर वह बोला—तुम्हारी कहानियों के लिए काफी कहा लेकिन वह माना ही नहीं'।

चद्रनाथ चुप रहा।

'बड़ा चालाक आदमी है यह बाँकेबिहारी, कहने लगा, कहानियाँ रिअलिस्टक (यथार्थ) नहीं हैं।'

'रहने दो; मेरा इरादा है कि कविताओं का एक संग्रह स्वयं छपवा लूँ।'

'छपवा सकते हो, किन्तु बाँकेबिहारी का खयाल है कि काव्य-पुस्तकें कम बिकती हैं।'

'प्रिंसिपल देव से प्रस्तावना लिखाई जाय तो कैसा हो ?'

'अच्छा है, किंतु प्रिंसिपल देव बड़े व्यस्त रहते हैं, शायद ही इतना समय पा सकें। असल में मैं तो किसी की भूमिका और सिफ़ारिश में विश्वास नहीं करता। यदि पुस्तक सुन्दर होगी, तो जनता स्वयं आदर करेगी'।

'सो तो ठीक है, पर जनता की रुचि प्रायः अशिक्षित और अनिश्चित होती है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'जनता सब समझती है। यदि साहित्य में जनता के जीवन का वास्तविक चित्र हो तो कोई कारण नहीं कि वह उसे पसन्द न करे।'

चन्द्रनाथ मौन हो गया।

हरिशंकर के जाने के बाद उसने अपनी डायरी में लिखा—'मनुष्य पशु है और वह अपनी पशुता से प्रेम करता है।'

वह घूमने के लिये पार्क की ओर चल दिया। न जाने आज काटेज में कैसा वातावरण हो गया था जिससे वह बचकर भागना चाहता था। जैसे चले जाने के बाद भी वक्ता लोग वहाँ कोई न कोई चीज़ छोड़ गये हों जिसकी गन्ध मन और बुद्धि को अस्वस्थ बना रही हो, उन्हें विकृति के धरातल पर खदेड़ रही हो। पार्क में पहुँचकर उसने तीन-चार गहरी साँसें लीं और फिर फूलों की क्यारियों के समीप घूमने लगा।

वह सोच रहा था—यह कैसा देश है जहाँ बाँकेबिहारी जैसे प्रकाशक सरस्वती का मूल्यांकन करते हैं, जहाँ लेखक उसके मूल्यांकन से गर्व एवं संतोष महसूस करते हैं। उसे हरिशंकर की बातें याद आ रही थीं, और वीरेन्द्र की। लोग व्यभिचार की कामनाएँ क्यों पसन्द करते हैं, क्यों इतनी रुचि से सुनते हैं?.... क्या सचमुच स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में इसके अतिरिक्त कुछ नहीं होता? क्या यही जीवन है, और यही प्रेम है? क्या नर-नारी एक-दूसरे से किसी उच्चतर वस्तु की आशा नहीं कर सकते?

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के द्वार खोल कर, बुद्धि का दीपक जला कर, आशा और आर्द्रता से भरा प्रत्येक मानव-हृदय जो दूसरों के हृदयों को खोज रहा है सो क्या केवल इसीलिए? आखिर पशु से मनुष्य का विकास ही क्यों हुआ?

प्रेमलता और सेठ का सम्बन्ध...लव-मैरेज...जैसे उन दोनों में कोई प्रेम करने की क्षमता रखता है, उसका अर्थ भी समझता है!....और, प्रेमलता अच्छी कवि है!'

विश्व-विद्यालय के छात्र इस प्रकार की छिछली, सुरुचि-शून्य बातें करें, यह उसे असह्य लग रहा था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सहसा उसे हाल में पाये हुए पत्र की याद आई। खोल कर वह उसे बुभुक्षित नेत्रों से पढ़ने लगा।

थोड़ी ही देर बाद वह कालेज की ओर वापिस जा रहा था।

: २७ :

पत्र पढ़कर चन्द्रनाथ का हृदय आश्चर्य, कुतूहल और समवेदना का मिश्रित भावनाओं से आन्दोलित हो उठा।

साधना के पत्रों में वह क्या पाता था अथवा पाने की आशा रखता था इसका उसे स्पष्ट भान न था; वह केवल इतना समझता था कि उनमें ऐसा निर्मल स्नेहोच्छ्वास रहता है जो आस-पास की दुनियाँ में दुर्लभ है। वह यह विश्वास करना चाहता था कि मानव-मानव का सम्बन्ध मात्र आर्थिक अथवा सेवा-विनिमय रूप नहीं है और मानव हृदय एवं व्यक्तित्व का स्वतः भी कोई मूल्य है; साधना के पत्र हर बार मानो इन तथ्यों को उद्घोषित और प्रमाणित करते आते थे। किन्तु साधना का यह पत्र वैसा नहीं था; उसके अब तक के लिखे हुए सब पत्रों से भिन्न था। उसमें न 'अपनेपन' को जताने का प्रयत्न था, न उसकी सीमा निर्धारित करने का प्रयास, न प्रेम-विषयक कोई चर्चा न थी, न जीवन-सम्बन्धी कोई जिज्ञासा। उसमें न कुछ लेना था, न देना, न कोई स्पष्ट याचना थी, न आश्वासन। इसीलिए चन्द्रनाथ उसे पढ़कर एक नये ढंग से विचलित और आन्दोलित हो उठा।

Ramakrishna Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पत्र का स्थायी स्वर कटुतापूर्ण नैराश्य था। 'मनुष्य की निष्ठुर निर्ममता के आकस्मिक अनुभव से,' साधना ने पहले ही पैराग्राम में लिखा था, 'मैं सहसा हतबुद्धि हो गई हूँ।....मैंने कल्पना नहीं की थी कि दुनियाँ में इतनी हृदयहीनता भी है।' अन्त में लिखा था—'मुझमें किसी प्रकार का भी, बाहरी या भीतरी, सौन्दर्य और संस्कार नहीं है। मैं जितना ही सोचती हूँ उतना ही पाती हूँ कि मैं किसी के आदर-प्रेम की पात्र नहीं हूँ।....इस वर्ष परीक्षा देने की कोई संभावना नहीं है।...जब मुझे निकट से जानेंगे तो आप भी विरक्ति अनुभव करेंगे', इत्यादि।

इस लड़की ने यह सब क्या लिखा है? बार-बार पत्र पढ़ कर उसे कभी खिन्नता होती है, कभी हँसी आती है। 'बाहरी या भीतरी सौन्दर्य और संस्कार,' इसका क्या अर्थ है? वह लड़की अपने को कैसा फ़िलासफ़र लगाने लगी है, जैसे वह जानती है कि सौन्दर्य क्या है, और यह निर्णय करने योग्य हो गई है कि वह सुन्दर है या नहीं। और वह 'मनुष्य की निष्ठुरता के आकस्मिक अनुभव' की बात पढ़ता है और सोचता है—न जाने किस दुष्ट पुरुष या स्त्री ने इस बहिन से दुर्व्यवहार किया है; अवश्य ही यहाँ कुछ रहस्य है।....लेकिन उसे यह दुर्व्यवहार मिल ही कहाँ से सकता है? कहीं सुशीला के हाथ में स्वयं उसका अथवा साधना का कोई पत्र तो नहीं पड़ गया जिसकी ईर्ष्या से वह साधना से झगड़ा कर बैठी? कहीं उसने यह जताने की कोशिश तो नहीं की कि वह साधना से अधिक सुन्दर है?

और यह परीक्षा का भूत!—अवश्य ही चन्द्रनाथ को इसका कुछ इलाज करना पड़ेगा।

दूसरे दिन जब वह सोकर उठा तो अपने शरीर और मन में विशेष स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था, जैसा किसी महत्वपूर्ण काम का संकल्प कर लेने के बाद होता है। नित्य क्रियाओं से निवृत्त हो कपड़े पहन वह सहसा पार्क की ओर चल दिया, फिर वहाँ से कटरे पहुँच गया। वहाँ उसे एक प्रेस के प्रोप्राइटर से बात करनी थी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वह शीघ्र ही इलाहाबाद से चल देना चाहता था, और चलने से पहले एक छोटा काव्य-संग्रह छपा लेना चाहता था। इस प्रकार का संग्रह उपस्थित करके वह साधना में विनोदपूर्ण विस्मय का संचार करना चाहता था। साथ ही साधना को यह भी महसूस होना चाहिए कि चन्द्रनाथ उसकी बात को कितना महत्व देता है।

मुद्रक ने चार-छह दिन में ही पुस्तक निकाल देने का वादा किया।

●

:२८:

प्रेस से पुस्तक के सब फार्म छप कर तब मिले जब चन्द्रनाथ एक-डेढ़ घंटे के भीतर प्रयाग से घर चल देने की तैयारी कर रहा था। अभी उसका "पूर्व-वाक्य" नहीं छप पाया था और न कवर-पृष्ठ ही तैयार हो सका था।

प्रत्येक फार्म की तीन-तीन प्रतियाँ उसने मँगवा ली थीं। रेल में बैठकर उसने फार्मों को इकट्ठा किया, और फिर वह पूरी पुस्तक को लौट-लौट कर पढ़ने लगा। छप जाने से कविताओं में कोई विशेषता आ गई थी, सो नहीं, फिर भी वह उन्हें पढ़ते हुए नहीं अघा रहा था। आज से पहले भी उसने इन कवि-ताओं को दर्जनों बार पढ़ा था, किन्तु आज के पढ़ने में कुछ विशेषता थी। आज उसका पढ़ना पूर्णतया निरपेक्ष या निष्काम नहीं था। आज वह सोच रहा था—न जाने इस पुस्तक का कैसा स्वागत होगा। काव्य-सृष्टि के परिश्रम का बहुत-कुछ प्रतिकार वहीं मिल जाता है। किन्तु यश की और कभी-कभी धन की लालसा कलाकार को प्रायः अपने से कम उन्नत रुचिवाले आलोचक-पाठकों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुखापेक्षी बना देती है। चन्द्रनाथ आज इन्हीं लोगों के निर्णय के बारे में सोच रहा था। संग्रह की कुछ कविताएँ उसे बहुत प्रिय थीं, वे उसकी अनुभूति के अत्यन्त गम्भीर क्षणों की सृष्टि थीं—उन क्षणों की जिनमें कलाकार अपने को व्यक्त करने की उत्कण्ठा में शैली की सजावट से बाह्य उपकरणों को नितान्त ही भूल जाता है। क्या आलोचकगण उन अनुभवों के सुकुमार स्पन्दन को अपने में जगा सकेंगे?

और तुरन्त ही उसके विचारों का हिंडोला आलोचकों से दूर मुद्रक की दिशा में झूल गया। वह उसे रुपये कहाँ से देगा?

मुद्रक का नाम करतार सिंह था। कागज, छपाई आदि का हिसाब जोड़ कर उसने चन्द्रनाथ को बतलाया कि पुस्तक का कुल खर्च लगभग डेढ़-सौ रुपए पड़ेगा। चन्द्रनाथ यह लम्बी संख्या सुन कर घबराया। उस पर करतार सिंह ने कहा—'आप हमें आधे दाम अभी दे दें और आधे फिर देते रहें। हम तो घर के आदमी हैं। आपकी किताब जरूर निकलनी चाहिए।' चन्द्रनाथ के पास उस समय पिचहत्तर रुपये भी पूरे न थे, और आज वह सोच रहा था कि मुद्रक का शेष ऋण किस प्रकार चुकाया जायगा।

ट्यूशन ही उसका एक मात्र संबल था। उसने हिसाब लगाया कि अगले चार महीने ट्यूशन से मुद्रक के पैसे चुकाए जा सकेंगे। साथ ही उसने सोचा—शायद पुस्तकों की बिक्री से कुछ रुपए मिल जायँ। करतार सिंह ने वादा किया था कि वह चन्द्रनाथ की पुस्तकें बेचने का भरपूर यत्न करेगा।

रात हो चुकी थी। चन्द्रनाथ उठ कर खिड़की के पास जा बैठा। बिजली की बत्तियों से पास के अन्धकार को छिटकाती हुई रेल तेजी से खेतों, मैदानों, वृक्ष-कुंजों, गाँवों और झोपड़ियों को पार करती हुई जा रही थी। रेल के चारों ओर सब कुछ गतिमय था। किन्तु उसके ऊपर, निरभ्र आकाश में, हजारों नक्षत्र शून्य के नेत्रों की भाँति स्थिर ज्योति से चमक रहे थे। चन्द्रनाथ के कमरे में जो खिड़की है उसमें भी वे इसी तरह दीखते हैं, मानो उनके लिए दूरी का कोई अर्थ ही नहीं, पृथ्वी के सब स्थान एक-से ही हैं। सुशीला के साथ एक तकिए पर सिर रखकर उसने कितनी बार इन तारों का ज्योति-पान किया है

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और शीघ्र ही अब सुशीला उसके पास होगी, सुन्दर और मोहक, मधुर और स्नेहमयी। लेकिन अभी तो काफी देर है। कल का दिन तो प्रिंसिपल देव से मिलने में ही लग जायगा, और फिर घर जाना और फिर शिवपुरी। क्यों न वह बरेली से सीधे शिवपुरी चला जाय? पैसे भी बचेंगे और समय भी। भाभी हँसी करेंगी, करने दो; भाई साहब को यह स्कीम ज़रूर पसन्द आएगी।

और शिवपुरी में साधना से भी भेंट हो सकेगी। उसे साधना से अधिक स्नेह है या सुशीला से? अथवा दोनों से?

तीसरे दर्जे के कम्पार्टमेण्ट में विशेष भीड़ नहीं थी, अतः चन्द्रनाथ को बिस्तर बिछा करके सो जाने में कोई अड़चन नहीं हुई।

प्रभात में जब किरणों और इंजिन के सम्मिलित कोलाहल से वह जागा तो उसने अपने को बरेली के आस-पास पाया। हड़बड़ा कर वह उठ बैठा और जल्दी-जल्दी सामान सहेजने लगा। थोड़ी ही देर में बरेली का परिचित स्टेशन आ गया। परिचित होने पर भी मानो उस की प्रत्येक वस्तु कुछ नई दीख रही थी—उसकी भीड़, उसके कुली, उसके फेरीवाले विक्रेता, सब जैसे नए थे। और वहां की नितान्त परिचित आवाज़—बरेली का सुर्मा—भी मानो आज नई होकर सुनाई दे रही थी।

किन्तु स्टेशन पर उतरते-उतरते जैसे नयेपन का प्रभाव भी उतरने लगा। वेटिंग रूम एकदम परिचित लगा; वहाँ उसने सदैव की भाँति नित्य क्रियाओं से छुट्टी पाई। फिर वह सामान को ताँगे ही में लादे प्रिंसिपल देव के बँगले की ओर चल दिया।

दुर्भाग्यवश प्रिंसिपल देव नहीं मिल सके, वे पिछले ही दिन लखनऊ चले गए थे। आज रात ही उनके लौटने की संभावना थी; पर चन्द्रनाथ ने प्रतीक्षा करना उचित नहीं समझा। पुस्तक की एक प्रति और एक पत्र उनके लिएं छोड़-कर वह शिवपुरी चल दिया।

शिवपुरी तक रेल नहीं जाती। चन्द्रनाथ को बरेली से कुछ दूर एक स्टेशन पर उतर जाना पड़ा। स्टेशन से ससुराल तक कई मील का फासला था; वहाँ पहुँचने के लिए उसे एक बैलों के "ताँगे" की शरण लेनी पड़ी। रास्ता कच्चा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

था। ऊँची-नीची जमीन पर भारतवर्ष का वह प्राचीन यान अनियमित किन्तु विश्वस्त गति से हिलता-डुलता जा रहा था। बैलों के अठखुरी नृत्य से अनवरत धूल उड़ रही थी जो अनिश्चित दिशा में बहनेवाली हवा से प्रेरित होकर किसी भी ओर से गाड़ी में दौड़ पड़ती थी। चारों ओर खेत थे; धान, उड़द, लोभिया, ज्वार, बाजरा आदि लगभग पके खड़े थे। चन्द्रनाथ इन में से प्रायः एक भी अनाज को नहीं पहचानता था, अतः वह गाड़ीवान से पूछता चल रहा था। कहीं-कहीं किसान तीसरे पहर की कोमल धूप में मक्का काट रहे थे।

लगभग साढ़े-पांच बजे वह अपनी ससुराल पहुँचा; वहाँ ससुर ने कतिपय मित्रों के साथ उसका स्वागत किया। मकान दो-मंजिला था; दर्वाजे के आगे एक चौड़ा ऊँचा सहन था जिसपर नीम के पेड़ की छाया थी। कच्चे फ़र्श पर कुछ पीली पत्तियाँ पड़ी हुई देखी जा सकती थीं। प्रमोद उपस्थित न था, और कमला एक मैली-सी सफेद धोती पहने खड़ी थी। चन्द्रनाथ को देखकर वह मुस्कुराई और शर्मा कर ऊपर भाग गई। कमला बिलकुल सुशीला का छोटा संस्करण मालूम पड़ती है—वही गुलाबी होंठ, वही सफेद दशन-पंक्ति, वही हास, वही आँखें, इसलिए चन्द्रनाथ को वह विशेष प्रिय लगती है।

कुछ देर रुककर उसने स्नान किया और फिर वह एक मूढ़े पर आकर बैठ गया। उसी समय प्रमोद आया—नौ-दस वर्ष का हँसमुख बालक। उसकी आकृति कमला और सुशीला की अपेक्षा कुछ कठोर है, पर व्यवहार में वह कम मधुर नहीं है। अभी-अभी वह साधना के घर से खेलकर आ रहा था। चन्द्रनाथ को देखकर उसकी पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि वह उलटे पाँव लौटकर चला जाय, किन्तु चन्द्रनाथ ने उसे पकड़ कर रोक लिया।

और अब कमला उतरी। सफेद धोती का स्थान एक रंगीन साड़ी ने ले लिया था। चन्द्रनाथ उसे देखकर मुस्कुराया; कमला की भी दशन-पंक्ति खिल गई। इस पर प्रमोद ने कड़ा स्वर करते हुए कहा—'कमला, तुम इतना हँसती क्यों हो?' और मुँह फेर कर वह स्वयं हँस पड़ा। कमला ने चन्द्रनाथ के पास आकर कहा—'जीजाजी, आप को अम्मा बुला रही हैं।'

चन्द्रनाथ ने उसका हाथ पकड़ कर पूछा—क्यों बुला रही हैं?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'खाना खाने के लिए', कमला ने उत्तर दिया।

'कह दो खाना एक-डेढ़ घन्टे के बाद खाएँगे।'

कमला ऊपर चली गई। चन्द्रनाथ ने प्रमोद को बुला कर पूछा—'तुम्हारी साधना जीजी कहाँ रहती हैं?'

प्रमोद ने उँगली से एक ऊँचे पक्के मकान की ओर, जो वहाँ से लगभग पचास गज की दूरी पर था और साफ दिखाई दे रहा था, इशारा करके कहा—'वहाँ, उसी घर में रहती हैं।'

'तुमने उन्हें हमारे आने की खबर कर दी?'

'अभी तो नहीं, कह आऊँ? आज ही तो पूछ रही थीं।'

और उत्तर की बिना प्रतीक्षा किए ही वह चल दिया।

चन्द्रनाथ सोच रहा था कि खबर पाते ही साधना वहाँ आ जायगी; कम-से-कम उसके भोजन के समय तक ज़रूर आ पहुँचेगी। उसकी स्मृति में साधना के परिचय का पहला दृश्य, जब उसने उसे अपने मामा के घर भोजन कराया था, घूमने लगा। तब साधना कितनी कम परिचित थी, और अब वह कितनी अपनी बन गई है!

किन्तु साधना नहीं आई। चन्द्रनाथ को बड़ा आश्चर्य था। भोजन कमला ने कराया। और सुशीला? शिवपुरी में चन्द्रनाथ को उसका कोई आभास नहीं मिलता, वहाँ मानो वह घर के किसी रहस्यमय कोने में खो जाती है। इसके विपरीत बदायूँ में उसकी उपस्थिति घर में सर्वत्र व्याप्त रहती है।

भोजन करके वह नीचे आया। नीचे ही उसके सोने का प्रबन्ध किया गया था। रात को जब वह हृदय पर एकाकी मन का भार लिए सो रहा था तो सुशीला उससे कितनी पास थी, और कितनी दूर!

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

:२१:

सुबह को छै बजे प्रमोद ने चन्द्रनाथ से पूछा, 'जीजाजी, घूमने चलेंगे?'

इससे पहले चन्द्रनाथ अपना भ्रमण-पक्षपात प्रमोद पर प्रकट कर चुका था, इसलिए उसने ऐसा प्रश्न किया। चन्द्रनाथ का उत्तर उसकी आशा के अनुकूल ही था।

दोनों घूमने निकले। एक छोटा-सा बाजार, जो लगभग बन्द था, तय करके वे खुली जगह में पहुँचे। शिवपुरी में कोई पक्की सड़क नहीं है। थोड़ी देर खेतों के बराबर चलते-चलते वे उस सड़क पर पहुँचे जिस पर चन्द्रनाथ स्टेशन से गया था। प्रभात के कोमल आलोक में वह सड़क बड़ी भोली और आकर्षक मालूम पड़ रही थी। उसकी ऊँची-नीची पगडण्डियाँ जैसे पैरों को अपने ऊपर चलने का निमंत्रण दे रही थीं। इस समय न तेज हवा थी, न धूप; खेत भी बड़े मनोरम लग रहे थे।

दोनों दूर निकल गए। इस भ्रमण-यात्रा में प्रमोद चन्द्रनाथ के गुरु और परीक्षक का काम कर रहा था। चन्द्रनाथ ने कल जो खेतों या अनाजों के नाम सीखे थे उन्हें वह आज दुहरा रहा था। प्रमोद उसकी भूलें ठीक कर रहा था और नये नाम भी बता रहा था। कभी-कभी वह किसी विचित्र पेड़ के पास रुक कर चन्द्रनाथ से उसका नाम पूछता, और फिर उसकी अनभिज्ञता के सुयोग से लाभ उठाकर उसकी व्याख्या कर देता। एक छोटे बाग के पास रुक कर उसने कहा—'यह साधना जीजी का बाग है, चलो भीतर चलें।'

चन्द्रनाथ ने मना किया, शायद उसे साधना पर कुछ क्रोध था। लेकिन प्रमोद उसे बरबस कुछ दूर अन्दर ले ही गया। बाग के माली उसे अच्छी तरह जानते थे। प्रमोद ने उन्हें चन्द्रनाथ का परिचय दिया। मालियों ने उसे राम-राम की, और फिर तोड़कर दोनों को अमरूद दिए। चलते-चलते प्रमोद ने कुछ फूल चुन लिए।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बाग के सामने कुछ दूरी पर धुँआ उठ रहा था। चन्द्रनाथ ने प्रमोद से पूछा—'यह धुँआ कैसा उठ रहा है ?'

'आपको नहीं मालूम, वहाँ भट्ठा है।'

'यह भट्ठा क्या होता है भाई ?'

प्रमोद हँस पड़ा। 'आप भट्ठा तक नहीं जानते !...भट्ठा उसे कहते हैं जहाँ गुम्मे (बड़ी ईंटें) बनते हैं। यह भट्ठा भी साधना जीजी का है।' प्रमोद साधना के पिता की अपेक्षा साधना से ज्यादा घनिष्ठता रखता है, इसलिए बार-बार उसी का नाम लेता है। पलभर में दोनों चलकर भट्ठे पर पहुँच गए। वहीं एक छोटा-सा गांव भी था।

चन्द्रनाथ कौतूहल-सहित भट्ठे का निरीक्षण करने लगा और प्रमोद बड़ी योग्यता से उसके मुख्य अंगों का परिचय कराने लगा। सहसा चन्द्रनाथ का ध्यान उन बालकों पर गया जो गड्ढे में से पकी हुई ईंटें उठाकर ऊपर ला रहे थे। बालक विभिन्न अवस्थाओं के थे, सात-सात ईंटें उठाकर ला रहे थे, और छोटे दो-दो या एक-एक। चन्द्रनाथ ने देखा कि एक-एक ईंट उठाकर लानेवाले बालकों की संख्या सब से ज्यादा है। उसने वहाँ खड़े हुए एक व्यक्ति से, जो बालकों के चक्करों का हिसाब रख रहा था, पूछा—'इन ईंटों को उठाने की मजदूरी क्या मिलती है ?'

उस व्यक्ति ने कहा—'फी ईंट एक कौड़ी।'

'फी ईंट एक कौड़ी ! कितनी कौड़ियों का एक पैसा होता है ?'

'पहले दो-कम पचास का होता था, अब चालीस कौड़ियों का होता है।'

चन्द्रनाथ सुनकर सिहर उठा—एक ईंट उठाने की एक कौड़ी ! यह छोटे-छोटे बालक पूरे चालीस बार ऊपर-नीचे चक्कर काट कर एक पैसा कमा सकेंगे उनके नन्हें हाथ-पैरों के इतने परिश्रम का क्या यही मूल्य है ! और इन ईंटों से जो घर बनेंगे, उनसे इन बालकों का कोई सम्बन्ध नहीं होगा। मानो इतने सारे मानव-शिशु केवल साधन हैं, और मिट्टी के मकान साध्य। मनुष्यों ने स्वार्थ और हिंसा के वशीभूत होकर मूल्यों का कैसा विपर्यय कर दिया है !

प्रमोद ने कहा—'जीजा जी, चलो देर हो रही है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'चलते हैं, 'चन्द्रनाथ ने उत्तर दिया, और फिर पूछा—'प्रमोद, तुम कितनी ईंटें उठाकर ला सकते हो ?'

प्रमोद ने कहा—'मैं ? पाँच तो ला ही सकता हूँ।'

चन्द्रनाथ का ध्यान बालकों में था। वह उनके कांतिहीन और भाव-शून्य चेहरों को देख रहा था। वे कभी वेग से और कभी धीरे-धीरे गड्ढे में उतर कर जाते और वहाँ से ईंटें लाकर ढेर में डाल देते। कुछ स्त्रियाँ भी वहाँ खड़ी थीं, जो सम्भवतः उन बालकों में से कुछ की माताएँ थीं। संसार के विचारशील मस्तिष्कों ने मनुष्य का परिश्रम बचाने और उसके जीवन को सरल बनाने के अनेक उपाय खोज निकाले हैं, किन्तु भारत के इन बालकों तक उनका कोई अन्वेषण, कोई आविष्कार नहीं पहुँचता। निरीह ग्रामवासियों के लिए न कोई विज्ञान है, न कोई कला। मनुष्य के ज्ञान और क्षमता की यह कैसी घोर विडम्बना है!

चन्द्रनाथ सिर्फ कुर्ता पहनकर घूमने गया था; उसकी जेब में इस समय एक चवन्नी के अतिरिक्त कुछ न था। उसने बड़ी कठिनता से ईंटों का हिसाब रखने वाले व्यक्ति से चवन्नी के बदले पैसे लिए और उन्हें प्रमोद को देकर कहा—'इन्हें उन बच्चों में एक-एक बाँट दो जो एक या दो ईंटें ला रहे हैं।' प्रमोद बड़ी तत्परता से तैयार हो गया।

और उसने ऊँचे स्वर में आवाज़ लगाई—'लड़को! ओ लड़को! इधर आओ!' किन्तु कोई नहीं आया। उसने फिर आवाज़ लगाई, किन्तु बालकों ने सुनी-अनसुनी कर दी। प्रमोद झुँझला गया। उसने आगे बढ़ कर एक छोटे बच्चे को पकड़ लिया और उसके हाथ में एक पैसा रख दिया। यही व्यवहार एक दूसरे लड़के से भी किया। वे दोनों चकित होकर देखने लगे, किन्तु प्रमोद ने उनकी परवा न कर के तीसरे लड़के को रोका। पलक में सब बालकों की समझ में आ गया कि क्या मामला है, और वे सब प्रमोद को घेर कर खड़े हो गए। चन्द्रनाथ दूर से देखता रहा। दो मिनट में प्रमोद के हाथ के सारे पैसे खत्म हो गए।

पैसे बाँट कर प्रमोद चन्द्रनाथ के पास भाग आया। दोनों ने आगे जाने को क़दम बढ़ाए। इतने में एक औरत एक पाँच-छै बरस के बच्चे का हाथ पकड़े दौड़ती हुई आई और बोली—'इसे पैसा नहीं मिला।' उसकी घबराहट और

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जाती उस यात्री के समान थी जिसके सामने से रेल छूटकर भागना चाहती है। चन्द्रनाथ ने क्षोभ और परिताप भरे स्वर में कहा—'अब पैसा नहीं है। वह कुछ दूर और पीछा करने के बाद रुककर खड़ी हो गई, जैसे चन्द्रनाथ या विधाता के अन्याय या भूल का उपालम्भ कर रही हो। चन्द्रनाथ ने पीछे फिर देखा, स्त्री की नैराश्य-पूर्ण दृष्टि मानो सम्पूर्ण वातावरण को दग्ध कर रही है। उसने अर्द्ध-निराश स्वर में प्रमोद से पूछा—'तुम्हारे पास कोई पैसा है ?''

प्रमोद ने आश्वासन देते हुए कहा—'हाँ, एक पैसा है; इस औरत को दूँ ?''

चन्द्रनाथ ने सिर हिलाकर कहा—'हाँ।'

उस स्त्री का पैसा पाना था कि दो और स्त्रियाँ चन्द्रनाथ की दिशा में दौड़ीं। एक के साथ एक छोटी लड़की थी, और दूसरी की बगल में एक चार-छै महीने का शिशु। चन्द्रनाथ ने अपनी चाल तेज कर दी। किन्तु दूसरी स्त्री दौड़ने में बहुत तेज थी और बार-बार आगे आकर चन्द्रनाथ के सामने हाथ फैलाने लगी। चन्द्रनाथ ने कई बार मना किया, पर वह नहीं मानी। प्रमोद ने रोका, फिर भी वह चलती रही। अन्त में जब उसे बिलकुल आशा न रही, और पूरी-पूरी थक गई, तो कुछ बकती हुई रुककर खड़ी हो गई।

चन्द्रनाथ की आँखें सजल हो गईं। एक तुच्छ ताँबे के टुकड़े के लिए चेतन मनुष्य इतना अपमान, इतनी लाञ्छना सह सकता है, इसकी उसने कल्पना नहीं की थी। कैसा हमारा समाज है, जो कुछ लोगों को भीख माँगने को विवश कर देता है। भिखमंगों को पैसा देते हुए हम सोचते हैं कि हम पुण्य कर रहे हैं, और सन्तुष्ट होते हैं। उस समय हम अपने को नितान्त भिन्न कोटि का जीव समझते हैं। उनके अपमान में हमें अपना अपमान नहीं लगता, हमें यह याद नहीं रहता कि हमारी और उनकी मनुष्यता में कोई महत्त्वपूर्ण भेद नहीं। ऊँचे महलों और साम्राज्यों का स्वप्न देखनेवाला, स्वर्ग और अपवर्ग की कल्पनाओं का जनक, देश-काल के अपार विस्तार की व्याख्या का अभिमान रखनेवाला यह मनुष्य भूलने की चेष्टा करता है कि उसके पूर्वज आग की एक चिनगारी और जौ की एक रोटी के लिए प्रकृति के प्रांगण में लम्बी तपस्या किया करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

थे। किन्तु उसकी यह चेष्टा निष्फल है। संसार के दरिद्र और भिक्षुक, जि सारा जीवन रोटी की चिंता में बीत जाता है, आज भी मनुष्य को उस क्षुद्रता और नगण्यता की याद दिला रहे हैं। जड़ शरीर की सीमाओं में हुई चैतन्य-शक्ति, कला और दर्शन की उड़ानों में असीम आदर्श की ओर होना चाहती है, किन्तु उसकी आरम्भिक निःसहाय दशा के ये स्मारक टाँग पकड़कर उसकी कल्पना को नीचे खींच लेते हैं।

मनुष्य की क्षुद्रता सत्य है या उसकी असीमोन्मुख वासना ?

रास्ते भर चन्द्रनाथ विचारों में डूबा आया। प्रमोद शायद थक गया उसने भी बात करने की विशेष चेष्टा नहीं की। बस्ती में घुसते-घुसते चन्द्र भट्ठे के दृश्य को भूलने की चेष्टा करने लगा। बाजार खुल गया था; बाहरी सिरे पर भी अस्थायी बाज़ार या पैंठ में लग रही थी। मटीले पहने राशि-राशि गाँववाले पेंठ में खरीद-फ़रोख्त करने को उमड़ रहे थे। नता से उस भीड़ में से निकलकर दोनों बाज़ार में घुसे। प्रमोद अब फिर चहक लगा था। घर के पास पहुँचकर चन्द्रनाथ ने प्रमोद को समझाया—'भट्ठे की बात किसी से मत कहना, अच्छा।' किसी से उसका मतलब मुख्य साधना से था। प्रमोद ने भी 'अच्छा' कहकर उत्तर दिया किन्तु चन्द्रनाथ रोचक कथा किसी से न कहने का क्यों आग्रह कर रहा है, यह सम्भवतः उ समझ में नहीं आया।

प्रमोद ऊपर चला गया, पर थोड़ी ही देर में नीचे आ गया। बोला 'साधना जीजी आ गई हैं। मुझसे कह रही थीं कि आज बहुत चहलकदमी डाली, थक गया होगा। भला मैं कब थकनेवाला हूँ, आप जरूर थक गए होंगे

चन्द्रनाथ—'तुम बहुत बहादुर आदमी हो। हमें तो कुछ थकन हो भट्टे का ज़िक्र तो नहीं किया ?

'नहीं।' फिर जेब में हाथ डालते हुए उसने कुछ फूल और अमरूद नि कर चन्द्रनाथ के सामने रख दिए।

चन्द्रनाथ ने दो-तीन फूल उठाते हुए कहा—'अमरूद हम अभी नहीं खा शाम को देखा जाएगा।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दस-साढ़े-दस बजे चन्द्रनाथ को भोजन करने के लिए बुलाया गया। इस साधना उपस्थित थी। वह उसके लिए परोसी हुई थाली स्वयं ही लेकर और उसे रखकर खड़ी हो रही।

'बैठोगी नहीं ?' चन्द्रनाथ ने कहा।

वह उसके सामने बिछी हुई चटाई पर बैठ गई।

कुछ क्षण बीत गए।

"तुम्हें कोई आवश्यक कार्य हो तो इस काम से छुट्टी ले लो, मुझे खाने में लग सकती है।'

'नहीं, मुझे क्या काम होगा।'

'शाम नहीं आ सकी थी, इसलिए कहा।'

साधना ने इस उपालम्भ का कोई उत्तर नहीं दिया। चन्द्रनाथ ने मुँह उठा एक दृष्टि उसे देखा, मानो वह साधना की मनोनिविष्ट छवि की उसकी मूर्ति से तुलना करना चाहता हो। कुछ देर बाद साधना उठकर उसके पूड़ी ले आई।

'तुम्हारा पत्र मिला था; ऐसा पत्र क्यों लिखा था ?'

साधना ने अन्यमनस्क स्वर में कहा—'उस समय मेरी तबीयत ठीक नहीं कोई और बात नहीं है।'

फिर कुछ क्षण को ख़ामोशी हो गई। 'तुम कुछ सुस्त मालूम पड़ती हो, ना', उसने ग्रास उठाते हुए कहा।

'नहीं तो, मैं सुस्त क्यों होऊँगी' कह कर वह मुस्कुराने की चेष्टा करने । 'आपके लिए कौन-सा साग लाऊँ ?'

चन्द्रनाथ ने थाली में एक तरकारी की ओर संकेत किया। साधना वह लेकर आई और उसकी थाली में परोसती हुई बोली—'बतलाइए, यह चीज़ है ?"

उसकी आँखें यकायक साधना की दृष्टि से जा मिलीं मानो जानना चाहती क्यों वह उसे संकट में डालने को उद्यत हुई है। फिर कुछ सोचकर उसने दिया—'यह साग हमारे इलाहाबाद में होता ही नहीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधना हँस पड़ी—'आपके इलाहाबाद में भाटे का साग नहीं होता जी !' चन्द्रनाथ ने दूसरा ग्रास खाते हुए कहा—'अरे ! यह तो भाटा है।'

एक मिनट बाद उसने साधना से पूछा—'बदायूँ चल रही हो ?'

साधना गंभीर होती हुई बोली—'क्या सचमुच आप मुझे पढ़ाने की बात सोच रहे हैं ?'

'इसका मतलब ?'

'मेरा कोर्स बिलकुल तैयार नहीं है। मैंने प्रश्न-पत्र देखे थे, वे मुझे कठिन लगे। इस समय मैं शायद किसी प्रश्न का संतोषप्रद उत्तर नहीं लिख सकती। इसलिये सोचती हूँ, क्यों व्यर्थ आपका अमूल्य समय नष्ट करूँ।'

'तुम्हें विश्वास है कि तुम्हें पढ़ाने से मेरा समय व्यर्थ नष्ट होगा ?'

'सो तो होगा ही, आप उतना समय साहित्य-सृजन में लगा सकते हैं, रिसर्च में।'

चन्द्रनाथ ने धीमे स्वर में कहा—'ठीक ही कहती हो; किसी ग़ैर आदमी के समय पर दूसरे का अधिकार कैसे हो सकता है।'

साधना ने फिर उसके उलाहने का उत्तर नहीं दिया। चन्द्रनाथ ने सिर उठाकर ऊपर देखा, साधना अपनी सजल दृष्टि उससे बचाने की चेष्टा कर रही थी। क्षणभर को वह स्तब्ध रह गया। फिर उसने कोमल स्वर में कहा—'कोर्स की इतनी चिंता क्यों करती हो, तुम इस वर्ष बी० ए० में अवश्य उत्तीर्ण होओगी।

कवि होने पर भी चन्द्रनाथ यह कल्पना नहीं कर सका कि साधना के दुःख का कोई और कारण हो सकता है। परीक्षाओं की दुनियाँ में रहने वाला यह कवि-छात्र अब तक जीवन को बौद्धिक परीक्षास्थल ही समझता था। दूसरी तरह की परीक्षाओं का भी उसे अभी विशेष अनुभव नहीं हुआ था।

उसकी की पूड़ी खत्म हो चली थी; साधना की दृष्टि इस पर पड़ी और वह तेज़ी से अपने को सँभाल कर उठ खड़ी हुई। चन्द्रनाथ ने उसे निषेध किया और वह पानी पीने लगा। साधना ने हाथ धुलाने को लोटा उठा लिया। चन्द्रनाथ ने हाथ धोते हुए उससे पूछा—'तो फिर तुम बदायूँ कब आओगी ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'तीन-चार दिन बाद', साधना ने धीरे से उत्तर दिया।

'निश्चित ?' चन्द्रनाथ ने विस्मयपूर्ण प्रसन्नता से कहा।

'निश्चित ही समझिए', साधना ने उत्तर दिया।

शाम को वह सुशीला के साथ बदायूँ चल दिया।

●

[: ३० :

अगले दिन चन्द्रनाथ ने सुशीला से पूछा—'क्या साधना आएगी ? कुछ बात हुई थी ?'

'आपसे उसने क्या कहा ?' सुशीला ने उत्तर में पूछा।

'मुझसे तो कहती थी कि तीन-चार दिन बाद आ जाऊँगी।'

'तो जरूर आएगी।'

'शायद उसके पिताजी को भेजने में आपत्ति हो।'

'नहीं, यदि साधना के मन में बस गई है, तो वह ज़रूर आएगी। उसके बाबूजी उसकी बात कभी नहीं टालते। अकेली लड़की है, बड़े लाड़-प्यार से पली है, जो चाहती है करा लेती है। और इस समय तो यों भी सब चाहते हैं कि किसी तरह उसका मन बहले। बड़ी चाची तो बहुत दिनों से कह रही हैं कि वह कुछ दिन बदायूँ रह जाय।'

चन्द्रनाथ इतनी देर में कुछ और सोचने लगा था। सुशीला की बात सुनकर वह चुप रहा। उसे सुशीला से कुछ और पूछना नहीं है, यह शायद सुशीला को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

असह्य हुआ। अपने साधना-सम्बन्धी ज्ञान की महत्व-घोषणा सी करती हुई वह बोली—'इस बार साधना को बड़ा भारी सदमा हुआ है।'

'कैसा सदमा ?' चन्द्रनाथ ने कुतूहल से पूछा। साथ ही वह सोच रहा था कि सुशीला कैसे घरेलू शब्दों का व्यवहार करती है।

'भई, उसकी शादी होते-होते रुक गई; और इससे बड़ा सदमा क्या होगा।'

चन्द्रनाथ चौंक पड़ा; सुशीला सचमुच ही कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनाने की स्थिति में थी। उसने सुशीला से साफ-साफ कहने का आग्रह किया। सुशीला ने जो सुनाया उसका सारांश इस प्रकार था :—

चन्द्रनाथ के इलाहाबाद जाने से दो हफ्ते पहले जो स्त्रियाँ साधना को देखने आई थीं उनमें एक वर की माँ थी और दूसरी बहिन। सुनने में आया कि माँ ने साधना को नापसंद नहीं किया, पर बहिन ने उसे अपने मनोनुकूल नहीं पाया। वे लोग साधना का फ़ोटो भी ले गई थीं। शायद वर को भी लड़की पसन्द नहीं हुई।

चन्द्रनाथ को सुनकर धक्का-सा लगा। अब उसकी समझ में आया कि साधना के अन्तिम पत्र का क्या मतलब था और शिवपुरी में उसका भाव उदास क्यों था। उसने पूछा—'साधना तक यह खबर कैसे पहुँची ?'

'खबर क्या छिप सकती है ? बदायूँ और बरेली सब जगह इसका चर्चा फैल गई। इसलिये साधना को और भी बुरा लगता है। पिछले महीने-डेढ़ महीने से उसने कहीं आना-जाना भी बन्द कर दिया है; नजदीकी सहेलियों के घर भी वह नहीं गई है, न किसी को बुलाया है। बदायूँ भी नहीं गई है। घर में अकेले कमरे में पड़ी रहती है। उससे पहले आपका बहुत इन्तजार करती थी। उसे पढ़ने की बहुत चिन्ता है।'

चन्द्रनाथ चुप सुन रहा था।

कुछ देर बाद वह बोली—'लड़के बड़े खराब होते हैं; वे किसी का दिल नहीं देखते, सिर्फ सूरत देखते हैं।···आप मुझे देखने आते तो पसन्द नहीं करते, क्यों ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुशीला अपने को सुन्दर समझती है, विशेषतः साधना की तुलना में। शायद इसलिये वह यह प्रश्न कर रही है। वह आशा करती है कि चन्द्रनाथ उसका प्रतिवाद करे—प्रत्येक स्त्री पति से अपने सौंदर्य की प्रशंसा सुनना चाहती है। किन्तु चन्द्रनाथ का ध्यान अन्यत्र था, अतः उसने सुशीला को कोई उत्तर नहीं दिया।

थोड़ी देर में उसने कहा—'पाँच-सात मिनट देखकर किसी लड़की या लड़के के विषय में क्या निर्णय किया जा सकता है।'

सुशीला—'सिर्फ शक्ल देखी जा सकती है, और क्या।'

चन्द्रनाथ—'क्या लड़कियाँ सौंदर्य की खोज नहीं करतीं? और क्या वे रूप को महत्व नहीं देतीं?'

सुशीला—थोड़ा-बहुत तो इन चीजों का सभी को ध्यान होता है। पर रूप का ख्याल वर-पक्ष के लोग ज्यादा करते हैं।

चन्द्रनाथ चुप हो गया। वह सोच रहा था उस प्रथा के सम्बन्ध में जिसे 'देखौ' अथवा वर-कन्या का देखना कहते हैं। पश्चिम की नकल करके, वहाँ की समाज-व्यवस्था के अभाव में, यह प्रथा हमारे देश में, पारस्परिक दर्शन के नाम में, प्रचलित हो गई है। भला इसकी क्या सार्थकता है? मानो लड़की के व्यक्तित्व में चेहरे या शरीर के सिवाय कुछ होता ही नहीं; मानो मानव व्यक्तित्व जैसी जटिल वस्तु को एक मिनट, एक दृष्टि में समझा जा सकता है! किसी को मित्र बनाने के लिये, उसमें पूर्ण विश्वास प्राप्त करने के लिए, हमें महीनों और कभी-कभी वर्षों के अनुभव की आवश्यकता होती है, किन्तु विवाहार्थियों के आपने परिचय की हमारा समाज कोई जरूरत नहीं समझता; उन्हें एक-दूसरे को जानने-परखने का वह कोई अवसर देना नहीं चाहता। समाज की दृष्टि में विवाहित जीवन किसी उच्चादर्श की खोज या प्राप्ति के लिये नहीं है, जिसके लिए समान मस्तिष्क और समान दृष्टि तथा वेदनाओंवाले स्त्री-पुरुषों का साहचर्य आवश्यक हो; वह उसे केवल काम-वासना का क्रीडा-क्षेत्र अथवा प्रजनन का यन्त्र समझता है। उसके व्यवहार से लगता है मानो दाम्पत्य जीवन व्यभिचारशाला है और विवाह उसका दर्वाजा, जिसमें खड़े होकर युवक और युवतियाँ एक-दूसरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

के शारीरिक आकर्षण का मोल करते हैं। मानो नर-नारी का मिलन केवल शारीरिक मिलन हो, मानो स्त्री का प्रधान गुण पुरुष को काम-क्रीड़ा के लिये आकर्षित कर सकना हो और पुरुष का स्त्री को गहने-कपड़ों से ताजाकर रख सकना। दोनों के जीवन का जैसे कोई विशेष अर्थ, कोई गम्भीर उद्देश्य नहीं है, दोनों के व्यक्तित्व मानो फुलझड़ियों की भाँति समाज की असंस्कृत आँखों के कौतूहल एवं मनोविनोद का साधन मात्र हैं!

स्वयं उसने साधना को कई बार देखा है, उसके इतने अन्तरंग पत्र पाए हैं फिर भी वह उसके पूरे व्यक्तित्व की अभी कहाँ थाह ले पाया है! उसकी सुन्दरता का निर्णय तो वह बिलकुल ही नहीं कर सका है—हाँ, वह इतना अवश्य जानता है कि उस लड़की के अन्तःप्रदेश में अपार सौहार्द और मधुरता है। क्या इन चीजों का सौंदर्य से कोई सम्बन्ध नहीं है? क्या सौंदर्य केवल आँख से देखने की वस्तु है और क्या उसे आँख खोलते ही पहचान लिया जा सकता है? जिसे स्थूल-बुद्धि जन-समुदाय सौंदर्य कहता है वह—चेहरे की रचना और रंग—विभिन्न जातियों में विभिन्न प्रकार का होता है; तो क्या यह कहा जायगा कि प्रकृति ने सौंदर्य कुछ जातियों को ही दिया है? क्या नीग्रो माँ को अपना बच्चा सुन्दर नहीं लगता और क्या चीनी प्रेमिक एक-दूसरे को आकर्षित नहीं करते?

साधना को जो स्त्रियाँ देखने आई थीं वे विशेष पढ़ी-लिखी न थीं, यह उसे सुशीला से मालूम हुआ। साधना को जो इस घटना से मार्मिक वेदना हुई है उसका निराकरण कैसे हो, वह अब यही सोच रहा था।

अगले दिन वह इस सम्बन्ध में मास्टर गोपालस्वरूप से बातचीत करने गया। उन पर उसने प्रकट किया कि विवाह-सम्बन्ध के सिलसिले में वह एक बार बरेली जाकर कोशिश करना चाहता है।

मास्टर साहब ने कहा—कोशिश करने में तो कोई हर्ज नहीं है पर सफलता की विशेष आशा नहीं है।

चन्द्रनाथ जाने के लिये उपयुक्त तिथि के निर्णय में लग गया।

●

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

: ३१ :

दूसरे दिन चन्द्रनाथ कम्पनीवाग से घूमकर लौट रहा था, उसे राजाराम ने आवाज़ दी।

राजाराम चन्द्रनाथ का मौसेरा भाई था; उसकी माँ चन्द्रनाथ की माँ की चचेरी बहिन थी। उसका घर चन्द्रनाथ के घर के पास ही था। राजाराम के पिता को शराब का व्यसन था। दो लड़कियों का विवाह भी करना पड़ा, इसमें उनकी पैतृक सम्पत्ति बहुत कुछ नष्ट हो गई। उनका देहावसन हुए पाँच-छै वर्ष बीत चुके थे। उनके मरने के बाद राजाराम और उसकी माँ ने गृहस्थी सँभालने की कोशिश की, किन्तु बहुत दिनों तक उसे कोई काम न मिलने के कारण विशेष उन्नति नहीं हुई। हाल ही में उसे नौकरी मिल गई थी, आजकल वह एक डिप्टी मैजिस्ट्रेट की अदालत में क्लर्क था। पिछली बार जब चन्द्रनाथ आया था तब राजाराम को नौकरी करते एक ही मास बीता था। उसका वेतन पचपन रुपया मासिक था।

चन्द्रनाथ उसकी बैठक में घुसा। इस बैठक में वह पहले भी बहुत बार जा चुका था। मौसा जी की मृत्यु के बाद वह अक्सर मौसी का हाल पूछने वहाँ जाता। मौसी से उसकी बातचीत प्रायः राजाराम के पढ़ने-लिखने और उसके आर्थिक भविष्य के बारे में होती। राज़ाराम को बचपन से उर्दू सिखाई गई थी; चन्द्रनाथ की प्रेरणा से उसने कुछ हिन्दी भी सीख ली थी। वह चन्द्रनाथ से तीन-चार वर्ष छोटा था, यद्यपि देखने में उससे कुछ बड़ा ही लगता था।

चन्द्रनाथ ने देखा कि बैठक काफी बदल गई है। पहले जहाँ दो-तीन चटाइयाँ बिछी रहती थीं वहाँ अब एक बड़ी दरी बिछी थी। दरी पर भिन्न-भिन्न रंग और आकार के तीन पलंगपोश पड़े थे। दरी के दाएँ-बाएँ दो छोटी चौकियाँ और उसके नीचे कई छोटी मेज़ें जो संभवतः सीमेन्ट की थीं, पड़ी हुई थीं। मेज़ों पर रंगीन झालरदार कपड़े (मेज़पोश) पड़े थे। ऊपर छत में कपड़े की छतगीरी लगी थी और दीवारों पर चारों ओर पौराणिक तसवीरों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अखण्ड कतार थी। तसवीरों के नीचे एक जगह राजाराम का फ़ोटो भी लगा था जिसमें उसकी घुसी हुई आँखें और कुछ खुला हुआ मुँह स्पष्ट थे।

बैठक में राजाराम अकेला तकिये से सटा बैठा था। चन्द्रनाथ के घुसते ही उसने उसे दूसरे मोटे तकिये के पास बैठने का संकेत किया। किन्तु चन्द्रनाथ ने जूते उतारना उचित नहीं समझा और वह दरी के निचले भाग पर बैठ गया।

राजाराम की दृष्टि क्रम से बैठक की सजावट के उपकरणों और चन्द्रनाथ पर घूम रही थी। वह बड़े ध्यान से देख रहा था कि चन्द्रनाथ पर उसकी नवार्जित सामग्री का क्या प्रभाव पड़ रहा है। चन्द्रनाथ को उसकी इस मानसिक स्थिति का आभास हो गया और उसने यत्नपूर्वक बैठक के प्रति उपेक्षाभाव धारण कर लिया। चन्द्रनाथ के मुख से विस्मय या प्रशंसा का एक भी वाक्य न सुनकर राजाराम अधैर्य से स्वयं ही बैठक की चीजों के प्राप्ति-प्रयत्नों और मूल्यों का वर्णन करने लगा। सीमेन्ट की मेज़ें बनवाने में उसका कितना खर्च पड़ा, फ़ोटोग्राफ़र ने उससे कितने ज्यादा दाम ले लिये, बीच में दीखने वाली कृष्ण के नौका-विहार की तसवीर उसने किस प्रकार एक मित्र से हस्तगत कर ली, इत्यादि सारे रहस्य चन्द्रनाथ पर शीघ्र ही प्रकट हो गए। उसे संदेह होने लगा कि कहीं राजाराम उसे अपनी बैठक की जीवनी लिखने का आज्ञापत्र न दे दे!

उसी समय एक पंडित जी ने प्रवेश किया। उनके हाथ में एक फलों की गाँठ थी। चन्द्रनाथ इन पंडित जी से खूब परिचित था—जब उसकी माँ जीवित थीं तब उन्होंने एक बार स्वास्थ्यकामना से चालीस दिन दुर्गा जी का जप किया था। अब भी उसकी भाभी उनके वार्षिक कथा के उत्सव में दक्षिणा भेजती थीं। वे अच्छी तरह जानते थे कि राजाराम और चन्द्रनाथ में क्या सम्बन्ध है। चन्द्रनाथ ने उन्हें नमस्कार किया, पंडित जी ने आशीर्वाद दिया। चन्द्रनाथ ने देखा कि राजाराम ने पंडित जी का अभिवादन करने की कोई चेष्टा नहीं की। उनके बैठ जाने पर राजाराम ने पूछा—'गाँठ में क्या लाए हैं पण्डित जी ?'

'जनाब के लिए बरेली से कुछ फल लाया हूँ, सन्तरे, शरबती वग़ैरा, लीजिए, शौक कीजिए।' यह कह कर पंडित जी ने गाँठ खोली और राजाराम की ओर बढ़ा दी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ पंडित जी की उर्दू भाषा सुनकर दंग रह गया। यही पंडित जी प्रतिवर्ष बड़े समारोह से भागवत की कथा पढ़कर सुनाते हैं। राजाराम ने फलों की गाँठ इस ढंग से खोली मानो इस प्रकार के उपहार लेना उसका दैनिक नियम है। चन्द्रनाथ की ओर एक सन्तरा बढ़ाते हुए उसने कहा—लो भई, खाकर देखो, पंडित जी क्या चीज़ लाए हैं।

चन्द्रनाथ ने असमंजसपूर्ण शिष्टता से मना कर दिया। कुछ देर में वह चलने के लिये उठ खड़ा हुआ। उसे चलते देख राजाराम ने कहा—वाह! हम तुमसे कुछ बात करना चाहते थे। अच्छा कल आएँगे, भाभी से भी बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई है।

चन्द्रनाथ की भाभी से राजाराम की काफ़ी घनिष्ठता थी। जब से उसकी नौकरी लगी थी, तब से यह घनिष्ठता और भी बढ़ गई थी। धन के समान हृदयों से जोड़नेवाला कोई सीमेंट नहीं है। जिस दिन उसकी छुट्टी होती उस दिन खास तौर से वह भाभी से गप लड़ाने पहुँच जाता।

चन्द्रनाथ आजकल एक खण्डकाव्य लिख रहा था। हाल ही में उसने उसे शुरू किया था और वह चाहता था कि छुट्टियों में उसे पूरा कर डाले, ताकि साधना उसे पढ़ सके। काव्य का प्रधान पात्र एक रमणी थी जिसका प्रेमी और पति परिणय के एक ही वर्ष बाद उसे छोड़कर रूस चला गया था। रमणी की पिछली प्रणय-स्मृतियाँ, उसकी आशा-निराशा भरी प्रतीक्षा, उसका विश्वास और संदेह, यही पुस्तक का विषय था। काव्य का लक्ष्य विवाह की जड़वादी धारणा की भीषणता का प्रदर्शन और प्रेम के उज्ज्वल रूप का प्रभावपूर्ण वर्णन था। चन्द्रनाथ का विश्वास था कि साधना उक्त काव्य पर अधिकार-पूर्ण सम्मति दे सकेगी।

शनिवार का दिन था। चन्द्रनाथ अपनी बैठक में बैठा बड़े मनोयोग से "प्रतीक्षा" का दूसरा सर्ग लिख रहा था। लिखते-लिखते उसे लगभग दो घंटे हो गए थे। घड़ी में पाँच बज रहे थे। चन्द्रनाथ की नायिका इस समय एक स्वप्न देख रही थी। वह चाहता था कि साँझ होते-होते उस स्वप्न को पूरा कर दे, उसी समय यकायक राजाराम ने प्रवेश किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ का काव्य-स्वप्न भंग हो गया; निराशा और क्षोभ ने एक साथ ही उस पर आक्रमण किया। राजाराम मितभाषी नहीं है और वह चन्द्रनाथ को जल्दी छुट्टी नहीं देगा, यह सोचकर वह मन-ही-मन कुढ़ने लगा। शायद वह उसे टाल सके, यह सोचकर चन्द्रनाथ ने पूछा—भाभी के पास नहीं गए?

'हो आया, अभी वहीं से आ रहा हूँ। पहले मैं यहीं आया था, लेकिन तुम्हें लिखते देख लौट गया।'

चन्द्रनाथ की आशा पर तुषारपात हुआ। राजाराम कह रहा था—भाई, तुम बहुत पढ़ते हो, इतना पढ़ना अच्छा नहीं। पढ़ना अच्छा है, लेकिन इतना नहीं। तुम्हें मालूम है, बड़े भाई साहब को कपड़े में घाटा हो गया?

'मुझे नहीं मालूम', चन्द्रनाथ ने चौंककर कहा, 'कितना घाटा हो गया, कैसे?'

'यही हज़ार-पाँच-सौ का। लोगों के कहने में आकर उन्होंने भी कपड़ा भर लिया था। सोचा था, लड़ाई शुरू हुई है, कपड़े की माँग होगी और फ़ायदा होगा। लेकिन हुआ उलटा।'

चन्द्रनाथ सोच में पड़ गया। राजाराम बोलता गया—

'तभी तो कहता हूँ भाई, अब कुछ करो। पढ़ना बहुत हो चुका। पढ़ने से इज्जत होती है, यह मैं मानता हूँ, लेकिन मुख्य चीज़ रुपया है। हमीं को देख लो, कुछ खास नहीं पढ़े हैं, बस अपने काम लायक जानते हैं, तो भी गुज़र हो ही जाती है।'

'पढ़ने-लिखने से आजकल कुछ विशेष लाभ नहीं है,' चन्द्रनाथ ने कुछ बोलने की आवश्यकता का अनुभव करते हुए कहा।

'लाभ तो तब हो जब थोड़े पढ़नेवाले हों। अब तो धुने-जुलाहे सब पढ़ने लगे हैं। तुम कहीं नौकरी की कोशिश भी तो नहीं करते। जब तुमने बी० ए० किया था, तभी हमने कहा था; बड़े भाई साहब ने भी कहा था।'

'आजकल नौकरी मिलना कठिन हो गया है,' चन्द्रनाथ ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgat

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'कठिन-वठिन कुछ नहीं हो गया है, मगर हाँ कोशिश की जरूरत है। चार बड़े आदमियों के पास आओ-जाओ, अफसरों को खुश रखो, तो नौकरी मिलती है, ऐसे ही थोड़े मिल जाती है। सो तुम किसी के पास जाते नहीं। अभी भी हमारी कोर्ट में पेशकार की जगह खाली होने वाली है, कोशिश करो तो मिल सकती है। पेशकार की जगह बुरी तो नहीं है, हमारे पेशकार ने वह मकान बनाया है कि लोग देखें; पूरा पन्द्रह हजार रुपया लगा है।'

चन्द्रनाथ चुप था।

'दूकान ही चले जाया करो, घर पर क्या करते रहते हो?'

'एक-आध किताब लिखता रहता हूँ।'

'हाँ, भाई साहब कह तो रहे थे कि एक किताब छपी है; क्या किताब लिखी है, हमें भी तो दिखाओ।'

चन्द्रनाथ ने अपने संग्रह की प्रति उठाकर राजाराम के हाथ में दे दी।

राजाराम ने उसके हाथ के सिले कलेवर पर दृष्टि डालते हुए कहा—'अभी मुकम्मिल नहीं हुई है। इस किताब से क्या फायदा हुआ भाई, कुछ रुपये मिले?'

'रुपये तो नहीं मिले, लोग थोड़ा-बहुत जान जायँगे।'

'अजी तो ऐसे जानने से क्या फायदा। हमारी राय तो यही है कि अब तुम कहीं लग जाओ। तुम्हारी बहू भी तकलीफ में रहती है। पिछली बार मालूम है क्या किस्सा हुआ?'

'क्या हुआ? मुझे तो कुछ नही मालूम।'

'तुम्हारे चले जाने के बाद जब छोटी भाभी मायके जाने वाली थीं, तो भाई साहब ने उनके लिए और बड़ी भाभी के लिए भी धोती के जोड़े भेजे। बड़ी भाभी तो तुम जानते ही हो ऐसे ही कपड़े पहनती हैं; भाई साहब ने कटे-फटे बेकार जैसे जोड़े भेज दिए, वैसे पहन लिए। छोटी भाभी के लिए उन्होंने धोतियाँ जोड़े भेजे थे। बड़ी भाभी ने उनसे कहा कि अगर वह भी एक-आध ऐसे कटे हुए जोड़े ले ले, तो दूकान का नुकसान न हो। इस पर छोटी भाभी बिगड़ गई। बोलीं, मैं लूँगी तो अच्छे जोड़े लूँगी नहीं तो लूँगी नहीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'फिर क्या हुआ ?' चन्द्रनाथ ने उत्सुकता से पूछा।

'होता क्या, दोनों में झगड़ा हुआ। छोटी भाभी रोईं और भाई साहब ने भाभी को डाँटा। तो भाई ऐसे झगड़े क्यों हों अगर तुम कुछ करने लगो। मेरी राय तो यही है कि तुम पेशकारी के लिए कोशिश करो, पेशकार की बड़ी इज्जत होती है। आमदनी भी अच्छी रहती है।'

चन्द्रनाथ ने टालने के लिए कहा—'देखा जायगा।'

राजाराम—देखा नहीं जायगा, कल-परसों तक अर्जी दे दो। बड़ी भाभी की भी यही राय है, और मैं समझता हूँ, भाई साहब को भी कोई एतराज न होगा। जगह तुम्हें मिल जायगी, इसका जिम्मा मैं लेता हूँ।

राजाराम के चले जाने पर चन्द्रनाथ ने फिर काव्य-रचना में प्रवृत्त होना चाहा, पर उसका चित्त नहीं जमा। रह-रहकर उसके मस्तिष्क में जीविका और गृह-कलह का प्रश्न चक्कर काटने लगा। यह सुशीला इतनी संवेदनशील और जिद्दन क्यों है ? क्यों वह विशेष प्रकार की धोतियों को इतना महत्व देती है ? मनुष्य के व्यक्तित्व का वास्तविक मूल्य क्या कपड़ों और गहनों पर निर्भर है ? मनुष्य का यथार्थ मूल्य उसके विचारों, उसके वस्तु-जगत् और भाव-जगत् के प्रति प्रतिक्रिया करने के ढंग, उसके संकीर्ण या व्यापक दृष्टिकोण, उनकी नैतिक उदारता, साहस और सहृदयता में है, न कि उनकी सम्पत्ति और वस्त्राभूषणों में। सम्पत्ति सुख का स्रोत है, अवश्य; पर वह महत्ता का भी आधार है, यह मानना आवश्यक नहीं है। वस्तुतः कला की सारी साधना व्यक्तित्व के मूल्यांकन के मिथ्या मानों को नष्ट करने के लिए है। कला में, साहित्य में, सुशीला के सुख-दुःख, उसके मान और अपमान, उसकी आशा और निराशा के लिए स्थान है, लेकिन उसके धोती के जोड़े कहाँ और कितने मूल्य में बने हैं, इसके वर्णन के लिए नहीं। चन्द्रनाथ की दृष्टि में भी सुशीला का व्यक्तित्व महत्त्वशाली है, उसके कृत्रिम आवरण नहीं।

लेकिन क्या सुशीला के सुख-दुःख, मानापमान, आशा और निराशा का धोती के जोड़ों से कई सम्बन्ध नहीं है ? मनुष्य सामाजिक प्राणी है, और उसे समाज के मूल्यों को मानकर चलना पड़ता है। समाज पहले, और निश्चित रूप

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है, हमारे कपड़े देखता है। हमारे हृदय और मस्तिष्क को वह कभी देखता है, कभी नहीं—अधिकांश लोगों को उन्हें देखने का न अवकाश ही है, न चिन्ता। इसलिए क्या सुशीला को दोष देना अनुचित नहीं ?

यह स्पष्ट है कि चन्द्रनाथ को कुछ करना चाहिए, उसे जीविका की चिन्ता करनी चाहिए। वह इसके लिए प्रस्तुत है। किन्तु वह इस काम में परिमित समय देना चाहता है। उसके जीवन के अधिकांश क्षण कला की साधना के लिए हैं। किन्तु परिमित काम का फल परिमित होता है; चन्द्रनाथ यह कभी आशा नहीं करता कि वह कभी 'धनी' बन सकेगा। उसे इसकी परवाह भी नहीं है। कला की साधना के लिए एक प्रकार की योग्यता अपेक्षित है; धन एकत्रित करने के लिए दूसरे प्रकार की। जीवन का यह द्वैत आज चन्द्रनाथ को स्पष्ट लक्षित हो रहा है। वह इसका सामना करने को तैयार है, वह संसार में गरीब कहलाकर भी अपनी कला, अपनी कविता को नहीं छोड़ेगा। उसे समाज के मूल्यों की चिंता नहीं है। किन्तु सुशीला ? सामाजिक मूल्यों को सम्पूर्णतया ग्रहण कर लेनेवाली सुशीला का क्या होगा ? इस समस्या को सोचते हुए उसकी बुद्धि कुण्ठित हुई जाती है।

जीवन के 'द्वैत' को स्वीकार करना पड़ता है। चन्द्रनाथ उसे सह सकता है—उसे सहना पड़ेगा। किन्तु अपने और सुशीला के द्वैत की कल्पना भी उसे असहनीय लगती है।

उसने सोचा था, रात को वह सुशीला को समझाएगा। किन्तु उसके कुछ कहने का अवसर पाने के पहले ही वह बोल उठी—आज आपके भाई साहब आए थे!

'कौन राजाराम, हाँ आया तो था।'

'बहुत देर रुके, क्या बातें कर रहे थे ?'

'कुछ नहीं, योंही घर-वर की बातें; कहते थे भाई साहब को कपड़े में घाटा हो गया है।'

'वह आप के सामने तो मीठी-मीठी बातें करते हैं, पीछे भाभी से खूब बुराइयाँ करते हैं। मैं कभी-कभी सुन लेती हूँ।'

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'क्या बुराइयाँ करते हैं ?' चन्द्रनाथ ने विशेष उत्सुकता के बिना कहा।

'कल भाभी कह रही थीं, पढ़ा दिया, लिखा दिया, अब उन्हें चाहिए कि अपनी बीवी के सौक पूरे करें......और जाने क्या-क्या मुझे तो याद भी नहीं रहा।'

'ठीक तो कहती थीं।'

'तो ऐसा मैं कौन-सा शौक करती हूँ। दूकान से थोड़ा-बहुत कपड़ा मिल जाता है, बस। और मुझे आपके घरवालों ने क्या कर दिया है जिसके लिए इतने ताने सुनने को मिलते हैं।'

चन्द्रनाथ ने इस अप्रिय प्रसंग को समाप्त करने की इच्छा से कहा—'जाने दो, तानों की इतनी चिन्ता न किया करो। यह तो तुम भी समझ सकती हो कि मुझे कुछ करना चाहिए।'

सुशीला ने निश्चयात्मक स्वर में कहा—'अब की बार मैं आप के साथ चलूँगी।'

चन्द्रनाथ ने आशंका से चौंककर कहा—'मेरे साथ! क्या यहाँ नहीं रहोगी?'

'मैं यहाँ नहीं रह सकती। आप के पीछे भाभी मुझसे बड़ा बुरा बर्ताव करती हैं।'

'तो मायके में रहना। तुम प्रभाकर की तैयारी कर रही थीं न?'

'ऐसी हालत में मैं शिवपुरी नहीं रह सकती; मुझे शर्म लगती है।'

चन्द्रनाथ ने आश्चर्य से पूछा—'कैसी हालत, क्या....'

सुशीला ने आलंकारिक और घुमावदार भाषा में चन्द्रनाथ पर प्रकट किया कि वह गर्भवती है। चन्द्रनाथ के मस्तिष्क पर जैसे वज्रप्रहार हुआ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

:३२:

शुक्रवार की सुबह को चन्द्रनाथ ने देखा कि मास्टर गोपाल स्वरूप के नौकर के साथ महाशय प्रमोदचन्द्र चले आ रहे हैं।

चन्द्रनाथ उसे देखकर प्रसन्न हुआ। प्रमोद के दिखाई देने का साधना के आगमन से कुछ सम्बन्ध है, इसे वह सहज ही समझ गया था। कल ही तो वह सोच रहा था कि साधना अभी तक क्यों नहीं आई। प्रमोद ने आकर उसे नमस्ते किया। चन्द्रनाथ ने नमस्ते ग्रहण करके सस्मित मुद्रा से पूछा—क्यों; क्या अकेले ही आए हो ?

'नहीं, साधना जीजी के संग आया हूँ। बड़ी चाची नहीं आईं इसलिए वह मुझे साथ ले आई। कमला भी आने को कहती थी पर अम्मा ने मना कर दिया।'

इतना कह कर वह इधर-उधर देखने लगा, मानो कोई चन्द्रनाथ से ज्यादा रोचक चीज़ ढूँढ़ रहा हो। नौकर ने प्रमोद पर कटाक्ष करके कहा—'असली बात तो तुमने कही ही नहीं। साधना बीबी ने आपको बुलाया है, साहब !' अन्तिम वाक्य चन्द्रनाथ को संबोधित किया गया था।

चन्द्रनाथ ने प्रमोद की ओर देखकर हँसते हुए कहा—'क्यों भई, क्या सच-मुच मुझे बुलाया गया है ?

प्रमोद ने सिर हिला दिया।

चन्द्रनाथ ने नौकर को आश्वासन दिया कि वह साँझ को आ सकेगा।

नौकर के चले जाने पर वह प्रमोद को लेकर सुशीला के पास पहुँचा। प्रमोद को देखकर वह खिल गई। बाँहें पकड़कर उसने उसे अपने पास बिठा लिया और उसकी ओर मुँह झुकाती हुई बोली—साधना जीजी के संग आया है रे, मेरे साथ नहीं आया, क्यों ?

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रमोद सफ़ाई देने लगा—साधना जीजी मेरे बहुत सिर हो गईं, अम्मा ने भी कह दिया, तब मैं चला आया। कमला भी आने को कहती थी, पर अम्मा ने उसे नहीं आने दिया।

'अब तू मेरे पास रहेगा कि रानी (साधना) के ?'

'अम्मा ने कह दिया है, आधे वक्त वहाँ रहना, आधे वक्त यहाँ; पर रानी जीजी कहती हैं कि उनके साथ आया हूँ, इसलिए वहीं रहना पड़ेगा।'

'ऐसी-तैसी तेरी रानी जीजी की, मैं तो तुझे यहीं रखूँगी,' कह कर सुशीला उसके जलपान का प्रबन्ध करने लगी।

शाम को चार-साढ़े-चार बजे चन्द्रनाथ प्रमोद के साथ मास्टर साहब के घर पहुँचा। वे अभी ही स्कूल से आए थे और विश्राम कर रहे थे। चन्द्रनाथ दो मिनट को उनके पास रुका, फिर उन्हें विश्राम करने को छोड़ कर ऊपर चला गया। प्रमोद ने पहले ही साधना को खबर दे दी थी।

जिस कोठरी में चन्द्रनाथ ने पहले भोजन किया था उससे मिला हुआ, गली की ओर, एक दूसरा कमरा था। यह बैठक के ठीक ऊपर था। उसके आगे छज्जा था। दोनों कमरों के बीच में एक दर्वाज़ा था। साधना जब आती तब बैठक के ऊपर का कमरा उसे मिल जाता; उतने दिनों के लिए मास्टर साहब के सोने का प्रबन्ध ऊपर तिमंजिले पर हो जाता। इस समय साधना उसी कमरे में थी।

चन्द्रनाथ का स्वागत करने के लिए वह भोजनवाली कोठरी के आगे छत पर आ पहुँची थी। चन्द्रनाथ को देखकर उसने नमस्ते किया। उसके मुख पर क्षण भर के लिए क्षीण स्मित-रेखा चमक गई; किन्तु चन्द्रनाथ उत्तर में नहीं मुस्कुरा सका।

थोड़ी देर में उसने साधना को चुपचाप अपने सामने बैठे पाया। एक छोटी मेज़ उसके सामने पड़ी थी जिस पर कुछ पुस्तकें, एक पेन्सिल और एक फाउन्टेन-पेन रखे थे। साधना की उँगलिया पेन्सिल से खेलने की चेष्टा कर रही थीं।

जिस कमरे में वे इस समय थे वह विशेष चौड़ा नहीं था, पर लम्बा काफी था। उसमें दो खिड़कियां तथा एक दर्वाजा गली की ओर था, और एक दर्वाजा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्दर की तरफ। उसके सामान में मुख्य वस्तु पुस्तकों से भरा एक शेल्फ और दो आल्मारियाँ थीं जो कमरे की लम्बाई को घेरती हुई दीवार तथा भीतर की दीवार से सटी रखी थीं। चन्द्रनाथ को यह जानकर सन्तोष हुआ कि मास्टर साहब अध्ययनशील व्यक्ति हैं।

'तुम आ गईं,' उसने साधना को सम्बोधित किया, 'मुझे उतनी अधिक आशा न थी।'

'आपका आदेश था, इस लिए आना आवश्यक था', साधना ने पलक ऊपर उठा कर कहा। और फिर उसकी दृष्टि मेज पर पहुँच गई।

चन्द्रनाथ के नेत्र साधना के मुख पर थे। आज पहली बार उसे इसका अवसर मिला था कि वह इस लड़की को जो मानसिक जगत् में उसके इतने निकट गई थी, ठीक-ठीक देखे। अपनी पहली भेंट में उसने साधना के चंचल रूप को देखा था, आज वह उसकी स्थिरप्राय मुद्रा का निरीक्षण कर रहा है। और वह यह देखने की चेष्टा कर रहा है कि उसे कहाँ तक सुन्दर या असुन्दर कहा जा सकता है। साधना के विवाह की समस्या ने इस प्रश्न को भी महत्वपूर्ण बना दिया है।

चुपचाप बैठी साधना को, वह देखता है, सुन्दर और असुन्दर शब्दों से विशेषित नहीं किया जा सकता। पर कभी-कभी जब वह दृष्टि उठा कर देखने लगती है, तो वह सहसा अधिक सजीव और सुन्दर मालूम पड़ती है। उसके आकर्षण का मूल केन्द्र उसकी आँखें हैं।

उन आँखों में क्या है? उदासी? अपनापन? या रहस्यमय गहराई? वह निश्चय करना कठिन पा रहा है। साथ ही उसके हृदय में वात्सल्य-मिश्रित आर्द्रता उस लड़की के लिये उमड़ रही है। बोला—जरा अपना कोर्स तो दिखाओ, देखें क्या-क्या और कितना काम करना है।

साधना उठकर "प्रासप्रेक्टस" उठा लाई, फिर उसने संस्कृत की कुछ पुस्तकें चन्द्रनाथ के सामने मेज पर रख दीं।

उन पर दृष्टि डाल कर चन्द्रनाथ ने कहा—और अंग्रेजी? अंग्रेजी की कोई पुस्तक मेरे साथ नहीं पढ़नी है?

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'अंगेज़ी के लिए मामाजी ने नित्य दो घंटे देने को कहा है ।'

'पाठ्य-ग्रन्थों में तुम्हें कौन-से मुश्किल लगते हैं ।'

'विशेष कठिन तो "उत्तर रामचरित" ही है ।'

'सिर्फ उत्तरचरित ?'

'हाँ; इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक प्रश्न—आलोचना करना मुझे बिलकुल नहीं आता ।'

'आलोचना की चिन्ता न करो ।' चन्द्रनाथ ने भवभूति के पृष्ठ लौटते हुए कहा । कुछ क्षण बाद उसने पूछा—राम के सीता-परित्याग के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है, क्या वह नैतिक दृष्टि से उचित था ?

साधना ने कुछ रुककर उत्तर दिया—पुरुष जो कुछ करें वह उचित ही है।

चन्द्रनाथ स्तब्ध रह गया । साधना भी कुछ ऐसे भाव से मानो उसने कुछ अनुचित बात कही है, भूमि की ओर देखने लगी । चन्द्रनाथ उससे क्या कहे? जिस युवक ने साधना को नापसन्द किया है, उसे क्या मालूम कि वह कितनी संवेदनशील है । उसके हृदय और बुद्धि की विभूतियों का उसे कुछ भी पता नहीं है, और न वह यह जानता है कि उसने अपने अविचारित निर्णय से साधना को कितना कष्ट पहुँचाया है ।

क्या उस युवक के निश्चय को बदलना असम्भव है ? असम्भव तो नहीं होना चाहिए, साधना जैसी गुणवान लड़की क्या किसी को सहज ही मिल सकती है? साधना से बोला—कल मैं बरेली जा रहा हूँ; आज ही चला जाता, पर तुम्हारे आने की खबर ने रोक दिया ।

'किसलिए ?' साधना ने एकाएका मुँह उठाकर तेज स्वर में कहा । शायद वह सुन चुकी थी कि चन्द्रनाथ उसके सम्बन्ध के लिए पुनः प्रयत्न करना चाहता है ।

चन्द्रनाथ भौंचक रह गया । साधना ने उसी स्वर में जोड़ा—आप लोग लड़कियों के हृदय को खिलवाड़ की चीज समझते हैं । उनके व्यक्तित्व का भी कुछ मूल्य है ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'मैं तो मानता हूँ कि नारी-हृदय से अधिक मूल्यवान् संसार में कुछ भी नहीं है। लेकिन......'

साधना ने उसकी बात काटते हुए कहा—आप उन्हें इतना भी अधिकार नहीं देना चाहते कि वे उपेक्षा का उत्तर उपेक्षा से दें।

'नहीं, नहीं,' कह कर वह चुप हो गया। साधना को भी उपेक्षा या अस्वीकृति का अधिकार है, सिद्धान्त में इसके विरुद्ध कोई क्या कह सकता है? किन्तु व्यवहार में क्या यह अधिकार उससे छीना नहीं जा चुका है? वस्तुतः उसे यह अधिकार कभी प्राप्त ही न था। यही नहीं, उसके उक्त अधिकार को पाने की भविष्य में कोई सम्भावना भी नहीं है। साधना के इस प्रकार अगृहीत या उपेक्षित होने से समाज में उसके गौरव की जो क्षति हुई है, उसे क्या वह बिलकुल ही नहीं जानती? जब कि उसकी व्यक्तिगत मानसिक पीड़ा कालान्तर में कम हो सकती है, उसका सामाजिक मूल्य-विपर्यय उनके वैवाहिक भविष्य को राहु की तरह समग्रता से ग्रस लेगा। यही सोचते हुए उसने बड़ी नम्रता से कहा—लेकिन बहिन, कोशिश करने में तो कोई हर्ज नहीं है।'

'रहने दीजिए आप अपनी कोशिश। इस विषय में आप मुझसे कुछ और कहेंगे तो मैं उठ जाऊँगी।'

साधना की मुद्रा में विचित्र रोष, घृणा और निश्चयात्मकता की दीप्ति थी जिसने चन्द्रनाथ को चकित और मौन कर दिया। तब उसे आभास हुआ कि वह साधना की मनोवृत्ति को कितना कम समझ सका था।

उसने उस विषय को वहीं समाप्त कर दिया और वह भवभूति की नाट्य-कला की विशेषताओं का विवरण देने लगा।

साधना चुपचाप सुन रही थी। उसी बीच में डाकिया नीचे डाक देकर चला गया।

पढ़ाने के बाद चन्द्रनाथ मास्टर साहब के पास पहुँचा। उन्होंने उस से कहा—बरेली जाने का निश्चय कर लिया है क्या?

'साधना तो इसके विरुद्ध मालूम पड़ती है। वैसे आपकी जैसी राय हो वैसा किया जाय।'

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'मेरी राय का अब सवाल ही नहीं रह गया। अभी मुझे एक मित्र की चिट्ठी मिली है। उन्होंने लिखा है कि रामविलास की शादी किसी दूसरी जगह तय हो गई।'

'रामविलास !' चन्द्रनाथ ने चौंक कर कहा, "क्या वे प्रयाग में पढ़ते हैं?'

'हाँ, आपका उनसे परिचय है? उन्होंने वहीं किसी लड़की से शादी तय की है।'

'नहीं, मैं उन्हें नहीं जानता; पर उस लड़की को जानता हूँ जिससे उनकी शादी हो रही है, वह हमारे क्लब की सदस्य है।'

'यह सम्बन्ध तो खत्म हो ही गया। एक दूसरा लड़का बरेली में ही है, उसे शायद तुम जानते होओ, तुम्हारे ही कालेज का पढ़ा हुआ है। उसके बारे में फिर बात करेंगे।'

●

: ३३

चन्द्रनाथ इस नई खबर के लिए बिलकुल तैयार न था। बरेली के लड़कों को छोड़कर रामविलास के साथ साधना की शादी की बात चली हो और उसकी प्रतिद्वन्द्वी प्रेमलता हो यह उसे नितान्त अनुचित लगा। चन्द्रनाथ का रामविलास से व्यक्तिगत परिचय नहीं था, पर उसके सम्बन्ध में उसने जो कुछ सुना था उससे अनुमान किया कि इस मामले में उसका मत-परिवर्तन करना संभव नहीं होगा। इस प्रकार का प्रयत्न उचित भी नहीं; चन्द्रनाथ का प्रेमलता से कुछ सम्बन्ध तो है ही। प्रेमलता और रामविलास एक-दूसरे से सन्तुष्ट हों

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

…ते होंगे, इसमें उसे तनिक भी सन्देह न था। यदि रामविलास के स्थान में कोई दूसरा युवक होता तो साधना के लिए प्रयत्न करना चन्द्रनाथ का कर्तव्य हो जाता। पर क्या कोई भी व्यक्ति प्रेमलता की तुलना में साधना को पसन्द कर सकता है?

उसकी कल्पना के आगे प्रेमलता का यौवनोद्वेलित व्यक्तित्व झूल गया। …विश्वविद्यालय में पढ़ने पर भी प्रेमलता के शरीर और मस्तिष्क को सरस्वती की "डिसिप्लिन", उसके शासन-दण्ड ने, मानो छुआ ही नहीं है। उसका अल्हड़ …यौवन जंगली गुलाब की तरह मोहक और मादक है। उसकी तुलना में साधना …सिंची लता-सी मालूम पड़ती है। प्राकृतिक आकर्षण के प्रथम अधिष्ठान इस …स्फुट रूप-रंग की उपेक्षा कौन करेगा? रामविलास ने अच्छा ही चुनाव …किया। परन्तु स्वयं रामविलास साधना के योग्य तो हो ही नहीं सकता। …इसीलिए तो साधना का व्यक्तित्व प्रेमलता से अधिक महत्त्वशाली है।

दूसरे दिन चन्द्रनाथ जब साधना के पास पहुँचा तो वह अपनी विचित्र …चिन्तना-शैली से कुछ विशिष्ट नतीजों पर पहुँच चुका था।

उसने पहुँच कर साधना को पहले दिन से भी अधिक सुस्त और उदास …पाया। संभवतः वह रात में रोई थी। साधना को अपने सामने क्लिष्ट दशा में …देखकर चन्द्रनाथ के हृदय में उसके प्रति गहरी करुणा और ममता उमड़ आई। …साधना के अधिक दुःखी होने का कारण उसी की संवेदनशीलता और मनस्विता …है। जो घटना किसी स्थूल वेदनाओं वाली लड़की को केवल छूकर छोड़ जाती, …वही साधना के अन्तस् में व्याप्त होकर उसे मर्माहत कर रही थी। साधना की …तुलना में प्रेमलता कितनी अदम्य, सबल और दृढ़ है; किसी की उपेक्षा का उस पर …कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता! संसार ऐसे ही स्वस्थ और संवेदनाशून्य लोगों के …लिए है। जीवन के पाशविक संघर्ष में वही विजयी होते हैं जो कभी विचारों …और भावनाओं के सूक्ष्म स्तरों में उतरने की भूल नहीं करते, जो अपने …चिन्तन और वेदनाओं को लाभ और उपयोगिता की सीमा के भीतर रखते हैं; …जिनके मस्तिष्क में जीवन और जगत्-सम्बन्धी निरर्थक प्रश्न कभी नहीं उठते; …और जिनका हृदय विश्व के दुख-सुख को देखकर करुणा और समवेदना के अर्थ-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शून्य विकारों से कभी आन्दोलित नहीं होता। ऐसे ही लोग सुखी रहते हैं। जिसकी बुद्धि पर जीवन के रहस्य का भार है, और जिसका हृदय मानवता के असंख्य कष्टों और अपमानों की समवेदना में धड़कता रहता है, उसके लिए सुख कहाँ है? जीवन-संग्राम में साधना के ऊपर प्रेमलता की विजय मानों स्थूल की, बल की और असहृदयता की विजय है। अपने उद्दाम यौवन और निर्लज सौन्दर्य से मानो प्रेमलता साधना को दबा बैठी है—स्वल्पकाय मनस्विनी लड़की को वह साँस ही नहीं लेने देती। इस यौवन और सौन्दर्य का साधना क्या उत्तर दे? जो सौन्दर्य, जो रूपरंग और यौवन, अपनी जड़ता से कुण्ठित नहीं होता, अज्ञान से मलिन नहीं पड़ता, लज्जा से सिकुड़ता नहीं, उसका तिरस्कार करने का क्या ढंग है? स्वयं प्रकृति जिसमें प्रविष्ट होकर मानवता के असंख्य नेत्रों को उन्मादित और आकर्षित कर रही है, उसके विरुद्ध संस्कृत हृदय और बुद्धि का उलहना कौन सुनेगा?

चन्द्रनाथ को आज अपार खीझ और क्रोध था। उसका विषय कोई व्यक्ति न होकर परिस्थिति-विशेष थी। प्रेमलता विश्वविद्यालय में पढ़ती है, बी० ए० कक्षा में पहुँच गई है, स्वस्थ है, सुन्दर, इसीलिए कोई उसके विरुद्ध कुछ न कह सकेगा—इसीलिए संसार के सामने उसकी अयोग्यता और महत्त्व-शून्यता कभी प्रमाणित नहीं हो सकेगी, यह उसे असह्य लग रहा था। क्यों नहीं कोई खड़ा होकर घोषित कर देता कि अपने समस्त आकर्षण, सारी चमक-दमक के होते हुए भी प्रेमलता साधना की तुलना में तुच्छ और नगण्य है।

साधना का चेहरा निष्प्रभ और निस्तेज था, मानो उसने कोई ऐसा अपराध कर डाला हो जिसका प्रायश्चित्त नहीं है। क्या यही वह साधना है जो कभी आवरणहीन पत्रों में स्नेह के अक्षय मधुकोष भर कर भेजा करती थी? उसके कान्तिशून्य विषण्ण मुख पर प्रसन्नता की एक झलक देखने के लिए वह क्या नहीं कर सकता था!

चन्द्रनाथ ने कुर्सी पर बैठकर नाटकीय ढंग से कहना शुरू किया— बहिन! आज मैं बहुत खुश हूँ और तुम्हें भी बधाई दिए बिना नहीं रह सकता।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साधना ने प्रसन्न दीखने की चेष्टा करते हुए अपनी विस्मयभरी दृष्टि उस पर डाली। वह कह रहा था—'मुझे कल यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा विवाह रामविलास के साथ होते-होते रुक गया। मैं उस युवक को कुछ-कुछ जानता हूँ, वह तुम्हारे बिलकुल ही योग्य न था।'

साधना सुन रही थी।

'कोई लड़की, विशेषतः तुम जैसी लड़की, ऐसे पति के साथ सुखी नहीं रह सकती जो योग्यता और बुद्धि में उससे कम हो—जिसके सांस्कृतिक व्यक्तित्व को वह आदर की दृष्टि से न देख सके। रामविलास महोदय का बौद्धिक इतिहास शायद तुम्हें मालूम नहीं है।'

उत्तर की अपेक्षा से वह रुक गया। किन्तु साधना कुछ बोली नहीं, चुप रही।

चन्द्रनाथ—'उन्होंने तीन वर्ष में एफ़० ए० पास किया और तीन ही वर्ष में बी० ए०; अब कानून पढ़ रहे हैं। सुना है, परीक्षाओं से बहुत डरते हैं। किन्तु हैं अमीर आदमी, निठल्ले मित्र भी अनेक हैं।'

'ख़ूबसूरत भी हैं', उसने कहना जारी रक्खा, 'पर शायद इन्हीं कारणों से चरित्रवान् नहीं रह पाए हैं; प्रयाग में उनके सम्बन्ध में तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ा करती हैं।'

आख़िरी बात चन्द्रनाथ ने प्रायः कल्पना से गढ़कर कही थी; झूठ बोलने का अभ्यास न होने के कारण वह उसके बाद चुप हो गया। महत्त्वपूर्ण प्रयोजन की सिद्धि के लिए भी इससे अधिक झूठ बोलना उसे सम्भव न लगा।

इसके बाद वह कोर्स की एक पुस्तक उठाकर उसके पन्ने उलटने लगा।

अगले दिन चन्द्रनाथ ने पहुँचकर पाया कि साधना विशेष प्रसन्न और स्फूर्तिवान् दिखाई दे रही है। उसने सन्तोष की साँस ली, और यत्नपूर्वक विवाह-प्रसंग से दूर के विषयों पर बातचीत चलाने लगा।

थोड़ी ही देर में नौकर चाय लेकर आया। पिछले दिन उसे प्याले में तैयार चाय मिली थी, पर आज चीनी, दूध आदि अलग-अलग थे। साथ में नमकीन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और मिठाई भी थी। साधना ने बड़ी तत्परता से चीज़ें रखवा कर चन्द्रनाथ के लिए प्याले में चाय उड़ेलनी शुरू की।

चन्द्रनाथ—देखो बहिन, मुझे बार-बार चाय पीने की आदत नहीं है, तुम नाहक कष्ट कर रही हो।

'इसमें कष्ट की क्या बात है', कहते हुए साधना ने प्याला भर दिया और उसे तश्तरियों के साथ आगे बढ़ाते हुए कहा—'लीजिए।'

'वाह ! अकेले कहीं चाय पी जाती है, अपने लिए भी तो तैयार करो।'

'मेरे लिए आप तैयार कीजिए,' कह कर साधना हँसी; फिर बोली—'मैं चाय नहीं पीती।'

'क्यों ?'

'मैं देहात की रहनेवाली हूँ। देहाती लोग दूध पीते हैं, चाय नहीं। मेरे बाबूजी भी चाय के विरुद्ध हैं।'

'इस मामले में मैं भी देहाती हूँ क्योंकि मैं नियम से चाय नहीं पीता। लेकिन देखता हूँ, दूध पी-पीकर तुम मोटी बहुत हो गई हो।'

'आप भी तो बहुत मोटे हैं ! जैसा भाई, वैसी बहिन।' कह कर साधना ने उस पर स्निग्ध दृष्टिपात किया।

कौन कहता है साधना असुन्दर है, जिसे ऐसा भ्रम हो वह इस समय उसके कोमल मधुर आभा से दीपित मुख-मण्डल को देखे। चन्द्रनाथ यदि चित्रकार होता तो उसकी इस छवि को सदा के लिए अंकित करके विश्व की अर्ध-संस्कृत आँखों के सामने रख देता।

एक समोसा और चाय लेकर चन्द्रनाथ ने कहा—बस, अब क्षमा करो। घर से भी नाश्ता करके चला था।

'वाह ! यह नहीं हो सकता; थोड़ी-सी मिठाई आपको खानी पड़ेगी। मिठाई कुछ खराब नहीं है, घर की बनी हुई है।'

'सचमुच अब मेरी रुचि नहीं है; तुम खुद तो कुछ खातीं नहीं।'

'आप थोड़ा-सा कुछ ले लीजिए, बाक़ी तो मैं खा ही लूँगी।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ ने एक बर्फी में से टुकड़ा तोड़ते हुए कहा—लो भाई, तुम्हारा कहना कर देता हूँ।

पर साधना इतनी जल्दी माननेवाली न थी; चन्द्रनाथ को शेष मिठाइयों में से भी थोड़ा-थोड़ा हिस्सा खाना पड़ा। उसके बाद वह प्याले की बची हुई चाय पीने लगा।

तश्तरी में बचे हुए मिठाई-खण्ड साधना ने जल्दी-जल्दी अपने मुँह में रख लिए; और फिर खाली प्याले में चाय लौटने लगी।

'अब मुझे चाय नहीं चाहिए,' चन्द्रनाथ ने घबरा कर कहा।

'नहीं चाहिए ? अच्छा; तो मैं अपनी ही खातिर कर लेती हूँ।' कह कर उसने प्याले में आधी चाय और उससे कुछ ही कम दूध उड़ेला। चन्द्रनाथ हँसने लगा।

'देखिए हँसिए नहीं; देहात के लोग ऐसी ही चाय पीते हैं।....और हाँ, कल से आप इस समय घर से खाकर न चला करें, नहीं तो...'

'नहीं तो क्या ?'

'मामी जी मुझसे नाराज होंगी और मुझे आपसे झगड़ा करना पड़ेगा।'

'दोनों ही परिणाम अप्रिय हैं; लेकिन अब तक मैं नहीं समझता था कि तुम झगड़ा करना भी जानती हो।'

'मैं क्या-क्या जानती हूँ इससे आपका धीरे-धीरे परिचय होगा', साधना ने चाय का घूँट निगलते हुए कहा, 'फोटो देखकर निर्णय करने में आपने जल्दबाज़ी की।'

फोटो के उल्लेख से चन्द्रनाथ को साधना का सुन्दर वाक्य याद आ गया—'हम दोनों एक ही माँ की सन्तान हैं', और वह उसके चेहरे को ध्यान से देखता हुआ सोचने लगा—यही तो मेरी बहिन है, मेरी नितान्त अपनी बहिन। सहसा उसने गम्भीर होकर से साधना कहा—एक बात पूछूं; तुमने इतने सुन्दर पत्र लिखना कहाँ से सीखा है ?

'आप से'; कह कर उसने मुस्कराती दृष्टि से देखा। फिर बोली—'कहीं मेरे लेख की तो प्रशंसा नहीं कर रहे हैं; मुझे बचपन से ही सुन्दर शक्लें बनाने से प्रेम है, अक्षर भी सुन्दर बनाने की चेष्टा करती हूँ।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'मैं अक्षरों की बनावट की बात नहीं कर रहा हूँ, यद्यपि वह भी उल्ले न करने योग्य नहीं है। मैं पूछ रहा हूँ, तुम्हें इतना कोमल, सुन्दर हृदय क से मिला है।'

'आप ही बतलाइए आपने अपना हृदय कहाँ से पाया है?' फिर कुछ रु कर बोली—'लेकिन संसार में हृदय का मूल्य ही क्या है; लोग मुख्यतः बाह्य तड़क-भड़क को देखते हैं।'

'इसके विपरीत मेरा विचार है कि विश्व-ब्रह्माण्ड में स्नेहपूर्ण मानव हृदय ही सबसे कीमती चीज है, विशेषतः नारी-हृदय, चाहे वह नारी मां हो, या बहिन अथवा पत्नी।'

'आप सचमुच ऐसा सोचते हैं? मेरा तो ख्याल है कि इस पृथ्वी पर नारी का अस्तित्व एकदम अर्थशून्य है, वह पुरुष की वासना-तृप्ति का साधन मात्र है। यह मैं किसी आवेश में नहीं कह रही हूँ। इतिहास के अध्ययन से भी मैं इस नतीजे पर पहुँचती हूँ कि नारी ने सभ्यता और संस्कृति की प्रगति में कोई महत्त्वपूर्ण योग नहीं दिया है। संसार के प्रायः सब बड़े विचारक, दार्शनिक, नीतिज्ञ और साहित्यकार पुरुष हुए हैं। नारी तो सिर्फ पुरुष की इच्छाओं की दासी, उसकी अनुवर्तिनी है; उसके जीवन का मुख्य ध्येय पुरुष को प्रसन्न रखना रहा है।'

कोई स्त्री नारी जाति के सम्बन्ध में ऐसे विचार रख सकती है, यह चन्द्र नाथ ने कभी नहीं सोचा था। साथ ही साधना के उद्गारों की तात्कालिक पृष्ठ भूमि भी उसे अविदित न थी। बोला—'तुम्हारी स्पष्टवादिता की तारीफ करने को जी होता है। कुछ दिन पहले शायद मैं भी स्त्री जाति के प्रति ऐसे ही विचार रखता था, पर आज मैं तुमसे सहमत होने को तैयार नहीं हूँ। और इसका कारण स्वयं तुम हो!'

साधना ने जिज्ञासाभरी दृष्टि से उसे देखा। वह कह रहा था—'मेरे जीवन में जब से तुम्हारा प्रवेश हुआ है—और यह सिर्फ कुछ महीनों की बात है—तब से मैं बराबर सोचता रहा हूँ कि क्यों तुम मुझे अनिवार्य रूप से आवश्यक लगने

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

...ती हो, और अपने जीवन में मैं तुमसे क्या पा रहा हूँ अथवा पाने की आशा रखता हूँ।'

साधना—'इस प्रकार सोचना आपकी उदारता है, वर्ना मुझ जैसी अल्पज्ञ लड़की से आपको क्या-कुछ मिल सकता है। मुझे भय है कि किसी दिन आपको घोर निराशा का अनुभव करना पड़ेगा।

'अपने हानि-लाभ को समझने लायक बुद्धि मुझमें है, इसे तुम अस्वीकार नहीं करोगी।...बात यह है कि पुरुष जहाँ एक ओर बहुत दृढ़ और सबल है वहाँ दूसरी ओर बहुत दुर्बल भी है। छोटा बालक काफी हठ और उपद्रव करता है, किन्तु इसलिए कि उसे माँ के स्नेह का अटूट बल और विश्वास होता है। बड़े हो जाने पर भी पुरुष को इस प्रकार के अवलम्ब की अपेक्षा रहती ही है।'

'तब तो कहना चाहिए कि बड़ा होने पर भी पुरुष बालक ही बना रहता है; विचित्र बात है।'

'विचित्र होने से कोई बात गलत नहीं हो जाती,' चन्द्रनाथ ने पूर्ववत् गम्भीरता से कहा। पुरुष कर्मठ एवं प्रयत्नशील होता है, इसीलिए वह मजबूत और कठोर मालूम पड़ता है। पर प्रयत्न से जो अपार श्रान्ति होती है उसका अनुभव वह न करता हो, ऐसा नहीं है। और इस श्रान्ति को दूर करने के लिए उसे किसी के स्नेह-सिंचन की आवश्यकता होती है; यह सिंचन स्त्री ही दे सकती है। इसीलिए कर्मशील पुरुष नारी का चिर-अपेक्षी है।'

साधना—जिसे आप प्रशंसा-सूचक ढंग से स्नेह का सिञ्चन कह रहे हैं उसे साधारण लोग सेवा कहते हैं; सेवा करना तो नारी का जन्म-सिद्ध अधिकार है ही।

चन्द्रनाथ—नहीं, सेवा तो नौकर-चाकर भी कर सकते हैं। नारी से पुरुष की प्रेरणाओं एवं प्रयत्नों की समझ, उनके प्रति स्वीकृति का भाव, होना भी जरूरी है।

साधना—आपके वक्तव्य से भी यही सिद्ध होता है कि नारी स्वयं कुछ नहीं करती, वह पुरुष के प्रयत्नों का साधन मात्र है। जीवन में वह अपना स्वतंत्र उद्देश्य लेकर नहीं बढ़ती।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ—(हँसकर)–भगवान् की स्तुति में कहा जाता है कि जगत उनका भृकुटि-विलास मात्र है; यदि स्त्रियाँ अपनी चितवन से कार्य सम्पादित कर सकती हैं तो उन्हें हाथ-पैर हिलाने की क्या जरूरत है !

साधना—अब आप कविता करने लग गए; चितवन से रोटी-चूल्हा सम्पन्न होता कहीं आपने देखा है? यह कहिए कि स्त्री के लिए नीचे दर्जे का काम सौंपना ही उचित समझा गया है।

चन्द्रनाथ ने गंभीर होकर कहा—भोजन बनाने का काम स्त्री ने क्यों लिया है, अथवा उसे क्यों सौंपा गया है, यह मैं नहीं जानता। शायद इसका कारण भी यही है कि शिशु-सृष्टि की भाँति भोजन भी मानव-जाति की एक मौलिक आवश्यकता है, इसलिए उसका स्त्री के हाथ में रहना ही उचित समझा गया है। प्रारम्भ से ही माँ शिशु को भोजन देती है। लेकिन मैं कुछ और कहने की कोशिश कर रहा हूँ। आज तक नारी घर के भीतर रह कर मनुष्य के अस्तित्व का संरक्षण और परिवर्धन करती आई, अब उसे बाहर निकाल कर मानव-जाति संस्कृति और सभ्यता की रक्षा भी करनी है। इसके लिए यदि उसे घर के कुछ काम छोड़ने पड़ें, तो भी हर्ज नहीं। आज जो सभ्यता के नवनिर्माण का प्रश्न हमारे सामने है, उसका हल बहुत कुछ नारी ही कर सकती है—बिना उसके सहयोग के वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। आज संसार में जो अन्याय, अत्याचार और हिंसा की शक्तियाँ मानवता के महानाश की सूचना दे रही हैं उनका उच्छेद नारी द्वारा ही संभव है। यदि आज नारी-जाति जागृत होकर इन शक्तियों से असहयोग करने लगे, स्नेह और स्वीकृति का खाद्य देने के बदले उन्हें तिरस्कार-दग्ध दृष्टि से देखने लगे, तो वे शीघ्र ही मुरझा कर नष्ट हो जाएं और एक नई सभ्यता, नए युग का, अरुणोदय होने लगे।

वह सहसा उठ कर खड़ा हो गया। कमरे में दो-चार कदम इधर-उधर चलकर बोला—'तुम यह न समझो कि मैं नारी-जाति का अन्ध भक्त हूँ, उनके दोषों की भी मुझे तीव्र चेतना है। नारी का सबसे बड़ा दोष या कमी उसका अज्ञान और परम्परा-अनुराग है; यह प्रायः परिवर्तन-भीरु और पुराने मूल्यों की पोषक होती है। आज की अन्याय और क्षोभभरी सभ्यता को कायम रखने में

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

री का बहुत-कुछ हाथ है। युग-युग से नारी ऐश्वर्य और शक्ति की पूजा करती आई है। संभव है, किसी युग में यह मानव-हित के लिए आवश्यक रहा हो, पर आज वह घातक हो रहा है। सदैव से नारी "शो" और फैशन की उपासक रही है; यंत्र-युग के बढ़े हुए उपकरणों ने आज इस उपासना को भीषण रूप दे दिया है। आज की सभ्य नारी अपने शरीर को नहीं, घर को भी सजा देखने को लालायित रहती है। उसे सिर्फ गहने-कपड़े ही नहीं चाहिए; वह सुन्दर "फर्नीचर" और शोभन "कार" पर भी लोभ दृष्टि डालती है। आज की स्त्रियाँ या तो दूसरी स्त्रियों में ईर्ष्या उत्पन्न करती फिरती हैं, या स्वयं ईर्ष्या में जलती रहती हैं। उनके लोभ और परिग्रह का कहीं अन्त ही नहीं है। इसी प्रकार वे शक्ति की भी अन्ध उपासना करती आई हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि नारी का यह घातक दृष्टिकोण बदले और वह उन मूल्यों और प्रयत्नों में अभिरुचि लेना सीखे जो सचमुच मानवता को आगे बढ़ाने वाले हैं। नारी के सक्रिय अभाव में ही आज दिन न्याय और प्रेम, समता और सर्वबन्धुता की शक्तियाँ पुष्ट और पल्लवित नहीं हो पा रही हैं।'

यह कह कर वह चुप हो रहा।

कुछ देर की खामोशी के बाद साधना ने कहा—आप मुझसे क्या करने को कहते हैं; किस तरह मैं आपके काम में सहायक हो सकती हूँ?

चन्द्रनाथ ने उसकी ओर देखा और हँसने की चेष्टा करते हुए कहा—'तुम इसी तरह खादी की साड़ी पहनती रहो और भाई को स्नेह-पत्र लिखती रहो।' फिर गम्भीर होकर बोला—'प्रथमतः तुम्हें यह भूलना होगा कि काम मेरा या तुम्हारा है। जिन मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए सभ्यता की प्रवृत्ति है वे सिर्फ मेरे या तुम्हारे कैसे कहे जा सकते हैं? हम लोग तो उन्हें आगे बढ़ाने के साधन मात्र हैं।'

'सिर्फ साधन', साधना ने स्वगत चिन्तन के भाव से कहा।

'शायद नहीं', उसने कुछ क्षण सोचकर कहा, 'अन्यथा हमारे व्यक्तित्वों का मूल्य ही न रह जायगा। अपने व्यक्तित्व में प्रतिफलित करके ही हम सत्य,

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शिव और सुन्दर की प्रगति में योग देते हैं। इसीलिए तो हमारा पारस्परि सौहार्द और सहायता निरर्थक नहीं है।'

फिर जैसे अपने वक्तव्य में आत्म-विरोध की आशंका से उसने कहा— मैं नारी को कोमल मानवीय सम्बन्धों की प्रतीक मानता हूँ। प्रेम और ममत्व के प्रसार के लिए ही उसका अस्तित्व है। पुरुषों को इन आदर्शों से अनुप्राणित करने के लिए घर से निकलकर वह जो कुछ करेगी उसमें उसी की विज होगी।

यह कहकर वह मौन हो गया। साधना भी चुप रही। उसी समय प्रमोद ने प्रवेश करते हुए कहा—मामी जी कह रही हैं कि आज जीजी को कुछ जल्दी छुट्टी दे दीजिए।

चन्द्रनाथ—क्यों, क्या बात है ?

प्रमोद—सो तो मुझे नहीं मालूम, स्यात् कोई उनसे मिलने आई हैं।

चन्द्रनाथ तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ और अपराधी की भाँति बोला—आज कोर्स का कुछ भी काम नहीं हुआ; बहुत बुरी बात है।

'बैठिए, बैठिए', साधना ने अधैर्य से कहा, 'बात तो पूरी कर लीजि ऐसी क्या जल्दी है।' उसके स्वर से लगता था जैसे उसे मामी अथवा आग न्तुक महिला, किसी की कोई परवाह नही है।

किन्तु चन्द्रनाथ बैठा नहीं, खड़े ही खड़े बोला—मेरी बात तो प्रायः पूर्ण ही हो गई, क्या कुछ और पूछना है ?

'आपने अभी तक यह नहीं बतलाया कि मेरा कर्तव्य क्या है।'

'कर्तव्य की धारणा व्यक्ति-विशेष की शक्तियों की सापेक्ष है; अतः इसका निर्णय तुम्हीं कर सकती हो कि तुम्हारा कर्तव्य क्या है। नारी-जाति को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना भी एक कार्य है—उनकी ऐश्वर्य-पूजा सामाजिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। दूसरे ढंगों से भी उचित मूल्य-दृष्टि का प्रचार या प्रोत्साहन कर सकती हो। हर हालत में तुम्हें अपना मार्ग स्वयं स्थिर करना होगा।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ बैठ नहीं रहा था, इसलिए साधना भी उठ खड़ी हुई। बोली—'स्त्री के लिए अपना मार्ग स्थिर करना कितना कठिन है, यह शायद आप नहीं जानते, और फिर उस दशा में जब कि उसका विवाह कर दिया जाय, और वह पराधीन हो जाय। न जाने लोग क्यों इतना मेरी शादी के पीछे पड़े हैं, आप भी तो मदद नहीं करते।'

'इसका मतलब ? क्या तुम आजन्म ब्रह्मचारिणी बनी रहना चाहती हो ? हमारे समाज में लड़कियों के कुमारी रहने का विधान नहीं है।'

'क्यों क्या विवाह करना स्त्री के लिए ज़रूरी ही है, आपका अपना क्या विचार है ?'

"मैंने इस सम्बन्ध में विशेष विचार नहीं किया है, साधारणतया सभी स्त्रियों को विवाह करना चाहिए। आज की दुनियाँ आजन्म ब्रह्मचर्य और संन्यास को विशेष महत्व नहीं देती।'

'मैं उस दृष्टि से नहीं पूछ रही हूँ। मेरे प्रश्न के मूल में यह आशंका है कि विवाह स्त्री को एकदम पराधीन और निकम्मी बना सकता है, जिससे वह बाहरी दुनियाँ से सम्पर्क रखने योग्य ही न रहे।'

'आज की लड़कियाँ ऐसी पराधीन तो नहीं हो जातीं, यद्यपि वे प्रायः अपनी स्वतन्त्रता का सदुपयोग नहीं करतीं।'

'पति के साथ सभा-सोसाइटियों और सिनेमा-घरों में घूम सकने का नाम ही स्वतन्त्रता नहीं है, जीजा जी; हर हालत में पति लोग पत्नियों की गतिविधि पर पूरा नियंत्रण रखना चाहते हैं। कम से कम मेरी सखियों का तो यही अनुभव है, यद्यपि उनमें से कई ग्रेजुएट युवकों से ब्याही गई हैं।'

'शायद तुम्हारी सखियों ने ठीक चुनाव नहीं किया; इस मामले में दोनों ओर काफ़ी सावधानी की जरूरत है।'

'आप चुनाव की बात कह रहे हैं, जब कि माँ-बाप को यह फ़िक्र रहती है कि किसी तरह लड़की से पिण्ड छूट जाय। लड़कियों के लिए चुनाव का प्रश्न ही कहाँ है, उनका सौभाग्य इसी में है कि वे स्वयं किसी के द्वारा चुन ली जायँ।'

'ऐसी परिस्थिति में,' चन्द्रनाथ ने धीमे स्वर में उत्तर दिया, 'माता-पिता

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और लड़की शायद इतना ही देख सकते हैं कि वह पति की जीवन-दिशा से सहानुभूति और तादात्म्य अनुभव कर सके। पति-पत्नी के जीवनादर्शों में भेद होने पर दोनों का जीवन कष्टमय हो सकता है।'

'दोनों का क्यों, पत्नी का ही कहिए; पतिदेव तो उसे सदैव अपने पीछे चलने को बाध्य कर ही सकते हैं।'

'मुझे भय है कि तुम पत्नी की शक्ति और स्वतन्त्रता को कुछ ज्यादा सीमित करके देख रही हो।'

'और मेरा अनुमान है कि आप पतियों की उद्दण्डता और अधिकार-भावना से पूर्णतया परिचित नहीं हैं।'

लड़कियों के विवाह में कठिनाई होती है इसका चन्द्रनाथ को आभास न हो, सो नहीं; पर आज यह समस्या मानो मूर्तिमान होकर उसके सामने आ खड़ी हुई है। वह सोच रहा है—इस मनस्विनी बहिन के लिए वर की खोज कहाँ और कैसे की जाय ?

प्रमोद इतनी देर में फिर घूम-फिरकर आ पहुँचा। चन्द्रनाथ ने उसे देखकर कहा—लो भई, तुम्हें फिर बुलावा आ गया, अब मुझे चलना चाहिए।

साधना—देखिए, लड़कियों को मायके में भी स्वतन्त्रता नहीं होती; मैं जानती हूँ कौन महाशया आई हैं, और किसलिए; मुझे उनसे बात करने की तनिक इच्छा नहीं है।

'किन्तु बहिन, मेहमानदारी भी तो कोई चीज है।'

'भाड़ में जाय ऐसी मेहमानदारी; वे मेरी नहीं, मामीजी की मेहमान हैं, मेरे मेहमान आप हैं।' फिर कुछ रुककर बोली—'यदि पति-पत्नी के आदर्शों में भेद हो, तो पत्नी का क्या कर्तव्य होगा ?'

'उस दशा में यह भी देखना होगा कि किसका आदर्श ज्यादा ऊँचा है। उच्चतर आदर्श के पीछे ही दोनों को चलना चाहिए।'

'मान लीजिए कि पत्नी का आदर्श ज्यादा ऊँचा है और पति उस पर नहीं चल सकता; उस दशा में पत्नी को आदर्श का परित्याग करना चाहिए या स्वयं पति का ?"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वह सोचने लगा।

'तुम पूछ रही हो कि पति यदि पत्नी की उच्च प्रवृत्तियों में बाधा बन कर खड़ा हो जाय तो पत्नी क्या करे ?'

'हाँ यही।'

'तो मेरा स्पष्ट उत्तर यह है कि पत्नी ऐसे पति की पर्वाह न करे, और जरूरत हो तो उसे छोड़ भी दे, क्योंकि अन्ततः हमारा जीवन या तो अखिल मानवता के लिए है या उन आदर्शों के लिए जिनसे मानव-जीवन की सार्थकता है। किसी एक व्यक्ति की सनकों के लिए उसका बलिदान नहीं किया जा सकता।'

फिर कुछ रुक कर वह बोला—और यदि ऐसी ही समस्या पुरुष के सामने उपस्थित हो तो ?

'उसका उत्तर तो आपने दे दिया। पर शायद भारतीय स्त्री में इतनी शक्ति नहीं है कि वह पुरुष को उसके चुने हुए रास्ते से हटा सके। ज्यादा-से-ज्यादा वह उसे अपनी सहायता से वंचित रख सकती है।'

'उस दशा में वह पति के प्रेम की अधिकारिणी तो नहीं रहेगी न ?' साधना शंकित होकर उसका मुँह देखने लगी।

प्रमोद अभी वहीं डटा था, अतः चन्द्रनाथ उठकर खड़ा हो गया।

चलते-चलते उसने देखा कि भाभी के पास एक स्थूलकाय प्रौढ़ा स्त्री बैठी है। क्या उसी की खातिर साधना को बार-बार बुलाया जा रहा था ?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

:३४:

दूसरे दिन चन्द्रनाथ को प्रिंसिपल देव का पत्र मिला। पत्र के साथ उसकी पुस्तक के लिये लिखी प्रस्तावना भी थी। उसने देखा कि उसकी कविताओं की काफी प्रशंसा की गई है।

अभी तक उसने अपनी पुस्तक साधना को नहीं दिखाई थी। कुछ तो साधना का "मूड" प्रोत्साहक नहीं था, कुछ वह प्रिंसिपल देव के वक्तव्य की प्रतीक्षा में था। आज उसने निश्चय किया कि वह पुस्तक और वक्तव्य दोनों साधना के पास ले चलेगा। लेकिन क्या यह ठीक न होगा कि वह साधना को पहले सिर्फ पुस्तक दिखलाए—साधना को अपनी सम्मति स्वयं बनानी चाहिए। या प्रिंसिपल देव का प्राक्कथन पहले पढ़ने को दे जिससे साधना की कविताओं-विषयक जिज्ञासा तीव्र हो जाय ? वह शीघ्र किसी निर्णय पर न पहुँच सका।

किन्तु साँझ को जब वह मास्टर साहब के घर की ओर चला तो उसने हीं पुस्तक और प्राक्कथन दोनों साथ ले लिए। पहुँच कर उसने साधना के बाँ मेज पर चुपके से पुस्तक रखते हुए कहा—लो, यह तुम्हारी माँग है।

पुस्तक देखते ही साधना अकृत्रिम उल्लास से मुस्कुरा उठी। जल्दी से मेज पर से उठा कर उसने उसका कवर खोला; इधर-उधर नजर डाली, और फिर उसे हृदय से लगती हुई बोली—'यह क्या अभी छप कर तैयार हुई है। आज ही आई है ?'

'नहीं, मैं इसे अपने साथ लाया था।'

'तो फिर आज तक मुझे क्यों नहीं दी ?'

'तुम्हारा जी ठीक नहीं था, सोचा तुम्हारा उद्वेग दूर हो जाने पर दूँगा।'

'मेरे जी को क्या हुआ था ? ओर उद्वेग भी कैसा ? आप बातें बहुत लगाते हैं।'

यह कह वह पुस्तक के पन्ने लौटने लगी। दो चार मिनट तक प्रतीक्षा

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के चन्द्रनाथ बोला—'अब इसे फिर पढ़ना, यह देखो इसका प्राक्कथन है, पिल देव का लिखा हुआ। साहित्य के योग्य विद्वान् हैं।'

'मैं जानती हूँ।...इस वर्ष उन्हें साहित्य-सम्मेलन का सभापति बनाने की र्चा भी तो चल रही है।' और वह जल्दी-जल्दी प्राक्कथन पर दृष्टि डालती बोली—'ठीक है, पुस्तक अच्छी निकली है।...मैं यह सब फुर्सत से देखूँगी। प्रति मुझे मिलेगी न ?'

'इतना अधीरज! तुम सजिल्द प्रति लोगी न ?'

'अधीरज तो है ही, शायद आपका मन बदल जाय और मुझे पैसे खर्च ले पड़ें।'

साधना ने पुस्तक और प्राक्कथन दोनों सँभाल कर एक आलमारी में रख , फिर अपनी जगह पर लौटती हुई उत्फुल्ल भाव से बोली—'आज आपने कुच एक सुन्दर चीज़ लाकर दी है; मैं बहुत खुश हूँ।'

'लेकिन अभी तो खुश होने की कोई बात नहीं है; कविताएँ पसन्द आएँ न।'

'वाह! पसन्द क्यों नहीं आएँगी, ज़रूर पसन्द आएँगी; अपनी चीज़ तो पसन्द आती है।'

'किन्तु तुम से मैं ऐसी अपरीक्षित पसंद की आशा नहीं करता।'

'नहीं, वैसा नहीं, मैं आपकी रचनाएँ पढ़ती भी तो रही हूँ।'

'कौन-सी रचनाएँ पढ़ी हैं तुमने ?'

'आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं...कम-से-कम दो-तीन पत्रिकाएँ मैं नियम से ती हूँ।'

पत्रिकाओं में छपी सब चीजें पसन्द आ जाती हैं ?'

'यह तो कहना कठिन है फिर भी इधर...'

'एक विचित्र बात सुनाऊँ। काफी दिनों तक मैं यह सोचता था कि अपनी श्रेष्ठ कविताएँ पत्रिकाओं में नहीं भेजनी चाहिए और मैं वही चीजें भेजता जो मेरी दृष्टि में दूसरी श्रेणी की होती थीं।'

'ऐसा किसलिए ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'मुझे अपनी कविताओं का मोह लगता था ।'

'खूब; तब तो आपको पुस्तक छपाना भी बुरा लगा होगा । और श
मेरा या दूसरे पाठकों का पढ़ना भी बुरा ।'

'नहीं, अब वैसी भावना नहीं है । पहले मैं सचमुच सोचता था कि मे
उन कविताओं पर जो मेरे हृदय के विशेष निकट हैं किसी की कुदृष्टि न पड़े
और मैं जानता था कि लोग पत्रिकाएँ बड़ी जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं ।'

'आपका मतलब है कि आपकी कविताएँ जल्दी-जल्दी न पढ़ी जायँ।'

'सिर्फ मेरी ही नहीं; कविताओं के भीतर पैठे बिना कवि-हृदय तक पहुँ
नहीं होती ।'

'आप जब कविता लिखते हैं तो बहुत "सीरियस" (गम्भीर)
जाते होंगे ।'

' "सीरियस !" बिलकुल डूब जाना पड़ता है । और जब लिखना स
करो तो मालूम होता है जैसे कहीं सुदूर की यात्रा कर आये हैं, और
गए हैं ।'

'मैं तो समझती थी कविता लिखने में बड़ा आनन्द होता होगा ।'

'लिखते समय आनन्द जरूर होता है, बल्कि एक प्रकार का नशा'''
कैसे समझाऊँ'''

'मैं कुछ-कुछ कल्पना कर सकती हूँ ।'''लेकिन यह नशा किस चीज़
होता है ?'

'जीवन का और जगत्'''विश्व-सृष्टि की उन छवियों का जिन्हें प्रा
अपनी हलचल में समेट कर रखा है, और उन कल्पनाओं या भावनाओं का
हमें मोहक और मादक प्रतीत होती हैं ।'

'आखिर इन कल्पनाओं से लाभ क्या है ? क्यों मनुष्य इतनी लगन
उन्हें सँजोता है ?'

'शायद इस ढंग से उच्चतर स्थितियों की कल्पना करके ही मनुष्य
बढ़ता है । मनुष्य कभी अपने क्षुद्र वर्त्तमान से सन्तुष्ट नहीं होता ।'

'इसका मतलब यह है कि मनुष्य स्वभाव से ही आदर्श का अन्वेषी है ।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ—एक बात और है; अपनी आदर्श-साधना में मनुष्य दूसरों को साथ लेकर बढ़ना चाहता है; अकेले वह घबराता है। कवि चाहता है कि उसके गीतों में दूसरे लोग रस लें, और विचारक अपने विचारों के अनुयायी खोजता है।

साधना—यह बड़ी विचित्र परिस्थिति है; ऐसा क्यों है ?

चन्द्रनाथ—कौन जाने ! मनुष्य स्वभावतः दूसरों का अपेक्षी है। यह सापेक्षता ही उस में प्रेम की भूख पैदा करती है।

'पहले यह निश्चय होना चाहिए कि हमारी आदर्श-कल्पनाओं का लक्ष्य क्या है।'

'और यह भी कि प्रेम नाम का तत्व क्या है। एक बार तुमने एक परिभाषा लिखकर भेजी थी, याद है ?'

'न जाने किस मूड में मैंने वह पत्र लिखा था, अब तो वह परिभाषा सोच कर हंसी आती है।'

'किन्तु वहिन मुझे तुम्हारा वह पत्र बहुत प्रिय लगा, और बहुत पवित्र। मैं चाहता हूं मेरे प्रति तुम्हारा वह "मूड" सदैव बना रहे।'

क्षणभर को साधना की आँखों में स्निग्ध कोमल लज्जा का आलोक दौड़ गया। कुछ देर चुप रह कर वह बोली—हम मूल प्रश्न से दूर हट रहे हैं; आखिर जीवन और प्रेम है किस लिए ?

'जीवन प्रेम के लिए और प्रेम जीवन के लिए, समझीं ?' चन्द्रनाथ ने हंसकर कहा। 'तुम किसी को इतना बुद्धिमान् क्यों समझने लगी हो कि सब प्रश्नों का उत्तर दे सके ? न जाने क्यों नश्वर हृदय चिरन्तन प्रेम की और नश्वर व्यक्तित्व अमर जीवन की कामना करता है; और न जाने क्यों काव्य-साहित्य में उसका राग अलापना अच्छा मालूम पड़ता है।'

उसी समय साधना की मामी बराबर के कमरे में घुसीं; उनके हाथ में कुछ खाने का सामान था। वे अब तक कभी ठीक से चन्द्रनाथ के सामने नहीं आई थीं, और न उससे बोली थीं। धीरे-धीरे बढ़कर वे दोनों के निकट आईं;

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ ने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने बड़े धीमे स्वर में आशीर्वाद दिया और फिर तश्तरियां जो उनके हाथ में थीं मेज़ पर रख दीं।

चन्द्रनाथ ने उनसे बैठने को कहा, साधना ने उसे दोहराया, तब वे बड़े संकोच से एक कुर्सी पर बैठ गईं।

'आपको साधना के विवाह की ऐसी जल्दी क्या पड़ी है? इन्हें एम० ए० कर लेने दीजिए'—चन्द्रनाथ ने कहा।

'मैं क्या जानूँ, इनके बावू जी जानें और मामाजी, वैसे तो काफी सयानी हो गई, सत्रह बरस की। और फिर दूसरी बात यह है कि गोत-बिरादरी के लोग टोकते हैं।'

चन्द्रनाथ—सत्रह वर्ष की उम्र तो ज्यादा नहीं है। विवाह के बाद पढ़ना कठिन हो जाता है।

'इनके बावू जी को ही ज्यादा जल्दी है', मामी ने कहा। फिर वे चुप हो रहीं। उनके भाव से लगता था जैसे उन्हें कुछ कहने-करने को न सूझ रहा हो। कुछ क्षण बाद वे उठने लगीं।

'बैठिए, बैठिए,' चन्द्रनाथ के मुख से निकला; उसे भी बात करने का कोई प्रसंग नहीं मिल रहा था।

'तुम्हारी छुट्टियां कब तक हैं?' मामी ने प्रश्न किया।

'दीवाली, बल्कि उसके दो-तीन दिन बाद तक।'

'साधना को पढ़ाई की बड़ी चिन्ता है; पास हो जायगी?'

'उम्मीद तो है, विशेष खराब नहीं है।'

मामी ने उसके परिहास पर ध्यान नहीं दिया। कुछ क्षण और रुककर उन्होंने नाश्ता ठंडा न होने देने का संकुचित अनुरोध किया और फिर पहले की भाँति धीरे-धीरे चली गईं।

खाते-खाते चन्द्रनाथ ने कहा—कभी-कभी मुझे पिछली पीढ़ी के लोगों का सादा-सरल जीवन देखकर ईर्ष्या होती है। तुम्हारी मामी कितनी सीधी हैं।

साधना—'आपसे शर्माती हैं। कल मैंने बहुत समझाया तो आज आपके सामने आईं और दो-एक बातें कर गईं।' फिर उसने कहा—क्या कोशिश करने से हम लोग भी अपना जीवन ऐसा ही नहीं बना सकते?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'नहीं; क्योंकि हमारा परिवेश बहुत विस्तृत और जटिल हो गया है, इसलिए वैसी प्रतिक्रिया होना भी अनिवार्य है।'

'यही क्यों, मुझे लगता है कि हमारी भावनाएँ भी वैसी सरल नहीं रह गई हैं।...मामा-मामी का आपसी सम्बन्ध भी कैसा मधुर है; अभी तक मामी मामा जी के सामने मुँह पर घूँघट किए रहती हैं। मैं कभी-कभी हँसी भी कर लेती हूँ।'

'सचमुच ? शायद इसका कारण तुम्हारी उपस्थिति है।'

कुछ रुककर वह बोला—मैं समझता हूँ प्रेम-सम्बन्ध सर्वत्र एक ही नहीं होता। स्वार्थों की सम्पूर्ण एकता और उनके साधन-रूप एक-दूसरे के व्यक्तित्व की ममता यही प्रेम है। ऊँचे और नीचे, सरल और जटिल स्वार्थ के अनुसार मन का लगाव भी वैसा ही होता है ?

साधना—तो क्या प्रेम स्वार्थ पर आधारित है ?

चन्द्रनाथ—तुम चाहो तो स्वार्थ के बदले कोई दूसरा शब्द प्रयुक्त कर सकती हो। पर नितान्त निःस्वार्थ या निष्काम जीवन में प्रेम को स्थान कहाँ है ?

कुछ ठहर कर उसने कहा—मैं समझता हूँ प्रेम कमज़ोरी का द्योतक है, हमारी अपूर्णता का चिह्न है।...हम प्रेम चाहते हैं उसकी शक्ति द्वारा अपनी मूलभूती अपूर्णता से संघर्ष करने के लिये। तुम क्या सोचती हो ?

'मैं तो समझती हूँ, प्रेम में आनन्द है और आनन्द स्वयं अपना साध्य है।'

'यह भी ठीक है; पर अरस्तू के अनुसार आनन्द कोई स्थिर दशा नहीं है; आनन्द उस सक्रिय अवस्था का नाम है जब हम अपने अभिमत लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हों।'

साधना उसका मुख देख रही थी।

चन्द्रनाथ—किसी भी दशा में हमें प्रेम से डरना नहीं चाहिए, है न ?....प्रेम डरने की चीज़ तब होता है जब वह आसक्ति का रूप धारण कर लेता है।

कुछ देर चुप रह कर साधना ने कहा—आपकी बातें मेरी समझ में कम आ रही हैं। मैं तो समझती हूँ आसक्ति प्रेम का आवश्यक तत्त्व है, वही उसे गति और शक्ति देती है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'तुम सचमुच ऐसा सोचती हो ?'

'सिर्फ मैं ही नहीं। क्या आदर्शवादी राम आसक्ति से मुक्त थे ?'

चन्द्रनाथ ने विस्मय और रहस्य के भाव से कहा—'नहीं', और फिर उठकर खड़ा हो गया।

पढ़ाते समय कभी-कभी उठ खड़े होना और कुछ देर आगे-पीछे घूम लेना उसके लिए अस्वाभाविक न था। यह प्रायः इस बात का द्योतक होता कि वह किसी कठिन समस्या से उलझ रहा है।

कुछ देर बाद वह बोला—तुम कहती हो आसक्ति प्रेम का आवश्यक अंग है; पर यह आसक्ति वासना से किस तरह भिन्न है ?

'क्या फ्रायड का यह सिद्धान्त मानना ही होगा कि सब प्रेम वासना-मूलक है ? मैं तो ऐसा नहीं समझती। माता के प्रेम में आसक्ति होती है पर वह आसक्ति वासना तो नहीं है।'

'तो फिर आसक्ति है क्या ?'

'यह तो कठिन प्रश्न है।' फिर कुछ रुककर बोली—'मैंने बहुत-सा मनो-विज्ञान नहीं पढ़ा है, इसलिए अपने अनुभव पर ही निर्भर कर सकती हूं। मन की उस तीव्र अवस्था को जब प्रेमास्पद की दूरी अथवा अनिष्टाशंका से कष्ट हो हम आसक्ति कहते हैं।'

'तब दूर रहने वालों से प्रेम नहीं करना चाहिए।'

'नहीं, हर्गिज नहीं', साधना ने आवेश में कहा; फिर वह सहसा गम्भीर हो गई।

'क्या सोच रही हो ?'

'सोचती हूं, क्या ही अच्छा होता यदि प्रेम करना-न-करना अपने वश की बात होती। तब शायद हम स्त्रियों को इतना कष्ट न होता। लड़कियां अपने माता-पिता और भाइयों को जितना ही अधिक प्रेम करती हैं उतना ही उन्हें उनसे दूर हो जाना पड़ता है।'

'हूं, यह कष्ट तो दोनों ही ओर होता है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'नहीं; जहाँ पुरुष अपने को हजार कामों में बाहर भुलाए रख सकता है वहाँ नारी को मन में घुटने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है।'

'शायद ऐसा हो; लेकिन बहिन, पुरुष कभी-कभी कुछ क्षणों में जितना अनुभव कर लेता है उतना स्त्री वर्षों में कर पाती होगी।'

'एक जीवनव्यापी पीड़ा की, किसी क्षणिक कष्ट से, फिर चाहे वह कितना ही तीव्र क्यों न हो, तुलना नहीं की जा सकती। फिर कोई ऐसा नियम नहीं कि क्षण की अनुभूति सदा अधिक तीव्र ही होती हो, यद्यपि यह सच है कि उसमें स्थायित्व कम होता है।'

'ऐसा सोचना तुम्हारा अन्याय है', कह कर वह चुप हो गया। कुछ देर में बोला—'तुम्हें आसक्ति से डर नहीं लगता, रानी ?'

'न''''हीं, यद्यपि मैं जानती हूँ कि उसमें कष्ट है।' उसकी गहरी आँखों में करुणापूर्ण उदासी की छाया थी।

फिर कुछ देर खामोशी रही।

'मैं एक दूसरी बात भी सोच रहा हूँ। आसक्ति हमें बांध रखती है और कार्यक्षेत्र के अयोग्य बना देती है।'

'आपको सचमुच ऐसा भय है ? मेरी धारणा है कि कली को तोड़-रखने की अपेक्षा उसे खिलने की सुविधा देना आसक्ति का ज्यादा उज्ज्वल रूप है।'

चन्द्रनाथ अकृत्रिम विस्मय से उस पर दृष्टि-क्षेप करता हुआ बोला—'आसक्ति के साथ इतने विवेक का मिश्रण हो तब न।'

'कम-से-कम बहिनों का प्रेम तो इसी तरह का होता है; इसीलिये मुझे भाई-बहिन का सम्बन्ध आदर्श जान पड़ता है।'

चन्द्रनाथ कुछ कहना चाहता था कि इतने में नीचे से उसकी बुलाहट आई, वह उठ कर खड़ा हो गया।

'मैं देखती हूं कि हमारी बातचीत में लोग नित्यप्रति विघ्न डाल देते हैं। अब मैं मामाजी से शिकायत करूँगी', साधना ने असहिष्णु हो कर कहा।

'नहीं-नहीं; मास्टर साहब का कोई जरूरी काम होगा। आज पहली ही बार उन्होंने बुलाया है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'और कल ? आप जानते हैं वे महाशया क्यों आई थीं ?'

'नहीं ।'

'उनकी एक लड़की है जिसके विवाह के लिए वे चिन्तित हैं। मामी की मित्र हैं, और इस नाते मेरी सहायता चाहती थीं ।'

'तुम्हारी सहायता ?'

'हाँ, हमारे मुनीमजी का एक लड़का है, उसी से वे सम्बन्ध करना चाहती हैं ।'

'तुम्हें उनकी सहायता करनी चाहिए,'—चन्द्रनाथ ने अर्ध-गंभीर स्वर में कहा ।

'जी हाँ, जैसे मुझे कोई दूसरा काम ही नहीं है ।' फिर बोली—'लड़कियों के विवाह की समस्या सचमुच बड़ी भयंकर है । मुझे कल उन पर बड़ी दया आ रही थी । बेचारी कायस्थ हैं, और इतनी समाई नहीं कि बहुत-सा तिलक दे सकें ।'

आखिरी बात सुनता-सोचता चन्द्रनाथ नीचे चल दिया ।

'तुम मिस्टर अरुणकुमार को जानते हो, प्रिंसिपल देव के भतीजे जो हैं?' उसके पहुँचते ही मास्टर साहब ने पूछा ।

'मेरा उनसे व्यक्तिगत परिचय नहीं है, पर मेरे एक मित्र उनसे खूब परिचित हैं । वे अब डिपुटी कलेक्टर हो गए हैं ।'

मास्टर साहब के मित्र के संबन्ध में पूछने पर उसने हरिशंकर का नाम बतलाया । हरिशंकर को मास्टर साहब ने पढ़ाया नहीं था, पर कुछ-कुछ जानते थे ।

'यदि साधना की शादी अरुणकुमार से हो जाय तो कैसा हो ?'

'अ···च्छा ही होगा', चन्द्रनाथ ने थोड़ी हिचकिचाहट से कहा ।

'तो उसकी कुछ बातचीत चलनी चाहिए । संभव हो तो हरिशंकर से सहायता ली जाय ।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ—हरिशंकर तो आने ही वाले हैं, दीपावली पर वादपरिषद् का जलसा होगा उसमें। शायद प्रिंसिपल देव भी आएँगे। मैं हरिशंकर को लिख रहा हूं कि हो सके तो कुछ जल्दी आ जायँ।

मास्टर साहब ने कहा—यही उचित होगा।

●

:३५:

प्रेम और आसक्ति, वियोग और पीड़ा; चन्द्रनाथ देखता है कि इस अटूट क्रम में विपर्यय संभव नहीं है। फिर भी प्रेम छोड़ते नहीं बनता, आसक्ति का बन्धन अकाट्य है। साधना की अवस्था भले ही कम हो, पर उसमें समझ की कमी नहीं है। वह स्पष्ट जानती है कि प्रेम में आसक्ति है। चन्द्रनाथ को आश्चर्य है कि वह इस स्पष्ट सत्य को पहले नहीं देख सका था।

यह आसक्ति क्या है ? 'ममत्व की वह तीव्र अवस्था जब—' चन्द्रनाथ को यह परिभाषा कुछ नीरस लगती है, कुछ अधिक वैज्ञानिक। इतनी सच्ची कि उसका सत्य कर्कश आघात करने लगता है और शायद इसीलिए पूर्ण सत्य से दूर या कम। क्या उसकी अन्तरात्मा ने प्रेम को, आसक्ति को, इसी रूप में अनुभव किया है ? क्या सचमुच वह भौतिक समीपता को इतना महत्त्व देता रहा है ?

उसके जीवन में यह बहिन कहाँ तक घुस सकी है, घुस आई है, उसके अस्तित्व के किस भाग में उसने अपने को प्रतिष्ठित किया है। शायद किसी स्थूल स्थल पर नहीं, शायद हृदय के किसी अज्ञात विन्दु पर। उसे लगता है

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जैसे साधना और उसका सम्बन्ध एक कोमल गहरी लकीर-सा उसके अस्ति में आर-पार प्रसरित है।

कभी-कभी किसी दर्दभरे स्वर में गाए हुए गीत की कोई पंक्ति, उसकी और ध्वनि, चिरकाल तक हमारे प्राण-स्पन्दन में गूँजती रहती है; कुछ वैसी प्रतीति उसे साधना के सम्बन्ध में रहती है। इस सम्बन्ध का अनुभव अधिक में उसने दूर से ही किया है। साधना जब उसके सम्मुख बैठी होती है तो वह उसकी इस हृदयगत प्रतिध्वनि को भूल नहीं पाता। उस समय वह कभी एक रहस्यमय विस्मय के भाव से भीतर की भावना की वाह्य वास्तविकता से तुलना करने लगता है; और तब उसे लगता है जैसे बाहर बैठी यह बहिन उसके इतने निकट नहीं है। इसीलिए कभी-कभी वह पार्श्ववर्ति साधना को ऐसे भाव से देखता है जैसे वह कहीं दूर अन्तरिक्ष में टँगी तारिका हो—जैसे उसकी गहरी आँखें किसी दूरवर्ती महासागर के निम्न स्तरों का रहस्यावर्त हों।

इसके विपरीत कभी-कभी उसे ऐसा भी लगता है कि साधना की आँखों का प्रकाश उसके अन्तर में प्रवेश करके उसकी भावप्रतिमा को दीप्ति और चेतना दे रहा है—मानो उस अरूप छाया को रूप-रेखा से कर रहा है। यह प्रायः तब होता है जब वह आत्यंतिक लीनता से पढ़ती अकस्मात् नेत्र उठाकर उसे देखने लगती है। और तब उसके जी में आता कि वह उसे कोमल मन्द स्वर में पुकार उठे—"बहिन, बहिन।" पर न क्या सोचकर वह रुक जाता है, और अपनी पुकार की प्रतिध्वनि मानो भीतर ही-भीतर सुन लेता है।

यह प्रतिध्वनि क्या है? यह अनुभूति क्या है? प्रेम किसे कहते हैं जीवन में, ब्रह्मांड में, उसकी क्या सार्थकता, क्या उपयोगिता है?

कई बार उसने सोचा है कि वह साधना से पूछे कि—'तुम्हारा मेरे ठीक क्या भाव है, तुम कैसा-क्या अनुभव करती हो?' किन्तु उसे साहस हुआ। साधना के सम्मुख जाकर, उसकी गहरी दृष्टि की छाया में; वह जैसे आलोचनाओं के अतिरिक्त कुछ कर ही नहीं पाता।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उसे लगता है; वह बातचीत की अपेक्षा पत्रों में अपने को अधिक अच्छा व्यक्त कर सकता है। लेकिन एक ही शहर में रहते पत्र लिखना हास्यास्पद बात है!

साधना ने आश्वासन दिया है कि उसकी आसक्ति कली को तोड़ रखने वाली आसक्ति नहीं, उसे खिलकर फूल बन जाने की सुविधा देने वाली आसक्ति है। यह फूल बनना क्या है? व्यक्तित्व का विकास क्या है? क्या प्रेमानुभूति की सफल अभिव्यक्ति, उसका अवगतिपूर्ण उपभोग ही, उसका चरम लक्ष्य नहीं है?

वह साधना से क्या चाहता है। आज उसे लग रहा है कि प्रेमास्पद द्वारा समझा जाना, उसका समझपूर्ण स्नेह ही, सब कुछ नहीं है। शायद उससे ऊँची भी कुछ चीज़ है—पूर्ण तादात्म्य की अनुभूति। क्या अनुभूति का जीवन के लिये कोई बुद्धिगम्य महत्व है? क्या यह अनुभूतिमात्र व्यक्तित्व को महत्वशाली बना सकती है? दो हृदयों का एक-दूसरे से अभिन्न अनुभव करना क्या चीज़ है? इस अनुभूति का मूल कहाँ है? लक्ष्य क्या है?

चन्द्रनाथ ने हरिशंकर को पत्र लिखा।

भाई हरी,

तुम्हें कष्ट देने को यह पत्र लिख रहा हूँ। साधना के नाम से तुम परिचित हो, वह अपने ही मास्टर गोपालस्वरूप की भानजी है। बी० ए० की तैयारी कर रही है। आजकल मैं भी थोड़ी-बहुत सहायता दे देता हूँ। बहुत प्रतिभा-शालिनी लड़की है। फिर भी उसके लिए वर ढूँढना कठिन हो रहा है; इसे हमारे देश का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। मास्टर साहब ने अरुणकुमार का ज़िक्र किया था। तुम्हारा उनसे घनिष्ठ परिचय है, अतः काफी काम कर सकते हो। यही समझना कि स्वयं मेरी अथवा तुम्हारी बहिन की समस्या है।···कानपुर कब जा रहे हो, और कब लौट रहे हो? लौटते समय बरेली उतरोगे।

······पुनश्च—अरुणकुमार उपयुक्त हैं न? कोई दूसरा युवक नज़र में हो तो बतलाना; मुझे तो सूझता नहीं।

तुम्हारा,

चन्द्रनाथ

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पत्र को लिफ़ाफे में बन्द करके छोड़ने के लिये उसने अंगन को दे दिया।

फिर बिछी हुई खाट पर लेटकर वह सोचने लगा—साधना की शादी होने वाली है। शादी क्या होती है? शादी के बाद वह कहाँ जायगी? और तब उसका मुझ से क्या और कितना सम्बन्ध रह सकेगा?······किन्तु शादी तो होती ही है, प्रत्येक बहिन की शादी होती है; उसकी चिन्ता क्या! उसका भाई से संबन्ध-विच्छेद थोड़े ही है।

और वह उठकर इधर-उधर टहलने लगा।

●

:३६:

रात को सुशीला ने चन्द्रनाथ से पूछा—मैं मामा जी के घर कब जाऊं, साधना नित्य कहला कर भेजती है?

'जब चाहो जा सकती हो, लेकिन यह याद रखो कि घर साधना का नहीं, किसी दूसरे का है।'

'आपकी भाभी जी से तो नहीं पूछना पड़ेगा?'

'सो कैसे, उनसे विना पूछे तुम किस तरह जा सकती हो।'

'उनसे आप ही पूछ लें, मुझे पूछते हुए डर लगता है; कहीं पहले की तरह नाराज़ हों।'

चन्द्रनाथ ने कहा—'अच्छा मैं ही पूछ लूँगा।' दूसरे ही दिन सवेरे उसने भाभी से कहा कि सुशीला मास्टर साहब के घर जाना चाहती है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'मैं क्या मना करती हूँ, और मना करने से क्या वह मान जायगी, जरूर जायं,' भाभी ने उत्तर में कहा।

चन्द्रनाथ ने सोचा, आज वह स्वयं नहीं जायगा; सुशीला की उपस्थिति में उसका वहाँ होना ठीक न होगा। और यह निश्चय करके कि आज उसे नहीं जाना है, वह बैठकर साधना को पत्र लिखने लगा।

रानी बहिन,

तुम्हारे सम्बन्ध में मैं जो कुछ सोचूँ वह यदि तुम तक पहुँच जाय तो कोई हर्ज नहीं होना चाहिए।""न जाने क्यों कुछ बातें पत्र में कहना जितना सुविधाजनक लगता है उतना सामने नहीं। तभी तो एक ही जगह रहते हुए भी तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ। इसके लिए हँसी न करना""तुम्हारी शादी की बातचीत चल रही है; मामा जी को काफी चिन्ता है; दूसरे लोग भी चिन्तित हैं। यह उचित ही है। तुम्हें मनोनुकूल, सुन्दर, स्वस्थ, मधुर वर मिले, इससे बढ़कर खुशी मेरे लिए क्या होगी।""तुम जीवन भर प्रसन्न रहो, प्रसन्नता से मुस्कुराती हुई, इसी में हम लोगों का सन्तोष है, प्रसन्नता है।""पर न जाने क्यों कभी-कभी ऐसा लगता है कि विवाह की घटना से तुम हमसे दूर हो जाओगी, बहुत दूर। उस दूरी को कैसे सहन किया जायगा?"'तुम कहोगी यही तो आसक्ति है, और शायद विवेक-शून्य आसक्ति। समझ में सब-कुछ आता है, पर अन्दर धँसे तब न!""आज जीजी तुम्हारे पास पहुँचेंगी, इसीलिए मैं नहीं आऊंगा। तुम्हारा अवधान बँटे क्यों?

तुम्हारा भाई,

चन्द्रनाथ

प्रमोद के आने पर उसने उसे पत्र दिया और कहा—सँभाल कर रखना और सिर्फ साधना जीजी को ही देना, किसी और को नहीं, समझे?

प्रमोद ने हूँ-कार किया।

ताँगा मँगाकर चन्द्रनाथ ने सुशीला को प्रमोद के साथ भेज दिया।

और उनके चले जाने पर किंचित् पछतावे के साथ सोचने लगा—मैंने यह पत्र क्यों लिखा और क्यों भिजवाया? साधना उसे पाकर जाने क्या सोचेगी। उसके लिखने का भला कोई अवसर था!

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रात को सुशीला जब आई तब वह इस भाव से उसके समीप पहुँचा कि वह साधना के पास से कोई सन्देश, अथवा उलाहना कि वह आज क्यों नहीं गया, अथवा पत्र का कुछ उत्तर लाई होगी। लेकिन सुशीला ऐसी कोई चीज नहीं लाई थी। साधना से उसकी काफी बातें हुई थीं, पर उनका चन्द्रनाथ से कोई विशेष सम्पर्क न था। वे प्रायः घर के अन्य सदस्यों और सुशीला के उनसे सम्बन्ध को लेकर थीं।

❀ ❀ ❀ ❀

अगले दिन उसके पहुँचने पर साधना उलाहने के स्वर में बोली—'आप कल नहीं आए, मैंने बहुत प्रतीक्षा की।'

चन्द्रनाथ ने समझ की प्रेरणा से कहा—'नहीं,' फिर चकित भाव से पूछा—'प्रतीक्षा क्यों की, मैंने तो सबेरे ही कहला दिया था।'

'किस से जीजी से ? उन्होंने तो नहीं कहा।'

'नहीं जी, मैंने प्रमोद के हाथ पत्र भेजा था।'

उसने सोचा था कि वह पत्र का जिक्र बिलकुल ही नहीं करेगा, किन्तु साधना की विचित्र शिकायत ने उसे वैसा करने को मजबूर किया।

'कैसा पत्र ? कौन-सा पत्र ? मुझे तो नहीं मिला।'

'क्या तुम्हें पत्र नहीं मिला ? मैंने तो सुबह प्रमोद को दिया था।'

'सच ? प्रमोद ने तो मुझे कोई पत्र नहीं दिया।'

'वह पत्र कुछ ज़रूरी था', चन्द्रनाथ ने खेद के स्वर में कहा।

'ऐसी उसमें क्या बात लिखी थी ? क्या अब बताने से काम नहीं चलेगा ?'

'नहीं, हरेक बात कहने का अवसर होता है।' इसके बाद वह खिन्न भाव से पढ़ाने बैठ गया।

थोड़ी ही देर बाद कमरे के बाहर प्रमोद की आहट मिली। चन्द्रनाथ ने यकायक पढ़ाना बन्द करके उसे आवाज़ दी। वह भीतर चला गया।

'प्रमोद, कल हमने तुम्हें एक पत्र दिया था न ?'

प्रमोद ने उत्तर दिया—हाँ।'

'वह तुमने जीजी को नहीं दिया ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रमोद सकपका गया। वह कभी साधना की ओर देखता, कभी चन्द्रनाथ की ओर; साधना भी उसे स्थिर दृष्टि से देख रही थी। सहसा उसने अर्धभीत-से मन्द स्वर में कहा—'भूल गया था।'

'भूल गए थे, इतना समझा दिया था तो भी। देखता हूँ, तुम कोई होशियारी का काम नहीं कर सकते। पत्र तुम्हारे पास होगा, अभी हमें दे दो।'

प्रमोद चुप था। चन्द्रनाथ ने फिर कहा—'क्यों, क्या पत्र खो गया? तब तुम्हें...'

प्रमोद ने उत्तर दिया—'नहीं पत्र खोया नहीं है।' और वह अपने कोट, कमीज आदि की जेबों में ढूँढने लगा। उसे देर हो जाने पर चन्द्रनाथ ने कहा—'देख ली तुम्हारी होशियारी, पत्र खो गया था तो तुम्हें हमसे कहना चाहिए था।'

प्रमोद ने साधना की ओर देखा; उसके व्यवहार पर वह कठिनता से हँसी रोक पा रही थी। सहसा प्रमोद ने खिसियाहट, क्रोध और चुनौती के स्वर में कहा—'पत्र मेरे पास नहीं है, मैंने जीजी को दे दिया था।'

इस पर साधना ने सरोष स्वर में कहा—'झूठ, मुझे तूने पत्र कब दिया था रे?'

प्रमोद धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में कहा—दिया तो था।

साधना ने अपनी सफाई देते हुए कहा—जीजा जी, तेरी बात का कभी यकीन नहीं करेंगे; कभी कहता है भूल गया, कभी कहता है दिया था।

प्रमोद ने फिर दुहराया—दिया नहीं था?

साधना चिढ़कर बोली—अच्छा प्रमोद, मैं तुम्हारी शिवपुरी वाली बात जीजा जी को सुना देती हूँ।

'सुना दो, मैंने कही ही नहीं थी।' और वह अप्रतिभ भाव से एक अलमारी से सट कर खड़ा हो गया।

चन्द्रनाथ इस भाई-बहिन के झगड़े को ठीक नहीं समझ पा रहा था। किन्तु प्रमोद की मुद्रा और साधना के अर्ध-गम्भीर भाव से उसे आभास हुआ कि उसका पत्र साधना को मिल चुका है। साधना के अन्तिम वाक्य को लक्ष्य करके उसने कहा—यह शिवपुरी वाली बात क्या है भाई?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधना हँसती हुई बोली—वही आपके भट्टे जाने की बात; प्रमोद ने मुझे सुनाई थी !

'झूठ, बिल्कुल झूठ; मैंने कही ही नहीं,' कहता हुआ प्रमोद तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया।

साधना और चन्द्रनाथ दोनों हँस पड़े।

'तुमने उसे झूठ बोलने को कहकर बड़े संकट में डाल दिया''''मैं नहीं समझता था तुम इतनी टेढ़ी हो।'

'आपसे भी ज्यादा।'

'मैं''''मैंने क्या किया ?'

'आपने भट्टे जाने की घटना छिपानी क्यों चाही थी ?'

'उसे प्रकट करने से कोई लाभ न था।'

'यह आप कैसे कह सकते हैं। किसी के घर में क्या हो रहा है, यह जान लेने से उस घर वाले का लाभ न हो तो हानि भी नहीं हो सकती। मेरे बाबू जी बड़े कोमल हृदय हैं; उन्होंने जिस दिन सुना, उसी दिन यह कहला दिया कि ईंटें ढोने का काम बच्चों से न लिया जाय। वास्तव में हमारे यहाँ यह काम नया ही शुरू हुआ है।'

'मुझे खेद है कि मेरे कारण तुम्हारे पिता जी को असुविधा हुई''''लेकिन इससे प्रश्न हल कहाँ हुआ ? हिन्दुस्तान में सैकड़ों, हजारों भट्टों पर बच्चों से इसी तरह काम लिया जाता होगा। यही नहीं, बच्चों को रोक देने से उल्टे उनकी आर्थिक हानि हो सकती है। खाली बालकों को स्कूल भेजने की व्यवस्था तो इस देश में है नहीं।'

साधना चुप हो गई। फिर कुछ देर में बोली—भारत की घोर दरिद्रता का क्या इलाज हो सकता है ?

'इलाज का पहला क़दम यह है कि रोग का उचित निदान किया जाय। क्यों गाँवों के निवासी इतने ग़रीब हैं।'

'जहाँ तक मैं समझती हूँ इसका कोई एक कारण नहीं है। कुछ परिस्थितियाँ हैं, कुछ आलस्य और भले ढंग से रहने की आकांक्षा का अभाव।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'आलस्य कैसा ? गाँव के लोग तो परिश्रमी कहे जाते हैं।'

'समय पड़ने पर काफी परिश्रम कर सकते हैं, पर अपनी खुशी से, और नियम से नहीं। आप जानते हैं, गाँव में कुछ लोग जिनके पास जोतने को खेत नहीं हैं, मजदूरी करके गुजर करते हैं। उनका हाल यह है कि यदि आज के खाने लायक पैसे उनके पास हैं, तो आसानी से कोई काम करने को तैयार नहीं होंगे, उन्हें न कल की फ़िक्र है, न अच्छे ढंग से रहने का चाव; जैसे जीवित रहना ही एक मात्र उनका ध्येय रह गया हो।'

'परिस्थितियों ने उन्हें इतना नीचे गिरा दिया है कि वे मनुष्य बनने का स्वप्न भी नहीं देख सकते।'

'एकदम निरीह बन गए हैं वे, और भाग्य के विश्वासी। जब तक उन्हें कोई मार-मारकर नहीं जगाता तब तक वे अपनी दुरवस्था का अनुभव नहीं कर सकेंगे।'

'उनमें अच्छे जीवन की आकाङ्क्षा पैदा होनी चाहिए।'

'कम-से-कम सादा जीवन की शिक्षा उनके लिए हितकर न होगी। वे क्लिष्ट जीवन के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि शिकायत करना भी भूल गए हैं। पिछले वर्ष उस पार के बहुत से गाँवों में बाढ़ आ गई थी। कैसी भयंकर दशा थी, आपसे क्या कहूँ। दूर-दूर तक कमर-कमर और कहीं उससे भी ज्यादा पानी बढ़ा था। खेत नष्ट हो गए और मवेशियों के खाने के लिए बिलकुल चारा न रहा। कितने पशु मर गए और आदमी भी फ़ाके कर रहे थे। लोगों के मन में दर्द था, पर किसी के मुंह पर किसी की शिकायत का एक शब्द न था।'

'तुमने यह सब स्वयं देखा ? क्या इस पार बाढ़ न थी ?'

'इधर की जमीन कुछ ऊँची है इसलिए दशा उतनी खराब न थी। मैं खुद पिताजी के साथ नाव में बैठकर गई थी।'

कुछ रुककर बोली—उस समय वहाँ के लोगों को देखकर लगता था, जैसे कोई कहीं उनकी चिंता करने वाला नहीं है, और स्वयं उनमें अपने लिए कुछ करने की क्षमता भी नहीं है। उनके लिए जैसे वहाँ न कोई सरकार है, न वहाँ कोई ईश्वर···तब से मुझे सन्देह होने लगा है कि शायद दुनियाँ का कोई विवेकशील शासक नहीं है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'हूँ। अपनी सरकार होती तो शायद कुछ करती।'

'मुझे कभी-कभी इन निरीह ग्रामवासियों पर बड़ी दया आती है। सोचती हूँ, क्या मैं इनके लिए कुछ नहीं कर सकती।'

चन्द्रनाथ उत्तेजना से उठकर खड़ा हो गया, जैसे भीतर के किसी आवेग को दबा रहा हो। फिर अपना ध्यान दूसरी ओर करने की चेष्टा में बोला—क्या तुम सचमुच ईश्वर में विश्वास नहीं करतीं ?

'विश्वास करना चाहती हूँ लेकिन कुछ दिनों से···'

'विश्वास और अविश्वास के बीच की स्थिति बड़ी कष्टप्रद है, है न ?'

"कभी-कभी मैं सोचती हूँ, मनुष्य ने ईश्वर और परलोक की कल्पना जीवन को सार्थक महसूस करने के लिए कर डाली है।'

'लेकिन क्या यह कल्पना जरूरी है ?····क्या हमारा आपसी प्रेम और सद्भाव जीवन को सार्थक बनाने के लिए काफ़ी नहीं है ?'

साधना चुप रही।

कुछ दिनों से मैं सोचने लगा हूँ कि मानव-जाति अन्ततः अपने ही सहारे आगे बढ़ सकती है। उसे अपने ही विवेक और सौहार्द पर निर्भर करके चलना पड़ेगा। बुद्धजी ने कुछ इसी तरह की शिक्षा थी।'

'आप कम्यूनिस्ट हैं क्या ?'

'नहीं; मैं कम्यूनिस्ट नहीं हूँ, यद्यपि उसके आर्थिक आदर्श मुझे बहुत दूर तक ग्राह्य हैं।···असल में मैं अनात्मवादी नहीं हूँ। इतने ऊँचे विचार और संकल्प करने वाला मनुष्य सिर्फ जड़ तत्वों का विकार हो सकता है, यह मुझे विश्वसनीय नहीं लगता। हमारी कला और प्रेम सिर्फ जड़ का स्पन्दन कैसे हो सकते हैं ?'

'होना तो नहीं चाहिए,' कहकर वह मौन हो गई। फिर कुछ देर में बोली-'आपने वह पत्र मुझे क्यों लिखा था ?'

चन्द्रनाथ ने चकित होकर पूछा—कौन-सा पत्र ?

'वही जो आपने प्रमोद को दिया था।'

'यों···ही कोई विशेष वात तो न थी। शायद मुझे तुम्हें पत्र लिखना अच्छा लगता है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'यह अच्छी रही''''तब तो कुछ दिन बाद आप मुँह से बात न करके पत्रों द्वारा ही बातचीत किया करेंगे ।'

इस प्रगल्भ अभियोग से वह संकुचित हो गया ।

साधना कह रही थी—अब कभी ऐसा पत्र न लिखिएगा, और न इस तरह सोचिएगा ही ।

वह खामोश रहा । कुछ देर बाद मुस्कराने की चेष्टा करता हुआ बोला—लेकिन उस पत्र से एक लाभ हुआ ।

'लाभ क्या हुआ ?' साधना ने चौंक कर पूछा । इस बीच में वह एक पुस्तक पढ़ने लगी थी ।

'बहिन-भाइयों का झगड़ा देखने को मिला, यह कम लाभ है ! तुम्हारा यह रूप वैसे देखने को कहाँ मिलता ।'

'खूब ! आप के लिये वह झगड़ा एक तमाशा था ।'

'सचमुच, तुम, इतनी टेढ़ी हँसी कर सकती हो, यह मैं नहीं जानता था ।'

'कहाँ जी, हँसी करने का तो मुझे मौका ही नहीं मिलता । एक तरफ भाई का सम्बन्ध है, दूसरी तरफ जीजी का । मैं भाभी से भी वंचित हो गई, और जीजा जी से भी ।'

चन्द्रनाथ—कोई दूसरा भी वंचित हुआ है, इसका भी कुछ ध्यान है !

साधना हँसने लगी ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चार-पाँच दिन बाद चन्द्रनाथ से मास्टर साहब ने पूछा—आप के मित्र ने उत्तर दिया ?'

'अभी तक तो नहीं; वास्तव में वे पत्र लिखने के चोर हैं।'

'काम ज़रूरी है, समझो तो उन्हें फिर लिख दो। देर होने से लड़का हाथ से निकल सकता है।'

'सो तो ठीक है, अच्छा....'

वह विमर्श करने लगा कि दूसरा पत्र लिखे या न लिखे। कहीं हरिशंकर को यह खयाल न हो कि अरुणकुमार के लिए सब इतने उत्सुक हैं। संभव है कि वह किसी दूसरे योग्यतर व्यक्ति की खोज में हो।

उसे अधिक समय दुश्चिन्ता नहीं करनी पड़ी। मास्टर साहब से बात होने के तीसरे दिन हरिशंकर आ उपस्थित हुआ।

'अरे! तुम इतनी जल्दी कैसे चले आए? तुम्हें तो...'

पुराने अभ्यासवश, चन्द्रनाथ ने देखा, हरिशंकर के आने से उसका हृदय हर्ष से स्पन्दित होने लगा है।

'मैंनें सोचा, तुम्हारी मिस साधना की शादी तय करा-दूँ। जीवन के जिन व्यापारों में मुझे विशेष रुचि है उनमें विवाह का खास स्थान है।'

'छात्र-संघ के जलसे में जाना था न तुम्हें ?'

'जलसा तो हो गया, तुमने पत्रों में पढ़ा नहीं ?'

'अरे हाँ, एक दिन पढ़ा तो था; भूल गया था। कैसा हुआ जलसा ?'

'बड़ा मजा रहा; कम्युनिस्ट लोगों ने विघ्न डालने की बहुत कोशिश की लेकिन बेचारों का कोई वश न चला। हमारे जलसे में उनके जलसे से ड्योढ़ी उपस्थिति थी।'

चन्द्रनाथ चुप रहा। कुछ क्षण बाद हरिशंकर ने कहा—मैं बरेली रुका था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'सच ? अरुणकुमार से भेंट हुई ?'

'भेंट क्यों न होती। लेकिन बड़ा बेढब मामला है, पहले-से कितने बदल गए हैं। कहते थे, शादी के दर्जनों पैगाम आ रहे हैं।'

'तब ?'

'तब क्या, दो ही महत्वपूर्ण बातें हैं। पहले यह बताओ कि लड़की के पिता किस हैसियत के आदमी हैं।'

'भई, इस बारे में मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता, पर हाँ मेरा अनुमान है कि वे काफी धनी आदमी हैं, और साधना उनकी अकेली लड़की है।'

'अकेली लड़की ? और लड़के ?'

'साधना उनकी एक मात्र सन्तान है।'

'ठीक।....अच्छा लड़की देखने में कैसी है।'

'मेरी दृष्टि में तो काफी सुन्दर है। क्या तुम्हारा देखना काफी हो सकता है ?'

'नहीं, देखेंगे तो वह खुद ही। मैंने एक तरकीब सोची है।'

'क्या ?' चन्द्रनाथ ने उत्सुकता से पूछा।

'मैंने महाशय अरुणकुमार को वाद-परिषद् के जलसे में शरीक होने का निमंत्रण दिया है। प्रिंसिपल देव के साथ वह भी आएँगे। वहीं कुमारी साधना भी उपस्थित हो सकती हैं। बल्कि यदि वे कविता आदि करती हों और वहाँ पढ़ कर सुना दें तो और भी अच्छा हो।'

चन्द्रनाथ ने प्रसन्न होकर कहा—यही ठीक है। कविता तो नहीं करतीं, पर हाँ निबन्ध पढ़कर सुना सकेंगी।

'यही ज़रूरी नहीं कि अपनी ही कविता पढ़ें, तुम कोई कविता दे देना। लड़कियों में कविता कुछ ज्यादा आकर्षक चीज़ मालूम पड़ती है।'

'वह इसे स्वीकार करें तब न।'

हरिशंकर के चले जाने पर चन्द्रनाथ मन-ही-मन उसकी प्रशंसा करने लगा। व्यवहार-जगत् में वह कितनी निश्चित सफलता और सफाई से घूमता है! जो काम उसे नितान्त कठिन मालूम पड़ता है, वह हरिशंकर के लिए कितना

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सरल है ! कितनी आसानी से वह एक हिन्दू गृहस्थ के घर की सबसे बड़ी समस्या को, अर्थात् लड़की का विवाह, हल कर देने का आश्वासन दे रहा है!

अरुणकुमार कैसा व्यक्ति है, वह साधना के कहाँ तक योग्य है, यह प्रश्न दिमाग में नहीं उठा। उस समय उसे साधना के वर के रूप में प्राप्त कर लेना ही स्पृहणीय और प्रयत्न करने योग्य ध्येय मालूम पड़ रहा था।

साँझ को साधना के पास पहुँचते ही उसने अपने उत्साह को छिपाने की चेष्टा न करके कहा—बहिन, तुम्हें एक काम करना होगा।

साधना ने चकित दृष्टि से कहा—बैठिए तो, ज़रा सुनूँ क्या काम है।

'तुम जानती हो वाद-परिषद् यहाँ की एक प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था है, उसका वार्षिक जलसा होगा। प्रिंसिपल देव ने सभापति बनना स्वीकार कर लिया है। तुम्हें उसमें एक निबन्ध पढ़ना होगा।'

'मुझे ?' साधना ने अकृत्रिम आश्चर्य से कहा, 'मैं तो कभी किसी सभा-सोसायटी में बोली नहीं, एक-दो बार अपने मिडिलस्कूल के उत्सावों में जरूर भाग लिया था। जलसा कब होगा ?'

'अभी दीपावली के अवसर पर, सिर्फ आठ-दस दिन हैं। तुम्हें अभी से तैयारी करनी चाहिए।'

'लेकिन यह जरूरी नहीं कि मैं निबन्ध पढ़ूँ; मुझसे, सचमुच यह नहीं हो सकेगा।'

'पर तुम्हें करना ही होगा, यह जरूरी है।'

साधना की शायद समझ में नहीं आया। उसने फिर अपने निषेध को दुहराते हुए पूछा—जलसे में कितने आदमी होंगे ?

'चार-पाँच सौ से कम क्या होंगे, प्रिंसिपल देव आ रहे हैं न। सुना है, मुसलमान छात्र और नागरिक भी भाग ले रहे हैं !'

'बाप रे ! मैं इतने आदमियों में कैसे बोल सकती हूँ; असम्भव !'

'असम्भव कुछ नहीं है। आदमियों की संख्या से क्या होता है—ज्यादातर तो बहुत साधारण पढ़े-लिखे लोग होंगे। नहीं-नहीं, तुम्हें जरूर एक निबन्ध

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पढ़ना होगा। आज ही से तैयारी शुरू कर दो। नहीं मानोगी तो मैं मामा जी से कहलाऊँगा।'

'क्या मामा जी से आप ने पूछा था ?'

'हाँ, उनकी राय है; तभी तो मैं कह रहा हूँ।'

कुछ रुक कर साधना घबराहट के स्वर में बोली—अरे भाई तो कोई उपयुक्त विषय भी तो बतलाओ, मैं काहे पर निबन्ध लिखूँगी।

'विषयों की क्या कमी है—"प्रजातंत्र और समाजवाद" "प्रजातंत्र और तानाशाही," "हिन्दू-मुसलिम यूनिटी," "अछूतोद्धार," "हिंसात्मक और अहिंसात्मक क्रान्ति" आदि बहुतेरे विषय हैं।'

साधना—हाँ जी आपके लिए बहुतेरे विषय हैं; मुसीबत तो मुझ जैसों की है। अच्छा आप किस विषय पर लिख बोल रहे हैं।

चन्द्रनाथ—मैं ? मेरा तो ऐसा कोई इरादा नहीं है।

साधना—वाह ! यह कैसे हो सकता है, आप नहीं बोल रहे हैं तो मुझसे बोलने को क्यों कहते हैं। यह अच्छी रही।

'तुम्हारे लिए यह आवश्यक है,' चन्द्रनाथ ने कृत्रिम गंभीरता से कहा।

'जी नहीं, यह नहीं हो सकता, आप स्वयं नहीं बोलेंगे तो कोई दूसरा आप के कहने से क्यों बोलेगा ?'

'बात यह है कि मैं बदायूँ में कभी बोलता नहीं हूँ, यह मेरा नियम-सा है। फिर एक अच्छा निबन्ध हो जाना काफी है, तुम्हारा हुआ तो, मेरा हुआ तो; एक ही बात है।'

साधना ने चन्द्रनाथ पर स्निग्ध दृष्टिक्षेप करके कहा—आप निबन्ध न पढ़ें तो एक कविता ही सुना दें। कविता में तो कोई हर्ज नहीं है।

चन्द्रनाथ—अच्छा देखा जायगा, अपने लिए विषय तो ढूँढो।

साधना—देखा नहीं जायगा, आपको कविता सुनानी पड़ेगी। विषय मैं कल सोचकर बताऊँगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

:३८:

दूसरे दिन जब साधना ने बतलाया कि उसने अपने निबन्ध के लिए विषय 'हिन्दू-मुस्लिम-एकता' चुना है तो चन्द्रनाथ ने कहा—अच्छा है, यद्यपि विषय पुराना है फिर भी इस अवसर के उपयुक्त है, क्योंकि जलसे में मुसलमान भी शरीक हो रहे हैं।

साधना बोली—और कोई विषय मेरी समझ में ही नहीं आया।

'नहीं, विषय बिलकुल ठीक है, ज़रा निबन्ध अच्छा बनना चाहिए।'

'कोशिश तो करूँगी,' यह कहकर वह अपना नित्य का काम लेकर बैठ गई।

दो दिन बाद चन्द्रनाथ ने पूछा—निबन्ध की भी तैयारी हो रही है? काव्यालोचन तो बाद को भी हो सकता है।

साधना—आप उसकी चिन्ता न कीजिए। कोर्स का काम ज्यादा मुख्य है।

'मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा निबन्ध बहुत सुन्दर हो। यह भी एक तरह की परीक्षा है।'

साधना ने कहा—देखिए, जैसी मेरी योग्यता है, वैसा निबन्ध होगा। मैं उसमें किसी की विशेष सहायता नहीं लेना चाहती। आप मेरे कोर्स का काम ज़ारी रखें।

अबतक चन्द्रनाथ साधना के स्वभाव से काफी परिचित हो चुका है, अतः उसने उसकी "किसी की" व्यंजना का बुरा नहीं माना। साथ ही उसने इस बात की आशा छोड़ दी कि वह उसे निबन्ध की तैयारी में किसी तरह की सहायता दे सकेगा। फिर भी कहा—क्या जलसे में पढ़ने के पहले एक बार अपना निबन्ध दिखलाओगी भी नहीं?

साधना ने मुस्कुराने की चेष्टा करते हुए उत्तर दिया—जी नहीं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक दिन वह यकायक पढ़ते-पढ़ते पूछ बैठी—मनुष्य आपस में क्यों झगड़ते हैं ?

चन्द्रनाथ—कार्ल मार्क्स का विचार है कि झगड़े का मूल कारण वर्ग-भेद यानी स्वार्थों का संघर्ष है। लेकिन मैं समझता हूँ कि विचारों की भिन्नता भी झगड़े का एक मुख्य कारण है।

साधना—तभी तो आर्यसमाजी और सनातनी हिन्दुओं तक में तनातनी रहती है।

'और हिन्दू-मुसलमानों में भी। तुमने कभी मौलवियों और आर्यसमाजियों का शास्त्रार्थ देखा है ?'

'नहीं, पर सुना है कि बहस करते-करते लोग लड़ने को तैयार हो जाते हैं।'

'आज से लगभग दस-बारह वर्ष पहले यहीं एक बार शास्त्रार्थ हुआ था। बाप रे! याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।'

'क्यों, क्या सिर-फुटौवल की नौबत आ गई थी ?'

'नहीं। उस समय मैं बारह-तेरह वर्ष का था। मुझे इतना याद है कि लोग बहुत उत्तेजित हो गए थे और यदि उस दिन कलक्टर रोक-थाम न करता तो ज़रूर दंगे की नौबत आ जाती।'

'किस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ था ?'

'कोई ख़ास विषय नहीं था। विषय सिर्फ़ यह था कि हिन्दुओं के वेद सच्चे हैं या मुसलमानों का कुरान। बहस करते हुए मुसलमान मौलवी ने कहा कि वेदों में ईश्वर को मत्स्य या मछली कहकर वर्णित किया गया है। इसपर आर्यसमाजी पंडित बिगड़ कर बोले कि मौलवी साहब, जिस पुस्तक का हवाला दे रहे हैं वह वेद न होकर एक ब्राह्मण है। दूसरे, उस प्रकरण में मत्स्य का अर्थ मछली नहीं है ···।

'मत्स्य का क्या कोई दूसरा भी अर्थ होता है ?'

'भाई, मैं इतना पंडित नहीं हूँ। यों तो आर्य-समाजियों के अनुसार अग्नि, वरुण आदि सभी शब्द ईश्वरवाची हैं और कुछ दूसरा ही अर्थ रखते हैं।'

'हाँ; तो फिर मौलवी साहब ने क्या कहा ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

'मौलवी साहब ने आगे के वाक्यों से दिखलाया कि उस जगह मत्स्य का अर्थ मछली ही हो सकता है क्योंकि वहाँ उसके पानी में रहने आदि के स्वभाव का वर्णन है।'

'फिर ?'

'इस पर पण्डित जी ने कहा कि एक शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिये अरबी का हुरैरा शब्द एक पैग़म्बर का (मुझे ऐसा ही याद है) वाचक भी है और एक दूसरी चीज़ का भी।'

'दूसरी चीज़ क्या ?'

'यह काफी देर में मालूम हुआ। पंडित जी बार-बार मौलवी साहब से कहते रहे कि आप हुरैरा शब्द के अर्थ पर ग़ौर करें। लेकिन जब मौलवी साहब 'मत्स्य' के साधारण अर्थ पर अड़े रहे तो पंडित जी को घोषणा करनी पड़ी कि हुरैरा का एक दूसरा अर्थ भी होता है यानी—"बिल्ली का बाप।" इस पर....'

साधना खिलखिलाकर हँस पड़ी 'बिल्ली का बाप !' ऐसा भी कोई शब्द है क्या अरबी में ?'

चन्द्रनाथ भी हँसने लगा।

'इस पर मौलवी साहब ने कहा कि मेरी मुसलमान पब्लिक को जोश आ रहा है और पंडित जी ने कहा कि मेरी हिन्दू पब्लिक की रगों में भी खून है.. इत्यादि।'

'ठीक ही कहा, पंडित जी भी बहुत तेज़ रहे।'

'बड़े विदग्ध वक्ता थे। हिन्दू जनता तो उन पर मुग्ध थी !'

इस पर साधना ने कहा—'फिर ?'

'फिर क्या, मैं कोई कहानी कह रहा हूँ।'

'और क्या ? कहानी से कुछ कम रोचक थोड़े ही है। हुरैरा का अर्थ है...' कह कर वह वस्त्र से मुख ढककर फिर हँसने लगी।

फिर गम्भीर होकर बोली—आपने तर्क-शास्त्र पढ़ा है न ? क्या चिंतन का कोई "कामन" (सर्व साधारण) प्रतिमान नहीं है जिसके द्वारा लोग मिलकर झूठ और सच का निर्णय कर सकें ?

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ—मैं समझता हूँ जहाँ मानवी मूल्यों का सवाल आ जाता है वहाँ तर्क-शास्त्र काम नहीं देता। फिर ऐसी जगह मनुष्य तर्क के नहीं, पूर्वग्रह और पक्षपात के नियंत्रण में रहता है।

'तब तो इसकी कोई सम्भावना नहीं कि लोगों के मतभेद और झगड़े दूर हो सकें।'

'मतभेद को मैं बुरी चीज नहीं मानता। रूप-रंग की विचित्रता की भाँति विचारों और संस्कृतियों की विचित्रता भी हमारे मानसिक सुख और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। मैं मनुष्य मात्र के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को आदर की दृष्टि से देखता हूँ। किन्तु इस प्रकार की विभिन्नता का अर्थ झगड़ा नहीं है। वास्तव में हममें इतनी उदारता और सहानुभूति होनी चाहिए कि हम एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझ सकें, भले ही हम दूसरों का दृष्टिकोण स्वीकार न करें।'

'किन्तु विचारों की एकता के बिना सहानुभूति कैसे हो सकती है।'

'जब किसी मा का बालक मर जाता है तो हम उससे सहानुभूति के लिए विचारों की एकता की खोज नहीं करते···हम थोड़ी देर के लिये अपने को उसकी जगह रखकर उसकी वेदना को महसूस करने की कोशिश करते हैं। विभिन्न देशों और जातियों के सद्भाव उत्पन्न होने के लिए भी ऐसी ही सहानुभूति अपेक्षित है।' कुछ रुक कर उसने कहा—'क्या कारण है कि हम दूसरे देशों के काव्य-साहित्य का आनन्द ले सकते हैं जबकि उनके नैतिक-धार्मिक विचार हमें निराले प्रतीत होते हैं?'

'साहित्य सचमुच ही विश्व के लोगों को मिलावेवाली शक्ति है।'

'धर्म भी वैसी शक्ति बन सकता है यदि परीक्षक उसके बाहरी रूप पर विचार न करके उसे अनुप्राणित करनेवाली भावनाओं पर ध्यान देने लगें। उपासना और समर्पण की भावना वही है, यद्यपि वह तरह-तरह के आलंबन खड़े करके अपने को प्रकट और चरितार्थ करती है।'

'क्या आप मानते हैं कि उपासना और समर्पण की भावना मनुष्य की एक मौलिक वृत्ति है?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'यह भी एक कारण है कि मैं अभी पूरा अनीश्वरवादी नहीं बन पाया हूँ... एक अनन्त आदर्श की कल्पना करके उस पर निछावर होने की अभिलाषा जैसे मनुष्य का स्वभाव है। तुम्हारा क्या विचार है ?'

'क्या इस अभिलाषा का पात्र कोई सीमित व्यक्तित्व नहीं हो सकता ?'

'तुम कह रही हो कि प्रत्येक प्रेमिक में इस प्रकार की भावना हो सकती है, होती है...'

कुछ रुककर बोला—'लेकिन हमें ससीम प्रेमास्पद की पूर्णता का विश्वास नहीं होता, वह हमें नितान्त निर्दोष, मधुर और सुन्दर प्रतीत होता है। मैं समझता हूँ कि धार्मिक चेतना का विषय केवल मधुर और सुन्दर ही नहीं होता, इसके विपरीत उसमें इन गुणों का न्यूनाधिक अभाव भी हो सकता है। वह हमें नितान्त उदात्त और अपरिमेय मालूम होता है।......न जाने क्यों मनुष्य ऐसी सत्ता या दशा की कल्पना करता है।'

'किन्तु सभी मनुष्य तो ऐसी कल्पना नहीं करते। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि......'

'संसार की सभी जातियों ने ऐसी कल्पना की है। मानव-इतिहास में धर्म जैसी व्यापक शक्तियाँ कम दिखाई पड़ती हैं।'

साधना कुछ रुककर बोली—आपने तो मुझे विचित्र उलझन में डाल दिया।

चन्द्रनाथ—(हँसकर)—'मेरे जैसे व्यक्ति के सम्पर्क से तुम और क्या आशा करती हो ? शेक्सपियर ने भी तो लिखा है—'टु बी ऑर नाट टु बी, दैट इज़ द. क्वेश्चन।''........इन्हीं कारणों से मैं कलात्मक चेतना के अतिरिक्त किसी दूसरी चीज़ से उलझने की कोशिश नहीं करता ! कलम के बाहर सर्वत्र सन्देह ही सन्देह है।'

चार-पाँच दिन बीत गए। इच्छा रहने पर भी चन्द्रनाथ साधना के निबन्ध की तैयारी में कोई सहायता नहीं दे सका, वह उसे विश्वास दिलाती रही कि यह अनावश्यक है किन्तु वह अपने निबन्ध की ओर से उदासीन नहीं रही थी, यह तथ्य चन्द्रनाथ की दृष्टि से छिपा न रहा। मंगल की साँझ को जब उसने साधना को याद दिलाई कि शुक्रवार अर्थात् दीपावली के बीच में सिर्फ दो ही दिन रह

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गए हैं, तब वह अपनी आकुलता प्रकट किये बिना न रह सकी। बोली—

'न जाने जलसे में मैं किस तरह बोल पाऊँगी, मेरा तो अभी से जी काँपता है।'

चन्द्रनाथ—शुरू में ऐसा ही लगता है, लेकिन तुम देखोगी कि यह बिलकुल भी कठिन नहीं है। निबन्ध तैयार हो गया न ?

'हो ही जायगा, उसकी मुझे चिन्ता नहीं है।' फिर जैसे कुछ याद करके कहा—'और आपकी कविता ? आप कोई पुरानी रचना सुनाएँगे या नई लिखी है ?'

'अभी तक मैंने निश्चय नहीं किया है कि कविता सुनाऊँ या नहीं, बदायूँ में मैंने कभी कविता पढ़ी ही नहीं।'

'यह नहीं हो सकता, आपको कविता सुनानी होगी ? मैं अपनी क़सम.......'

'ओफ, इतनी बड़ी बात ! वैसे तुम कहोगी तो क्या मैं बिना माने रह सकूँगा। किन्तु तुम्हें सोचना चाहिए....'

'मैंने सब सोच लिया है, इतने शर्मीले बनने से काम न चलेगा। कविताएँ लिखेंगे आप, सुनाने क्या कोई दूसरा जायगा।'

चन्द्रनाथ—(हँसकर)—तुम सुना दिया करना।

'मुझे साथ भी रखेंगे आप जो मैं सुना दिया करूँगी !' कुछ रुककर, "मैंने अभी तक आपका कविता-पाठ सुना भी नहीं है, इस लिए आपको जरूर सुनाना होगा।'

उसी समय प्रमोद कमरे में आया और साधना के पास खड़े होकर उसकी कुर्सी में झुकने लगा। साधना ने चन्द्रनाथ को सम्बोधित करके कहा—जीजा जी, प्रमोद आपसे कुछ कहना चाहता है।

प्रमोद ने जोर से निषेध करते हुए कहा—नहीं।

'नहीं कैसे, फिर शाम मुझसे क्यों कह रहा था ?'

प्रमोद संकट में पड़ गया। साधना के कानों के पास मुँह ले जाकर उसने धीरे से अनुनय के स्वर में कहा—तुम कह दो।

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चन्द्रनाथ ने न सुनने का बहाना करके कहा—क्या बात है महाशय प्रमोद, क्या साधना जीजी की शिकायत करनी है ?

'नहीं,' कहकर प्रमोद हँसने लगा, अब वह और भी जोर से झुककर साधना का कन्धा दबाने लगा।

विवश होकर साधना को बताना पड़ा। प्रमोद का मित्र नन्दन जलसे में खड़े होकर एक कहानी सुनाएगा। इसलिए वह चाहता है कि वह भी कुछ सुनाए। यह गाना अच्छा जानता है इसलिए यह कविता सुनाएगा। चन्द्रनाथ को चाहिए कि उसके लिये एक कविता लिख दे। कविता का विषय भी प्रमोद ने तय कर लिया है—"दीपावली"।

:३९:

दीपावली के दिन चन्द्रनाथ जलसे के निश्चित समय के लगभग एक-दो घंटे पहले मास्टर साहब के घर पहुँचा। वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और स्पष्ट ही बहुत उत्साहित थे।

चन्द्रनाथ को देखते ही उन्होंने कहा—तुम जाकर जरा साधना को तैयार करो। उसे कुछ भी पता नहीं, और ज़िद कर रही है कि खादी की साड़ी पहन कर जायगी। मेरी समझ में नहीं आता उसे किस तरह समझाऊँ।

'घबराइए नहीं, मैं सब ठीक किए देता हूँ।'

चन्द्रनाथ ऊपर चल दिया। साधना अभी तक प्रमोद को सजाने में लगी हुई थी, मामी भी उसी के कमरे में मौजूद थीं। चन्द्रनाथ को देखकर वे चलने को उद्यत हो गईं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ ने उन्हें लक्ष्य करके कहा—ठहरिए, जाती कहाँ हैं। आपके बिना इन लोगों को कपड़े पहनना कौन बताएगा ?

'आखिर आप जीजी को नहीं ही लाए,' साधना ने प्रमोद की जेब में एक सुन्दर रुमाल खोंसते हुए कहा।

'क्या करूँ भाई, मैंने तो काफी कोशिश की, पर इजाज़त नहीं मिली।'

'पढ़े-लिखे लोग इतने परावलम्बी हों तो कैसे काम चलेगा।'

वास्तव में चन्द्रनाथ ने सुशीला को ले जाने के लिए विशेष यत्न नहीं किया था। वह जानता था कि इससे भाभी के बुरा मानने की सम्भावना है, इसलिए उसने इस प्रश्न को न उठाना ही ठीक समझा। आर्थिक स्वतन्त्रता न होने पर मनुष्य को कितनी तरह अपनी इच्छाओं को दबाकर रखना पड़ता है, इसे साधना नहीं समझ सकती थी; इसलिए चन्द्रनाथ ने उसके अधिक्षेप का कोई उत्तर नहीं दिया।

चन्द्रनाथ के कहने से मामी रुक गईं, पर थोड़ी ही देर में हास्यगर्भित मुख लिए अपने कमरे में चली गईं। चन्द्रनाथ ने साधना को सम्बोधित करके कहा—देखो वहिन, आज तुम्हें मेरी पसन्द के कपड़े पहनने पड़ेंगे।

साधना—देखिए, मैंने पहले ही खादी की साड़ी निकाल रखी है।

'बहस खादी से नहीं, मेरी पसन्द से है, और उसके लिए मुझे तुम्हारा पूरा बक्स देखा पड़ेगा।'

'बक्स आप देख सकते हैं, लेकिन खादी की मेरे पास इससे अच्छी और कोई साड़ी नहीं है, आपको व्यर्थ परेशानी होगी।'

'पसन्द करने में हमेशा मेहनत और परेशानी होती है, लेकिन करना ही पड़ता है। तुम जरा बक्स खोलो।'

'पर मुझे और काम भी तो हैं। भाई, अभी मैंने बाल तक ठीक नहीं किए हैं।'

'तुम सुबह से कर क्या रही थीं, अजीब लड़की हो,' चन्द्रनाथ ने खीझकर कहा।...'अच्छा तुम जाकर अपना काम करो, हम और प्रमोद पसन्द कर लेंगे, क्यों प्रमोद ?' प्रमोद ने आश्वस्त स्वर में कहा—'हाँ, मैं आपको सब साड़ियाँ दिखा दूंगा, मुझे मालूम है।'

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधना चली गई। प्रमोद ने बक्स खोलकर साड़ियाँ दिखानी शुरू कीं। चन्द्रनाथ ने एक हरी और एक गुलाबी रेशमी साड़ी अलग रखवाकर कहा—'बस, अब बक्स बन्द कर दो।' साधना के आने पर वह उससे बोला—'लो बहिन, जरा दोनों साड़ियाँ "ट्राई" करो....'

'लेकिन ये तो रेशम की हैं; मैं रेशमी साड़ी नहीं पहनूँगी,' साधना ने चकित भाव से कहा।

चन्द्रनाथ—रेशमी न पहनना, पर मेरी पसन्द की तो पहनोगी; यह पहले ही ठहर चुका है।

साधना ने अनखना कर कहा—आप बड़े जिद्दी हैं, जब आप खादी पहनते हैं तो मुझे क्यों नहीं पहनने देते ?

'मैं खादी का प्रेमी हूँ, अंधभक्त नहीं। पहनो, झटपट पहनो; व्यर्थ करने को समय नहीं है।'

लेकिन साधना चन्द्रनाथ के सामने साड़ी कैसे पहने ?

बोली—अच्छा तो आप जरा उस कमरे में चले जाइए, प्रमोद तू भी जा।'

दो-तीन मिनट बाद साधना ने कमरे के किवाड़ खोलकर कहा—'लीजिए, देखिए।'

उसने गुलाबी साड़ी पहनी थी। चन्द्रनाथ ने उसकी ओर दृष्टि करके कहा—वाह! बहुत ठीक; प्रमोद, जरा अपनी जीजी के दर्शन कर लो।

साधना का चेहरा लज्जाभरी मुस्कुराहट से लाल हो उठा। उसने तेजी से किवाड़ बन्द करते हुए कहा—रहने दीजिए, अब मैं आपको दूसरी साड़ी पहनकर 'नहीं दिखाऊँगी।

चन्द्रनाथ ने किवाड़ खटखटाकर कहा—अरे नहीं, किसी से कुछ कहा भी तो हो।....झटपट पहन लो।

एक मिनट बाद उसने फिर खटखटाया—पहन ली न ? खोलो।

'खोलती हूँ जी, जरा सब्र करो।' और उसने हरी साड़ी पहनकर चटखनी सरका दी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ ने निर्णय देते हुए कहा—यह साड़ी भी अच्छी है, पर हमें पहली छवि ज्यादा पसन्द है, क्यों प्रमोद ?

प्रमोद—हाँ, उस साड़ी में जीजी ज्यादा गोरी लगती हैं।

चन्द्रनाथ ने उससे कहा—'हुश्।' साधना तिनक कर बोली—'मैं नहीं बदलूँगी अब साड़ी, इसी को पहनकर चलती हूँ। आप बार-बार तंग करते हैं।'

चन्द्रनाथ ने अनुनय के स्वर में कहा—पहन लो बहिन, यह साड़ी जरा शरीर पर कम 'फ़िट" होती है।

साधना को मानना पड़ा। वेश-भूषा के सम्बन्ध में नारी पुरुष की पसंद का तिरस्कार नहीं कर सकती।

कुछ देर हो जाने पर भी वे उत्सव में ठीक समय पर पहुँचे। अभी प्रिंसिपल देव नहीं आए थे, एक मित्र के यहाँ "लञ्च" कर रहे थे। पर वे आने ही वाले थे।

सभापति की कुर्सी के दाएँ-बाएँ महिलाओं एवं वक्ताओं के लिए कुर्सियाँ लगी थीं, शेष जगह में, सभापति के सामने, भूमि पर बिछावन था। चन्द्रनाथ ने देखा कि पंडित हरिशंकर एक कुर्सी पर डटे हुए हैं। वह उन्हीं के पास जा बैठा। मंत्री ने विशेष आदर से साधना को पहले ही बिठा दिया था। क्षणिक विमर्श के बाद प्रमोद ने निश्चय कर लिया कि वह पुरुष है और जीजी का साथ छोड़कर चन्द्रनाथ की बग़ल में जा बैठा।

पाँच-सात मिनट के बाद प्रिंसिपल देव की कार आ पहुँची। साथ में अरुण-कुमार भी था।

सब लोग उठ खड़े हुए। श्रीप्रसाद कॉलेज में पढ़ने वाले प्रायः सभी विद्यार्थी वहाँ उपस्थित थे। उनमें से अधिकांश से प्रिंसिपल देव का व्यक्तिगत परिचय था और वे अपनी मधुर मुस्कुराहट से सब के अभिवादन का उत्तर दे रहे थे। हरिशंकर ने बड़े तपाक से हाथ मिलाकर अरुणकुमार को अपने पास बिठा लिया।

कुछ ही मिनट में कार्यवाही शुरू हो गई। मंत्री ने खड़े होकर प्रिंसिपल देव का परिचय देना अनावश्यक बताकर भी लम्बा-चौड़ा परिचय देते हुए

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उनके सभापति चुने जाने का प्रस्ताव किया; हरिशंकर ने उठकर समर्थन किया। प्रिंसिपल देव ने सबको धन्यवाद देते हुए सभापति का आसन ग्रहण कर लिया। उपस्थितों ने ताली पीट दी।

अब जलसे का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले एक पंडित जी ने हार-मोनियम पर भजन गाया। कालेज के लड़कों को छोड़कर सबने उसे पसन्द किया। इसके बाद एक छात्र ने "वायलिन" बजाया। प्रिंसिपल देव बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उसके समाप्त करने पर उन्होंने इस छात्र की ओर देखकर मुस्कुराते हुए ताली बजाई जिसका तुमुल अनुकरण हुआ। अब एक वक्ता ने "दीपावली का उद्‌गम और उपयोगिता" पर व्याख्यान देना शुरू किया।

हरिशंकर और अरुणकुमार को स्पष्ट ही उक्त विषय से कोई दिलचस्पी न थी, वे दोनों बातें कर रहे थे। हरिशंकर ने साधना को चन्द्रनाथ के साहचर्य से पहचान लिया था, अपना संदेह मिटाने को उसने उससे पूछ भी लिया था। अरुणकुमार से बातचीत शुरू करने पर उसका सबसे पहला काम उसे साधना की उपस्थिति की सूचना देना था।

'"आर्डिनरी" (साधारण) है', अरुणकुमार ने साधना को देखने पर कहा।

'क्या कहते हो', हरिशंकर ने कृत्रिम आश्चर्य से कहा, 'आर्डिनरी बताते हो, यहाँ कोई दूसरी भी ऐसी है ?'

अरुणकुमार चुप रहा।

'ऐसी लड़की, और फिर इतना रुपया! भाई अरुण, तुम बड़े "लंकी" (भाग्यवान) हो।'

"लक" तो हमेशा मेरे साथ रही है। तुम जानते ही हो मैंने कम्पेटीशन (प्रतियोगिता परीक्षा) के लिए कितना कम पढ़ा था।'

'तो फिर मिठाई पक्की है न ? ठीक-ठीक बता दो।'

'अरे यार, तुम्हें मिठाई की ही पड़ी रहती है। उस दिन तो खिलाई ही थी, पेट नहीं भरा...'

'वह मिठाई तो उसी दिन पच गई, उसी वक्त, महाशय।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दीपावली का ऐतिहासिक और नैतिक विवेचन काफ़ी देर चल चुका था। कुछ लोगों को वह पसन्द आ रहा था, तो दूसरे लोग उससे ऊब रहे थे। अंत में लोगों को पूरे उत्साह से दीपावली मनाने का उपदेश देकर वक्ता महाशय बैठ गए। छात्रों ने, शायद व्याख्यान से मुक्ति पाने की खुशी में, जोर से करतल-ध्वनि की।

अब मंत्री महोदय उठकर साधना के पास गए। उसने घबराकर कहा—'अभी नहीं, अभी और लोगों को बोलने दीजिए।' मंत्री जी असमंजस में पड़ गए। हरिशंकर के पास आकर बोले—'शर्म्मा जी उठिए, साधना जी अभी मना कर रही हैं।'

'पागल हुए हो, पहले बच्चों का प्रोग्राम होने दो, उसके बाद मैं खड़ा हो जाऊंगा। मैं साधना जी थोड़े ही हूँ।'

मंत्री ने नन्दन का नाम पुकारा। चन्द्रनाथ ने देखा, इससे प्रमोदचन्द्र चञ्चल हो उठे।

किंतु नन्दन को कोई परवाह न थी, वह शायद जलसों में बोलने का अभ्यस्त था। देखने में वह प्रमोद से दूना लगता था। गोरा-गोरा और अत्यन्त गंभीर, मानो हँसना जानता ही नहीं।

आते ही उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया—'मिस्टर प्रेसिडेण्ट, बहनो और भाइयो! मैं स्पीच नहीं देना चाहता, बल्कि एक कहानी सुनाकर आपका मनोरंजन करना चाहता हूँ। कहानी का हेडिंग यानी शीर्षक है "मिट्टी की लाश"।' और उसने कहानी सुनानी शुरू की। हँसते-हँसते लोगों के पेट में बल पड़ गए, पर स्वयं नन्दन को हँसी नहीं आई। उसके सुना चुकने पर प्रिंसिपल साहब ने उसकी पीठ ठोंक दी।

अब प्रमोद की पुकार हुई। चन्द्रनाथ ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा—'देखो, नन्दन की तरह बोलना, घबराना नहीं।' पल भर में वह स्टेज पर पहुँच गया और उसने ठीक नन्दन की भाँति श्रोताओं को सम्बोधित करके कविता कहनी शुरू कर दी। यद्यपि अभी दिन ही था फिर भी जब उसने गाया—

'ऊपर दिखलाई देता है, तारों भरा हुआ आकाश।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नीचे दीपभरा भू-मण्डल करता है उसका उपहास।'

तो लोगों ने वाहवाही देकर ताली पीट दी।

अगले वक्ता या पाठक, जैसा कि मन्त्री ने अपनी परिचयात्मक स्पीच में बतलाया, पंडित हरिशंकर एम० ए० थे।

'वे बदायूँ के सर्व-श्रेष्ठ कहानी लेखक और मर्मज्ञ साहित्यिक हैं। माननीय प्रिंसिपल साहब को बदायूँ में खींच लाने का श्रेय बहुत-कुछ उन्हीं को है। बदायूँ को उन पर गर्व है...। अब वे आपके सामने एक मनोरंजक कहानी पढ़ेंगे।'

सुनाने से पहले हरिशंकर ने कहानी-कला पर एक छोटी-सी वक्तृता दी, जिसका सारांश इस प्रकार था, 'कहानी की जान उसकी "रियलिज्म" (यथार्थानुकारिता) होती है। सफल कहानीकार वास्तविकता की तसवीर खींच देता है जिसे देखकर लोग फड़क उठें और कहें कि "हाँ, दुनियाँ ऐसी ही है।" कहानीकार की महत्ता का माप उसका विश्व की यथार्थता का अधिकार है, न कि उसकी स्वप्न देखने की शक्ति। मुझे विश्वास है कि मेरे ये शब्द बदायूँ के उदीयमान लेखकों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।' यह कहने के पश्चात् हरिशंकर ने कहानी पढ़कर सुनाई। कहानी का शीर्षक था, "विवेक और भावुकता।" रीता के दो सहपाठी, कुमार और दिलीप, उससे प्रेम करते हैं। रीता दोनों के ही प्रति आकृष्ट है, पर उसका कुमार के प्रति अधिक खिचाव है। वे दोनों प्रतियोगिता परीक्षा में बैठते हैं। दिलीप सफल होता है, कुमार असफल। रीता के सामने समस्या उठ खड़ी है, वह किसे अपना साथी बनाए? अन्त में उसका विवेक भावुकता पर विजयी होता है और वह दिलीप से विवाह कर लेती है। इस पर कुछ लड़कियाँ उसकी बुराई करती हैं। रीता की एक विवाहित सखी उनसे झगड़ती है और जाकर रीता को बधाई देती है। वह कहती है—'बहिन, मैं मानती हूँ कि भावना का महत्व है, लेकिन देखकर चलना भी तो कम ज़रूरी नहीं है। प्रेम केवल भावना पर आश्रित नहीं रहता, वह परिस्थितियों पर निर्भर करता है। और जहाँ तक मुझे मालूम है, गरीबी से बढ़कर सुख और शान्ति की विघातक कोई दूसरा चीज़ नहीं है। इसलिए आज मैं तुम्हें हृदय से बधाई देने आई हूँ।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहानी पसन्द की गई। अब साधना की बारी थी। चन्द्रनाथ बड़े ध्यान से उसके बढ़े हुए उद्वेग और घबराहट को देख रहा था। किन्तु चाहने पर भी वह उसे किसी प्रकार आश्वासन देने में असमर्थ था। साधना उठकर खड़ी हुई; क्षण भर को उसकी दृष्टि चन्द्रनाथ की दिशा में मुड़ी, और फिर वह मन्द किन्तु संकल्प-प्रेरित डगों से सभापति की मेज़ के पास पहुँच गई।

चन्द्रनाथ को लगा कि साधना की देह-यष्टि काँप रही है; उसे अपना प्रयाग के कवि-सम्मेलन का अनुभव याद आया। इसी समय साधना ने एक छोटा-सा पर्चा निकाला। चन्द्रनाथ भय और आश्चर्य से सिहर उठा—साधना निबन्ध पढ़ने नहीं, स्पीच देने जा रही थी।

उसने बोलना शुरू कर दिया—'सम्मान्य सभापति, भाइयो और बहिनो!' उसकी काँपती हुई आवाज़ सदैव से अधिक कोमल और आकर्षक थी। चन्द्रनाथ का हृदय भय-मिश्रित आनन्द से झंकृत हो उठा। उसने सन्तोष से देखा कि साधना काफ़ी सुन्दर लग रही है।

वह कह रही थी—'आज दीपावली है। दीपावली का अर्थ है दीपकों की अवली या कतार। आज के दिन दीपकों की लाइनों की लाइनें, हज़ारों कतारें, जलाई जाती हैं। इसीलिए इस त्योहार का नाम है दीपावली। यदि आज सिर्फ दो-चार दीपक जलाए जाने का नियम होता तो उसका नाम दीपावली न होता'''।

'बहुत से दीपक क्यों जलाये जाते हैं? क्योंकि एक-दो दीपकों से शोभा नहीं होती। ठीक इसी तरह मनुष्य की भी अकेले शोभा नहीं होती'''

'मनुष्य अकेला नहीं रह सकता; वह अकेलेपन से घबराता है। वह अन्य मनुष्यों के साथ रहना चाहता है, समाज में रहना चाहता है; वह सामाजिक प्राणी है। अकेला मनुष्य अपने को असंपूर्ण पाता है, क्योंकि आनन्द पूर्णता में है। इस पूर्णता की प्राप्ति के लिए वह अपने को समाज के अनेक बन्धनों से बाँधता है। क्यों बांधता है इसका ठीक जवाब नहीं दिया जा सकता।

'सच तो यह है कि बन्धन किसी को भी प्रिय नहीं है। फिर मनुष्य बन्धनों में क्यों बंधता है? इसलिए कि उसे प्यार की आवश्यकता है। सिर्फ प्यार का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बन्धन ही ऐसा है कि जिसमें हम अपने को जान-बूझकर बाँधते हैं…'

श्रोतागण मुग्ध भाव से सुन रहे थे। चन्द्रनाथ ने देखा कि अरुणकुमार की की दृष्टि साधना पर है। वह बोल रही थी—

'इससे सिद्ध होता है कि प्यार करना मनुष्य का स्वभाव है। समाज की सत्ता इस बात की द्योतक है कि मनुष्य प्यार किए बिना नहीं रह सकता। यदि यह बात सच है तो फिर कोई वजह नहीं है कि जर्मन अंग्रेजों से लड़ें, जापानी चीनियों से लड़ें, हिन्दू मुसलमानों से लड़ें….'

कई जगह करतल-ध्वनि हुई।

'किन्तु मेरे यथार्थवादी मित्र कहेंगे कि लड़ाई तो होती है, हो रही है; लड़ाई वास्तविकता है, उसे मानना ही पड़ेगा। हाँ, लड़ाई होती है, लेकिन क्यों? इसलिए कि एक-दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते, इसलिए कि लोग एक-दूसरे को प्यार करने का संकल्प नहीं करते। आप जानते हैं कि हिन्दुओं में बहुत से विवाह वर-कन्या की सम्मति के बिना होते हैं; फिर भी वर और वधू आजन्म एक-दूसरे को प्यार करते हैं। क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें जन्म भर साथ रहना है, और इसलिए एक-दूसरे को समझने की कोशिश करते हैं। किसी भी प्रकार के विवाह में यह कोशिश आवश्यक है। अगर हिन्दू-मुसलमान भी एक दूसरे की भावनाओं से सहानुभूति करें, तो अवश्य ही परस्पर प्रेम से रह सकते हैं…'तब मुसलमान देख सकेंगे कि हिन्दुओं के कृष्ण मधुर हैं, वे कृष्ण जिनकी वंशी ने सैकड़ों कवियों को सांगीतिक प्रेरणा दी है, जिनके व्यक्तित्व ने प्रेम की अच्छी से अच्छी कविता को जन्म दिया है, जिन्होंने हमारे देश की कल्पना को सुन्दर और सजीव बनाया है। तब हिन्दू देखेंगे कि मुसलमानों के हठ-पूर्ण एकेश्वरवाद में एक विचित्र शक्ति है, और उनकी संगठित नमाज में अपूर्व सैनिक आकर्षण।'

अन्त में उसने कहा—

'आज दीपावली है, आज आप हज़ारों दीपक जलाएँगे। किन्तु ये दीपक जड़ हैं, इनका प्रकाश जड़ है, यह काफी नहीं है। आवश्यकता है चेतन दीपक जलाने की। अपने हृदयों को प्रेम के प्रकाश से भरिए, अपने मुख-मण्डलों पर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रेम की ज्योति जलाइए। हमारे देश के असली दीपक यहाँ के निवासी, यहाँ के हिन्दू-मुसलमान हैं। हमारी वास्तविक दीपावली तब होगी जब हमारे भारत के सारे लोग अपने मुखों से प्रेम की ज्योति विकीर्ण करते हुए हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी तक एक लाइन में खड़े हो जाएँगे और चीन, जापान, योरप, अफ्रीका आदि देशों के निवासी अपने पहाड़ों की सर्वोच्च चोटियों पर खड़े होकर हिन्दुस्तान की ओर देख कर कहेंगे—"आज वहाँ क्या हो रहा है, यह कैसा प्रकाश फूट रहा है!"

भाषण समाप्त हो गया। श्रोताओं ने बड़ी देर तक उत्साह और बल से करतल-ध्वनि की।

साधना के मुख पर पसीना झलकने लगा था, उसे पोंछती हुई वह अपनी जगह पर जा बैठी। शीघ्र ही उसकी दृष्टि चन्द्रनाथ की दृष्टि से मिली; वह प्रसन्न मुद्रा से उसकी ओर देख रहा था।

उसी समय मंत्री ने श्रोताओं को सम्बोधित करके कहा—'अब श्री चन्द्रनाथ एक कविता पढ़कर सुनाएँगे।'

चन्द्रनाथ झिझक रहा था। साधना के इतने सुन्दर भाषण के बाद वह कविता पढ़कर क्या करेगा? किन्तु उसी समय उसे साधना से उठने का संकेत मिला—उसका नाम नाम पुकारे जाने से वह स्पष्ट ही खुश हो रही थी। वह उठ खड़ा हुआ।

श्रोतृ-मण्डली में थोड़ी गड़बड़ी हो रही थी, साधना के रोचक और भावुकतापूर्ण भाषण से थके हुए लोग जैसे साँस ले रहे थे। चन्द्रनाथ धीरे-धीरे स्टेज पर पहुँचा, और धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में सबको सम्बोधित करके बोला—

'अपनी बहिन के इतने सुन्दर भाषण के बाद मुझे अपनी कविता अनावश्यक सी लगती है; किन्तु फिर भी, मंत्री जी से वादा कर लेने के कारण, वह मुझे पढ़नी ही पड़ेगी। आप उसे अभी की वक्तृता का पद्यात्मक उपसंहार-मात्र समझें।' और उसने कोमल एवं गम्भीर स्वर में गाया—

जाग रे युग, जाग!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

श्रोतागण यकायक शान्त हो गए, जैसे कहीं सुदूर से कोई यंत्र झनझना उठा हो।

कविता में विश्वजन के लिए उद्‌बोधन था—घृणा की काली रात से, द्वेष के भयावह सपनों से और युद्ध के ज्वर से जागने और अपने को मुक्त करने का। उसमें जड़ ऐश्वर्य और शक्ति के लिए होने वाले युद्ध और संघर्ष को और विश्व की अशांति के मूल कारण राष्ट्रों और वर्गों के विभाग को भूलने का उपदेश और आह्वान था। अंतिम पद्य में कृत्रिम भेदों को भुलाकर तथा गर्व और मद की ज्वालाओं को बुझाकर हृदय के तारों पर एकता का राग बजाने का संदेश या सलाह थी।

चन्द्रनाथ की कविता के बाद एक मुसलिम युवक की गज़ल हुई। अन्त में प्रिंसिपल देव ने बोलते हुए कहा—'आप लोगों ने जो आज मुझे यहाँ उपस्थित होने का अवसर दिया उसके लिए मैं बहुत कृतज्ञ हूँ। कॉलेज के बाहर अपने को अपने छात्रों के बीच में पाकर मुझे बेहद खुशी होती है। आज तो मेरी खुशी के अनेक कारण उपस्थित हो गए हैं। आप विश्वास करेंगे कि आपके वक्ताओं के स्टैण्डर्ड से मैं प्रभावित हुआ हूँ। विशेषतः कुमारी साधना का भाषण सुनकर तो मुझे बहुत ही संतोष और आनन्द हुआ (करतल ध्वनि)। समय आने वाला है जब महिलाएँ पुरुषों के साथ ही नहीं होंगी बल्कि उनसे आगे निकल जाएँगी (तालियाँ)। सज्जनो! मुझे यह देखकर बड़ा सन्तोष हुआ कि बदायूँ के युवक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर सोचने लगे हैं। मिस्टर चन्द्रनाथ ने अपनी सुन्दर कविता में कहा कि हमें राष्ट्र और वर्ग के भेदों को भूल जाना चाहिए। मैं समझता हूँ, यही ठीक मार्ग है। आजकल युवकों में साम्यवाद का फैशन-सा चल पड़ा है। मैं इसके विरुद्ध हूँ।

विभिन्न वर्गों में वैमनस्य फैलाने से कोई लाभ न होगा। मज़दूर हड़ताल करते हैं, उससे उनके मालिकों की तो हानि होती है और देश की भी। इसलिए मैंने पिछली बार जमशेदपुर की हड़ताल का विरोध किया था। मिस्टर इनायत हुसैन की ग़ज़ल मुझे बहुत पसन्द आई। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे उर्दू साहित्य से उतना ही प्रेम है जितना हिन्दी या अंग्रेजी लिट्रेचर से

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लेकिन मैं नहीं समझता कि 'हिन्दुस्तानी' नाम की वर्णसंकर भाषा के उत्पन्न करने से कोई लाभ होगा......

'मैं समझता हूँ, अभी हमें काफी दिनों तक अंग्रेजी को उच्च शिक्षा का माध्यम रखना पड़ेगा। मेरा आशय यह है कि हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी सब भाषाएँ भारत में समान्तर रूप में चलनी चाहिए। इस समय अंग्रेजी शिक्षित भारतीयों की राष्ट्रभाषा है; मैं नहीं समझता, भविष्य में भी उसके राष्ट्रभाषा रहने में कोई बाधा है। वस्तुत: अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय "लिंग्वा फ्रांका" है और अंग्रेजों के विरोध की सनक में अंग्रेजी का विरोध करना हमारा पागलपन होगा.......'

जलसा समाप्त हुआ। प्रिंसिपल देव और अरुणकुमार शीघ्र ही कार में बैठ गए। चन्द्रनाथ खड़े होकर हरिशंकर से बातें करने लगा। हरिशंकर ने कहा—मुझे धन्यवाद दीजिए, और मिस साधना को बधाई; मैंने मामला बिलकुल तय कर दिया है।'

चन्द्रनाथ ने हँसते हुए कहा—सिर्फ धन्यवाद! इतने में ही संतोष कर लोगे।

एक ओर मास्टर साहब, साधना और प्रमोद खड़े थे। लोग अभी निकलकर जा रहे थे। इसलिए यह कठिन था कि वे किसी की प्रतीक्षा में खड़े हैं अथवा यों ही। चन्द्रनाथ ने हरिशंकर से कहा—'चलो, मास्टर साहब से परिचय करा दूँ।'

हरिशंकर ने दुहराया, 'चलो'। उसने जाकर मास्टर साहब को प्रणाम किया। चन्द्रनाथ ने साधना से कहा—यह हमारे मित्र हैं, पण्डित हरिशंकर एम० ए०......

साधना ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया।

'आज आपकी स्पीच सबसे अच्छी रही, बहुत पसन्द की गई,' हरिशंकर ने प्रतिनमस्कार के बाद कहा। साधना संकुचित हो गई।

'आपको वर पसन्द आया ?' हरिशंकर ने मास्टर साहब को अलग करके पूछा।

'मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ', उन्होंने उत्तर में कहा, 'आपने हमारा बहुत बड़ा काम किया है, बड़ी भारी चिन्ता से मुक्ति दी है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हरिशंकर—यह मेरा कर्त्तव्य ही था।

मास्टर साहब—कल चार-पाँच बजे हमारे घर आइएगा, सुविधा से बातचीत होगी। वहीं चाय भी पीजिएगा। (चन्द्रनाथ से) आप इन्हें लेते आइएगा।

चन्द्रनाथ ने सिर हिला कर कहा—'अच्छा।' हरिशंकर ने भी स्वीकृति दे दी।

:४०:

अरुणकुमार के साथ सम्बन्ध स्थिर करने की कठिनाई ने जिस प्रश्न के लिए मस्तिष्क में अब तक अवकाश नहीं दिया था, वह प्रश्न, उस सम्बन्ध में तय हो जाने की संभावना से, आज सहसा चन्द्रनाथ के मन में एक समस्या का रूप लेकर उठ खड़ा हुआ।

अरुण कुमार स्वस्थ है, सुरूप है, अच्छे सरकारी पद पर नियुक्त है, इस दृष्टि से उसमें कोई कमी नहीं। पर क्या यह यथेष्ट है? क्या साधना उसे पाकर सन्तुष्ट हो सकेगी? वह साहित्य-प्रेमी नहीं है, इतना ही नहीं; दूसरे प्रकार का भी विद्यानुराग उसमें नहीं दिखाई देता। हरिशंकर के समीप बैठकर उसने जो उनकी वातचीत सुनी उससे यही अनुमान होता था। और फिर रुपए की बात" यह चन्द्रनाथ को बहुत ज्यादा खटकती है।

वह यह जानने को उत्सुक हो उठा कि स्वयं साधना का इस सम्बन्ध के प्रति क्या रुख है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

फिर सहसा उसे मास्टर साहब का अन्तिम वाक्य याद पड़ा—'मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ।' उससे यह ध्वनि निकलती थी कि अब अनिश्चय ही नहीं, चिन्ता और विमर्श के लिए भी कोई जगह नहीं है और बार-बार सोचने पर चन्द्रनाथ को लगा कि मास्टर साहब का मनोभाव ही परिस्थिति की यथार्थता का संकेतक है। यदि अरुणकुमार की ओर से कोई बाधा नहीं हुई तो सम्बन्ध तय ही है—और उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन लोगों के सामने कोई दूसरा विकल्प मौजूद नहीं है। इस सम्बन्ध की संभावना तभी टल सकती है जब अरुणकुमार से ज्यादा योग्य या ग्राह्य पात्र मिल सके। लेकिन ऐसा पात्र मिलने की कोई संभावना नहीं है, और इसलिए...

पर क्या साधना को इस सम्बन्ध से सन्तोष होगा ? न जाने क्यों उसके अन्तर से प्रतिध्वनि निकलती है—"नहीं"। कम-से-कम यह निश्चित है कि वह स्वयं इससे संतुष्ट नहीं है और क्योंकि वह साधना के इतना निकट है। इसलिए वह निश्चय रूप में यह महसूस करता है कि वह भी उससे सुखी या सन्तुष्ट न हो सकेगी।

बात यह है कि उसने अपने मन में साधना के वर की अनेक बार कल्पना करने की कोशिश की है; वह कल्पना जिस रूप को खड़ा करती है उससे अरुण-कुमार का कोई सादृश्य नहीं है। उसने कल्पना की है एक ऐसे युवक की जिसकी बुद्धि प्रखर और चरित्र निर्मल है, जो हृदय और मस्तिष्क दोनों की विभूतियों का आदर कर सकता है, जो संवेदनशील, कोमल और मधुर है,—ऐसा व्यक्ति जिसके साथ चन्द्रनाथ अभिन्न हो सके और जिसे वह उतना ही प्यार कर सके जितना कि वह साधना को करता है, और जो साधना के कोमल किन्तु मनस्वी व्यक्तित्व को उतने ही आदर और ममत्व से देख सके जैसे कि वह स्वयं देखता है।

वह सोचता रहा है कि ऐसे व्यक्ति के पास पहुँचकर साधना उससे दूर न हो सकेगी। इतना ही नहीं, ऐसे व्यक्ति से सम्पर्कित होकर वह अपने माध्यम से उसे एक सहज सुहृद् भी दे सकेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किन्तु इस कल्पना-निविष्ट मूर्ति से अरुणकुमार का प्रायः कुछ भी मेल नहीं है, इसलिए वह उसके और साधना के प्रस्तावित सम्बन्ध को बड़ी आशंका की दृष्टि से देख रहा है। उसे यह डर है कि कहीं यह सम्बन्ध साधना को उससे विच्छिन्न न कर दे।

दूसरे दिन लगभग चार-बजे के समय जब हरिशंकर आया तो चन्द्रनाथ अपने शंका-सन्देह लेकर उससे आलोचना करने लगा।

'क्या अरुणकुमार और साधना एक-दूसरे के उपयुक्त हैं, तुमने क्या निश्चय किया ?'

'इसका मतलब ?' हरिशंकर ने आश्चर्य से पूछा।

'मतलब यह कि क्या उन दोनों की रुचि और स्वभाव एक-दूसरे से मेल खाते हैं।'

'देखो महाशय, मैं तुम्हारे प्रश्न का मतलब नहीं समझता, ऐसा नहीं; किन्तु मैं उसे बहुत दूर तक निरर्थक समझता हूँ। अरुणकुमार के पास वे सब साधन मौजूद हैं जो दाम्पत्य जीवन को सुखी बना सकते हैं। इसके अलावा किसी दूसरे सामंजस्य को मैं विशेष महत्त्व नहीं देता।'

चन्द्रनाथ को याद आया कि लगभग यही बातें हरिशंकर ने कुछ महीने पहले उसके और सुशीला के सम्बन्ध को लक्ष्य करके कही थीं। उसे खेद हुआ कि क्यों उसने वैसा प्रसंग फिर हरिशंकर के सामने छेड़ा।

हरिशंकर—'तुम्हें मेरी कहानी पसन्द आई ? मैंने रीता और उसकी सखी के चरित्र को सहानुभूति से चित्रित किया है, क्योंकि मेरा विश्वास है कि उनका रास्ता ही जीवन का सच्चा और सही रास्ता है।'

चन्द्रनाथ—कहानी की श्रेष्ठता सिर्फ़ उसके नैतिक निष्कर्ष पर निर्भर नहीं करती। कहानी अच्छी थी।

'ठीक; मुझे इसकी कम आशा थी। मेरा विश्वास है कि यह विवाह भी तुम्हें उसी तरह सन्तोषप्रद लगेगा।...हम लोग अब मास्टर साहब के घर चलेंगे न ?

'बुलाया तो है उन्होंने !'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'सिर्फ बुलाया ही नहीं है, चाय का निमंत्रण भी दिया है। मैं तो बड़ी आशा बाँधकर चला हूँ। कुमारी साधना तुम्हारी खातिर करती हैं कि नहीं ?'

चन्द्रनाथ–(हँसकर)—तुम्हें एकदम निराश नहीं होना पड़ेगा।

'कल उनकी स्पीच तो सचमुच बड़ी जोरदार रही; लड़की होनहार है।'

दोनों मास्टर साहब के घर की ओर चले।

प्रस्तावित सम्बन्ध को लेकर हरिशंकर के मन में कोई दुविधा का भाव नहीं है। ऐसा ही रुख मास्टर साहब का है। अब केवल एक व्यक्ति और है जिसका मनोभाव जानना जरूरी है—साधना। वास्तव में स्वयं चन्द्रनाथ की पसन्द-नापसंद का तो कोई सवाल है ही नहीं। उसका कोई महत्त्व भी नहीं है।

मास्टर साहब ने सहज प्रसन्नता से, थोड़े शब्दों में हरिशंकर और उसके साथ चन्द्रनाथ का स्वागत किया। फिर कहा—हम लोग आपके बहुत-बहुत कृतज्ञ हैं। हरिशंकर, जी मैं तो कल से बहुत ही खुश हूँ।

उत्तर में हरिशंकर मुस्करा दिया।

कुछ देर बाद मास्टर साहब ने प्रमोद को आवाज़ दी। उसने आकर अतिथियों को देखा, और फिर खुश होता हुआ ऊपर चला गया। थोड़ी देर में उन सबके लिए जलपान का सामान आ गया। खाने की वस्तुओं में चाय के अतिरिक्त मिठाई और फलों की तश्तरियाँ भी थीं। फल जिस प्रकार काट-छाँट-कर लगाए गए थे उससे चन्द्रनाथ ने अनुमान किया कि यह काम स्वयं साधना ने सम्पन्न किया है।

चाय-पानी के बाद मास्टर ने हरिशंकर को लक्ष्य करके कहा—आप बरेली कब जा रहे हैं ?

हरिशंकर—बस अब जाकर कॉलेज ही ज्वाइन करना है; काफ़ी दिनों से इधर-उधर घूमता रहा हूँ।

'हम चाहते हैं कि पाँच-सात दिनों के भीतर ही तिलक की रस्म हो जाय। आपका क्या खयाल है ?'

'ठीक ही है, शुभ काम में देर करने से क्या लाभ। मैं शायद कल बरेली पहुँच जाऊँगा और जल्दी-से-जल्दी तिलक की तिथि का निश्चय करने का आग्रह करूँगा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'तिथि का निश्चय तो मैंने कराया है। पंचमी और अष्टमी के दिन अच्छे हैं। साधना के पिताजी के पास भी खबर भेज दी है।......इस काम में हम अनावश्यक विलम्ब और आडम्बर नहीं करना चाहते।'

हरिशंकर ने राय दी कि अष्टमी का दिन ही ठीक रहेगा। मास्टर साहब ने उससे कहा—'आपको उस दिन जरूर यहाँ उपस्थित होना होगा। चन्द्रनाथजी को भी तब तक रुकना पड़ेगा।'

चन्द्रनाथ ने चौंककर कहा—मुझे ?

कुछ देर बाद हरिशंकर ने मास्टर साहब से विदा माँगी। उसके भाव से लगता था कि इस सम्बन्ध में उसमें और चन्द्रनाथ में किसी प्रकार का लगाव नहीं है।

मास्टर साहब ने कहा—'जरा रुकिए ?' और उन्होंने एक सुन्दर ड्राइंग कापी निकाल कर रखी। हरिशंकर ने उसे खोलकर देखा, चन्द्रनाथ ने भी देखा, उसमें पेन्सिल से खींचे हुए चित्रों का संग्रह था। मास्टर साहब ने पूछा—ये चित्र आपको कैसे लगते हैं ?

'अच्छे तो हैं, काफी सुन्दर', हरिशंकर ने कापी के पृष्ठ लौटते हुए कहा। और फिर वह उलट-पुलट कर कुछ चित्र चन्द्रनाथ को दिखाने लगा।

एक चित्र में माँ शिशु को बाहों पर उठाए खिला रही थी, दूसरे में एक बालक पिंजड़े में से चोंच निकालते हुए तोते को भात दे रहा था। ये प्रारम्भिक चित्र थे। आगे के एक चित्र में एक बड़ी झील और उसके तट-प्रदेश का दृश्य था। एक दूसरे चित्र "प्रतीक्षा" में चिन्ता-मग्न युवती को अंकित किया गया था।......

'ये चित्र तो काफी अच्छे हैं, किसने बनाए हैं ?" हरिशंकर ने जिज्ञासा की।

मास्टर साहब ने मुस्कुरा कर कहा—इस कापी को आप बरेली लेते जाएं और अपने मित्र से पूछें कि उन्हें पसन्द आते हैं कि नहीं।

हरिशंकर के चले जाने के कुछ ही क्षण बाद चन्द्रनाथ की ऊपर से बुलाहट हो गई।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साधना आज कुछ अधिक प्रसन्न दीख रही थी। 'आइए', कहकर चन्द्रनाथ का स्वागत करती हुई बोली—कल आपका कविता-पाठ बहुत सुन्दर हुआ, मैं नहीं जानती थी कि आप इतना सुन्दर गा सकते हैं।

'तुम्हें किसी अच्छे कवि-सम्मेलन में जाने का अवसर नहीं मिला है, इसीलिए ऐसा कह रही हो।'

'नहीं, एक बार बरेली में एक बड़े कवि-सम्मेलन के अवसर पर पहुँच गई थी।'

'अच्छा !'

'मैं सोच रही थी कि एक दिन यहीं आपका कविता-पाठ कराया जाय।'

'फिजूल बात है। कल के जलसे में सबसे अच्छी चीज क्या रही, जानती हो ?'

'क्या ?'

'एक लड़की की स्पीच।'

'ऊँ''''''हूँ—आप हँसी करते हैं।'

'नहीं बहिन, मैं झूठ नहीं कहता, सारे शहर में तारीफ़ हो रही है।'

'मुझे तो बोलना आता ही नहीं, कभी बोले ही नहीं।'

'हाँ, विशेष बोलना नहीं आता, सिर्फ शब्दों द्वारा तसवीर खींचना आता है और शायद रेखाओं द्वारा भी।'

'यह आपसे किसने कहा ?'

'प्रत्यक्ष देखी-सुनी बात के लिए किसी के कहने की जरूरत नहीं होती। "जब भारत के लोग···हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक एक लाइन में खड़े हो जाएँगे और चीन, जापान, रूस आदि देशों के निवासी···" क्या इस आशय का एक चित्र बनाकर नहीं दे सकतीं ?'

'लेकिन मैं चित्र बना सकती हूँ, ऐसा आपसे कहा किसने ?'

'किसीने नहीं, सो शायद यही सोचकर कि मुझमें चित्रों को समझने की रसज्ञता नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'नहीं-नही', साधना ने असमंजस के भाव से कहा, 'असल में मैं इस कला की थोड़ी-बहुत जानकारी ही रखती हूँ, कभी किसी से ठीक से सीखा नहीं है न।'

कुछ देर की स्तब्धता के बाद साधना ने पूछा, प्रिंसिपल साहब का भाषण आपको कैसा लगा ?

चन्द्रनाथ—यह प्रश्न तो मुझे पूछना चाहिए था, क्योंकि प्रिंसिपल देव मेरे लिए नए नहीं हैं।

'मुझे तो उनकी वक्तृता जँची नहीं।'

'इसका मतलब ? वक्ता तो वे बुरे नहीं हैं।'

'वे अच्छे वक्ता हैं यह मैं स्वीकार करती हूँ। किन्तु उनके विचार ? क्या आप उनसे सहमत हैं ?'

'क्यों, क्या उन्होंने कोई ऐसी बात कही थी.....'

'उन्होंने अंग्रेजी की इतनी प्रशंसा की जिसका कोई अवसर न था और हिन्दुस्तानी का इतना विरोध भी मुझे पसन्द नहीं, यदि हिन्दू-मुसलमानों को साथ रहना है तो उनकी भाषाओं का भेद भी कम होना चाहिए।'

'यह तो अपनी-अपनी राय है; हिन्दुस्तानी का आन्दोलन सफल हो सकेगा इसमें मुझे सन्देह है, यद्यपि मैं चाहता हूँ कि वह सफल हो।'

'असल में मुझे उनके विचार ही नापसंद न थे, मुझे उनकी स्पीच का स्वर ही कुछ दूसरी तरह का लगा।'

चन्द्रनाथ ने उत्तर दिया। प्रिंसिपल देव का भाषण सुनते समय उसने भी कुछ ऐसा ही महसूस किया था। उसे लगा था, जैसे उनकी आदर्शों की दुहाई का उनके हृदय या अन्तरात्मा से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके अंग्रेजी-प्रेम के पीछे, उसे आभास हुआ था, देशी भाषाओं के प्रति उदासीनता का भाव छिपा है। फिर क्यों लोग उन्हें जहाँ-तहाँ हिन्दी का प्रेमी घोषित करते हैं ?

वह साधना को कुछ उत्तर देना ही चाहता था कि यकायक उसने पूछा—क्या परसों आपका प्रयाग जाना जरूरी है ?

'क्यों क्या कोई काम है ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'दो-चार दिन और ठहर जाते तो अच्छा होता।'

चन्द्रनाथ ने सोचा, साधना तिलक के दिन तक ठहरने को कह रही है। साधना ने इस सम्बन्ध के प्रति अपनी स्वीकृति दे दी है, यह अनुभव उसने तभी कर लिया था जब मास्टर साहब ने उसकी चित्रावली निकाल कर हरिशंकर को दी थी। इस विषय के निश्चित हो जाने से उसके मन से एक भार-सा हट गया। साधना स्वयं समझदार है, और मास्टर साहब भी उसके हितैषी हैं, अतः इस विषय में अब वही दुश्चिन्ता क्यों करे? किन्तु इस समय वह एक दूसरी बात सोच रहा था, साधना अपने अनुरोध को इतने दुर्बल ढंग से क्यों व्यक्त कर रही है? वह जोर देकर क्यों नहीं कहती कि "तुम परसों नहीं जा सकोगे?" अकस्मात् वह इतनी सीधी और सरल क्यों बन गई है? इससे अधिक जोर तो मास्टर साहब के कथन में था।

●

:४१:

रात को भोजन हो चुकने के बाद सुशीला ने कहा—आज फिर आपके भाई साहब आए थे।

'कौन?' चन्द्रनाथ ने अन्यमनस्क भाव से पूछा।

'वही, भाभी के लाड़ले देवर, महाशय राजाराम!'

'हूं।'

'काफ़ी देर तक बातें हुईं। कल वह भी जलसे में गए थे।'

चन्द्रनाथ मौन रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'कह रहे थे इस प्रकार पराई लड़कियों के साथ घूमना ठीक नहीं। साधना की भी बुराई कर रहे थे। कल बोलते वक्त उसके सिर से आँचल खिसक गया था, क्यों ?'

'ऐं ? मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया।'

'खैर, इसी को लेकर भाभी-देवर में काफी खिचड़ी पकी। ऐसी ही भाभी की आप तारीफ़ करते हैं!'

चन्द्रनाथ चुप रहा। उसके मास्टर साहब, साधना आदि के साथ जलसे में जाने पर कोई टीका-टिप्पणी हो सकती है, इसकी उसने कल्पना भी न की थी।

और फिर उसे याद आया कि बोलते समय सचमुच एक बार साधना के सिर से वस्त्र खिसक गया था। उसी समय उसने उसे सँभाल भी लिया था। राजाराम साधना के व्याख्यान के केवल इसी एक पहलू को देख सका, यह उसका दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

'कल भैयादूज है', सुशीला ने सहसा प्रसंग बदलते हुए कहा, 'ज़रा फ़िक्र से पेड़े मँगवा देना; प्रमोद को यहाँ के पेड़े बहुत पसन्द हैं। मैंने उसे ग्यारह बजे बुलाया है।'

चन्द्रनाथ सोच रहा था—सुशीला क्या जन्म भर ऐसी ही बातों में अभिरुचि लेती रहेगी। वह भाभी की बातें सुनने गई ही क्यों थी ?

फिर जैसे सुशीला के अन्तिम वक्तव्य को स्मरण करके वह कह उठा—हाँ, कल भैयादूज है।

दस-बारह दिन पहले साधना ने उसे इस कल की याद दिलाई थी। कई दिन तक वह याद मीठी खुजली की तरह उसे आकुल किए रही, फिर उत्सव आदि की चिन्ताओं में भूल गई।

कल भैयादूज है, कल साधना उसका तिलक करेगी। अपने में यह व्यापार कितना छोटा है, कितना नगण्य; पर उसका कितना अधिक महत्व है! बहिन-भाई की गाढ़ी प्रीति, उसकी अनिवार्यता और सहज स्वच्छता, उसकी कमनीय कोमलता और सात्विक मधुरता, सब जैसे सुकुमार उँगलियों की उस विशिष्ट गति में पुञ्जीभूत हो जाते हैं! प्राचीन काल में, जब यातायात के इतने साधन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नहीं थे, बहिन और भाई के जीवन में यह दिन एक महापर्व की भाँति आता होगा, एक बड़े किन्तु आटोपशून्य उत्सव की तरह, एक नितान्त करुण और कोमल मिलन-प्रतीक के रूप में। तब बहिनें महीनों पहले से इस दिन की प्रतीक्षा करती होंगी, और भाई लोग दूर-दूर से, भरे हुए हृदयों से, बहिनों का स्नेह-चिह्न लेने आते होंगे।

और आज के व्यस्त युग में भी, जब हमारे समाज के पारिवारिक बन्धन शिथिल हो रहे हैं और हमारा जीवन अधिकाधिक यांत्रिक होता जा रहा है, हिन्दुओं की यह प्राचीन प्रथा निरर्थक नहीं हो गई है। आज भी भैयादूज, कुछ क्षणों को, हमारी कोमल भावनाओं को जगाकर, हमारे मन पर भाई-बहिन के सम्बन्ध को नैसर्गिक कोमलता और पवित्रता को अंकित कर जाती है।

कल भैयादूज है, और चन्द्रनाथ सोच रहा है कि पिछले चौबीस घण्टों में वह जो अपने और साधना के बीच दूरी पड़ती महसूस करने लगा है, उसका अस्तित्व और प्रतीति, उस सुरभिपूर्ण क्षणों में जब साधना अपने समस्त स्नेह को नेत्रों और उँगलियों में केन्द्रित करके उसके माथे पर तिलक लगाएगी, एक-दम ही विलीन हो जायगी। और उसी समय वह उससे पूछेगा कि····।

उस अवसर की कल्पना करता हुआ वह कविता बनाने बैठ गया :

माथे पर तिलक-रेख
ममता की मृदु अंगुलि-तूली से
अंकित ज्यों निजता का पुष्प-लेख।

लिखना समाप्त करने के बाद वह कविता की आवृत्ति करने लगा। उस समय वह कुछ देर के लिए एक ऐसे लोक में पहुँच गया जहाँ केवल बहिन होती है, और भाई, और उनका नितान्त पावन स्नेह, वह स्नेह जो देश-काल के कोने-कोने को अपने सौरभ से आप्यायित कर देता है।

कविता पढ़ते हुए वह सोचने लगा—कितना अधिक वह इस सम्बन्ध पर, इस बहिन पर, निर्भर करने लगा है। कहीं उसे बीच में ही इस आधार से वंचित न होना पड़े····

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उसने एक रंगीन पैड पेपर पर कविता की साफ सुन्दर नकल की और उसे लिफाफे में बन्द कर उस कुर्ते की जेब में रख दिया जिसे पहन कर कल वह साधना के पास तिलक कराने जायगा। उसकी बहिन के लिये केवल रुपए ही तो उचित उपहार नहीं हो सकता।

दूसरे दिन सुबह से ही वह मास्टर साहब के परिचित नौकर की आहट जोहने लगा। किस समय उसे जाना होगा, यह वह बिलकुल नहीं जानता; किन्तु प्रमोद के सादृश्य से वह अनुमान करता है कि दस-ग्यारह बजे के बीच ही उसे जाना पड़ेगा। हद-से-हद बारह बज जाएँगे। आज सुशीला व्यस्त है, वह प्रमोद के लिए उसकी मनोनुकूल चीजें बनाने में लगी है। क्या साधना भी इसी तरह व्यस्त होगी ?

किन्तु काफी देर तक कोई नहीं आया। दस बजे, फिर ग्यारह, साढ़े ग्यारह। सुशीला अपने काम से निवृत्त हो चुकी थी; भोजन सब तैयार था। चन्द्रनाथ की बैठक में आकर दो-एक बार पूछ गई थी कि प्रमोद आया या नहीं। अबकी बार आई तो खीझने लगी—'मैंने कल कह दिया था कि जल्दी आना, समय पर आना, लेकिन हजरत अभी तक नहीं आए !'

कुछ देर बाद उसने चन्द्रनाथ से कहा—आप खा लीजिए न, आपका न खाना तो जरूरी नहीं है।

'खा लूंगा, और थोड़ी देर इन्तज़ार कर लो,' चन्द्रनाथ ने उत्तर दिया। वह सोच रहा था, शायद प्रमोद के साथ ही उसके लिए भी बुलावा आए।

लगभग साढ़े-बारह बजे प्रमोद आया। प्रसन्नता-मिश्रित झल्लाहट से उसका स्वागत और उलाहना करते हुए सुशीला ने उसका तिलक किया। फिर उसे भोजन करने बिठाया गया। खाते-खाते प्रमोद देर में अपने आने की सफ़ाई देने लगा।

मालूम हुआ कि दोष प्रमोद का न था। साधना के अनुरोध से ही वह अब तक रुका रहा था।

स्वयं साधना न जाने किस बात पर आज सबेरे से मामी से झगड़ रही थी। प्रमोद के आने पर ही चन्द्रनाथ को इस बात का पूरा निश्चय हुआ कि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आज साधना उसे नहीं बुला रही है, और वह उसका तिलक नहीं करेगी। उसे साधना का यह व्यवहार एक निर्दय मज़ाक और कुटिल विश्वासघात-सा लगा।

दोपहर भर प्रमोद वहीं रहा। लगभग साढ़े-चार बजे मास्टर साहब के घर चलने को उद्यत होते हुए उसने कहा—जीजा जी, आज आप जीजी को पढ़ाने नहीं चलेंगे?

'नहीं, आज कुछ तबीयत ठीक नहीं है।' फिर कुछ रुककर, 'क्या जीजी ने कुछ कहा है?'

'नहीं, उन्होंने तो कुछ नहीं कहा; मैं ही पूछ रहा था।'

सहसा प्रमोद ने पूछा—जीजा जी, आप इलाहाबाद कब जा रहे हैं?

क्षण भर बाद चन्द्रनाथ ने उत्तर दिया—'कल।' प्रश्न की प्रेरणा प्रमोद के अपने भीतर से आई थी या कहीं और से, यह बिलकुल ही न जान सका।

'कल ही? इतनी जल्दी? क्या छोटी जीजी के तिलक तक नहीं रुकेंगे?'

प्रमोद के स्वर और चेहरे का चिन्ताभाव उससे छिपा न रहा। उस बालक को अपने स्नेह की शक्ति में विश्वास नहीं है, इसीलिए वह तिलक की आड़ से चन्द्रनाथ के जल्दी जाने की अनुपयुक्तता दर्शित कर रहा है। क्या अवस्था कम होने से बालकों के सुख-दुख और भावनाओं का महत्व भी कम हो जाता है?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तिलक में उसकी उपस्थिति उतनी आवश्यक नहीं है, प्रार्थित भी नहीं है, यह बात न तो प्रमोद से कही जा सकती थी और न उसकी समझ में ही आ सकती थी।

दीपावली की सन्ध्या में जो आशंका हृदयक्षितिज पर धुँधली छाया के रूप में दिखाई दी थी वह आज मानो डरावनी काली रेखाओं में आकार प्रकार लेकर झलकने लगी थी।

अवश्य ही उसके और साधना के बीच में व्यवधान पड़ गया है; तभी तो वह जोर देकर उससे रुकने को नहीं कह सकी, और आज तिलक करने की बात को आश्चर्य-जनक रूप में भूल गई। इस व्यवधान का कोई कारण स्वयं उसने उपस्थित नहीं किया है। उसका एकमात्र हेतु है एक नई परिस्थिति का उदय, एक नए सम्बन्ध-सूत्र का आविर्भाव। किन्तु यह परिस्थिति, यह सम्बन्ध तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रत्येक लड़की के जीवन में आता है, तो क्या उसका अर्थ पुराने स्नेहबन्धनों का शिथिल होना होता है ?

उसने मानो कल्पना में देखा कि साधना, विवाह-चर्चा की घड़ी से, अनन्य होकर एक ही दिशा में एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध में सोच रही है। और वह व्यक्ति चन्द्रनाथ से नितान्त भिन्न है, उससे चन्द्रनाथ का कोई लगाव, कोई सामंजस्य नहीं है।

क्या यह सम्भव है ? क्या सहसा इतनी अकारण विरक्ति, अहैतुक विकर्षण, सम्भव है ? क्या नारी सहसा अपने को इतना परिवर्तित कर सकती है ?

जिसके सम्बन्ध में वह अब तक अनन्य निष्ठा से सोचता रहा है, जिसके साथ वह पूर्ण आन्तरिक तादात्म्य का स्वप्न देखता रहा है, वह आज कैसे सहसा उदासीन होकर दूसरी दिशा में उन्मुख हो सकी है ?

इतने लम्बे और प्रगाढ़ परिचय के बावजूद साधना अपनी जिस वस्तु को उससे छिपा कर रख सकी उसे, इतने अल्पकालीन सम्बन्ध में, किसी के चरणों में निवेदित करने को वह कैसी व्यग्र हो गई ! जैसे उसकी अपेक्षा अरुणकुमार को चित्र-कला में अधिक अभिरुचि और अनुराग हो सकता है, अथवा अधिक गुणग्राहकता ! क्या विवाह से बाहर किसी सम्बन्ध में पूर्ण ऐक्य, पूर्ण अपनेपन की भावना, संभव नहीं है ? क्या भाई और बहिन, मन और बुद्धि की भूमिकाओं में, पूर्णतया अभिन्न नहीं हो सकते ? क्या उसका एक ऐसे सम्बन्ध का स्वप्न जहाँ, सात्विक निर्मलता के साथ, पूर्ण सहानुभूति, पूर्ण समर्पण और गोपन का पूर्ण अभाव हो, स्वप्न ही रहेगा ? क्या साधना जैसी बहिन के सम्पर्क में भी वह चरितार्थ न हो सकेगा ?

कल उसे जाना है। इतनी दूरी, इतने अलगाव की भावनाओं को ढोता हुआ वह कैसे जा सकेगा ? जिस सम्बन्ध की अनुभूति को उसने हृदय के अशेष रस से सींचा है, असंख्य भावनाओं से गूँथा है, असंख्य आशाओं के केन्द्र में स्थापित किया है""जो प्राणवायु के समान उसके अस्तित्व में परिव्याप्त रहा है, रक्त के समान हृदयस्पन्दन में प्रवाहित, उसका अकस्मात् विघटन, उसका छिन्न-भिन्न होना, विचूर्ण होना वह कैसे सह सकेगा ? कैसे वह यह विश्वास करेगा कि अब तक

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उसने जो कुछ देखा, सुना और महसूस किया, वह मिथ्या था, भ्रम था, छलना थी ?

रात को वह काफी देर में सोया, फिर भी भोर में काफ़ी अँधेरा रहते उसकी नींद टूट गई !

सबेरे में चन्द्रनाथ पहली बार निद्रा भंग होते नहीं उठ बैठता। इस सम्बन्ध में वह काफी आलसी है। विशेषतः जाड़ों में उसे शय्या से उठने में काफी देर लग जाती है। स्वप्न और जागृति के बीच की इस स्थिति में उसकी कल्पना एक विचित्र ढंग से व्यापृत होने लगती है। उस समय वह मानो सचेतन होकर स्वप्न देखता है। वह कभी गाता या गुनगुनाता है, और कभी लम्बी स्पीचें दे डालता है; कभी-कभी उसे लगता है, मानो वह किसी प्रतिपक्षी से तर्क कर कर रहा हो। साथ ही उसके मस्तिष्क के सामने तरह-तरह की मूर्तियाँ घूमती जाती हैं, जैसे वे वस्तु-जगत् से उठाए हुए उसकी युक्तियों के जीवंत निदर्शन हों; उनमें उसके विचार मानों साकार बन जाते हैं। चन्द्रनाथ ने ऐसी दशा में अक्सर कविता या निवन्ध की रूप-रेखा स्थिर की है, और कभी-कभी जीवन और विचार-जगत् की गहन समस्याओं को सुलझाया है।

मध्य कार्तिक की रात के अन्तिम पहर में हलकी रजाई में लेटा आज वह कुछ ऐसी ही अवस्था में था। उसके मनश्चक्षुओं के सामने एक लड़की की विभिन्न छवियाँ, फिल्मी रीलों की भाँति, न्यूनाधिक तीव्र गति से संचरित हो रही थीं; और स्वयं वह एक ऐसे दर्शक के समान जो घटनाओं से उदासीन न होते हुए भी निष्क्रिय रहता है, एक ओर को खड़ा था।

पहला चित्र; वह लड़की छोटी थाली में कुछ फल लिये आ रही है। उसकी गति में कोई बाधा, कोई संकोच या दुराव का भाव नहीं है। कुछ लम्बी होते हुए भी वह मानो मात्र बालिका है, स्वच्छन्द परिहासमयी; वह प्रगल्भता से बातें भी कर सकती है।......इसके बाद लम्बी प्रतीक्षा, सूनापन, एकान्त। फिर वह लड़की सहसा गम्भीर होकर प्रकट होती है, जैसे उसकी गति और चपलता पर ब्रेक लग गया हो।...वह भोजन कराने बैठती है, स्नेह और नए परिचय की रंजित आर्द्रता से। उसके हाथों में पंखा है, आँखों में गहरा अपनेपन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

का भाव।…फिर वह दीखती है श्रान्त-सी, दुर्बल-सी लालिमा-हीन सन्ध्या-सी। इसके बाद वह उसे पास ही कुर्सी पर बैठी दिखाई देती है जहाँ उसका चेहरा अनुक्षण गर्व और कोप, लज्जा और उल्लास, स्नेह और खीझ से आलोड़ित हो रहा है।…सहसा वह उठ खड़ी होती है और रेशमी साड़ी पहन कर स्पीच देने लगती है, समग्र दैन्य और मलिनता को भूलकर ओजपूर्ण मधुरता और आर्द्र कोमलता से…और फिर ? वह देखता है वह लड़की सहसा एक ट्रेन के डिब्बे में जा बैठी है और वह स्वयं स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा है। वह उससे दो-एक बातें करती है, फिर भीतर की ओर मुँह फेर लेती है…वहाँ भी वह किसी से बात कर रही है। वह उसे सम्बोधित करता है, पर उसे जैसे अवकाश नहीं है। ट्रेन सीटी देती है, लड़की एक बार मुस्कुराकर स्टेशन की ओर देखती है और फिर…ट्रेन चल देने पर, अपना सिर भीतर कर लेती है। स्टेशन से एक व्यक्ति लगातार ट्रेन की ओर देख रहा है कि शायद एक बार फिर वह लड़की उधर देखे, पर उसे निराश होना पड़ता है…ट्रेन चली जाती है, चली जाती है''''।

एक निःस्पृह द्रष्टा की भाँति चन्द्रनाथ के अर्द्धचेतन ने यह सब देखा और फिर दृष्ट छवियों का समन्वय-सा करता हुआ सोचने लगा—'इस लड़की का संक्षिप्त-सा व्यक्तित्व कितना विविध है, कितना वैचित्र्य-पूर्ण।…कितना विचित्र उसका आकर्षण है। जब वह चुप या निस्पन्द रहती है, तब कौन सन्देह कर सकता है कि उसमें माधुर्य का कितना अक्षय कोष है,'और किस प्रकार वह बुद्धि के तीखे परकोटे में सुरक्षित है, किन्तु जब वह मुख या इंगित से बोलने लगती है, जब वह अपने को व्यक्त करने का उपक्रम करती है, तब मानो उसके व्यक्तित्व का प्रत्येक कण स्पंदित, प्रत्येक अंग मुखर हो उठता है; और वह एक विचित्र, सुरभिपूर्ण आलोक से आलोकित हो उठती है!…उसका सौन्दर्य और आकर्षण जैसे विधाता की देन न होकर स्वयं उसकी सृष्टि है, और इसलिए कुछ अनिश्चित।''''क्या उसका हृदय भी ऐसा ही अनिश्चित है, क्या वह भी इतनी जल्दी-जल्दी बदल सकता है ?….

सुशीला ने आकर कहा—उठते नहीं, देर हो रही है, कोई समझेगा कि मैंने ही आपको जगाए रखा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रनाथ उठने लगा। बिस्तर से उठकर खड़ा हुआ, पर तुरत ही जैसे फिर खाट में ढह पड़ा।

सुशीला ने घबराकर उसे हाथों का सहारा दिया और लिटा दिया। फिर माथे पर हाथ रखते हुए चौंक कर बोली—ऐं! यह क्या बुखार आ गया! कैसी तबीयत है?

चन्द्रनाथ ने स्वीकार किया कि तबीयत सचमुच कुछ खराब है। उसे काफी जोर का ज्वर था।

सुशीला भाभी को खबर करने चल दी। दूकान जाने से पहले बाबू शिवनाथ चन्द्रनाथ को देखने ऊपर आए। बोले—'क्या तबीयत ज्यादा खराब है? डाक्टर को बुलाऊँ?'

'नहीं, थोड़ा-सा बुखार है, यों ही भोजन छोड़ देने से ठीक हो जायगा', चन्द्रनाथ ने आश्वस्त स्वर में कहा।

'भोजन बिलकुल छोड़ने की क्या जरूरत है, रोटी मत खाना, सिर्फ दूध ले लेना।'

चन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया।

किन्तु बाद को जब सुशीला उसके लिए दूध लाई तो उसने कहा—मेरे लिए सिर्फ पानी औटवाकर ले आओ, नींबू मिल जाय तो और ठीक हो।'

'देखो न, अब दूध भी नहीं पीते। मैं भाभी से जाकर शिकायत करती हूँ।'

लगभग नौ बजे प्रमोद आया। चन्द्रनाथ आँखें बन्द किए लेटा था। प्रमोद उससे कुछ कहना चाहता था कि सुशीला ने इशारे से मना कर दिया।

'साधना क्या कर रही है? तिलक का क्या इन्तजाम हो रहा है?' सुशीला ने पूछा।

प्रमोद ने उसके कान के पास जाकर कुछ कहा जिसे चन्द्रनाथ न सुन सका।

दूसरा पहर बीत चुका था। प्रमोद ने चलने का उपक्रम करते हुए सुशीला से पूछा—छोटी जीजी से क्या कह दूँ कि जीजा जी की तबीयत ठीक नहीं है...'

'कह देना बुखार हो गया है.....'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दिन में बुखार साधारण रहा था, पर रात में तेज हो गया। निभृत एकांत में चन्द्रनाथ के कपोलों पर चुम्बन अंकित करते हुए सुशीला ने कहा—'कल जरूर किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए, आपकी तवीयत ज़्यादा खराव है।'

'कोई चिन्ता की बात नहीं, कल तक जरूर ठीक हो जाऊँगा', चन्द्रनाथ ने निर्भय आश्वासन के स्वर में कहा। फिर कुछ रुककर बोला, 'जानती हो बुखार का क्या अर्थ है? शरीर में जब मल संचित हो जाता है तो प्रकृति उसे निकालने की कोशिश करती है। यह कोशिश ही बुखार है, रोग है।''''रोग वास्तव में हमारा मित्र होता है.....'

'एक पट्टी भिगोकर माथे पर रख दो', कुछ देर बाद उसने कहा।

काफ़ी देर तक सुशीला जागती रही। जब तक वह जागी रही, चन्द्रनाथ को अच्छा लगा। उसके सो जाने पर वह सो न सका। कभी कुछ देर को आँख लग जाती, किन्तु फिर जाग पड़ता, फिर मेज़ पर से उठाकर पानी पीता। सारी रात यों ही सोते, जागते और कराहते बीती। रातभर वह न्यूनाधिक प्रसुप्त चेतना से पूर्व दिन की भाँति स्वप्न देखता रहा'''।

सुबह में एक पास के डाक्टर देखने आए और दवा देकर चले गए।

लगभग साढ़े-आठ बजे सुशीला ने ऊपर आकर कहा—'सुना, मामाजी के घर से आदमी आया था।' कुछ रुककर, 'उसने भाभी से कहा कि बीवीजी ने पूछा है कि जीजाजी की तवीयत कैसी है। उस पर भाभी ने जवाब दिया, "बहुत तेज़ बुखार है, कोई देखने नहीं आया, वैसे तो बड़ी मुहब्बत है।"

चन्द्रनाथ ने सहसा दृष्टि ऊपर की।

'इतने में मैं पहुँच गई। मैंने उससे कह दिया कि रात कुछ ज्यादा तवीयत खराव थी, अब ठीक है, दवा दी गई है।'

यह कहकर वह चन्द्रनाथ का हाथ उठाकर दबाने लगी।

थोड़ी देर वाद अंगन उसे चावल और दाल साफ करने को दे गया। चन्द्रनाथ ने कहा—तुम नीचे जाओ, भाभी का काम करा दो, मैं तो लेटा ही हूँ।

'अभी तो आई हूँ नीचे से, शाम को खाना बना दूँगी, इस वक्त मेरी ड्यूटी नहीं है।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुशीला बोलने में जितनी मीठी हो सकती है उतनी ही तेज़ भी। पहले-पहल जब वह आई थी तो भाभी की बातें सह लेती थी; अब वह उनका विरोध भी करने लगी है। चन्द्रनाथ को डर बना रहता है कि कहीं किसी दिन किसी बात पर वह भाभी से झगड़ न पड़े।

लगभग चार बजे प्रमोद ने सहसा दम्पति के कमरे में प्रवेश किया। आते ही सुशीला के पास घुसता हुआ धीरे-धीरे बोला—साधना जीजी आई हैं, नीचे रुक गई हैं।

सुशीला तुरन्त ही नीचे चली गई।

साधना ऊपर आई। चन्द्रनाथ की खाट के पास खड़े होकर पूछा—कैसी तबीयत है ?

चन्द्रनाथ ने आँखें उठाकर देखा, जैसे पहचानने की कोशिश कर रहा हो कि यह वही परिचित साधना है या कोई और, फिर उसने उसे पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

वह बैठ गई और चन्द्रनाथ का हाथ छूकर देखने लगी कि कितना ताप है।

'विशेष बुखार नहीं है, आज तो दवा भी खाई है।'

'आप इतने नियम से रहते हैं, फिर आपको बुखार क्यों आया ? (सुशीला से) खाना क्या दे रही हो ?'

'कल तो कुछ भी नहीं खाया। बोले, उपवास करना ही ठीक है। आज थोड़ा-सा दूध लिया है, वह भी भाई साहब के बहुत कहने पर।'

'कितना दूध लिया है सुबह से ?'

'मुश्किल से डेढ़ पाव, दो बार में।'

'सिर्फ डेढ़ पाव, टेम्प्रेचर कितना रहता है ?'

'ठीक नहीं मालूम, यहाँ थर्मामीटर नहीं है। रात बहुत तेज़ बुखार था।'

चन्द्रनाथ को लगा कि साधना के आने से सुशीला का स्वर अधिक चिन्तित हो उठा है।

कुछ मिनट बाद उसने पानी माँगा। पानी देते हुए सुशीला ने कहा—प्यास बहुत ज्यादा है, न जाने कितनी बार पानी पीते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'पानी के बदले फलों का रस नहीं दिया जा सकता ?'

'किसी को इतनी फ़िक्र हो तब न,' कहकर सुशीला चुप हो गई।

दस-पन्द्रह मिनट बाद चन्द्रनाथ ने फिर पानी की माँग की, साधना ने उसे उड़ेल कर पानी दिया। फिर प्रमोद से कहा—प्रमोद, एक काम करोगे? मामाजी से माँगकर थर्मामीटर ले आओ, ले आओगे न ?

प्रमोद 'हूँ' करके चलने को उद्यत हो गया। साधना उसके बाहर छत तक गई।

थोड़ी देर बाद नीचे रसोईघर से धुँआ उठने लगा। उसे देखकर सुशीला ने कहा—'भाभी ने चूल्हा जोड़ा है।' फिर कुछ देर में बोली—'जाऊँ नीचे कुछ काम कर आऊँ।'

'क्या तुम्हारे बिना जाए काम न होगा ?' साधना ने पूछा।

'नहीं भाई, मुझे अपनी शाम की ड्यूटी पूरी करनी चाहिए न।' कुछ रुककर, 'तुम बैठो मैं जल्दी ही आऊँगी।··· पानी भी औटाकर ले आऊँगी।' कहते हुए उसने अवशिष्ट कुछ घूँट पानी गिलास में लौटकर सुराही खाली कर ली।

उसके चले जाने के कुछ ही क्षण बाद चन्द्रनाथ ने फिर पानी माँगा। साधना ने गिलास में पानी देते हुए कहा—'बहुत-सा पानी न पीजिए, नुक़सान कर सकता है।'

'नहीं, पानी नुक़सान नहीं करता,' कहकर उसने गिलास खाली कर दिया।

'दो ही दिन में आप कितने कमज़ोर हो गए,' साधना ने कहा।

'अब जल्दी ठीक हो जाऊँगा!' उसके वाक्य में साधारण अर्थ के अतिरिक्त कुछ दूसरी ध्वनि भी थी।

साधना चुप रही। चन्द्रनाथ को लग रहा था कि आज इस समय वह कुछ असाधारण रूप में चुप थी।

'बहिन !'

साधना के नेत्रों ने सुनने की तत्परता प्रकट की।

'जानती हो, यह बुख़ार क्यों आया ?'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'आप दिमाग़ी काम बहुत करते हैं, स्ट्रेन हो गया होगा।'

'नहीं, स्ट्रेन नहीं!'

साधना चुप रही।

'इसका कारण यह है कि तुमने…' वह कहते-कहते रुक गया। फिर बोला "भैयादूज के दिन भूल गई थीं क्या?'

'नहीं', साधना ने धीमे परिताप के स्वर में कहा, 'बात यह है कि हमारे यहाँ कुमारी लड़कियाँ तिलक नहीं करतीं।'

चन्द्रनाथ आशा करता था कि वह कुछ और कहेगी, पर उसने कुछ नहीं कहा।

कुछ क्षण बाद वह बोला—'क्या सोच रही हो?"

'कुछ नहीं', उसने निर्विकार-से स्वर में कहा।

कुछ देर को फिर ख़ामोशी छा गई। उसे भंग करते हुए चन्द्रनाथ ने पुनः धीमे स्वर में कहा—'बहिन,…मुझे लगता है कि…'

साधना—'कहिए, क्या कह रहे थे आप….'

'मुझे लगता है कि तुम मुझसे दूर हट रही हो…'

'ऐसा आप क्यों सोचते हैं, यह सोचना ठीक नहीं।'

चन्द्रनाथ—मेरे जीवन की यह एक बड़ी साध रही है कि कहीं मेरा ऐसा सम्बन्ध हो जहाँ किसी प्रकार का अलगाव, किसी तरह का दुराव न रहे। जहाँ मैं अपने अन्तर को सम्पूर्णता में खोल कर रख सकूँ…जहाँ मुझे आलोचना का भय न हो, तिरस्कार का भय न हो, जहाँ केवल एक ही वस्तु मिले अकृत्रिम प्रेम, निर्मल सौहार्द। मैंने आशा की थी कि तुमसे मेरा इसी प्रकार का सम्बन्ध होगा। तुममें वैसा हृदय और बुद्धि भी थी…

साधना—लेकिन मैंने तो अपने जानते कोई ऐसा कारण उपस्थित नहीं किया….

'नहीं, सो मैं नहीं कहता', उसने बात काटते हुए कहा। समझ में नहीं आता क्यों मानव-हृदय में इतनी वक्रता, इतनी गाँठें होती हैं, क्यों वह कभी भी कहीं भी पूर्णतया सरल और स्वच्छ नहीं हो पाता।…. मैं सिर्फ तुम्हारी ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बात नहीं कहता। स्वयं मैं भी निर्दोष नहीं हूँ।' कुछ रुककर—'तुमने जब पहली बार भैयादूज का जिक्र किया तब जानती हो मुझे कितना अच्छा लगा, कितना प्रिय, पर साथ ही एक चिन्ता भी हुई। अब सोचता हूँ वह चिन्ता क्यों हुई, क्या वह भिन्नता और द्वैत की द्योतक नहीं थी? क्यों मुझे यह चिन्ता पड़ी''' कि मुझे तुम्हें देने को रुपए जुटाने पड़ेंगे। रुपए! जैसे कि तुम्हें रुपयों की जरूरत ही थी! था न यह द्वैत, बोलो?'

साधना चकित भाव से बोली—भैया! मैं उसे द्वैत नहीं मानती। लोकाचार भी तो देखना होता है।

चन्द्रनाथ—यह लोकाचार ही तो मनुष्य की शान्ति का, सुख का, सबसे बड़ा शत्रु है।'''तभी तो मनुष्य मनुष्य के निकट नहीं आ पाता, दो हृदय कभी एक नहीं हो पाते। तभी तो परसों से मुझे लग रहा है कि तुम मुझसे दूर हट रही हो, बहुत दूर''''

'आपकी तबीयत ठीक नहीं है, इसीलिए ऐसा सोचते हैं''''

'नहीं, मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है, परसों तो बुखार भी नहीं था।''' और हाँ, वह तुम्हारे चित्रों का संग्रह। तुमने मुझे तो कभी नहीं बताया कि तुम चित्र बनाती हो। इसमें तो छिपाने की कोई बात न थी। यह भी भिन्नता हुई न, द्वैत ...'

साधना—आप छोटी-छोटी बातों को इस तरह क्यों सोचते हैं? असल में'''' वह कापी मैंने नहीं मँगवाई थी, यद्यपि मैं आपको दिखाने के लिए मँगवाना चाहती थी।'

'अच्छा जाने दो। बात सचमुच छोटी है लेकिन क्या छोटी बातों का महत्व नहीं होता। छोटी बातों का समूह ही तो जीवन है।'''थोड़ा सा पानी'''

'पानी नहीं है, जीजी औटाने गई हैं, मैं तुरत नीचे से ले आती हूँ।'

'नहीं नहीं वे आती होंगी।'''मैं सोच रहा हूँ कि किस प्रकार यह दूरी का भाव दूर हो, सदा के लिए, जीवन भर के लिए।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साधना ने उसके माथे पर हाथ रखा। 'ज्वर बढ़ गया क्या? आप चुपचाप आराम कीजिए।'

चन्द्रनाथ ने उसकी दिशा में करवट ली। फिर उसका हाथ माथे पर से हटाकर अपनी छाती पर रख लिया। उसे वहाँ दबाते हुए बोला—तुम जानती हो, बहिन, तुम्हारी दूरी तुम से अलगाव का भाव, मुझे सह्य नहीं है। उसकी कल्पना से भी डर लगता है। लगता है, जैसे जीवन सूना हो गया, निरर्थक, निरुद्देश्य''''तुमने लिखा था, हम दोनों एक माँ की सन्तान हैं, फिर हम लोग दूर क्यों होंगे, क्यों हों? बोलो, क्या तुमने झूठ लिखा था?

'नहीं', साधना ने अवरुद्ध स्वर से कहा।

'नहीं', चन्द्रनाथ ने दुहराया। फिर साधना के हाथ को अपने गर्म होठों पर रखकर चूमने के बाद बोला, 'आज हम लोग कितने पास हैं।'''कितना अच्छा लग रहा है, न जाने फिर कभी'''ऐसा अवसर मिलेगा कि नहीं!'

'ऐसा आप क्यों सोचते हैं', साधना ने पहले से भी अधिक रुद्ध स्वर में कहा। उसकी आँखों की कोरों में कुछ बूँदें चमकने लगी थीं।

ये बूँदें व्यथा की द्योतक थीं, स्नेह या करुणा की?

दो क्षण बाद साधना ने यकायक खड़े होते हुए कहा—'आपके लिए पानी ले आऊँ,' और वह बिना अनुमति की प्रतीक्षा किए नीचे चल दी।

अवाक् शून्यता के भाव से चन्द्रनाथ उसकी जाती हुई मूर्ति को देखता रहा।

पाँच-सात मिनट बीत गए, चन्द्रनाथ को लगा, जैसे युग बीत रहे हों।

उसका मस्तिष्क फिर आन्दोलित होने लगा, फिर उस पर दूरी की बोझिल छाया पड़ने लगी। यह लड़की कितनी सफ़ाई से अपने को अलग, विच्छिन्न कर सकती है, कितनी निश्चित गति से, कितने स्वच्छन्द डगों से! उसके मन में क्या है? आसक्ति, उसका स्नेह किस प्रकार का है? उसमें कितनी गहराई है, कितना स्थायित्व?

दूर, दूर, दूर! अरे दो व्यक्तियों के मन, उनके देश-काल में समीप होने पर भी, क्यों एक-दूसरे को स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ते, धुँधले रूप में भी गोचर नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

होते ? तभी तो यह सम्भव है कि लोग एक-दूसरे को धोखा दे सकें, भुलावा दे सकें, गलतफहमी में डाल सकें। ऐसा क्यों है, ऐसा क्यों है ?

और फिर वह सोचता है कि—मुझ में कितना अधीरज है, कितना अविश्वास। यह शायद ज्वर का प्रभाव है। ज्वर···सचमुच बढ़ रहा है। डाक्टर की दवा से कुछ भी नहीं हुआ, कुछ भी। ये लोग रोग के विषय में कुछ भी नहीं जानते, बुखार, टेम्परेचर अतः अमुक दवा। बुखार क्यों हुआ है, इसे जानने की कोई जरूरत नहीं, परवाह नहीं। ये लोग दवा करते हैं !

दसेक मिनट और बीत गए।

'वह नीचे क्या करने लगी, विचित्र लड़की है। और वे उसके अश्रु बिन्दु ·· नारी की आँखें कितनी जल्दी सजल हो जाती हैं ! इन बूँदों का मन से, हृदय से, अस्तित्व की गहराइयों से ऐसा क्या लगाव होता है ? हृदय भरा होने पर मनुष्य को रुलाई क्यों आती है ?

वह खाट पर उठकर बैठ गया, फिर सहसा नीचे उतर कर खड़ा हो गया। आश्चर्य ! दो दिन के बुखार में मनुष्य इतना दुर्बल हो सकता है ! बिलकुल बेढंगी बात है, मनुष्य के लिए लज्जापूर्ण, अपमान-जनक · बुखार क्या आत्मा तक पहुँच जाता है ? क्या वह शरीर को ही धर्म नहीं है···

वह चलकर एक खूँटी तक पहुँचा, वहाँ कुर्ता टँगा था। उसकी जेब में एक लिफाफा था, वही जिसमें भैया-दूज शीर्षक कविता थी। उसने उसे निकाल लिया है।

वह कविता पढ़ने लगा—'माथे पर तिलक-रेख।' और वह मानो फिर से माथे पर तिलक नाम के चिह्न की खोज और उसकी अनुपस्थिति का अहसास करने लगा। लेकिन तिलक तो मात्र औपचारिकता है, उसने अपने को समझाने की कोशिश की। असली तिलक तो मन की चीज है····एक हृदय दूसरे हृदय पर जो दर्दभरे अपनत्व की चोट देता है वही तिलक है। साधना आ रही है···· क्षिप्र गति से, जैसे उसे विलंब पर क्षोभ हो। चन्द्रनाथ दीवार के सहारे खड़ा है, हाथ में खुला लिफाफा और पैड-पेपर है। साधना चौंकती है, 'अरे ! आप खाट

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

…से उठ गए हैं !' वह खाट की ओर चलता है, लड़खड़ाता है""साधना ने सहारा देकर उसे वहाँ तक पहुँचा दिया। वह तकिए के सहारे बैठ गया।

'यह आपके हाथ में क्या है ?'

'यह तुम्हारी ही चीज है, तुम्हारे ही लिए', कहकर वह क्षणभर पढ़ने की मुद्रा में रुका, फिर उसने कविता साधना को दे दी। वह पढ़ने लगी।

पढ़ते समय वह क्या महसूस कर रही है, क्या सोच रही है ? कविता उसे कैसी लग रही है ?

उसने देखा, उसका चेहरा नितान्त निश्चल है, विकारहीन, गम्भीर, जैसे वह अपने भीतर का कोई संकेत न देने की शपथ ले चुकी हो !

'कविता पसन्द आई ?' उसने अधैर्य से पूछ डाला।

'हूँ।' अब की बार साधना की पुतलियों ने कुछ कहा। ये पुतलियाँ, …ष्टि का यह तरल रूप, चन्द्रनाथ के चिर-परिचित हैं। कितनी बार उसके जी …आया है इन पुतलियों को, इस स्निग्ध दृष्टि को, चूम ले !

'आप लेट जाइए, आपका टैम्परेचर बढ़ गया है।'

'नहीं'''' उसने अपना हाथ साधना की ओर बढ़ा दिया। अपने दोनों …थों में लेकर वह उसे कोमल भाव से दबाने लगी।

'बहिन !'

साधना पूर्ववत् निश्चल रही।

'इस बार तुमने बहुत कष्ट दिया''''अब कभी इस प्रकार दूर न होना''' …ी न महसूस करने देना। नहीं तो''''।'

साधना की दृष्टि में करुणा थी, नारी की सहज-सिद्ध समृद्धि। चन्द्रनाथ पुनः …न दृष्टि को देखने लगा, आश्वस्त विस्मय से, आर्द्र सन्तोष से, वेदना-मिश्रित …लव से। यही तो उसकी बहिन की आँखें हैं, स्नेह की अक्षय निधि, बुद्धि …र संवेदना की गम्भीर सरसी। उन आँखों में क्या है, कितना अमृत, कितना …धुर्य, कितना अपनापन।

उसने धीरे से साधना का हाथ खींचा, उसके चेहरे को कुछ निम्न किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और फिर कोमल स्वर में कहा—बहिन, जी में आता है आज तुम्हें, तुम्हारी स्निग्ध-तरल आँखों को चूम लूँ।

साधना निस्तब्ध रही, निस्तरंग जल-राशि-सी, निस्पन्द दीपशिखा-सी; किन्तु उसकी आँखों की करुणा, नितान्त अज्ञात भाव से, चिन्तन की गम्भीर छाया में परिणत हो रही थी।

क्षण भर में चन्द्रनाथ ने कुछ आगे होकर अपने होंठ उसके बाएँ, फिर दाएँ नेत्र पर रख दिए; और फिर, क्षण भर ठिठक कर, उसने उसके जुड़े हुए अधरों को नितान्त हलके स्पर्श से चूम लिया।

और, शायद प्रतिदान की आशा में, उसका मुख कतिपय इञ्च की दूरी पर सान्निध्य में स्थिर रहा। सहसा साधना का मुख झुका और उसने धीरे से उसके माथे पर पर हलका-सा चुम्बन अंकित कर दिया।

वह लेट गया और धीमे स्वर में बोला—आज हमारी पहली भैया-दूज हुई है, इसे भूलना नहीं।

कुछ देर बाद प्रमोद ने, एक हाथ में थर्मामीटर ओर दूसरे में फलों का रूमाल लिए प्रवेश किया। साधना ने उसे देखकर कहा—'तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी ?' और वह रूमाल खोलकर अनार तथा सन्तरों का रस निकालने का आयोजन करने लगी।

उधर सुशीला साधना के लिये थाली परोस कर ला रही थी। उसके मस्तक पर स्वेद-विन्दु थे, जिससे मालूम होता था कि वह काफ़ी देर चूल्हे के पास बैठी रही है। साधना और प्रमोद को ज़बरदस्ती थाली पर बिठा कर वह स्वयं फलों को छीलने-निचोड़ने लगी।

चलने से कुछ पहले कुछ मिनटों का एकान्त पाकर साधना ने कहा—देखिए, जीजी को मैं बहुत निकट से जानती हूँ; उनका हृदय जितना कोमल है, बुद्धि वैसी ही सरल; उनके प्रति आपके व्यवहार में किसी तरह की विरक्ति या खीझ नहीं आनी चाहिए।

चन्द्रनाथ—मैं यथाशक्ति इसका ध्यान रखता हूँ किन्तु दूसरों पर तो मेरा नियंत्रण नहीं है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साधना--दूसरों की बात छोड़िए; पत्नी के लिये पति का मनोभाव ही मुख्य वस्तु है।

चन्द्रनाथ—मैं समझ रहा हूँ। विश्वास रखो कि जब तक तुमसे मेरा सम्बन्ध अक्षुण्ण है तब तक जीजी में मुझे किसी अभाव की शिकायत न होगी। तुम दोनों के सम्बन्ध एक-दूसरे के पूरक हैं, और वह मेरे अन्तर की प्यास बुझाने को पर्याप्त है।

अतिथियों के चले जाने पर सुशीला ने कहा--आज तो ग़जब हो गया; साधना ने अपने पास से आपके लिये फल मँगवाए थे; क्या किया जाय!

'उसे उनका मूल्य दे दिया जाय,' चन्द्रनाथ ने संक्षेप में कहा।

'आप समझते हैं वह मूल्य ले लेगी? और वह है मुझसे छोटी!'

चन्द्रनाथ सोच रहा था--'यह भी लोकाचार है।' फिर भी उसे सुशीला से इस भाव से सहानुभूति थी कि यह उचित नहीं हुआ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उत्तरांश

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

:४२:

साँझ को लगभग साढ़े-पाँच बजे हड़बड़ा कर उठाते हुए चन्द्रनाथ ने वीरेन्द्र को कहते हुए सुना—उठिए साहब, बहुत देर हो गई; कोई भलामानुस कभी से आपका इंतजार कर रहा है।

सहारनपुर पैसेञ्जर से उतरकर वह लगभग बारह बजे कॉटेज में पहुँचा था। उस समय वहाँ न तो वीरेन्द्र ही था, न शिवानन्द। खाना-पीना देर का निबट चुका था। उसने अपना कमरा झड़वाया, हाथ-मुँह धोया और फिर पढ़-कर गहरी नींद सो गया। काफ़ी देर सो चुकने के बाद सहसा यह स्वप्न-सा देखता हुआ कि कोई उसे पुकार रहा है वह तेजी से उठ बैठा। वीरेन्द्र की बात कठिनता से सुनते-समझते उसने उसे नमस्कार किया। फिर कहा—ट्रेन में बड़ी थकन हो गई थी।

'थकन-ठकन नहीं; यह कहिए कि कई रातों से सोने को नहीं मिला था।'

चन्द्रनाथ हँसने लगा। उसने वीरेन्द्र से बैठने का अनुरोध किया।

किन्तु वीरेन्द्र को चाय पीनी थी—वस्तुतः उसी के लिए उसने चन्द्रनाथ को जगाने की धृष्टता की थी। उसे लेकर वह अपने कमरे में गया। चाय पीते हुए, बोला—आपने तो कहा था कि श्रीमती जी को साथ लाएँगे, फिर अकेले क्यों आए? क्या मित्र लोगों पर भरोसा नहीं था?

चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—नहीं; असल में उनकी एक सखी की शादी होने वाली है, इसीलिए रुक गईं। महीने सवा-महीने के बाद आ जायँगी।

'सखी कौन, मिस साधना?'

'हाँ, आपको कैसे मालूम?'

'अरे हमें सब मालूम रहता है, समझ लीजिए कि छोटे-मोटे सर्वज्ञ हैं। हमें यह भी पता है कि यह शादी कैसे और किसके ज़रिए तय हुई है।.........आप उनकी शादी में जाएँगे न?'

'शायद।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grants

'शायद क्यों, हमें तो खबर मिली है कि आपकी मिस साधना से बड़ी घनिष्ठता है; और वे अक्सर आपको पत्र लिखती हैं।'

लोक में घनिष्ठता का जो अर्थ है, और वीरेन्द्र जिसकी ओर संकेत कर रहा है, उससे चन्द्रनाथ अनभिज्ञ नहीं है। किन्तु उसका साधना से जिस प्रकार का सम्बन्ध है वह इस घनिष्ठता से कोई समानता नहीं रखता, यह शायद वीरेन्द्र की समझ में ही नहीं आ सकता; इसलिए प्रसंग को समाप्त करने की इच्छा से उसने कहा—मेरा उस लड़की से परिचय अवश्य है, पर मुख्य बात यही है कि वह पत्नी की मित्र है। यदि मैं गया तो उसका मुख्य उद्देश्य उन्हें लिवाकर लाना ही होगा।

रात को चन्द्रनाथ की शिवानन्द से भेंट हुई। वह छुट्टियों में प्रयाग ही रहा था। अध्ययन-कार्य के अतिरिक्त उसने कुछ कवित्तों की रचना भी की थी, और वह उन्हें चन्द्रनाथ को सुनाने को बहुत उत्सुक था। साथ ही उसे चन्द्रनाथ को कई खबरें भी सुनानी थीं।

चन्द्रनाथ ने उसके कबित्त सुने। उसने आश्चर्य से देखा कि इस बार के कवित्तों का स्वर कुछ भिन्न है। उनका विषय मथुरा के कृष्ण और उनके प्रति गोपियों का उपालंभ न होकर राधाकृष्ण तथा गोपियों की रासलीला थी।

'इन छुट्टियों में आपको कृष्ण के रास की ऐसी सरस याद क्यों आई, मिश्र जी?'

'आप नहीं जानते। शरद-पूर्णिमा के अवसर पर मथुरा-वृन्दावन में भगवान् का रास रचाया जाता है। लड़कपन में बहुत बार देखा है, और खूब देखा है। इस बार आश्विन की उजेली रातों में अक्सर उसकी याद आ जाती थी।'

'क्या रास बहुत सुन्दर होता है? इधर आने वाले रासधारी तो मुझे पसन्द नहीं आए—मैंने भी काफी दिन पहले बदायूँ में रास-लीला देखी थी।'

'बदायूँ की बात जाने दीजिए, मथुरा-वृन्दावन की बात ही न्यारी है। वहाँ दस-दस बारह-बारह वर्ष के बालक-बालिकाएँ जब तन्मय होकर "रास" का नाटक खेलते हैं तो लगता है जैसे प्रत्यक्ष राधाकृष्ण और गोप-कुमारियाँ ही अवतार लेकर आ गए हों। बड़ा आनन्द आता है; उधर गायक लोग बैठकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सूर के रसभरे पद गाते हैं।' फिर कुछ रुककर उसने कहा—'एक बार आपको वहाँ ले चलें; अगले वर्ष चलिए, बड़ा आनन्द आएगा।'

शिवानंद की निर्व्याज सरलता और सरसता पर चन्द्रनाथ को कभी आश्चर्य होता है और कभी ईर्ष्या; प्रायः सदैव ही वह उसे मुग्ध किए बिना नहीं रहती। भूमण्डल में कहीं एक भयंकर महायुद्ध छिड़ा हुआ है, मानवता की नैतिक-राजनैतिक असंख्य समस्याएँ हैं, इनकी शिवानंद को कोई चेतना नहीं है। वह मानो इस कर्कश वस्तु-जगत् में रहते हुए भी कहीं और रहता है--किसी दूसरे स्रोत से रस प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार की विस्मृति, कटु वर्तमान के प्रति यह उदासीनता, व्यक्ति के स्वास्थ्य और बचाव के लिए क्या कुछ भी महत्व नहीं रखती ?

'अगले साल कोशिश करूँगा, मिश्र जी; बदायूँ से तो मथुरा उतनी दूर भी नहीं है,' उसने खोए से भाव से कहा।

और वह कल्पना करने लगा—कैसे वहाँ के बालक-बालिकाएँ रास-लीला करते होंगे! उस समय वे क्या महसूस करते होंगे? रामलीला में दर्शक पात्रों से कैसा तादात्म्य अनुभव करते हैं! कैसा जादू है इस कवियों का, जिन्होंने भारत के अन्तर और बाह्य प्रदेश को रामकृष्णमय बना दिया है।

उसे याद आया, किस प्रकार वह बचपन में कृष्ण की लीलाएँ सुनते नहीं अघाता था और किस प्रकार पाँचवीं कक्षा में वह रामलीला से आकृष्ट होता था। अब तो कई वर्ष से उसने इन चीजों को मानो देखा ही नहीं है। क्या 'नए' भारत में सचमुच ही इन सरस अन्धविश्वासों के लिए स्थान नहीं रहेगा? क्या यह "अनाधुनिक" विश्वास नितान्त ही निरर्थक है, सार-हीन है ?

भोजन हो चुकने के बाद शिवानंद ने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया। वीरेन्द्र भी मौजूद था। अपने कमरे में से चन्द्रनाथ के संग्रह की एक प्रति लाकर उसने कहा--'देखिए, यही आपकी पुस्तक का "फ़ाइनल" रूप है।'

वीरेन्द्र—गेट-अप साधारण ही रहा; यह प्रिण्टर बिलकुल बौड़म आदमी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grants

शिवानंद—खैर, अब जैसा भी है; असल चीज़ तो कविताएँ हैं, क्यों मिस्टर चन्द्रनाथ ?

वीरेन्द्र—जी नहीं, खरीदने वाला पहले गेट-अप देखता है। अच्छा गेट-अप होने पर रद्दी-से-रद्दी पुस्तक खूब बिक सकती है।

शिवानंद—आपका विचार ग़लत नहीं है।...(चन्द्रनाथ से) आपके पीछे ही मैंने पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ कई पत्रों में समालोचनार्थ भेज दीं। आपने कोई आलोचना देखी ?

'नहीं, मैंने तो कोई आलोचना नहीं देखी। बदायूँ में प्रायः पत्र-पत्रिकाएँ देखने को नहीं मिलतीं।'

'कल लाइब्रेरी में मैं आपको दिखलाऊँगा....आलोचनाएँ अच्छी ही निकली हैं; यद्यपि प्रयाग के कुछ साहित्यिकों ने आपके प्रति काफ़ी नाराज़ी दिखलाई है जैसे मिस्टर नागर ने।...मिस्टर वीरेन्द्र "छात्रवाणी" का वह अंक आपके पास पड़ा होगा ?'

वीरेन्द्र—'होगा जरूर।' फिर कुछ रुककर 'असल में मिस्टर चन्द्रनाथ कुछ "इम्प्रैक्टिकल" (अव्यावहारिक) आदमी हैं और नागर कुछ चिड़चिड़े दिमाग का।...आपने कहीं यह कह दिया होगा कि नागर को कविता इत्यादि की कोई पहचान नहीं है, बस इसी से वह बिगड़ गया।'

चन्द्रनाथ—जहाँ तक मुझे याद है; मैंने ऐसा कभी नहीं कहा, यद्यपि यह कहना झूठ न होता।

'यह देखिए, तभी तो मैं कहता हूँ। सवाल झूठ-सच का नहीं, पालिसी (नीति) का है, आपने जरूर कहा होगा। मुझसे खुद आपके दोस्त हरिशंकर ने कहा कि नागर को आपसे शिकायत है।'

यह पहला अवसर था जब वीरेन्द्र ने उसकी बात में अविश्वास प्रकट किया। उसे आश्चर्य भी हुआ और खेद भी। बोला—'यदि मैंने कहा भी तो उसका बदला मुझसे लेना चाहिए न कि मेरी पुस्तक से; आलोचना निष्पक्ष होनी चाहिए।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

शिवानन्द—आप भी कैसी भोली बातें करते हैं, आलोचना कभी निष्पक्ष हुई है !

चन्द्रनाथ—तो मैं ऐसी आलोचना को कोई महत्व नहीं देता।

दूसरे दिन शिवानन्द चन्द्रनाथ को आलोचनाएँ दिखाने लाइब्रेरी ले गया। कीर्त्तिकान्त के पत्र में पुस्तक की समीक्षा श्री हिमांशु जी ने की थी। लिखा था—'संग्रह की अधिकांश कविताओं का विषय सौन्दर्य और प्रेम है, वे "विवश" कला-सृष्टि के अनुरागियों को पसन्द आ सकती हैं।''''कला में आज का आलोचक जिस वस्तु को खास तौर से खोजता है वह है उसकी सामाजिक उपयोगिता। वह देखना चाहता है कि कहाँ तक कोई कृति क्रान्तिकारी शक्तियों को संगठन और प्रेरणा दे सकती है।''''अवश्य ही इस प्रकार की कुछ रचनाएँ इस संग्रह में हैं जिनका विषय मानव-सभ्यता और समाज है, पर उनका स्वर; प्रायः, या तो निराशावादी है या भावुक-उपदेश-रूप। वस्तुतः लेखक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है, जिसके फल-स्वरूप वह कहीं तो बूर्जुआ मूल्यों के मोहक इन्द्रजाल में फँसकर रह जाता है और कहीं एक "यूटोपियन" (स्वप्नदर्शी) साम्यवादी के रूप में दिखाई पड़ता है।' "नई वीणा" की मुख्य शिकायत यह थी कि कवि में प्रयोगात्मक आधुनिकता के बीज अवश्य हैं, पर उसकी सचेत स्वीकृति और अभिव्यक्ति नहीं दीखती। उसमें अपनी कला के प्रति पूर्ण जागरूकता का भाव नहीं है। कुछ पत्रों ने भाषा, छन्द आदि पर प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ देकर कवि के भविष्य के प्रति आशा और शुभ कामनाएँ प्रकट की थीं। छात्रवाणी में यह आशंका प्रकट की गई थी, यदि कवि की भावनाओं की यही दिशा रही तो उसका भविष्य संदिग्ध ही है।'''आगे लिखा था—'कुल मिला कर आलोच्य पुस्तक एक 'मीडियाकर' (मामूली) कृति है जिसमें युग का भाव-स्पन्दन देखने की आशा दुराशा मात्र है।'

'कहिए, इन आलोचनाओं का आपके पास क्या उत्तर है ?' शिवानन्द ने पूछा।

चन्द्रनाथ—आप लोग नागर को व्यर्थ ही बदनाम कर रहे थे, आलोचना उन्होंने तो लिखी नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'इससे क्या, वे आपके परिचित हैं और आलोचना उनके पत्र में निकली है, इतना काफी है। आलोचक महोदय नागर की इच्छा के प्रतिकूल थोड़े ही जा सकते थे।'

'सचमुच, क्या सम्पादकों का इतना नियंत्रण रहता है ? मैं तो ऐसा नहीं समझता।'

'स्टैण्डर्ड पत्रों की बात दूसरी है। किन्तु जिन पत्रों का उद्देश्य ही निन्दा-स्तुति है उनके बारे में यही सत्य है। आप क्या आशा करते हैं कि कभी "समालोचक" और "छात्रवाणी" में निष्पक्ष आलोचना भी हो सकती है।'

"समालोचक" की मैं शिकायत नहीं करता। वह तो खुल्लमखुल्ला एक कम्यूनिस्ट पत्र है।'

'आप यह क्यों भूल जाते हैं कि वह एक साहित्यिक पत्र भी है।'

'मैंने एक तरकीब सोची है', शिवानन्द ने कुछ रुकने के बाद कहा।

'क्या ?'

'आप दस-पाँच प्वाइंट बता दीजिए; मैं एक-दो लेख लिखकर मासिक पत्रों में भेज दूँगा। इन आलोचकों की भी आलोचना कर दी जायगी।'

'इसका मतलब ? क्या मैं स्वयं छिपकर अपनी प्रशंसा करूँगा ? छिः।'

'लेख तो मैं लिखूँगा, इसमें बुरी बात क्या है।'

'देखिए मिश्र जी, मैं आपके इस संकेत को बड़े अपमान की बात समझता हूँ। इतने दिनों से साथ रहते हुए भी आप मेरे स्वभाव से....'

'यह लीजिए, आप बिगड़ने लगे। अच्छा जाने दीजिए। मैंने इसलिए कहा था कि प्रायः आजकल के लेखक ऐसा करते हैं। एक मित्र ने एक की प्रशंसा कर दी; दूसरे ने दूसरे की। लेकिन देखता हूँ, आपसे किसी को इस प्रकार की आशा न करनी चाहिए।'

विभिन्न आलोचनाएँ पढ़कर पहले चन्द्रनाथ ने कुछ विनोद का अनुभव किया था, फिर उसे क्षोभ और निराशा हुई। कितनी कम संवेदना और बुद्धि का संबल लेकर लोग आलोचना में प्रवृत्त हो जाते हैं। जैसे कला का चिन्तन उनकी सृष्टि से कम कठिन व्यापार हो। कला के मूल्यांकन में, जहाँ जीवन ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एकमात्र प्रतिमान हो सकता हैं, आलोचकगण कैसे-कैसे पैमाने लेकर दौड़ पड़ते हैं। कोई भाषा को देखता है तो कोई छन्दों को; कोई कार्लमार्क्स की दुहाई देता है तो कोई फ्रायड की। जैसे विभिन्न विचारकों के वाद जीवन का अंग न होकर उसके स्थानापन्न हों! आश्चर्य है कि तरह-तरह की चिन्ताओं में पड़ते हुए आलोचक के एक ही प्रकृत अथच्च महत्त्व-पूर्ण प्रश्न करना भूल जाते हैं, यह कि काव्य-विशेष का जीवन की गहराई और विस्तार से क्या सम्बन्ध है—वह कहाँ तक मानवता की अन्तर्निहित माँगों और भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है, और कहाँ तक जीवन का विश्व के उन मूल-सत्त्वों से सम्वन्ध जोड़ता है जिनके विना उसका अस्तित्व खाली ढांचे की भाँति अर्थशून्य है।

और वह सोचने लगा—कलाकार को आलोचकों की चिन्ता क्यों करनी चाहिए? यदि कला हमारे जीवन का आन्तरिक विकास है तो उसका उद्देश्य वाहरी यश का लाभ नहीं हो सकता। क्या संसार के अनुकूल-प्रतिकूल आलोचकों को कलाकार का सबसे अच्छा उत्तर यही नहीं है कि वह चुपचाप, सिर्फ अनुष्ठान की पूर्णता पर दृष्टि जमाये, सरस्वती के मन्दिर में पूजा करता रहे? चुपचाप आत्माभिव्यक्ति की वेलि को अपने रक्त-बिन्दुओं से सींचता रहे?

●

: ४३ :

विश्वविद्यालय से लौटे अभी चन्द्रनाथ को कुछ ही मिनट बीते थे कि सामने आँगन में उसे मुद्रक करतारसिंह की शक्ल दिखाई दीं। आकर बैठने के बाद उसने कुशल पूछी और फिर कहा—आपको पुस्तक की छपाई वगैरह पसन्द आई न?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किसी के किए हुए काम की अवज्ञा करना, उसे बुरा कहना, चन्द्रनाथ कठिन पाता है। उसे भय रहता है कि ऐसा करने से कहीं उस व्यक्ति का जी न दुखे। बोला—कोई खास शिकायत की बात नहीं है!

'बड़ी मुश्किल से आपके जाने से पहले किताब पूरी कर पाई थी। और सब काम बन्द कर देना पड़ा था; यहाँ तक कि कई पुराने गाहक नाराज़ हो गए।'

चन्द्रनाथ चुप रहा। जैसे अहसान के बोझ को सँभालने की कोशिश कर रहा हो।

कुछ देर रुककर मुद्रक ने कहा— मेरा हिसाब साफ़ हो जाता तो ठीक होता।

'एक-दो महीने रुकने में क्या कोई हर्ज है?'

'नहीं साहब, इतना रुकने से कैसे काम चलेगा। मैं छोटा आदमी हूँ, इतनी पूंजी थोड़े ही रखी है कि कर्ज़ पर काम करता रहूँ। आपकी मुरौवत से इतने दिन भी रुका रहा।'

'अच्छा!''' क्या पुस्तकें बेचकर कुछ रुपया नहीं वसूल कर सकते?'

'यह सब झंझट की बात है। आप हिसाब साफ़ कर दीजिए, फिर मैं कोशिश करूँगा कि आपकी ज्यादा से ज्यादा किताबें निकल जायँ।'

चन्द्रनाथ खामोश रहा।

'अभी कुछ दे रहे हैं, कि मैं फिर आऊँ?' करतार सिंह ने अधीरज के स्वर में कहा।

चन्द्रनाथ—आप कष्ट न करें, मैं खुद ही कल-परसों में आपकी तरफ़ आऊँगा।

साँझ को वह ट्यूशन करने के लिए गया। उसके पास दो ट्यूशन थे; एक छात्र एफ़० ए० की तैयारी कर रहा था, दूसरा बी० ए० की। पहले छात्र के घर ट्यूशन की फ़ीस कुछ कठिनाई से मिलती थी। इस समय भी वहाँ एक महीने की फ़ीस अर्थात् बीस रुपये बाकी थे। चन्द्रनाथ पहले वहीं गया।

छात्र के अभिभावक ने, जो उसके फूफा होते थे, कहा—मुझे बड़ी खुशी है, मास्टर साहब, कि आप वापस आ गए, मुझे तो इसकी कोई उम्मीद ही नहीं रह गई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

थी। बल्कि इसीलिए हमें मनोहर के लिए दूसरे टीचर का प्रबन्ध करना पड़ा। मैंने मिस्टर नागर से भी आपके लौटने के बारे में पूछा था, उन्होंने भी कहा कि कोई निश्चय नहीं है, और दूसरा शिक्षक बुला लेने की राय दी। मैंने आपसे पहले ही कहा था कि मनोहर ज्यादा कमजोर है, जरा ध्यान रखिएगा। खैर, मनोहर की, न जाने क्यों, आपके पढ़ाने से भी कुछ शिकायत थी।

चन्द्रनाथ ने कहा—'कोई हर्ज नहीं है, उन्हें जो शिक्षक पसन्द हो उससे पढ़ें।' फिर उसने दबे शब्दों में प्रकट किया कि उसका पिछला हिसाब दे दिया जाय।

उन्होंने उत्तर दिया—अभी पांच-सात दिन प्रतीक्षा करें, मास्टर साहब; मैं जल्दी ही इन्तजाम कर दूंगा।

चन्द्रनाथ कहना चाहता था कि उसे बहुत ज्यादा जरूरत है, पर न कह सका। उसने पास खड़े हुए मनोहर से पूछा—क्या तुम्हें मेरे पढ़ाने में कोई शिकायत थी ? तुमने मुझसे तो कभी नहीं कहा।

'कभी-कभी समझ में नहीं आता था, मास्टर साहब, सो मैं आपसे भी कह देता था। और तो कोई शिकायत नहीं थी।'

शरीर और बुद्धि दोनों से ही मनोहर काफी स्थूल था; उसे पढ़ाना चन्द्रनाथ को बिलकुल ही अच्छा न लगता था। इसलिए उसे ट्यूशन छूटने का कोई खास अफसोस नहीं हुआ। किन्तु जब वह वहां से चला तो उसे हठात् याद पड़ा कि उसे मुद्रक के रुपए देने हैं। वह सोचने लगा—'शीघ्र ही दूसरी ट्यूशन की खोज करनी पड़ेगी।'

अब वह दूसरे छात्र के घर चला। वहाँ के लोग अधिक सभ्य थे, फिर भी उसका दिल धड़क रहा था। कहीं वहाँ भी ऐसा जवाब मिले तो....

किन्तु उसकी आशंका निर्मूल सिद्ध हुई। उसे यह जान लेने में देर न लगी उसकी दूसरी ट्यूशन अक्षुण्ण है।

रात को जब वह लौटा तो बहुत उदास था। उदासी का पूरा-पूरा कारण शायद उसे स्वयं ज्ञात न था था। किन्तु जब शिवानन्द ने पूछा तो उसने ट्यूशन छूटने की खबर दे दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'घबराइए नहीं, परीक्षा समीप है, कहीं न कहीं ट्यूशन मिल ही जायगी,' शिवानन्द ने कहा।

पता नहीं चन्द्रनाथ ने अन्तर्मन में इस आश्वासन से किसी प्रकार का सन्तोष हुआ या नहीं, पर उसकी चेतना में स्पष्ट ही व्यथा हुई। और यह व्यथा दोहरी थी। समय-समय पर शिवानन्द जो उसके प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करता है वह कृतज्ञता के साथ कष्ट का भाव भी जगाती है। वह कृतज्ञता किस काम की जो किसी प्रकार का प्रतिकार नहीं कर सकती? वह व्यक्ति कितना अपदार्थ है जिसके क्रोध और घृणा, स्नेह और कृतज्ञता का दूसरों के लिए कोई अर्थ नहीं है।

दूसरे की सहानुभूति का पात्र बनना कोई स्पृहणीय बात नहीं है, विशेषतः जब वह सहानुभूति अकिञ्चनता और असामर्थ्य द्वारा जगाई जाय। और यह रुपए का अभाव क्या सचमुच यह इतना बड़ा अभिशाप है? अब तक वह समझता था कि रुपए में, धन में, कोई आन्तरिक महत्व नहीं है, उसका सारा मूल्य कृत्रिम है, असंस्कृत रूढ़िमात्र, पर आज उसे लग रहा है जैसे यह रुपया ही विश्व की, समाज की एकमात्र शक्ति है, वही उसे सञ्चालित कर रही है। रूप, यौवन, विद्या, हाथ, पैरों की शक्ति, सभी कुछ रुपए के लिए बिक रहा है, सब कुछ पैसों से खरीदा जा सकता है। रुपए के अभाव में सिर्फ आराम ही न मिले तो, शायद वह इतना स्पृहणीय न हो, पर धनहीन व्यक्ति को अपने मानापमान, अपने क्रोध और स्नेह, अपनी मनस्विता और अहंभाव, सबका बलिदान करना पड़ जाता है, यह नितान्त असह्य है।

फिर यह मान लेने में क्या हर्ज है कि सम्पत्ति ही मूल्यों का प्रधान अधिष्ठान है? क्यों नहीं एक मात्र रुपए की प्राप्ति के लिए ही श्रम किया जाय? इन प्रश्नों पर सोचते हुए चन्द्रनाथ के नेत्रों के सामने एक घटना का चित्र आ गया जो हाल में ही घटित हुई थी।

वक्तृत्व चन्द्रनाथ का स्वभाव नहीं है, पर, न जाने क्यों, विशेष अवसरों पर उसकी यह शक्ति सहसा उत्तेजित हो जाती है। ऐसा प्रायः तब होता है जब वह बहुत-से अपढ़ किसानों या अन्य निम्न वर्ग के लोगों के बीच में होता है। अबकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बार जब वह बरेली से इलाहाबाद की गाड़ी में बैठा तो एक ऐसा ही अवसर उपस्थित हो गया था। तीसरे दर्जे के डिब्बे में बहुत-से गांव के लोग भरे थे जिनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी, जवान भी थे और बूढ़े भी। वे लोग बेकारी और आर्थिक संकट के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे। उनकी बातों में योग देते-देते चन्द्रनाथ सहसा वक्तृता देने लग गया। उसने कहा—'आप जानते हैं, यह बेकारी और आर्थिक कठिनाइयाँ क्यों हैं ? इसलिए कि हम गुलाम हैं। और हम लोग गुलाम इसलिए हैं कि हम लोग मिलकर रहना नहीं जानते, हम आपस में लड़ते हैं। हिन्दू और मुसलमान क्यों लड़ते हैं ? मज़हब के लिए, धर्म के पीछे। लेकिन क्या ग़रीब आदमियों का कोई धर्म या मज़हब होता है ? धर्म का असली अर्थ क्या है ? धर्म का अर्थ है सच बोलना, चोरी न करना, मन में बेईमानी न आने देना। लेकिन क्या आज हम सच बोलते हैं ? आपलोग सच बोलते हैं ? कोई भी सच बोलता है ? यह नहीं कि आप सच बोलना नहीं चाहते, आपको जबर्दस्ती झूठ बोलना पड़ता है। आपकी ग़रीबी झूठ बोलने को मजबूर करती है। जिसके घर में बीवी-बच्चे भूखों मर रहे हैं वह सच कहाँ तक बोलेगा ? वह तो चार पैसों के लिए, चार रोटियों के लिए, झूठ बोल देगा। आज हममें ईमानदारी नहीं है, क्योंकि हम ग़रीब हैं। ग़रीब आदमी न सच बोल सकता है, न ईमानदार बन सकता है। इसलिए अगर हम चाहते हैं कि हम सचमुच धर्मात्मा बन जायँ, तो हमें अपनी ग़रीबी दूर करनी चाहिए और यह ग़रीबी तब तक दूर न होगी जब तक हिन्दू-मुसलमान आपस में मिलकर न रहेंगे।'

उसकी वक्तृता की तात्कालिक प्रेरक डिब्बे के यात्रियों की बातचीत थी जिसमें उनके कष्टपूर्ण अनुभवों का उल्लेख किया गया था, पर उसकी पृष्ठभूमि में, शायद, साधना की स्पीच और कांग्रेस-लीग झगड़े का इतिहास भी था। उपस्थित यात्रियों पर उस वक्तृता का बहुत प्रभाव पड़ा। अनेक प्रकार से अनेक लोगों ने उसके विचारों का समर्थन किया। उनमें से एक बूढ़ा जिसके पिचके हुए गाल, ठोढ़ी, गालों और सिर के बढ़े हुए आधे-से अधिक सफेद केश, माथे पर की झुर्रियाँ तथा फटी हुई लँगोटी और कुर्त्ता इस बात की साक्षी दे रहे थे कि उसका जीवन कठिन संघर्ष में बीता है, सिर हिलाते हुए विह्वल वाणी से

पथ—२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बोल उठा था—'बाबू ठीक कहते हैं।' ग़रीब आदमी का कोऊ धरम नाहीं है, मुख्य चीज रुपया है।' उसके उद्‌गार ने चन्द्रनाथ को चौंका दिया था। क्या सचमुच ही मुख्य चीज रुपया है ? क्या सत्य और सौन्दर्य, प्रेम और त्याग कुछ नहीं है ? क्या मानव-जीवन के सारे मूल्य आर्थिक सम्बन्धों का "बाई—प्रोडक्ट" मात्र हैं ?

आज फिर उसके मस्तिष्क में वृद्ध का वह विह्वल उद्‌गार गूँजने लगा। वह बूढ़ा कुछ ऐसे भाव से बोल उठा था मानो उसने यकायक एक बड़े सत्य का साक्षात्कार कर लिया हो, अथवा उसके जीवनव्यापी अनुभव की उस दिन सहसा व्याख्या या अभिव्यक्ति हो गई हो। उसकी वह उच्छ्‌सित विश्वास-भावना क्या झूठ हो सकती है ?

उस दिन उसे अपनी वक्तृता से यह निष्कर्ष निकलते देखकर लज्जा हुई थी। आज वह सोच रहा है—इसमें लज्जा होने की क्या बात थी ? यह कैसी विडम्बना है कि एक दिन स्वयं उसने जिस सत्य की घोषणा की थी उसे स्वीकार करने में उसकी आत्मा सदैव कुण्ठित रही है। क्यों नहीं वह इस नितान्त स्पष्ट सत्य को उसकी सम्पूर्णता में ग्रहण कर लेता और उसके अनुकूल जीवन बनाने को एक मन से यत्न करता ? अरे, कौन-सी वह शक्ति है जो उसे सीधे और सहल राजमार्ग से हटाकर टेढ़ी-मेढ़ी अपरिचित गैलों में खदेड़ रही है ? क्यों नहीं वह इस अंधशक्ति का पूर्ण बल से विरोध करके अपनी रक्षा कर लेता ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

:४३:

इलाहाबाद आए चन्द्रनाथ को लगभग एक सप्ताह हो गया। इस बीच में न तो साधना ने ही उसे कोई पत्र भेजा, न उसने साधना को। सहसा यह सोचकर उसे आश्चर्य हुआ, आश्चर्य, किसी प्रकार का कष्ट या घबराहट नहीं। दो-डेढ़ मास पहले यदि ऐसा हुआ होता तो उसकी चिन्ता और व्याकुलता की सीमा न रहती, तब वह रह-रहकर डाकिए की बाट जोहता, और साधना के स्नेह और उदासीनता के सम्बन्ध में तरह-तरह की कल्पनाएँ करता।

पर उसे अब वैसी परेशानी नहीं थी। समतल मैदान में पहुँचकर जिस प्रकार नदी अपनी अतिरिक्त चपलता को भूल जाती है, उसी प्रकार समंजस भाव-भूमि में प्रतिष्ठित होकर स्नेह की आकुलता स्थिर निजतावृत्ति में परिणत हो जाती है।

चन्द्रनाथ को आजकल एक दूसरी चिन्ता हो रही थी—वह साधना को क्या उपहार देगा? विवाह के अवसर पर कोई उपहार देना आवश्यक है, यह वह महसूस करता था। और उपहार भी साधारण नहीं, नया-सा, सुन्दर-सा जो उसकी रुचि और स्नेह दोनों का प्रतिमान हो सके। ऐसा उपहार कहाँ और कितने में मिल सकेगा?

उसे याद आया कि भैया-दूज के दिन भी उसे कुछ ऐसी ही चिन्ता हुई थी। उसने उस चिन्ता को बनावटी अथवा अनावश्यक भी घोषित किया था, पर क्या सचमुच वह वैसी थी? और शायद यह मात्र लोकाचार भी नहीं है जैसा कि साधना ने संकेत किया था। अपना स्नेह प्रकट करते हुए किसी को जब हम कुछ देते हैं तो मानो उस वस्तु में हमारा हृदय संपृक्त हो जाता है। हृद्गत् भावना को, स्नेह को, दूसरों तक पहुँचाने का दूसरा कोई साधन भी तो नहीं है—हमें बरबस भौतिक प्रतीकों की शरण लेनी पड़ती है। तभी तो आज उसकी इच्छा हो रही है कि साधना के, अपनी बहिन के लिए, कोई अच्छी-सी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grants

सुन्दर सी, मनोरंजक सी चीज खरीदे जिसे पाकर वह मन-ही-मन प्रसन्न और तुष्ट हो जाय।

हमें प्रसन्न करने के लिए, तृप्त करने के लिए, प्रेमी का प्रेम ही काफी नहीं हैं; हम उसका प्रत्यक्ष इन्द्रिय-ग्राह्य प्रमाण चाहते हैं, भौतिक सामग्री में पुंजीभूत रूप। तभी तो उपहार देना और पाना इतना अच्छा लगता है।

और वह सोचने लगा—शायद इसी कारण अब उसे साधना अधिक निकट, और उसका प्रेम अधिक निश्चित मालूम पड़ रहा है। क्या इसका एकमात्र कारण साधना का वह क्षणिक स्पर्श उसके विश्वास और प्रेम की वह भौतिक अभिव्यक्ति ही नहीं है ? क्या सचमुच प्रेम आत्मा का धर्म नहीं है, क्या वह भौतिक माध्यम का इतना सापेक्ष है ?

आत्मा और शरीर, शरीर और आत्मा; वे दोनों एक-दूसरे में कितने ओत-प्रोत हैं ! कौन जाने कि एक के बिना दूसरे की सत्ता भी सम्भव है कि नहीं। और यदि आत्मा सचमुच निर्गुण है, क्रियाहीन और कामना-शून्य, तो फिर प्रेम क्या शरीर का ही धर्म है ? प्रेम शारीरिक है, भौतिक है ? तब वह पवित्र क्यों है ? वासना से भिन्न क्यों है ?

किन्तु प्रेम वासना ही नहीं है, यह उसकी आस्था है। और उसे यह भी विश्वास है कि उसका प्रेम पवित्र है। वह जानता है कि वासना-जन्य चुम्बन दूसरे प्रकार का होता है; उसने जो नितान्त कोमल भाव से साधना की आँखों और होंठों को छुआ था उसके मूल में वासना नहीं थी।

फिर भी, वह सोचता है, उसने ऐसा क्यों किया ? क्यों उसे वैसी प्रेरणा हुई ? क्या वह ज्वर का प्रभाव था ? किन्तु ज्वर ने उसकी चेतना को तो आक्रांत नहीं किया था, वह पूर्णतया जागरूक था। और क्या यह सत्य नहीं है कि ज्वर से काफ़ी पहले यह प्रेरणा उसके मन में जन्म ले चुकी थी, काफी पहले से वह यह महसूस करने लगा था कि साधना और उसके बीच एक अनिवार्य दूरी का, अलगाव का, भाव है जिसका उच्छिन्न होना उनके पारस्परिक सम्बन्ध की सुरक्षा के लिए आवश्यक है ? किन्तु क्या दूरी को हटाने का यही समुचित उपाय था ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रेम, अपनापन, चुम्बन; क्या इनमें कोई आवश्यक लगाव है ? अथवा होना हिए ? यदि प्रेम पारस्परिक उष्णता का अनुभव मात्र नहीं है तो क्यों उसे स्थूल क्रियाओं पर निर्भर होना चाहिए ? क्यों पति-पत्नी एक दूसरे को इस वि ढंग से प्यार करते हैं ?

पति-पत्नी का पारस्परिक मिलन, मानव द्वारा आत्मसृष्टि की क्रिया, वतः अशुचि और कुरूप है; उसे शुद्ध प्रेम कहना समुचित नहीं। किन्तु और बहिन का, और शायद माँ और सन्तान का, प्रेम भिन्न कोटि का उस प्रेम की जड़ें शरीर में नहीं, आत्मा में रहती हैं, हमारे अस्तित्व की ाड़ियों में, हमारे प्राणों में, हमारी अन्तःप्रकृति के विधायक परमाणुओं में, तो वह सम्बन्ध अविच्छेद्य है—वहाँ 'डाइवोर्स' की सम्भावना नहीं है। माँ कुछ अन्यथा नहीं हो सकती और न बहिन अबहिन। फिर उसने क्यों ने और साधना के सम्बन्ध को उस स्पर्श द्वारा, उस भौतिक सम्पर्क से, न करने की धृष्टता की ?

दूरी·····मानो दूरी मात्र देशगत, मात्र भौतिक वस्तु है जिसे भौतिक ाध्य से हटाया जा सकता है ! फिर यह दूरी क्या है ? एक व्यक्ति और रे के बीच में अलंघ्य खाई-सी क्यों मालूम पड़ती है ? क्यों, कैसे, हम एक- रे से इतने भिन्न, इतने अलग रहते और महसूस करते हैं ? क्यों नहीं हमें दूसरे के मन स्पष्ट दिखाई देते, बगीचे के फूलों की तरह, अमावस्या के कीले तारकों की भाँति ? एक-दूसरे की आँखों में देखते हुए भी हम परस्पर ने रहस्यमय क्यों प्रतीत होते हैं ?

वह ज्वर के उस दिन की याद करता है जिस दिन साधना आई थी। र, अपनी बुद्धि के विरुद्ध, वह महसूस करता है कि उस दिन का वार्तालाप, र आदान-प्रदान, व्यर्थ नहीं था। वह मानो आवश्यक था, मानो शरीर के न्ध में अलगाव की इतनी शिथिलता एक-दूसरे को समझने और स्नेह की ाति के लिए अपेक्षित है, हितकर है।

उसने इस सम्बन्ध में अपने को क्षमा कर दिया, किन्तु शर्त पर, यह कि र कभी उसके और उसकी बहिन के बीच इस प्रकार के भौतिक हस्तक्षेप की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आवृत्ति न हो। अब से उनका सम्बन्ध, भीतर से और बाहर से, नितान्त ... रहेगा, नितान्त निष्काम, सात्विक और आध्यात्मिक। जहाँ प्रेम पूर्ण है ... सन्देह को अवकाश कहाँ है, परीक्षा की कहाँ गुंजाइश है? वहाँ व्याकुलता ... क्यों होगी, बेचैनी भी किस लिए? जहाँ एक-दूसरे के अस्तित्व आध्यात्मिक ... एकतानता के सूत्र से बँधे हैं वहाँ संयोग और वियोग का भी क्या अर्थ होगा? ...

उसे लगता है जैसे इस प्रेम के उपभोग के लिए एक-दूसरे की निकटता ... बिलकुल ही अपेक्षित नहीं है, सर्वथा अनावश्यक है। जैसे रेडियो के दो यन्त्र ... देश में दूर रहते हुए भी, एक ही गति और स्वर से बजते रहते हैं, उसी प्रकार ... प्रेमियों के अस्तित्व, आत्मीयता की चरम भूमिका में, एक-दूसरे को दूर से ... आह्लादित और प्रभावित करते रह सकते हैं। साधना उसके पास हो या दूर ... पर एक निगूढ़ अर्थ में क्या वह उसी के भीतर, उसकी समस्त चेतना और ... संवेदना में, समाई हुई नहीं है?

और उसने महसूस किया कि साधना की शादी होना, उसका कहीं और ... चले जाना, उसके अपने सम्बन्ध की दृष्टि से एक अर्थहीन घटना है, सर्वथा ... महत्त्व-शून्य।

किन्तु विवाह के अवसर पर साधना को कोई उपहार देना ज़रूरी है...

शहर के एक भाग में नुमायश लगी थी, वह उसे देखने गया। नुमायश की दूकानों में तरह-तरह की चीजें दीख रही थीं—तरह-तरह की डिजाइन वाले टेबिल लैम्प, पंखे, अटैची, सूटकेस, स्त्रियों के बैग। किन्तु वह कोई ऐसी चीज चाहता था जो असाधारण हो, और कम दामों की। घूमते-घूमते अचानक उसकी दृष्टि एक छोटी, शायद निकिल की चमकती हुई डिब्बी पर पड़ी, उसके ऊपर चमकीले अक्षरों में लिखा था—आशीर्वाद, किन्तु अक्षर देवनागरी के नहीं बँगला के थे। इतनी बँगला वह जानता था। डिब्बी के भीतर सिंदूर आदि रखने का स्थान बना था, उसका मूल्य था—पाँच रुपया। कुछ देर सोच-विमर्श करके उसने जेब से रुपये निकाले और वह डिब्बी खरीद ली।

कितना अच्छा होता अगर डिब्बी पर देवनगरी के अक्षर होते। क्या हिन्दी-भाषी शिल्पियों में कल्पना का दिवाला हो गया है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वह जब घर लौटने लगा तो उसकी जेब प्रायः खाली थी, छह रुपए और कुछ पैसे लेकर हीं तो वह चला था। कॉटेज में पहुँचकर उसने सावधानी से उन वस्तुओं को एक कागज़ में लपेटा, और फिर धागे से बाँधकर बक्स की तह में रख दिया, जैसे उसे भय हो कि कोई उन असाधारण रूप में साधारण वस्तुओं को देख न ले।

सोने के लिए जब वह बिस्तर पर लेटा तो रह-रहकर उसकी कल्पना के सामने उस बण्डल की सामग्री चमकने लगी—जैसे वह इसकी प्रतीक्षा कर रही हो कि ख़रीदार की आन्तरिक स्नेह-भावना के सामने रख कर तोल लिया जाय। क्या सचमुच यह तुच्छ उपहार उसके निविड़ गहरे स्नेह और कोमलतम सौन्दर्य-बोध का प्रतिनिधि बन सकेगा? क्या वह आदर्श जो अपनी उदात्त पवित्रता से आकाश की ऊँचाइयों का अतिक्रम करने की स्पर्धा करता है—वह जो अपनी निर्मल दीप्ति का हिमधौत शारदी ज्योत्स्ना में प्रतिबिम्ब खोजता है—इन फूहड़ मानव हाथों से निर्मित, नितान्त साधारण घरेलू वस्तुओं में व्यक्त अथवा प्रतिफलित हो सकता है?

●

: ४५ :

मुद्रण के ऋण की समस्या ने चन्द्रनाथ को पाँच-सात दिन तक बहुत परेशान रखा। अपने वचन के अनुसार वह उसके पास गया, पर रुपये देने नहीं बल्कि यह कहने कि 'यदि तुम इस महीने के अन्त तक ठहर सको तो अच्छा है।' उसने सोचा था कि मास के अन्त में वह ट्यूशन की फीस लाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उसे दे देगा। मनोहर के अभिभावक से रुपये मिलने की आशा भी उसने अभी नहीं छोड़ी थी।

किन्तु करतार सिंह राज़ी नहीं हुआ, उसने दूसरे दिन फिर कॉटेज में हाज़िर होने की अनुमति माँगी। उसके कॉटेज में पहुँचने की सम्भावना ने चन्द्रनाथ को बहुत चिन्तित कर दिया और वह यह कहकर कि 'आपके आने की जरूरत नहीं, प्रबन्ध होते ही मैं खुद आऊँगा' चलने लगा।

उसपर करतार सिंह ने कहा—लेकिन प्रबन्ध जल्द होना चाहिए, बड़ी सख्त जरूरत है।

चन्द्रनाथ ने देखा कि यह व्यक्ति या तो खुशामत का व्यवहार कर सकता है, या हृदयहीन रूक्षता का, शिष्टता उसके स्वभाव के उपादानों में सम्मिलित नहीं है। वह उस दिन फिर गया, पर टाँगें थकाने के अतिरिक्त कोई फल नहीं निकला। उसने यह भी सोचा कि दूसरी जगह एक महीने की फ़ीस "एडवान्स" में माँग ले, पर साहस नहीं हुआ। यदि उन्होंने इन्कार किया तब? क्यों कोई उस पर विश्वास करने लगे? एम० एस० कर लेना अथवा कविता लिखना तो विश्वसनीय होने का कोई प्रमाण नहीं है।

सहसा उसने पार्क में घूमते हुए एक उपाय सोचा—क्यों न वह अपने कहानी-संग्रह को बेचने की कोशिश करे, सम्भव है, करतार सिंह ही उन्हें स्वीकार कर ले।

अगले दो दिन उसने बैठकर काफी परिश्रम से कहानियों की एक पाण्डुलिपि तैयार की और फिर उसे लेकर करतार सिंह के पास गया।

करतार सिंह ने अन्यमनस्क दृष्टि से पाण्डुलिपि को देखा, इधर-उधर पढ़ा, और फिर कहा—आप इन्हें खुद छपवाना चाहते हैं या हमारी तरफ़ से?

चन्द्रनाथ—यदि आप चाहें तो मैं इनका कापीराइट आपको दे सकता हूँ।

'कापीराइट लेने में जोखिम रहती है, खैर यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो हम इन कहानियों को छाप देंगे।'

'तो फिर टर्म्स क्या रहेंगे?'

'टर्म्स तो आप जानते ही हैं, जो आजकल सब लोग देते हैं वही हम देंगे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'सब लोग क्या देते हैं ?' चन्द्रनाथ ने धड़कते हुए हृदय से पूछा।

'आठ आना फी पेज,' उसने सफ़ाई से उत्तर दिया।

क्षण भर को चन्द्रनाथ स्तब्ध रह गया, जैसे उसे बिजली का करेण्ट छू गया हो। किन्तु शीघ्र ही वह सँभल गया। वस्तुतः वह इतने के लिए तैयार होकर आया था।

'तो फिर आप "कापीराइट" का एग्रीमेण्ट लिख दें,' मुद्रक ने बिलकुल स्वाभाविक लहजे में कहा।

'मैं चाहता हूँ कि कम-से-कम आपका बिल चुकाने लायक रुपये इन कहानियों से मिल जायँ,' वह कठिनाइयों से मुँह खोलकर कह सका।

'बिल का हिसाब दूसरा है और इसका दूसरा, हाँ, यह आप समझ लीजिए। आपकी खुशी हो तो ये कहानियाँ हमें दें, नहीं तो किसी दूसरे को दे दें।'

चन्द्रनाथ ने स्वीकारात्मक मौन का अवलम्ब लिया। इस पर करतार सिंह ने कागज और कलम-दावात मँगवाकर उससे "कापीराइट" के विक्रय का इकरारनामा लिखवाया।

कहानियाँ देने पर भी, चन्द्रनाथ ने देखा, मुद्रक के हिसाब की चुकती नहीं हुई। अब भी उसे लगभग पच्चीस रुपये देने रह गए। इस परिस्थिति ने उसे बहुत खिन्न कर दिया।

प्रेस से जब चला तो उसे लग रहा था मानो उसने कोई बुरा काम किया है—कोई ऐसा काम जिससे मनुष्य के स्वाभिमान को धक्का पहुँचता है, जिससे, उसकी आँखें नीची हो जाती हैं। उसे लगता था मानो वह आज किसी की अमूल्य धरोहर को अपनी दुर्बलता से नष्ट कर आया है, दाँव पर लगाकर हार गया है। आज मानो उसने न्याय-रूप में पाई हुई कला की, सरस्वती की, मान-मर्यादा को अपने सामने नष्ट हो जाने, ठगों द्वारा लुट जाने दिया था।

साधना की शादी के पाँच-छै दिन पूर्व दोपहर को भोजन करते समय सहसा सुरेन्द्र ने पूछा—मिस्टर चन्द्रनाथ, आजकल आप सुस्त क्यों रहते हैं ?

'नहीं तो, मैं सुस्त क्यों रहूँगा ?' उसने लापरवाही का भाव दिखाने की चेष्टा करते हुए कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'नहीं, आप सुस्त रहते हैं,' वीरेन्द्र ने दुहराया।

चन्द्रनाथ चुप रहा। वीरेन्द्र ने फिर कहा—आपकी मिस साधना की शादी कब हो रही है, मिस्टर चन्द्रनाथ ?

'सिर्फ चार-पाँच दिन बाकी हैं,' उसने निर्विकार स्वर में कहा।

'चार-पाँच दिन ! तो आप कब जा रहे हैं ?'

'मैंने अभी निश्चय नहीं किया है। और फिर मेरा जाना जरूरी भी नहीं है।'

कई दिन से चन्द्रनाथ सोच रहा था कि शादी में जाने के लिए वीरेन्द्र से कुछ रुपए उधार माँग ले, पर उसका मुँह नहीं खुलता था। वह यह भी जानता था कि वीरेन्द्र के पास-पल्ले कुछ बचता नहीं, क्योंकि वह काफ़ी खर्चीला है। आज की बातचीत में उसने सहसा यह प्रकट कर दिया कि उसका विवाह में पहुँचना आवश्यक नहीं है। इस वक्तव्य ने उसके वीरेन्द्र से रुपए माँगने के रास्ते को और भी रुद्ध कर दिया। इस प्रकार अनायास निश्चय हो जाने से वह अपने मस्तिष्क का एक भारी बोझ उतरा-सा महसूस करने लगा।

निश्चय हो जाने पर उसे याद आया कि उसे अपना उपहार साधना के पास भेजना है। लेकिन इस छोटे-से उपहार को वह इतने समृद्ध घर में, जहाँ न जाने कितने मेहमानों का जमघट होगा, कैसे भेजे ? न जाने किस-किस की आँख पर नज़र पड़े। क्या इससे सुशीला और उसकी हँसाई न होगी ? अन्त में उसने निश्चय किया कि वह उन चीज़ों को सुशीला के पास भेजें, सीधे साधना के पास नहीं। फिर कुछ सोचकर वह साधना के नाम पत्र लिखने लगा, पार्सल की चीज़ों के साथ रखने के लिए। किन्तु पत्र में वह क्या लिखे ?

सहसा उसकी कल्पना के सामने साधना की विदा का दृश्य खड़ा हो गया लगा। वह अपने पति के साथ जा रही है और भरी हुई आँखों के संकेत से सबसे विदा माँग रही है।

वह खाट पर लेट गया और आँखें बन्द करके उक्त दृश्य को अधिक प्रत्यक्ष करने की चेष्टा करने लगा। उसके कल्पना-नेत्रों के सामने फिर एक पुराना परिचित दृश्य, कुछ परिवर्तन के साथ, खिँचने लगा। उसने देखा कि साधना अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

र के साथ जा रही है, पहले एक मोटर-कार की ओर और फिर, स्टेशन के फ़ार्म पर, रेल के डिब्बे की ओर; उसकी आँखें भूमि पर हैं, आँसुओं से भी हुई, और उसके हाथ में सफ़ेद रेशमी रूमाल है। पास ही कहीं, एक र स्पिरिट की भाँति, वह स्वयं चल रहा है।

उसके हृदय में निविड़ ममता और स्नेह उमड़ आया, जैसे वह इस बहिन विदा देने के लिए अनन्त मंगल-कामनाओं, अनन्त आशीर्वादों के रूप में त होकर बरस जाना चाहता हो। आवेग के अतिरेक में वह बैठकर कविता ने लगा।

●

:४६:

काफी प्रतीक्षा करने के बाद सुशीला आई, साधना के एक वृद्ध मुनीम के तार द्वारा उसके आने की तिथि की सूचना चन्द्रनाथ को मिल चुकी थी। न से सीधे वे लोग नए कटरे पहुँचे, वहाँ चन्द्रनाथ ने एक छोटा-सा मकान ाए पर ले लिया था।

वह सुशीला को पाने को उत्सुक था, शायद उस निसर्ग-सिद्ध भूख के कारण पुरुष में नारी के लिए रहती है। आज पहली बार यह अनुभव करके कि र्ण घर में सुशीला अकेली उसके पास है, पूर्णतया उसके अधिकार में, उसे निर्वचनीय तृप्ति हुई।

'मकान कैसा लगता है ?' उसने सुशीला से पूछा।

'अच्छा है, कुछ छोटा ज़रूर है, पर हमारे लिए काफ़ी है। क्या किराया है ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'बीस रुपए ।'

'बाप रे ! शिवपुरी में तो इसे कोई चार-पाँच रुपए में भी मुश्किल से लेता ।'

'यह शिवपुरी नहीं, इलाहाबाद है: यहाँ मकान बहुत मँहगे हैं। ज टाउन में मैं एक कमरे के दस रुपए देता था।''''दिक्कत यही है कि इ बिजली नहीं है।'

'हाँ, यह दिक्कत ज़रूर है, लेकिन पानी का आराम है। एक लालटेन मैं लेती आई हूँ; भाभी ने बड़ी मुश्किल से दी।'

चन्द्रनाथ के लिखे अनुसार सुशीला बदायूँ होकर आई थी।

साँझ को मुनीम के चले जाने पर चन्द्रनाथ ने सुशीला की सहायता से व बिस्तर खोला; उसमें ढेर चीजें निकल पड़ीं। सुशीला उन चीज़ों को निका और उनका विवरण देने लगी। पहले उसने वर्तन अलग किए, तवा, करछु दो बटलोइयाँ, दो थाली, दो गिलास, कटोरे, कटोरियाँ, चमचा'''; फिर उस कतिपय छोटी थैलियाँ निकालीं। 'इनमें थोड़े-थोड़े दाल, चावल, नमक वग़ैर लेती आई हूँ कि कहीं वक्त बेवक्त फ़िक्र न करनी पड़े,' उसने समझाते हुए, प्रशं की प्रतीक्षा में, कहा।

'और क्या लाई हो?' चन्द्रनाथ ने प्रसन्न मुद्रा से पूछा।

'और'''और मैं खुद आई हूँ,' सुशीला ने तिरछी आँखों से देख हुए कहा।

चन्द्रनाथ ने अब तक उसका प्रेयसी-रूप ही देखा था, आज उसने उ गृहिणी और पत्नी की सम्मिलित भूमिका में देखा। उसका हृदय अपनी सब भीतर की तह तक पुलकित हो उठा।

घर में वह पति के साथ अकेली है और वे दोनों सम्पूर्ण घर के अबाधि स्वामी हैं। यह चेतना संभवतः सुशीला को भी थी; वह प्रसन्न थी। यात्रा की श्रान्ति के बावजूद वह घर को व्यवस्थित करने में तत्परता दिखा रही थी।

उनके मिलन की वह पहली रात एक विचित्र नवीनता और निश्चिन्तत के रस से आप्लुत थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दूसरे दिन सुबह उठते ही सुशीला ने कुछ चीज़ों की माँग की, जैसे लकड़ी, झाड़ू, मिट्टी का तेल आदि। चन्द्रनाथ आज्ञाकारी भृत्य की भाँति उन्हें लेने गया।

उस दिन पहली बार उनके अपने घर में अपना चूल्हा जला। चन्द्रनाथ के जीवन में यह एक नया अनुभव था। सुशीला को अपने साथ खाने को आमंत्रित करते हुए उसने कहा—भला दो थाली लाने की क्या ज़रूरत थी!

'वाह, यदि कोई मेहमान आ जाय तो!'

* * *

'अरे बर्तन क्या तुम मलोगी, ठहरो, मैं एक महरी ठीक करने की कोशिश करता हूँ,' लगभग साढ़े-चार बजे बर्तनों की आवाज़ से जागकर चन्द्रनाथ ने कहा।

'हाँ, बस एक महरी ठीक हो जाय; बाकी काम मैं कर लूँगी।'

वह गर्भवती थी और चलने-फिरने में कष्ट महसूस करती थी। चन्द्रनाथ ने पिछले कुछ घण्टों में यह देख लिया। नल से पानी भर लाकर उसने उसकी मदद की और फिर पास-पड़ोस में महरी या दाई की खोज करने निकल पड़ा।

* * *

रात को उसने साधना के विवाह की चर्चा छेड़ दी। 'मेरा पत्र साधना को दिया था? और वह डिब्बी उसे पसन्द आई?'

'हाँ, बहुत पसन्द आई। साधना ने आपकी बहुत प्रतीक्षा की; बड़ी चाची ने, और सब ने, क्यों नहीं गए आप?... आपके साथ आना मुझे ज़्यादा अच्छा लगता।'

चन्द्रनाथ ने उसके प्रश्न को अनसुना कर दिया।

सुशीला उत्साह-पूर्वक साधना के विवाह का विवरण देने लगी। साधना का विवाह, जैसी कि आशा की थी, बड़ी धूमधाम से हुआ। शिवपुरी में न तो अब तक इतनी बड़ी बरात आई थी और न कभी ऐसा समारोह ही हुआ था। बरात में तीन-सौ से अधिक आदमी थे। तीन जोड़ बाजे थे, दो वर की तरफ से और एक साधना के पिता जी की ओर से। दिल्ली से कुछ संगीतज्ञ और नृत्य-विशा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रद बुलाए गए थे। साधना के बाबू जी ने खूब जी खोलकर खर्च किया। दस हजार रुपए वर-वधू को कार के लिये नकद और इससे कुछ ही कम का फर्नीचर तथा दूसरा समान दिया गया, गहनों से लद गई थी।

चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—तुम्हारे पिता जी ने तो इसकी तुलना में हमें कुछ भी नहीं दिया, यों ही ठग लिया।

'भाई, हमारे पिता जी गृहस्थ आदमी हैं। उनका क्या है, साधना अकेली लड़की है। फिर बड़े घराने में शादी की है।'

अन्तिम वाक्य चन्द्रनाथ के कानों में चुभा। पूछा—साधना का भाव कैसा था? बहुत खुश रही होगी?

'खुश क्यों न हुई होगी, घर भी अच्छा मिला और वर भी। पर देखने में ब्याह भर गुमसुम रही।'

'गुमसुम रही, क्यों?'

'क्या जाने, उसके मन की थाह लेना कठिन है।'

फिर सहसा वह चमकती हुई आंखों से विवाह-सम्बन्धी दूसरी बातें सुनाने लगी। 'ब्याह के दो-तीन सीन (दृश्य) देखने लायक थे, एक तो वह जब साधना और मिस्टर अरुणकुमार साथ-साथ फोटो खिंचवाने को खड़े थे और एक…' सुशीला कहते-कहते रुक गई।

'एक क्या?' चन्द्रनाथ ने कौतूहल से पूछा।

'अजी बड़े मजाक करने वाले हैं मिस्टर अरुणकुमार, सीधे नहीं हैं। आपने जबर्दस्ती बुलवाकर और एक लाइन में खड़ा करके साधना का उसके साथ की दूसरी सब लड़कियों के साथ फोटू खींचा। सबसे ज्यादा तंग उन्होंने मुझे किया…।'

बात यह थी कि सुशीला ने भागना चाहा था और अरुणकुमार ने हाथ पकड़कर उसे रोक लिया था।

सुशीला सब बातें बड़े रस से कह रही थी और यह स्वाभाविक भी था। साधारण होते हुए विवाह की घटना नर-नारियों को कितनी मनोरंजक लगती है, और वह कितने आमोद-प्रमोद, हँसी-मजाक का केन्द्र बन जाती है! साधना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

और अरुणकुमार की तुलना में स्वयं उन दोनों का विवाह कितने अनाधुनिक और नीरस ढंग से हुआ था ! अवश्य ही सुशीला का ध्यान इस गहरी विषमता की ओर गया होगा ।

'तुम्हारी शादी में फोटो आदि का आयोजन नहीं हुआ, सुशीला ।'

'भई, सब बराबर थोड़े ही हो सकते हैं ।'

सुशीला के वक्तव्य में जो दैन्य की ध्वनि थी वह चन्द्रनाथ को खटकने लगी। क्या सचमुच ही साधना का सौभाग्य इतना बड़ा था कि वह उससे स्पर्द्धा करने की कल्पना तक न कर सके ?

कई दिन तक सुशीला साधना के विवाह की घटनाएँ सुनाती रही । इस व्यापार में जिन मिश्रित कौतुक, विस्मय, प्रशंसा आदि भावों की व्यंजना करती उन्हें वह काफी ध्यान से देखता ।

❀ ❀ ❀

व्यावहारिक होते हुए भी सुशीला विशेष मितव्ययी न थी। वस्तुतः उसे चन्द्रनाथ की आर्थिक स्थिति का ठीक आभास न था । वह अक्सर उससे साबुन, तेल, क्रीम आदि प्रसाधन-सामग्री तथा दूसरी कम उपयोगी वस्तुओं की माँग कर बैठती । चन्द्रनाथ ने सोचा इस तरह काम नहीं चलेगा; सुशीला को वस्तुस्थिति का परिचय कराना ही होगा । नवागता सुशीला को अपनी आर्थिक दशा का नग्न परिचय देते हुए संकोच होता था, पर दूसरा कोई उपाय न था । अतः उसने एक दिन बिठाकर उसे सारी परिस्थिति समझा दी ।

'सो क्या मैं जानती नहीं,' सुशीला ने कहा,'आप चिन्ता न करें, किसी तरह काम चलेगा ही । आप सारा इन्तजाम मेरे हाथ में दे दें ।'

चन्द्रनाथ ने खुशी से स्वीकार कर लिया । गृहिणी बनने के साथ जो सुशीला का अपना व्यक्तित्व प्रस्फुटित हो रहा था उसे देखकर चन्द्रनाथ को संतोष हुआ ।

सुशीला के पास कुछ रुपए थे, यह उसी ने चन्द्रनाथ पर प्रकट किया । चन्द्रनाथ ने उनमें से कुछ लेकर मुद्रक का ऋण चुका दिया । अब उसे यह सोच-कर पछतावा हुआ कि क्यों उसने अपनी कहानियाँ इतने कम मूल्य पर उसे दे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दीं। उसने आशा की थी कि करतारसिंह कहानियाँ जल्दी ही छाप देगा, पर वह भी होता नजर नहीं आ रहा था। बात यह थी कि सहसा बाजार में कागज की कमी होने लगी थी।

उसी दिन सुशीला ने पूछा—ग्राप एक ट्यूशन और क्यों नहीं कर लेते ?

'खोज में तो हूँ, पर इलाहाबाद में ट्यूशन मिलना कठिन हो गया है।' फिर कुछ रुककर कहा—'ट्यूशन विशेष अच्छी चीज नहीं है। कुछ रुपये मिलते हैं अवश्य, लेकिन समय और शक्ति बहुत खर्च होती है। इतने में यदि पुस्तक लिखी जाय तो ज्यादा सन्तोष हो। समझ रही हो न ?

सुशीला ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर उसके भाव से प्रकट होता था कि वह समझ रही है।

:४७:

नये दम्पती ने लिए एक-डेढ़ महीने का वियोग लम्बा होता है, चन्द्रनाथ और सुशीला एक-दूसरे की काफी निकट महसूस कर रहे थे। नये घर में आने के पहले सप्ताह में दोनों ने गृह व्यवस्था में खूब दिलचस्पी ली, और उन दिनों चन्द्रनाथ ने सुशीला के साथ जितनी अभिन्नता का अनुभव किया उतना पहले कभी नहीं किया था।

सुशीला ने चन्द्रनाथ को विश्वास दिलाया कि वह कम-से-कम रुपयों में खर्च चलाएगी, उसके व्यवहार ने यह सिद्ध कर दिया कि वह इस सम्बन्ध में काफी सचेष्ट थी। इससे चन्द्रनाथ को सन्तोष और निश्चिन्तता हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किन्तु पहला सप्ताह बीतते-बीतते उसे स्पष्ट हो गया कि उसकी निश्चिन्तता ...यी न थी। अब तक वह लड़कों के मेस में भोजन करता रहा था, और ...भी-कभी मेस का प्रबन्ध हाथ में आ जाने पर भी ठीक से नहीं समझ सका था ...क 'घर' चलाना किसे कहते हैं। अब सहसा इस घर नामक वास्तविकता के ...टिल भार को अपने सिर पर पाकर वह हतबुद्धि-सा हो गया।

'घर' कभी अपने में पूर्ण नहीं रहता, वह जैसे सदैव अपने विशाल उदर के ...ए कुछ-न-कुछ माँगता रहता है। उसमें कभी आटा नहीं है, तो कभी दाल, ...भी लकड़ियाँ ग़ायब हैं, तो कभी नमक, कभी घी का पात्र रिक्त है, तो कभी ...ड़का। और शाक-भाजी तो नित्य ही चाहिए। चन्द्रनाथ के पास इतना ...पया न था कि वह खाद्य पदार्थ अधिक मात्रा में लेकर रख ले, इसलिए उसे ...त्य ही अनेक वस्तुएँ लाने को रहतीं और उसका काफी समय बर्बाद हो जाता। ...कानदारों के पास से वह जल्दी-से-जल्दी सौदा लाने की चेष्टा करता, जिससे ...मय की बचत हो। फल यह होता कि वह क्रेय वस्तुओं की ठीक से परीक्षा न ...र पाता और कभी-कभी अपनी असावधानी के लिए उसे सुशीला की झिड़...याँ सुननी पड़ जातीं।

सुशीला भी काफी व्यस्त दीखती। वस्तुतः उसे घर का काम करने का ...भ्यास न था। पहली बार उस पर गृह-कार्य का पूरा दायित्व आकर पड़ा ...। यह नहीं कि उसे उसमें रुचि न थी, पर उसकी कार्य-कुशलता उस रुचि ... ठीक उलटे अनुपात में थी। वह प्रत्येक काम धीरे-धीरे करती, धीरे-धीरे ...क-भाजी काटकर ठीक करती और काफी समय दाल-चावल बीनने में लगाती। ...स प्रकार काम करना शायद उसका स्वभाव था, शायद उसकी गर्भावस्था भी ...सके लिए उत्तरदायी थी। एक कारण और था जो सुशीला के काम में विलम्ब ...त्पन्न करता—उसकी स्वच्छता और पवित्रता की भावना। महरी के चौका-...र्तन करते समय वह सदा इस खयाल से उपस्थित रहती कि कहीं वह ठीक से ...थ-पैर धोए बिना अथवा कम शुद्ध पानी से बर्तन आदि न छू या धो डाले। ...तः महरी के चले जाने पर उसके साफ किए हुए बर्तनों का उपयोग करने से ...हले वह उन्हें फिर बार धोता। इस प्रकार उसके काम में भी देरी हो जाती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

और वह बारह-एक बजे से पहले कभी भोजन करके निवृत्त न हो पाती। चन्द्रनाथ को उसकी कार्य-प्रणाली से बहुत खीझ होती।

इस खीझ का कारण था। भोजन के बाद वह कुछ देर खाली बैठने का अभ्यस्त था; उस समय वह चाहता कि सुशीला उसके पास आ पहुँचे, ताकि वह उससे कुछ प्यार की बातें कर सके, और उसे कुछ पढ़ा भी सके। किंतु प्रायः सुशीला को निबटने में, भोजन करने एवं खाने की चीजों को समेटने-रखने में, देर लग जाती और वह प्रतीक्षा से थक-कर विश्व-विद्यालय चला जाता।

एक दिन उसने बैठकर सुशीला को समझाया—'तुम्हें कुछ समय पढ़ने के लिए निकालना चाहिए। यदि तुम साथ ही खाकर निबट जाओ तो मैं तुम्हें कुछ देर पढ़ा सकता हूँ। यदि यह मुमकिन न हो तो बीच में कुछ समय निकाल लिया करो—जैसे दाल-साग चढ़ा दिया तो कुछ देर को मेरे पास बैठ गई। साँझ में आजकल समय नहीं रहता और रात को मुझे अपना काम होता है, इसलिए ऐसा कहता हूँ। कुछ पढ़ना-लिखना ज़रूर चलना चाहिए, समझीं।' सुशीला ने समझ लिया और अपनी सहमति प्रकट की।

एक दिन जब वह साहित्य पर एक पुस्तक पढ़ रहा था तब सुशीला चौका छोड़कर आई। चन्द्रनाथ ने पूछा—'खाली हो क्या ?' सुशीला ने उत्तर दिया—'हाँ, दाल चढ़ाकर आई हूँ।' चन्द्रनाथ ने उसे सामने बिठाकर 'कविता क्या है' इसकी चर्चा शुरू कर दी। बोलते-बोलते वह विषय में एकदम लीन हो गया। काव्य की प्रेरणा का स्वरूप बतलाकर वह उसका जीवन के मूल्यों से सम्बन्ध बतलाने लगा। उसी समय सुशीला ने यकायक चौंककर कहा—'भई, मैं तरकारी बिना ढकी छोड़ आई हूँ, कहीं कौआ आकर जूठी न कर जाय।'

चन्द्रनाथ का स्वप्न भंग हो गया उसके हृदय को गहरी ठेस लगी, और फिर सहसा उसके सामने वह चौड़ी खाई मूर्त्त होकर चमकने लगी जो उसे और सुशीला को विभक्त करती थी और जिसे न देखने की वह कोशिश कर रहा था।

पिछली गर्मियों में भी, जब सुशीला नई-नई आई थी, उसने अनेक बार उसे पढ़ाने की कोशिश की थी। तब उसके हृदय में सुशीला के भोलेपन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बारी-बारी से कभी प्यार उमड़ता था और कभी गुस्सा; वह उसे कभी चुम्बित कर देता था और कभी डाँट भी देता था। इस बार उसकी प्रतिक्रिया मुख्यतः तीव्र रूप में हुई। उसने सोचा कि सुशीला को इस प्रकार पढ़ाने का धैर्य उसमें नहीं है, अतः अच्छा होगा कि वह कुछ रोचक पुस्तकें लाकर उसे दे जिनके कठिन अंश वह स्वयं उससे पूछ लिया करेगी।

दूसरे दिन वह लाइब्रेरी से कुछ पुस्तकें लाया—प्रेमचंद का एक उपन्यास, "विश्व की क्रान्तियाँ", रवीन्द्र का "साहित्य" शीर्षक प्रबन्ध, तथा दर्शन की एक प्रारम्भिक पुस्तक। उसे चार ही पुस्तकें मिल सकती थीं और चारों वह सुशीला के लिए ले आया। सोचा कि वह अब लाइब्रेरी कुछ जल्दी चला जाया करेगा और वहीं पढ़ा करेगा।

लगभग एक हफ्ते बाद उसने सुशीला से पूछा कि वह क्या-क्या पढ़ चुकी है। मालूम हुआ कि अन्तिम दो पुस्तकें प्रायः उसने छुई भी नहीं हैं और शेष दो का भी बहुत थोड़ा अंश पढ़ पाई है।

यह अनुभव उसके लिए नया न था, फिर भी मानो उसे नया धक्का लगा। तो क्या सुशीला उपन्यास भी नहीं पढ़ सकती—उपन्यास भी उसे रोचक नहीं लगता? कोई व्यक्ति साहित्य के प्रति इतना उदासीन हो सकता है यह उसने कल्पना नहीं की थी।

वह सोचने लगा क्या करे। सुशीला का पढ़ना अत्यावश्यक है इसमें उसे तनिक भी सन्देह न था। उसे पढ़ना चाहिए और पढ़ाना ही होगा—अन्यथा वह कैसे उसे प्यार करता रह सकेगा? उसने सुशीला को बहुत मीठे शब्दों में समझाया। सुशीला ने अन्त में ऊबकर कहा—'अच्छा भाई पढ़ूँगी, कह तो दिया।'

किन्तु विश्वास होना सहल न था। वह अब सुशीला के अध्ययन पर कड़ी निगरानी रखने लगा। जब वह घर होता तो अक्सर सुशीला से पढ़ने का अनुरोध करता। घर के कामों में उसे देर करते देख खीझता, और उसे देखते ही 'कुछ पढ़ो' का आग्रह करने लगता। शुरू में सुशीला ने उसके अनुरोध को पालने की कोशिश की, पर धीरे-धीरे वह उसकी अभ्यस्त हो गई। अब वह कभी न पढ़ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

का बहाना ढूंढ लेती, कभी स्पष्ट शब्दों में कह देती, 'फिर पढ़ूंगी, इस वक्त लेटने को जी हो रहा है'। भोजन करने के बाद पढ़ने बैठकर वह प्रायः ऊँघने लगती, और खुली पुस्तक हाथ में पकड़े सो जाती। इस पर चन्द्रनाथ को मन-ही-मन कुढ़न होती, और कभी-कभी वह उसे डाँटकर जगा भी देता।

क्रमशः वह उसके अनुरोध को अधिकाधिक टालने और जवाब देने लगी। एक दिन उसने झल्लाकर कहा—'मशीन तो हूँ नहीं, जो दिन भर काम करती रहूँ, कुछ देर आराम भी तो चाहिए।'

एक-दो बार ऐसा हुआ कि महरी काम करने नहीं आई और सुशीला को चौका-वर्तन भी करना पड़ा। ऐसे दिन उसका मिजाज़ बहुत गर्म रहता और बात-बात में चन्द्रनाथ से झगड़ पड़ती। और चन्द्रनाथ मन में सोचता—'यह समझती है जैसे इसी को काम करना पड़ता है, मैं कुछ नहीं करता।' सुशीला से वह कहता—'स्त्रियों में काम करने की क्षमता बहुत कम होती है, वे रूठना और झगड़ना ही अधिक जानती हैं।' सुशीला उत्तर देती—'आपके घर कोई कितना ही काम करे, उसे कभी भलाई नहीं मिलेगी। आप खाना बनाने के लिए नौकर रख लीजिए, तब मैं पढ़ूंगी।'

चन्द्रनाथ भोजन बनाने के लिये नौकर नहीं रख सकता इसे वह और सुशीला दोनों ही जानते हैं, फिर वह इस प्रकार की बातें क्यों करती है? वह ऐसे स्वर में शिकायत करती है मानो पढ़ना-लिखना स्वयं उसका नहीं, चन्द्रनाथ का काम है। खाना-पीना अस्तित्व-रक्षा के लिये आवश्यक है, उसके लिये समय और शक्ति खर्च करना भी जरूरी है; पर उतना काम करके कोई अपने को कृतकृत्य कैसे मान सकता है, यह उसकी समझ में नहीं आता। वह सोचता—यदि सुशीला चाहे तो अध्ययन के लिए कुछ समय अवश्य निकाल सकती है, जहाँ चाह है वहाँ राह भी है।

किन्तु वह इस वास्तविकता का कि सुशीला में वस्तुतः उच्च अध्ययन की प्रवृत्ति नहीं है, सामना करने को तैयार न था; इसीलिए वह उसे स्पष्ट देखने से कतराता था। बहुत समय बाद उसे इस तथ्य का बोध हुआ कि वह इन दिनों सुशीला की स्वभावगत, मनोवैज्ञानिक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अध्ययन की दिशा में सुशीला को उत्तेजित करने के लिए एक बार उसने उससे कहा–'देखो, साधना कितना पढ़ गई है, तुम्हें उससे ईर्ष्या नहीं होती।' सुशीला ने उत्तर दिया–'मैं साधना की होड़ कैसे कर सकती हूँ। अपने बाप की अकेली लड़की थी, जब जो चाहती थी कर लेती थी। अच्छे-से-अच्छे मास्टर और अच्छी-से-अच्छी किताबें उसके लिए हाजिर रहती थीं। और अब भी ईश्वर की दया से वह अच्छे घर ब्याही गई है। सबका भाग्य एक-सा थोड़े ही होता है।' चन्द्रनाथ सुनकर चुप रह गया।

साधना की शादी सुशीला अभी तक भूली नहीं थी, और कभी-कभी उसकी ऐश्वर्यमयी झलकों को याद कर लेती थी। ऐसे अवसर पर वह कभी-कभी अपने और साधना के भाग्य-वैषम्य पर क्षोभ प्रकट कर डालती। साधना और सुशीला बचपन से ही साथ रही हैं, साथ खेली हैं, पर अब दोनों में कितना अन्तर पड़ गया है!

एक ऐसे ही अवसर पर चन्द्रनाथ उसे समझाने की कोशिश करने लगा कि संसार में रुपया ही सब कुछ नहीं है, और व्यक्ति-विशेष के महत्व का वही एक माप नहीं है। इस पर सुशीला ने तिनककर कहा—'तो फिर तुम हमेशा क्यों रुपए का रोना रोते रहते हो? क्यों ट्यूशन के लिए इतने परेशान रहते हो, रुपया कोई चीज नहीं है तो!'

चन्द्रनाथ सुनकर स्तब्ध रह गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

:४८:

अब तक चन्द्रनाथ समझता था कि सुशीला उसकी, मुख्यतः उसी की है, किन्तु उसकी इस धारणा में अब परिवर्त्तन होने लगा। अब वह उसे समाज के एक एजेण्ट के रूप में दीखने लगी जो समय-समय पर उसके व्यक्तित्व और कामों को सामाजिक मानों की तुला पर तोल डालती थी।

समाज हमें अपनी ओर से उदासीन नहीं होने देता। पत्नी के रूप में, सगे-सम्बन्धियों के रूप में, मान और अपमान के रूप में वह हमारे घर में घुस आता है और हमें अपने मूल्यों के अनुसार चलने का आदेश देता है। चन्द्रनाथ को गरीबी और अभाव की लज्जा से बचने के लिए प्राण-पण से चेष्टा करनी पड़ेगी।

शिवानन्द से कभी-कभी उसकी भेंट हो जाती थी, अधिकतर अल्फ्रेड पार्क में। एक दिन उसने चन्द्रनाथ को बतलाया कि इतिहास के एक अध्यापक किसी अंग्रेजी इतिहास-ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद करना चाहते हैं। अनुवाद स्वयं अध्यापक महोदय के नाम से छपेगा, और सम्भवतः शीघ्र ही कहीं पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में मनोनीत हो जायगा। अनुवादक को पुस्तक से दूसरे किसी प्रकार का सरोकार न होगा, उसे सिर्फ अनुवाद करने का पारिश्रमिक मिलेगा। स्वयं शिवानन्द को, परीक्षा निकट होने के कारण, अवकाश नहीं था, अन्यथा वही इस काम को कर डालता।

चन्द्रनाथ ने कहा—यह तो बड़े अन्याय की बात हैं, पुस्तक तैयार करने का परिश्रम करे कोई, और नाम हो किसी और का।

शिवानन्द—यही हो रहा है, न जाने कितने प्रोफेसर छात्रों की मिहनत के बल पर हिन्दी-प्रेमी और हिन्दी-सेवी होने का यश और पुरस्कार पा रहे हैं। एक ऐसे ही सज्जन को गतवर्ष मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला है।

'यह बहुत खराब बात है,' चन्द्रनाथ ने दुहराया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'यह वास्तविकता है, मिस्टर चन्द्रनाथ, उसे खराब या अच्छा कहना कोई अर्थ नहीं रखता। आप अपने नाम से सुन्दर-से-सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत कीजिए, कोई कौड़ी के मोल भी नहीं पूछेगा। पाठ्य-पुस्तक-समिति भी उन्हीं की पुस्तकें मनोनीत करती है जो समृद्ध हैं और जिन्हें ऊँचा पद मिल चुका है, भला ऐसे लोग कहीं स्वयं इतने परिश्रम का काम कर सकते हैं !'

मुझे ग्रंथ-विशेष का अनुवादक कहलाने की कोई लालसा नहीं है, किन्तु फिर भी ऐसे अध्यापकों की सहायता करना अन्याय के सहयोग जैसा लगता है।'

'न कीजिए सहयोग, एक आपके न करने से क्या होता है, आपके जैसे सौ छात्र यह काम खुशी से कर देंगे। प्रयाग-विश्व-विद्यालय में बुद्धिमान् छात्रों की कमी नहीं है।'

'सो मैं जानता हूँ,' कहकर चन्द्रनाथ चुप हो गया।

घर पहुँचकर उसने अनुवाद करने की समस्या पर सोचा, और बहुत देर तक सोचा। गान्धीजी के आदर्श का वह कायल है; हमें अन्याय से सहयोग नहीं करना चाहिए; किन्तु व्यावहारिक जीवन में क्या यह सम्भव है ? क्या मिलों के मजदूर नौकरी छोड़कर रह सकते हैं···?

गांधीजी कहते हैं, चर्खा चलाओ; और वह पहली बार सोच रहा है कि उसने यह काम क्यों नहीं सीखा। क्यों नहीं उसने नियम से चर्खा चलाने का अभ्यास किया। सुशीला भी तो यह कर सकती है, किन्तु उस दशा में तो वह अध्ययन के लिए और भी समय न पा सकेगी। सांस्कृतिक प्रयत्नों के लिए समय चाहिए, अवकाश चाहिए, यह क्या गांधीजी नहीं जानते ?

वह देखता है कि, सही हो या ग़लत, इतनी जल्दी चर्खा चलाने में कुशलता प्राप्त नहीं की जा सकती। अतः उसने दूसरे दिन शिवानंद को खबर कर दी कि वह अनुवाद का काम करने को तैयार है।

टर्म्स तय हो गए। लगभग चार-सौ पृष्ठ की पुस्तक का अध्यापक महोदय के मनोनुकूल अनुवाद कर देने पर चन्द्रनाथ को डेढ़-सौ रुपए मिलेंगे। वही चार-आना पृष्ठ। किन्तु इस बार पारिश्रमिक अनुवादित रचना के लिए था, मौलिक कृति के लिए नहीं, अतः उसे इतना बुरा नहीं लगा। और वह सोचने लगा—जल्दी-से-जल्दी इस काम को समाप्त कर देना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अनुवाद की पुस्तक मिलते-मिलते उसने सुशीला की सहायता के लिए एक लड़का नौकर रख लिया। लड़के का नाम था बैंजू; सुशीला उसे पाकर प्रसन्न हुई। दो ही दिन काम करके बैंजू ने यह साबित कर दिया कि वह बुद्धिमान् और परिश्रमी दोनों है।

और दो ही दिन में चन्द्रनाथ को यह अच्छी तरह आभास हो गया कि अनुवाद का काम बहुत भारी है। सुगठित अंग्रेजी वाक्यों की स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण हिन्दी बनाने में उसकी कल्पना से कहीं अधिक समय लगता। कभी-कभी तो एक-एक पदोच्चय (फ्रेज़) के अनुवाद में कई-कई मिनट लग जाते। जल्दी करने से अनुवाद बिगड़ने लगता, उसकी अन्तरात्मा कुण्ठित होती, और उसे दोबारा परिश्रम करना पड़ता। किन्तु इन कठिनाइयों से वह घबराया नहीं, उलटे उसका अनुवाद जल्दी समाप्त करने का संकल्प अधिक दृढ़ हो गया। वह चाहता था कि जल्दी-से-जल्दी इस अवाञ्छित काम से मुक्त होकर अपने साहित्य कार्य के लिए निश्चिन्तता लाभ कर ले।

अधिकांश समय उसे घर पर ही बीतता। वह तीन-तीन चार-चार घंटे एक साथ बैठकर भाषान्तर करता और फिर अनूदित पृष्ठों को गिनकर हिसाब लगाता कि उसने दिन-विशेष में कितने रुपए कमाए, और उसे कितना काम बाकी रहा। कभी-कभी उसे अपनी इस वणिक्‌वृत्ति पर आश्चर्य और क्षोभ होता।

कभी-कभी वह अपने काम से बेहद थक जाता, उसकी पीठ में दर्द होने लगता, और उसे लगता जैसे उसके सम्पूर्ण मस्तिष्क और शरीर में एकरसता का बुखार चढ़ गया है; तब वह बैंजू को बुलाकर उससे पीठ दबाने को कहता। बैंजू बड़ी प्रसन्नता से उसकी पीठ दबाता, और फिर पूछता—'टाँगें भी दबा दूँ बाबूजी, लेट जाइए न ?'

उसके अनुरोध से एक-दो बार लेट कर चन्द्रनाथ ने पाया कि फिर उठने और काम करने को जी नहीं चाहता। अतः वह प्रायः बैंजू को जल्दी ही छुट्टी दे देता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक और कारण भी था जिससे वह बैंजू को शीघ्र छोड़ देता। बैंजू बहुत परिश्रमी था, घर का बहुत काम करता था और चन्द्रनाथ नहीं चाहता था कि उसके काम को कोई बढ़ा दे। सवेरे ही वह अपने घर से आ जाता और पाखाने से निकली हुई सुशीला के हाथ धुला देता। फिर वह चूल्हा प्रज्वलित करता, नाश्ता तैयार करता और धीरे-धीरे रसोई का सामान निकालकर रखता। महरी एक बार काम करके, उपस्थित दो-एक घड़ों तथा एक बालटी में पानी भर कर चली जाती; बाद को आवश्यक पानी बैंजू को ही लाना पड़ता। वह चन्द्रनाथ और सुशीला को नहलाता, और फिर उनके कपड़े धोता। साग-तरकारी आदि भी वही लाता। दोपहर को वह बारह-एक बजे घर जाता और फिर एक ही घण्टे बाद वापिस आ जाता। उसकी इस तत्परता से चन्द्रनाथ कभी-कभी आहत महसूस करता, इसलिए और भी कि उसे वेतन से अतिरिक्त इनाम देने लायक भी वह न था। उसके बस की बात सिर्फ यह थी कि वह बैंजू पर यथा-शक्ति अपने काम का भार न डाले; इसीलिए वह उससे शरीर दबवाते हुए सकुचाता। बैंजू की कार्यशीलता उसे अपना काम करने के लिए भी प्रेरणा और उत्साह देती।

और वह कभी-कभी सोचता—बैंजू मेधावी है, मिहनती है, बड़ी आसानी से पढ़-लिख सकता है। क्या उसे पढ़ाने की कोशिश करना हम लोगों का कर्त्तव्य नहीं है? किस अपराध में वह मानवता के संचित ज्ञान-वैभव से वंचित रखा जा रहा है?

किन्तु बैंजू को पढ़ाने के लिए समय निकालना संभव नहीं है, यह वह जानता था। वस्तुतः बैंजू को रखने का मुख्य उद्देश्य यह था कि सुशीला पढ़-लिख सके। ऐसा क्यों? क्या कुछ लोगों से सेवा-वृत्ति कराए बिना—उनका साधन रूप में उपयोग किए बिना—हमारा पढ़ना-लिखना, हमारी कला और विज्ञान की साधना, नहीं चल सकती? क्या यह सम्भव नहीं है कि सारे मनुष्य पठन-अध्ययन कर सकें, विज्ञान और साहित्य का रस ले सकें? क्या सत्य और सुन्दर नामक लक्ष्य कुछ इने-गिने लोगों के लिये है, सब के लिये नहीं? क्या कुछ मनुष्यों का इसलिये पशुओं की भूमिका में बने रहना ज़रूरी है कि कुछ दूसरे लोग वास्तविक अर्थ में मनुष्य बन सकें?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक दिन उसने सुशीला से कहा—थोड़ी देर वैंजू को नागरी के अक्षर सिखा दिया करो न, होशियार है, कुछ पढ़ जायगा।

'हाँ जी, अब मैं वैंजू को पढ़ाया भी करूँगी, मुझे इतनी फुर्सत नहीं है। आप ही पढ़ा दिया करें।'

चन्द्रनाथ चुप हो गया। दूसरे दिन वह विश्वविद्यालय से लौटते समय वैंजू के लिये वर्ण-परिचय की किताब ले आया, और साँझ में उसे पढ़ाने लगा। सुशीला ने देखा तो तिनक कर वैंजू को आवाज़ दी, बोली—मुझे पढ़ाने को समय नहीं है, और सबके लिये समय है।

दो-तीन दिन जब यह क्रम चला तो एक दिन उसने तेज स्वर में चन्द्रनाथ से कहा—'आपको अपनी हेल्थ का भी कुछ ख्याल है, इतना काम यों ही सिर पर ले लिया है और वैंजू के साथ भी माथा-पच्ची करने लगे। मैं किताब फाड़ कर फेंक दूँगी, तब देखूँगी कैसे वैंजू पढ़ता है ?' अगले दिन चन्द्रनाथ ने पाया कि किताब सचमुच गायब हो गई है।

उसे सुशीला पर क्रोध हुआ।

:४९:

सुशीला चन्द्रनाथ से बहुत स्नेह करती है, यह वह जानता है, स्वयं वह भी उसमें कम अनुरक्त नहीं है। साथ ही कभी-कभी उसे सुशीला के प्रति गहरी खीझ और तीव्र असन्तोष भी हो जाता है। सुशीला के प्रति उसकी मनोवृत्ति पेण्डुलम की भाँति कभी आत्मीयता के उस छोर पर पहुँच जाती है जहाँ वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तादात्म्य का पर्याय जान पड़ती है और कभी उस छोर पर जहां वह बाहरी परिचय मात्र रह जाती है।

इसका कारण कुछ तो सुशीला का व्यक्तित्व है, और कुछ उसकी अपनी जरूरतें। नारी के रूप में, गृहिणी और शरीर-सहचरी की भूमिका में, सुशीला उसे पूर्ण जान पड़ती है। वह उसके भोजन और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में बड़ी सतर्क रहती है। उसके निषेध करने पर भी वह सुस्वादु भोजन तैयार करने में काफ़ी समय और अवधान खर्च करती है, और उसे थोड़ा भी शारारिक कष्ट हो जाने पर गहरी चिन्ता प्रकट करती है। उस समय वह उसकी शारीरिक सेवा करने को व्यग्र हो उठती है। वह उसकी टांगें और हाथ दबाती है; उसका माथा मींजती है, और रह-रह कर उसके नेत्रों, होंठों और कपोलों पर स्नेह-विगलित चुंबन जड़ देती है। उसकी यह सेवा, उसका यह अकुण्ठित स्पर्श, चन्द्रनाथ की समग्र चेतना और संवेदना को आलुस कर देता है। जब कभी उसे सुशीला के इन स्पर्शों एवं स्नेह-संकेतों का अनुभव या स्मरण होता है तो वह मन-ही-मन अपने भाग्य की सराहना करता है। सुशीला में भारतीय नारी की, और शायद नारी मात्र की, वे समग्र विशेषताएँ हैं जो पति या प्रेमी के व्यक्तित्व को आन्तरिक तृप्ति का सिंचन देती हैं। चन्द्रनाथ इससे अनभिज्ञ नहीं है। कला के क्षेत्र में अलंकारों की चकाचौंध से प्रभावित न होते हुए वह रस का साधक रहा है, और वह जानता है, महसूस करता है, कि सुशीला का व्यक्तित्व रसमय है।

किन्तु जब उसका ध्यान सुशीला के शरीर, मन और स्वभाव से भिन्न उसकी बुद्धि और सांस्कृतिक चेतना पर जाता है तब उसे क्षोभ और निराशा होती है। सुशीला के व्यवहार में मानो मस्तिष्क का, सचेत चिन्तन का, प्रयोग है ही नहीं, अपनी सहज प्रवृत्तियों के सहज राग-द्वेष के, विशेष व्यक्तित्व के धरातल से उठकर वह कभी बुद्धि या सामान्य की भूमिका में पहुँच ही नहीं सकती। तभी तो, स्वभावतः मृदुल होते हुए भी, वह बैजू के प्रति मानवोचित व्यवहार नहीं रख पाती। नौकर होने के नाते ही, वह समझती है, बैजू से दिन भर काम लेना उसका समाज-सिद्ध अधिकार है। चन्द्रनाथ ने पाया है कि किसी का भी शरीरिक कष्ट देखकर सुशीला सहज ही द्रवित हो जाती है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वहाँ उसकी अन्तर्वृत्ति निश्चित रूप में प्रकृत पथ का अनुसरण करती है, पर लोगों के दूसरे प्रकार के कष्टों को, जिनका प्रत्यक्षीकरण कल्पना-साध्य है, वह बिलकुल नहीं देख पाती। बुराई-भलाई के सम्बन्ध में भी उसकी संवेदना प्रायः बौद्धिक उद्योग उसकी बँधी हुई प्रणालियों में बहती रहती है। किसी प्रकार का बौद्धिक उद्योग उसकी प्रकृति के विरुद्ध है।

सुशीला का सांस्कृतिक परिष्कार भी सहज प्रवृत्ति से नियंत्रित रहा है। उसे फूल अच्छे लगते हैं, बच्चे अच्छे लगते हैं, और हलके, छोटे, विविध रंग-रूपों के पक्षी भी अच्छे लगते हैं। यह सब चन्द्रनाथ उसके प्रयाग आने पर विशेष रूप से लक्षित कर सका है। उसे एक दूसरी चीज़ भी अच्छी लगती है— निभृत एकान्त में पति के साथ कुछ धृष्टताभरी क्रीड़ा। वहाँ उसकी उन्मुक्त प्रणय-वृत्ति क्रमशः लज्जा पर विजयी होना सीखती रही है।

ऐसे ही एक अवसर उसने चन्द्रनाथ को, अनुनयपूर्ण हठ द्वारा, दो-एक ऐसे शब्द बोलने को विवश किया जिनका प्रयोग लोक में अशालीनता अथवा असंस्कृत रुचि का द्योतक समझा जायगा। इस व्यापार से, उसने देखा, सुशीला को तीव्र तृप्ति हुई। बाद में इस परिस्थिति का स्मरण कर के उसे बड़ी लज्जा हुई। यह लज्जा ग्लानि और पश्चात्ताप में परिणत होने लगी जब उसने पाया कि सुशीला उसके मुख से उन शब्दों को प्रत्येक वैसे अवसर पर सुनना चाहती है।

बहुत दिनों तक वह अपने को इस सम्बन्ध में क्षमा न कर सका। और जब-जब इसे लेकर उसके मन में आत्मग्लानि का भाव आता तब-तब उसे सुशीला पर क्रोध होता। इसके विपरीत जब वह देखता कि उसके इस छोटे शब्द-व्यापार के अनुष्ठित करने से सुशीला को तीव्र तुष्टि होती है, और न करने से कष्ट, तो वह उसे एक अप्रिय कर्त्तव्य के रूप में कर डालता। कर्त्तव्य की इस विचित्र धारणा पर उसे कभी-कभी अपने पर गहरी खीझ होती, साथ ही सुशीला के प्रति विरक्ति भी जागृत होती।

कई वर्ष बाद, जब वह नीति-सम्बन्धी पुरानी धारणाओं की निर्मम परीक्षा करने का अभ्यस्त हो गया, और जीवन की वास्तविकताओं को पूर्ण साहस के साथ देखने-स्वीकार करने को तत्पर बन गया, तब उसने यह अनुभव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किया कि जीवन के विशुद्ध भौतिक या जैवी पक्ष को घृणा या तिरस्कार की दृष्टि से देखने से न तो मानवता के स्वास्थ्य का कोई लाभ होता है और न उसके आचार-विचारों का। और तब उसने उन ऋषियों की दीर्घ दृष्टि का जिन्होंने मोक्षशास्त्र के साथ अर्थ और काम से संबद्ध शास्त्रों की भी रचना की है, ठीक से आदर करना सीखा। तब ही वह सुशीला को इस सम्बन्ध में पूर्णतया क्षमा कर सका। किन्तु इस समय उसकी असंस्कृत रुचि के ये निदर्शन उसे मार्मिक कष्ट देते और पति-पत्नि मानसिक व्यवधान को बढ़ा कर दिखाने का साधन बन जाते।

●

: ५० :

अनुवाद के काम् को लेकर चन्द्रनाथ दिन भर बहुत व्यस्त रहता, और सुशीला से बात न कर पाता। सुशीला भी काफी व्यस्त दीखती और उसके पास आने की चेष्टा न करती। चन्द्रनाथ ने आशा की थी कि बैजू की नियुक्ति से सुशीला कुछ फुर्सत पा सकेगी, और कुछ पढ़ सकेगी, किन्तु उसने देखा कि वह अब भी पढ़ती-लिखती दिखाई नहीं देती। वह खाली भी नहीं मालूम पड़ती। शायद इस डर से कि कहीं चन्द्रनाथ उसे टोक न दे, अथवा पढ़ने को न कह बैठे, वह प्रायः किसी-न-किसी घरेलू काम में संलग्न दिखाई पड़ती। आजकल वह अपने दो-एक ब्लाउज तैयार कर रही थी। एक दिन चन्द्रनाथ को आभास हुआ कि वह किसी छोटे शिशु का कोई कपड़ा बना रही है। उसके मन में एक साथ ही विनोद और खीझ का भाव हुआ, पर उसने कुछ कहा नहीं। कभी-कभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुशीला लेटी हुई कोई पुस्तक पढ़ने का आटोप करती, किन्तु उस दशा में प्रायः वह शीघ्र ही ऊँघने और सोने लग जाती। आजकल उसकी नींद कुछ बढ़ी हुई मालूम पड़ती थी।

रात को भी चन्द्रनाथ काफी देर तक काम करता। काम के बाद वह चाहता कि कुछ देर सुशीला से बातें कर ले जिससे उसकी दिन भर की थकान उतर जाय किन्तु अक्सर सुशीला उस समय तक सो जाती और उसे निराश होना पड़ता। कभी-कभी जागती रहने पर भी वह उसकी आवश्यकता को न समझ पाती और उसकी उपेक्षा का उल्लेख करती हुई रूठने का अभिनय करती। चन्द्रनाथ श्रान्त होने के कारण उसे मनाने का आयास न कर पाता, और चुपचाप कमरे में टहलने लगता, या अपने बिस्तर में जाकर लेट जाता। ऐसी दशा में उसे कभी-कभी सुशीला की अप्रिय बातें याद आ जाती और वह अपने से पूछता—

'क्या यह सुशीला मनाने योग्य है ?'

किन्तु कभी-कभी कोई शक्ति उसे बरबस सुशीला की ओर आकर्षित करती और उसे लगता कि वह बिना उसका स्पर्श किए शान्ति-लाभ न कर सकेगा। तब उसके शरीर और मन में द्वन्द्व छिड़ जाता जिसकी तीव्रता उसे और भी श्रान्त एवं दुर्बल बना देती।

चन्द्रनाथ को लगता कि घर में दो ही व्यक्ति वस्तुतः अधिक काम करते हैं, अर्थात् स्वयं वह और बैंजू, तीसरे व्यक्ति की व्यस्तता उसे कृत्रिम और निरर्थक दिखाई देती। सुशीला बैंजू पर किसी कारण नाराज हो जाती तो वह प्रायः बैंजू के ही पक्ष में बोलने की कोशिश करता।

बैंजू में एक कमजोरी थी, उसका घर कुछ दूर था, और वह रात को जल्दी भाग जाना चाहता। शीतकालीन रातों के अँधेरे मार्गों से उसे डर लगता। उसकी इस दुर्बलता के कारण सुशीला प्रायः उससे असन्तुष्ट रहती। 'वह चाहती कि बैंजू रात को खाना-पीना निवटा कर, सब चीजें यथास्थान रखकर, और बिस्तर आदि बिछाकर जाय, चाहे इस सब में कितनी ही देर लगे। इसके विपरीत बैंजू खाना समाप्त होते-होते भागने की इच्छा प्रकट करने लगता। वह बार-बार सुशीला से पूछता; 'बहू जी अब जाऊँ ?' और सुशीला प्रायः उत्तर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहती—'अभी अमुक काम और करता जा, ऐसी क्या जल्दी है।' जल्दी में बैजू कभी-कभी चीजें बिना तरतीब के समेट-रख देता जिसके फलस्वरूप उसे दूसरे दिन सुशीला की नाराजी का शिकार बनना पड़ता।

एक दिन साँझ होते-होते वर्षा होने लगी। बादलों के घटाटोप ने अन्धकार को और भी गाढ़ा कर दिया; और शीत बढ़ गया। चारों ओर वातावरण में निस्तब्ध उदासी-सी छा गई। ऐसे समय में बैजू घर जाने के लिए और भी उत्कंठित हो गया। वर्षा रुकते ही उसने सुशीला से जाने की आज्ञा माँगी, सुशीला ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने पाँच मिनट बाद फिर बहू जी को सम्बोधित किया। इससे पहले कि सुशीला कुछ उत्तर दे चन्द्रनाथ ने बैजू को घर जाने की अनुमति दे दी। बैजू बहुत खुश हुआ, किन्तु शीघ्र ही उसकी खुशी आशंका-मूलक भय में बदल गई। सुशीला ने उसे डाँट कर कहा—'अभी नहीं जाना, अभी तो रोज़ का वक्त भी नहीं हुआ है।'

चन्द्रनाथ ने बैजू की संकटावस्था को देखा, और सुशीला की भद्र अवज्ञा-सी करते हुए उसने उससे फिर जाने को कहा। बैजू चला गया। सुशीला क्रोध से जलने लगी।

'आपने बैजू को मेरी आज्ञा के विरुद्ध क्यों भेज दिया?' वह ऊँचे स्वर में बोली।

'उसे देर हो रही थी', चन्द्रनाथ ने शान्ति-पूर्वक कहा।

'ऐसी कौन-सी आँधी रात हो गई थी जो उसके जाने की जल्दी पड़ गई, आखिर मुफ्त तो काम नहीं करता है।'

'नौकर रखने का अर्थ किसी की आत्मा खरीद लेना नहीं है, सुशीला। बैजू बहुत काम करता है।'

'सब बहुत काम करते हैं, आप बहुत काम करते हैं और बैजू बहुत काम करता है; मैं ही काम नहीं करती।'

'मैं यह कब कहता हूँ कि तुम काम नहीं करती।'

'और क्या कहते हैं? आपको बैजू का ख्याल है, मेरा ख्याल नहीं है; बैजू ही आपको प्यारा है, तो फिर मुझे निकाल क्यों नहीं देते, क्यों घर में रखकर रोटी देते हैं?' कहती हुई वह रोने लगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्षण भर को चन्द्रनाथ स्तब्ध रह गया; सुशीला को इस प्रकार रोते वह पहली बार देख रहा था। रोने की अव्यवस्थित दशा में उसके होंठ और कपोल, उसकी आँखें और उसकी दशन-पंक्ति एक विचित्र उष्ण दीप्ति से चमक रहे थे और वह विशेष रूप से आकर्षक लग रही थी। सहसा यह खयाल आते ही कि वर्षा के बाद की उस ठंडी निस्तब्धता में सुशीला का स्वर दूर-दूर फैल रहा होगा उसने कोमल भाव से उसका हाथ पकड़ कर कहा, 'देखो, व्यर्थ की बात पर मत रोया करो, पराए बालक का थोड़ा खयाल रखना चाहिए।'

सुशीला ने उसका हाथ झटकते हुए कहा—सबका ख्याल रखना चाहिए, मेरा भी कोई ख्याल रखनेवाला है। दिन भर मशीन तरह लगी रहती हूँ, फिर भी कभी भलाई नहीं मिलती। कभी कोई मेरी बात भी पूछता है?' और वह और भी जोर से रोने लगी। उसके रुदन ने चन्द्रनाथ को हतबुद्धि कर दिया।

वह ऐसे भाव से रो रही थी मानो उसका अब चन्द्रनाथ से कोई भी संबन्ध नहीं रह गया है, और उसे उससे किसी प्रकार के न्याय की आशा नहीं है। उसका उच्च स्वर मानो आसपास के लोगों के समक्ष चन्द्रनाथ के अन्याय और अत्याचार की घोषणा कर रहा था। इस प्रकार रोती हुई सुशीला चन्द्रनाथ में एक अनिर्वाच्य घृणा और आकर्षण पैदा कर रही थी।

उसने फिर उसे छूने की कोशिश की पर वह छिटक कर अलग हट गई और ऊँचे स्वर में बोली—'आप नहीं रखना चाहते तो मुझे मेरे मायके भेज दीजिए, दो रोटियाँ खाने को मिल ही जायँगी। नौकरों के सामने मैं यहाँ बेइज्जत होकर नहीं रहूँगी।' और फिर, 'अन्धे हो जाते हैं मा-बाप जो लड़कियों को कहीं भी झोंक देते हैं। उन्हें क्या पता कि मुझ पर क्या गुज़र रही है।'

चन्द्रनाथ ने पुनः उससे चुप होने की प्रार्थना की, किन्तु फिर उसने वैसा ही उत्तर दिया। तब उसने डपटकर कहा—'अब तुम चुपती हो या नहीं? चुपचाप सो जाओ, कल सबेरे जहाँ चाहो वहाँ चली जाना।'

सुशीला ने और भी ज़ोर से चीख़ कर कहा—'नहीं, मैं नहीं चुपूँगी, जो करना है, कर लीजिए।'

चन्द्रनाथ का रक्त उद्वेलित हो रहा था। उसने बलपूर्वक पकड़ कर सुशीला को उसकी शय्या में डाल दिया और स्वयं भी उसके पास बैठ गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुशीला अनवरत रो और घबरा रही थी। चन्द्रनाथ ने हथेली से उसका मुँह ढक लिया।

वह चुप हो गई, किन्तु उसके कंठ से बरबस सिसकियाँ उठ रही थीं, उसका वक्षःस्थल वेग से काँप रहा था और उसकी आँखों से अविच्छिन्न अश्रु-बूँदें प्रवाहित हो रही थीं।

चन्द्रनाथ को इस सब में निर्मम आकर्षण लग रहा था। वह आकांक्षा से जल रहा था।

शब्दों से नहीं स्पर्शमय संकेतों से वह सुशीला को मनाने लगा, मानो वही अपराधी था, मानो आज बहुत दिनों से न मिली हुई सुशीला को पा लेना ज़रूरी था, अनिवार्य था।

उसने आश्चर्य से देखा जीवन के रहस्यमय आलिंगन में आकर्षण और विकर्षण, घृणा और आसक्ति की शिखाएँ कितने पास-पास जलती रहती हैं।

चार-पाँच दिन बाद बैजू ने इन विचित्र दम्पती की नौकरी छोड़ दी।

●

: ५१ :

दो प्रकार के मनुष्य होते हैं, एक वे जो प्रकृति की सहज प्रेरणाओं को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं, और दूसरे वे जो उन प्रेरणाओं से निर्धारित क्रिया-कलापों की पर्यालोचना करते हैं। चन्द्रनाथ इस दूसरी कोटि का व्यक्ति था। वह प्रवृत्ति के नहीं, बुद्धि के स्तर पर रहना चाहता था। और उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सम्बन्ध में जो कुछ दिनों से गड़बड़ उत्पन्न हो गई थी उसे वह चेतना की भूमि में लाकर बुद्धिगम्य बनाना चाहता था।

सुशीला सुन्दरी है, चन्द्रनाथ देखता है। इससे इन्कार करने से कोई लाभ नहीं है, और कभी-कभी वह उसे बड़ी तीव्रता से आकर्षित करती है। उसे इसका पर्याप्त अनुभव है। यही नहीं, उसने सदैव अपने को आकर्षित होने देने की कोशिश की है। जब-जब सुशीला मोहक लगी है, उसने अपनी वासनाओं को उन्मुक्त छोड़ दिया है, जिससे वह और एकत्र हो सकें, एक हो सकें। पर कहाँ, आज भी वे एक कहाँ हैं ? क्यों उसे महसूस होता है कि वह दिन-प्रतिदिन सुशीला से दूर होता जा रहा है ? वह जितना ही उसे अपने निकट खींचने की कोशिश करता है उतना ही मानो यह दूरी बढ़ती जाती है, जैसे भूमि और आकाश क्षितिज में अधिकाधिक एक-दूसरे की ओर झुकते हुए भी दूर हीं रहते हैं।

और क्या वह जो कि अपनी बोधवृत्ति के अरुणोदय के साथ आदर्श प्रेम का स्वप्न देखता आया है, वह जो कि मानव व्यक्तित्व को उदात्त मूल्यों का वाहक समझता रहा है, मानव-मानव का पूर्ण आध्यात्मिक तादात्म्य, सत्य और सौन्दर्य की ज्योतिर्मय भूमि में पूर्ण भावैक्य, जिसकी साध और साधना का विषय रहा है—क्या वह अपने को इस प्रकार के जड़ सम्बन्ध का साक्षी बन जाने देगा ? क्या सुशीला के पीछे, एक ऐसी स्त्री के लिए जिसके जीवन की न कोई दिशा है, न कोई लक्ष्य, जहाँ न कोई ऊँची आकांक्षा है न कोई ऊर्ध्वमुख प्रयत्न, वह अपने चिर पोषित स्वप्नों और आकांक्षाओं को तिलांजलि देगा ?

और तब उसे लगता है कि सुशीला से पूर्ण विच्छेद, उसके प्रति पूर्ण मानसिक विरक्ति और उदासीनता का भाव ही, समस्या का एकमात्र हल है। क्यों वह सुशीला से किसी प्रकार का सम्पर्क रखे ?

किन्तु इस प्रकार के विच्छेद की कल्पना के साथ ही एक दूसरी कल्पना भी उसके मानस-चक्षुओं के सामने आकर खड़ी हो जाती है, सुशीला की दैन्यभरी मूर्ति की कल्पना। इतने दिनों में वह सुशीला के सम्बन्ध एक बात निश्चित रूप से जान पाया है, यह कि वह बहुत दुर्बल है। झगड़े के समय जो वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कभी-कभी उग्र रूप धारण कर लेती है वह उसका प्रकृत रूप नहीं है। अपने मूल रूप में वह काफ़ी कोमल है, नितान्त दुर्बल। यदि किसी दिन किसी भी कारण से उसका चन्द्रनाथ से झगड़ा हो जाता है तो वह बाद में खोई-खोई सी फिरती है, नितान्त दीन और श्रीहीन, उस समय वह एक ऐसी बेलि-सी मालूम पड़ती है जिसका आधार छिन्न हो गया हो, अथवा जो माली की लम्बी उपेक्षा से कुम्हला गई हो; और तब चन्द्रनाथ को उसका दैन्य दूर करने के लिए बरबस उससे सन्धि का उपक्रम करना पड़ता है।

वास्तव में उग्रता सुशीला में हाल ही की विकसित हुई विशेषता है, प्रयाग आने से पहले वह उसमें नहीं देखी गई थी। इसके विपरीत उसकी दुर्बलता और अवलम्ब-सापेक्षता, उस तेजस्विता और मनस्विता का अभाव जो सम्पूर्ण विश्व को चुनौती देकर अपने में केन्द्रित और आश्रित रह सकती है, उसमें उसी दिन स्पष्ट हो गया था जब चन्द्रनाथ पहली बार उससे रुष्ट हुआ था—पूर्णिमा की उस रात में जब सुशीला ने अनजाने उसकी काव्य-सृष्टि में बाधा देने का अपराध किया था।

तो क्या वह सुशीला को मानसिक विरक्ति और परित्याग की सजा न दे? क्या वह इसी प्रकार अपने शरीर को, अपने बहुमूल्य व्यक्तित्व को, उस अबोध असंस्कृत नारी की वासना-पूर्ति का साधन बनाता रहे, बनते देखता रहे? क्या उसका व्यक्तित्व केवल इसलिये है कि वह एक नारी द्वारा मानवता की आत्म-सृष्टि का, मानव-परम्परा को अखंड रखने का, यंत्र बना लिया जाय?

उसकी अन्तरात्मा इस सम्भावना के विरुद्ध विद्रोह करती है। वह अपने को एक विचित्र द्वन्द्व में फँसा पाता है। उसके सामने दो ही मार्ग, दो ही विकल्प हैं, और दोनों में एक भी ग्राह्य नहीं है। इस विषम स्थिति का कारण सुशीला थी, इसलिए चन्द्रनाथ को उसके प्रति और भी गहरी खीझ होने लगी। क्यों वह ऐसी जड़ है कि उससे प्रेम नहीं किया जा सकता, और फिर क्यों वह इतनी दुर्बल है कि उसके रोष को सहन भी न कर सके?

उसे लगता है जैसे सुशीला जान-बूझ कर, उसे परेशान करने के लिए, अपने स्वभाव और बर्ताव को नहीं बदलती। उसकी बुद्धि इतनी खराब नहीं है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

फिर क्यों नहीं वह कुछ सीखने की ओर चन्द्रनाथ को समझने की कोशिश करती? क्यों वह इतनी अकर्मण्य है, इतनी निःस्पृह; क्यों उसमें वह अभिलाषा नहीं पनपी कि वह विश्व के सांस्कृतिक वैभव से सम्पर्कित हो सके, संस्कृत बन सके?

क्यों वह इस बात पर तुली हुई है कि चन्द्रनाथ को अपने से विरक्त करके उसे निर्दय प्रेमहीनता और विश्वासघात का दोषी बनाए?

: ५२ :

आजकल चन्द्रनाथ जो अपने और सुशीला के स्नेह-बन्धन की अधिक छानबीन कर रहा था उसका एक विशेष कारण भी था, उसे स्नेह की जरूरत थी। यह जरूरत सदैव से न थी, सो नहीं, पर इस समय वह कुछ अधिक तीव्रता से अनुभव होने लगी थी। कुछ दिनों से उसे सन्देह होने लगा था कि साधना उसकी ओर से उदासीन हो गई है, और इसलिए वह अपने सांस्कृतिक व्यक्तित्व के लिए सुशीला में साथी पाने को और भी व्यग्र हो उठा था।

जो चीज हमारे पास, हमारे घर में नहीं है उसके बारे में सदैव शंका बनी रहती है; चीजों से अधिक अनिश्चय मनुष्यों के संबन्ध में रहता है। शायद इसलिये, व्यक्ति को स्थायी साथी उपलब्ध कराने की भावना से, लोक ने विवाह-संस्था का विधान किया है। पति-पत्नी और उनकी सन्तति एक-दूसरे के अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।

अपने छोटे-से उपहार के साथ चन्द्रनाथ ने जो पत्र भेजा था उसका साधना ने कोई उत्तर नहीं दिया। चन्द्रनाथ ने समझा, इसका कारण विवाह की व्यस्तता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

है। उसने आशा की थी कि कुछ दिन बाद उसे कुछ उत्तर मिलेगा, पर वह आशा भी पूरी नहीं हुई। विवाह के लगभग एक मास बाद, सुशीला के आने के प्रायः ढाई सप्ताह पीछे, उससे बरेली का पता पूछकर चन्द्रनाथ ने फिर साधना को पत्र लिखा, किन्तु उसका भी कोई उत्तर अब तक नहीं मिला। बीच में सुशीला से वह एक-दो बार पूछ चुका है, 'तुमने पता गलत तो नहीं बताया था?' किन्तु सुशीला ने इसके बारे में पूरा निश्चय प्रकट किया। धीरे-धीरे उसे सन्देह होने लगा कि पत्रोत्तर न मिलने का कारण पते की गड़बड़ नहीं हो सकती। और यदि मान भी लिया जाय कि साधना को उसका पत्र नहीं मिला, तो भी वह तो उसे पत्र लिख सकती थी। सुशीला के मायके से वह उसका पता भी सहज ही पा सकती थी।

साधना का पत्र न मिलने की परिस्थिति उसके जीवन के लिये एक बड़ी घटना का महत्त्व रखती थी।

पत्रोत्तर न मिलने पर बार-बार लिखते उसे संकोच लगता था, स्वाभिमान का प्रश्न भी था। यदि साधना उसे बिना पत्र लिखे रह सकती है तो वह क्यों नहीं? स्वाभिमान से अधिक मान की भावना पुनः लिखने में बाधक होती थी। वह साधना पर नाराज़ था। जिसे हम अपना समझते हैं उस पर रुष्ट होने का अर्थ न तो शत्रुता है, न सम्बन्ध-विच्छेद, उसका मतलब सिर्फ यही होता है कि वह व्यक्ति अपनी भूल स्वीकार कर ले और फिर से घोषणा करे कि वह हमारे प्रेम पर निर्भर है। प्रेमास्पद से मान और नाराज़ी का उद्देश्य उसकी इस सोई हुई चेतना को प्रबुद्ध कर देना है कि वह भी हम पर उतना ही अवलम्बित है जितना कि हम उस पर, और हमारी उपेक्षा से उसे उतना ही कष्ट होगा जितना कि उसकी विरक्ति या उदासीनता से हमें हुआ है। शायद प्रेमास्पद में कष्ट की अनुभूति उत्पन्न करने की भावना ही हमारे मान या रोष में रहती है, यह प्रच्छन्न विश्वास भी कि वह हमसे तटस्थ या उपेक्षित होकर नहीं रह सकता। वस्तुतः यह विश्वास ही हमें अपने मान द्वारा उसे दण्ड देने की प्रेरणा देता है, और विश्वास की वास्तविकता ही हमारी शक्ति का माप होती है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किन्तु यदि प्रेमास्पद हमारे मान या उपेक्षा को चुपचाप सह ले, हमारे पास क्षमा-याचना को न आए तो ? तो हमारी पराजय है। ऐसी दशा में प्रेमी का मान करुणा के आँसुओं में परिवर्तित होने लगता है।

काफ़ी दिनों तक चन्द्रनाथ इस वस्तुस्थिति को अपने से छिपाने की कोशिश करता रहा कि उसे साधना की उपेक्षा से कष्ट हो रहा है। इस बीच में वह कभी सुशीला की पढ़ाई की चिन्ता में और कभी अनुवाद की व्यस्तता में अपने को भूलने की कोशिश करता रहा। किन्तु अन्त में जब सुशीला ने उसे अपनी वाणी और व्यवहार दोनों से पूर्ण निराशा की सूचना दे दी तो वह एकाएक दुगुनी तीव्रता से अपने निरवलम्ब अकेलेपन को महसूस करने लगा और उसका ध्यान बरबस साधना की दिशा में प्रधावित होने लगा।

इस बार जब वह बदायूँ से आया था तो साधना के प्रति बहुत ही कोमल भाव लिए हुए था। उससे पहले भी उसे साधना से स्नेह था, पर इस बार उस स्नेह में कोई अनिर्वाच्य तत्व और मिल गया था, शायद यह तत्व एक सूक्ष्म तादात्म्य की भावना थी, अथवा सम्बन्ध की अखण्डता का मधुर विश्वास, अथवा एक कृतज्ञतापूर्ण स्वीकृति जिसमें समर्पण अन्तर्निहित था, सम्भवतः ये सभी भावनाएँ न्यूनाधिक उसके स्नेह में मिश्रित हो गई थीं। विश्लेषण की चेष्टा बिना किए ही वह इन सब संवेदनाओं को ढोता और मन-ही-मन प्रार्थना करता कि उसके इस कोमल-मधुर सम्बन्ध को किसी प्रकार की ठेस न पहुँचे।

उसकी ये भावनाएँ अब विलुप्त हो गई हैं, सो नहीं; अब भी वह साधना के उसी अनिर्वचनीय आवेग, उसी गहरे ममत्व और अपनेपन के भाव से, याद करता है। साधना की स्निग्ध-गहन आँखें उसके हृदयाकाश में नक्षत्रों की भाँति चमकती हैं, और उसकी वाणी की मधुर गूँज, उसके मुखमंडल की मनोरम भंगियाँ, उसके शब्दों का करुण ओज चन्द्रनाथ के मस्तिष्क और कानों में बारम्बार अभिनीत होते मालूम पड़ते हैं। किन्तु इन भावनाओं के साथ धीरे-धीरे अब एक खीझ का मिश्रण हो गया है और वह कभी-कभी अपने में विमर्श करता हुआ कहता है—यह लड़की कितनी विचित्र है, क्यों वह पत्र तक नहीं लिखती, पत्र का उत्तर भी नहीं देती; वह बिना पत्र लिखे रह कैसे सकती है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यह "कैसे" उसके प्रश्न का रेखांकित भाग है, उसका उत्तर पाना ज़रूरी है। उसे अब भी यह विश्वास नहीं होता कि साधना सचमुच उसके प्रति विरक्त हो गई है, हो सकती है। वह जितनी मृदुल और कोमल है, उतनी ही स्नेहपूर्ण भी। फिर क्यों उसने सहसा अपने को इस प्रकार विच्छिन्न कर लिया है ? क्यों वह पत्र नहीं लिखती, कैसे वह अब तक इतनी उदासीन होकर रह सकी है ?

तो क्या वह उससे नाराज़ है, क्या उसने कोई ऐसा कारण उपस्थित किया है ? उसे ज्वर के दिन की घटना याद आई; कहीं इसी से तो वह रुष्ट नहीं हो गई ? साधना जितनी भावक और संवेदनशील है, उतनी ही प्रखरबुद्धि और आदर्शवादिनी भी। कहीं उसे उससे स्नेह की स्वच्छता में, पवित्रता में अविश्वास तो नहीं हो गया ?

एक दिन उसने अपनी उस दिन की दुर्वलता के लिये आप ही अपने को क्षमा कर लिया था; तब उसने यह नहीं सोचा था कि दूसरी ओर भी उसके उस व्यवहार का विचार हो सकता है, और वहाँ उसके क्षमा न मिलने की सम्भावना भी हो सकती है। आज उस सम्भावना की कल्पना करके वह सहसा खिन्न हो गया।

वह फिर सोच रहा था, उसमें ऐसी इच्छा क्यों जगी ? क्यों वह उस प्रकार की दुर्वलता का शिकार बना ? वह जो कि अपने अपरूप स्नेह को हृदय के निभृत एकान्त में स्वच्छतम भावनाओं और संकल्पों से पोसता रहा था....

ममता और आसक्ति, वह स्वयं मानती है कि ये प्रेम के आवश्यक तत्त्व हैं। वे कितने तीव्र, कितने गहरे हो जाते हैं ! क्या उनकी तीव्रता और गहराई अवांछनीय है, डरने और नियन्त्रण करने की चीज़ है ? किन्तु तब प्रेम में रह ही क्या जायगा ?

और यदि उन्हें पनपने दिया जाय तो ?....तो, वह देखता है, नर-नारी के बीच ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जब वे अपने पर उतना कठोर नियन्त्रण न रख सकें और एक-दूसरे को केवल आँखों में ही छूकर सन्तुष्ट न हो सकें।

कैसी विडम्बना है। प्रेम और आसक्ति का दवाव, ममत्व की प्रेरणा और परिणति, कितनी दुर्भर हो उठती है ! क्यों प्रेम का ऐसा स्वभाव है, क्यों वह हमें इतना आत्म-विस्मृत, इतना लाचार बना देता है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वह उठकर टहलने लगा है जिससे उसके विचारों की गति और भी तेज हो गई है।

उसके सामने अखिल मानव-जगत् और मानव-इतिहास का चित्र है जो सैकड़ों नर-नारी और उनके विविध सम्बन्धों से संकुल है।

इतने नर-नारी जगत् में क्यों आते हैं और क्यों वे प्रेम की प्यास से पीड़ित होते हैं? और क्या किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह एक से अधिक पुरुषों और स्त्रियों को प्यार करे? क्या नर और नारी के प्रेम का घेरा, एक-दूसरे की अपेक्षा में, संकीर्ण और सन्देहपूर्ण ही होना चाहिए? क्या वे सब सबको प्यार नहीं कर सकते, सब एक-दूसरे के नहीं हो सकते? अरे यह कहाँ का आदर्श है जो हमारे प्रेम-संबन्ध को अखिल विश्व में प्रसरित होने से रोक कर कुछ व्यक्तियों तक सीमित करना चाहता है?.... क्या उसे सचमुच साधना के प्रति प्रेम रखने का अधिकार नहीं है? और क्या विवाह होते ही साधना का यह कर्तव्य हो गया कि वह उससे पहले जैसा सम्बन्ध रखना छोड़ दे?

उसकी अन्तरात्मा इसे स्वीकार नहीं करती। यह कैसे सम्भव है कि असंख्य नर-नारियों से भरे जगत् में प्रत्येक पुरुष को केवल एक ही स्त्री और प्रत्येक नारी को एक ही पुरुष गहरी मैत्री करने योग्य मालूम पड़े, प्रेम का पात्र जान पड़े। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य अपने सम्पर्कों को सर्वथा सीमित और अपनी वृत्तियों को नितान्त संकुचित या अनुदार बना ले। पर क्या वह वांछनीय है?

एकाधिकार और ईर्ष्या, मानव हृदय में अभी तक कितना कलुष है! विवाह-संस्था क्या इन्हीं की अभिव्यक्ति नहीं है? तो क्या इस संस्था को हटा दिया जाए? क्या स्त्री-पुरुषों को स्वच्छन्द संपर्कित होने दिया जाए?

इसी कल्पना से उसे डर लगता है। वह समाज जिसमें नारी अनगिनत पुरुषों के सम्मुख अपनी अनावृत वासना लिए घूमती फिरेगी, अनगिनत कामोपसकों की क्रीड़ा-पुतली होगी, वह क्या मानवों का समाज होगा? वहाँ उदात्त प्रेम और निर्मल स्नेह-सम्बन्धों के लिए कहाँ स्थान होगा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

संयम, नियन्त्रण, आत्म-निग्रह—वह देखता है इनके बिना विशुद्ध प्रेम की, उदात्त मानव-सम्बन्धों की, सत्ता सम्भव नहीं है। संयम ही प्रेम का श्वास-प्रश्वास है, उसी से वह जीवित और सचेत रहता है, उसी के पावन-प्रवाह पर तिरता हुआ वह क्रमशः ऊर्ध्वमुख अग्रसर होता है। प्रेम का स्वास्थ्य और सौन्दर्य, उसकी शक्ति और शुचिता, उसकी स्वर्गीय दीप्ति और अलौकिक भव्यता, सब संयम पर आश्रित है, उसकी तीखी तपस्या में निहित और केन्द्रित है।

कौन कहता है एक नारी अनेक पुरुषों को और एक पुरुष अनेक नारियों को प्रेम न करे; उनके सहज आकर्षण की यह परिणति नितान्त अस्वाभाविक होगी, नितान्त कृत्रिम। और न यही सम्भव या वांछनीय है कि समाज में पुरुष केवल पुरुषों से और नारियाँ केवल नारियों से सम्पर्क रखें—उस स्थिति में मनुष्य पारस्परिक सम्बन्ध को पूर्ण तीव्रता, कोमलता और रहस्यमयता में महसूस न कर सकेगा। आवश्यक केवल यह है कि मनुष्य अपने सम्बन्धों को मनुष्यता से निचले धरातल पर न ले जाय, उन्हें मात्र जैवी प्रकृति को सतुष्ट करने का अस्त्र न बनाए और उन पर संयम का सात्त्विक नियन्त्रण स्थापित करे।

क्या उसने साधना से ऐसा ही सम्बन्ध रखने की चेष्टा नहीं की थी? अपने गम्भीर स्नेह को उसने जो 'बहिन' शब्द के चारों ओर केन्द्रित किया था सो क्या उसके हृदय का, अन्तर का, सम्पूर्ण सत्य नहीं था?

और इस सब में विश्वास होते हुए तथा अपने स्नेह की निर्मलता में पूर्ण आस्था रखते हुए भी, वह सोचता है, उसने उस दिन साधना को उस प्रकार क्यों स्पर्श किया।

गहरी आसक्ति की यह दुर्बलता क्षम्य भले ही हो, सराहनीय नहीं और उसे महसूस होता है कि उस दिन उसकी तुलना में साधना का व्यवहार कहीं अधिक संयत, समुचित और मनोज्ञ था। उसकी वाणी एवं गति जितनी शिष्ट और नियन्त्रित थी, उसका चुम्बन उतना ही निष्कलुष। उसे यह सोचकर संतोष हुआ कि उसके स्नेह का आलम्बन इतना उदात्त है। साथ ही वह अपने व्यवहार की सफाई देने और उसके लिये क्षमा याचना करने को व्यग्र हो उठा।

❀ ❀ ❀

अगले दिन उसने साधना को पत्र लिखा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यह पत्र मैं तुम्हें अपनी चेतना के गहनतम स्तरों से लिख रहा हूँ, इसकी अवहेलना मत करना।

कल रात मैंने सोचा था कि तुम्हें पत्र लिखूँगा, पर सबेरे ही, बिस्तर में पड़े-पड़े, यह भावना हुई कि मैं ही तुम्हें क्यों लिखूँ ? उपेक्षा का उत्तर उपेक्षा से क्यों न दूँ ? पर अब देखता हूँ कि यह सम्भव नहीं है, वांछनीय भी नहीं है। जहाँ अपनेपन की भावना पूर्ण हो वहाँ मान-अपमान का आडम्बर कैसा ? वहाँ झूठे क्रोध, झूठे अभिमान को स्थान कहाँ रह सकता है ? वहाँ अपनी दुर्बलताओं को छिपाने की चेष्टा भी क्यों होगी ?

हाँ बहिन, आज मैं अपनी सबसे बड़ी दुर्बलता बताने बैठा हूँ, यह कि मैं बहिन के बिना नहीं रह सकता। बहिन को क्या पता कि उसके दो शब्दों के बिना, उसके प्रेमाश्वासन के अभाव में, भाई का जीवन कितना नीरस, कितना सूना हो जाता है। अन्यथा वह इतनी कठोर न बनती।

आज सबेरे ही उठकर मैं बहिन के सब पत्र पढ़ गया। यह प्रवृत्ति क्यों होती है, मैं स्वयं नहीं जानता। पत्र तो मुझे वैसे भी भूले नहीं हैं, लगभग सब याद हैं, फिर भी कभी-कभी सबको एक साथ पढ़ने को जी हो जाता है। वे मुझे कैसे लगे, क्या बताऊँ। जैसे शब्दों के सुन्दर जाल में मेरी बहिन बैठी है।···शब्दों में कितनी शक्ति है, यह मैंने ठीक से तुम्हारे पत्रों से ही सीखा है। कैसे तुम अपना हृदय, स्वयं अपने को, पत्रों में उड़ेल सकी हो। पत्र स्वयं अपने में पूर्ण हैं, जैसे शारीरिक उपस्थिति बिलकुल भी आवश्यक नहीं है। कैसा आश्चर्य है ! यह 'पत्रों की बहिन' मानो केवल शब्दमयी है, मानो सिर्फ सुनाई देती है, मानो भावनामयी है···मानो वह अपने ही भीतर बजनेवाली एक रागिनी है। और तुम्हारा भाषा पर कैसा कोमल अधिकार है, सहज ही सब कुछ कह देती हो !

वासनाओं के स्थूल धरातल पर रहनेवाली दुनियाँ इतने सूक्ष्म हृदय-बन्धन को न समझ सके, तो आश्चर्य नहीं, वहाँ ग़लतफ़हमी को पूरा अवकाश है। किन्तु क्या यह ग़लतफ़हमी हम लोगों के बीच में भी आ सकती है ? और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्या परिस्थितियों का कोई विवर्त्तन कभी यह कहला या मनवा सकता है कि यह सब कुछ नहीं है, मिथ्या है ?

जिस पूर्ण एकता के सम्बन्ध को मैं एक पावन स्वप्न के रूप में पालता रहा था वही तुम्हारे सम्पर्क से यथार्थ होने लगा था। उसके निर्वाह में जो कठोर आत्म-नियन्त्रण का कष्ट है, वह सात्विक ही नहीं, मधुर भी है, किन्तु वहाँ मौन उदासीनता किसी भी दशा में सह्य नहीं है। वह सब प्रकार के सौन्दर्य और कोमलपन की विघातक है। वह व्यक्त्वि को विनष्ट करने वाला तीव्र महाविष है।

देखता हूँ, काफ़ी देर हो गई है। आज विश्वविद्यालय जाना ज़रूरी है। पता नहीं तुम्हें क्या-क्या लिख गया हूँ। मुझे यह जानने की उत्कट इच्छा है कि तुम किसी कारणवण मुझसे नाराज़ तो नहीं हो। बहिन, विश्वास करोगी कि भाई तुम्हें सिर्फ पत्रों के हृदयाकाश के अमूर्त्त सम्पर्क के, रूप में ही पाते रहना चाहता है। और याद रखो कि तुम्हारे इस सम्पर्क के बिना मैं एक अक्षर भी न लिख पाऊँगा।

तुम्हारा अपना,
चन्द्रनाथ

:५३:

माघ की लम्बी रातों में चन्द्रनाथ कभी-कभी कुछ जल्दी जाग जाता है और कमरे की खिड़की में से झाँक कर ठंड से भीगे हुए शून्य की ओर ताका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

करता है। इस समय तारे प्रायः मुंद चुके होते हैं, पक्षी और मनुष्य सुप्त या नीरव पड़े होते हैं, और अपनी धूमिल नीलिमा में डूबा हुआ आकाश और भी सूना प्रतीत होता है।

चन्द्रनाथ को लगता है कि उसका जीवन भी इसी प्रकार सूना है, अतीत से भविष्य की ओर निरर्थक ढंग से फैला हुआ, जिसमें न आशा का प्रकाश है, न उत्साह का आह्वान, सर्वत्र अर्थहीन शून्यता है।

पिछले एक महीने से वह उन्मत्त भाव से अनुवाद पर जुटा रहा है, मशीन की भाँति नियम से काम करता रहा है, फिर भी जैसे उसने समस्त न होने की कसम खा ली है। अभी लगभग पिचहत्तर पृष्ठ बाकी हैं, और कभी-कभी उनकी कल्पना मात्र से उसका हृदय काँप उठता है।

आजकल वह सुशीला से बहुत कम बात कर पाता है। वस्तुतः उसकी बातचीत करने की प्रवृत्ति ही नहीं होती। अनुवाद की चिन्ता और उसकी थकन, यह दो उसके मस्तिष्क और शरीर में सदैव व्याप्त रहते हैं। पिछले दिनों में उसके स्वास्थ्य में स्पष्ट अवनति हुई है। अक्सर उसकी पीठ में दर्द रहता है और कभी-कभी सिर भी दुखने लगता है। इससे पहले उसने कभी अनुभव नहीं किया था कि मानसिक परिश्रम का स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव पड़ता है।

चन्द्रनाथ देख रहा है कि दरिद्रता के दबाव से सुशीला का स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा है। अब वह उससे सीधा और मधुर भाषण कम करती है, थोड़ी-सी बात में नाराज हो जाती है, और अक्सर मन में कुढ़ती रहती है। तीन-चार दिन हुए कि रात को सुशीला चन्द्रनाथ से कुछ गृह-सम्बन्धी चर्चा करना चाहती थी। चन्द्रनाथ ने कह दिया कि 'जरा मैं अपना काम खत्म कर लूँ फिर बात करना,' इस पर वह एकदम नाराज हो गई और यह कहती हुई कि 'न मैं आपके कमरे में रहूँगी, न आपसे बात करूँगी।' अपनी खाट खींचकर बराबर के कमरे में ले जाने लगी। चन्द्रनाथ ने मना किया, पर कोई फल नहीं हुआ। कमरे में जाकर वह रोने लगी। थोड़ी देर चन्द्रनाथ ने उसे मनाने की कोशिश की, फिर हारकर अपने काम में लग गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुशीला अब उसी कमरे में सोती है। चन्द्रनाथ से वह तटस्थ रहने का भाव दिखाती है, और गृह-प्रबन्ध को लेकर ही कभी-कभी उससे बात करने का उपक्रम करती है। उस समय यदि चन्द्रनाथ खाली हुआ तो पति-पत्नी में कुछ अधिक बातचीत हो जाती है, अन्यथा बातचीत विशुद्ध व्यावहारिक स्तर पर चल कर शीघ्र समाप्त हो जाती है।

एक-दो बार सवेरे की ऊँघानींदी में चन्द्रनाथ को आभास हुआ कि सुशीला पहले से जगी हुई है, और शायद उसके पास होने की इच्छा से, आकुलित महसूस कर रही है। किन्तु नींद की परवशता से वह उठकर सुशीला तक न पहुँच सका। जब तक वह उठ पाता तब तक दिन का ज्योतित आह्वान सुनाई देने लगता और कुछ ही मिनट बाद महरी आकर दरवाजा खटखटाने लगती।

आज चन्द्रनाथ को जागता हुआ पाकर सुशीला अपने कमरे में से बोली—'सुन रहे हो आटा बिलकुल नहीं है, रोटी काहे से बनेगी।' चन्द्रनाथ ने सुन लिया, और समझ भी लिया। सचमुच ही आटे के बिना रोटी नहीं बन सकती। सुशीला ने परसों से ही खबर दे रखी है कि आटा खत्म होने वाला है, इसलिए उसका कोई दोष नहीं है। उसे यह भी मालूम है कि सुशीला का कोष खाली हो चुका है।

'इस वक्त खिचड़ी बना लेना, साँझ को देखा जायगा,' उसने कहा।

'दाल भी तो नहीं है,' सुशीला ने जोड़ा।

'बिलकुल नहीं है क्या ?'

'नहीं 'बिलकुल नहीं है, मैं क्या झूठ बोलती हूँ। आप खुद देख सकते हैं।' कुछ रुककर उसने कहा, 'और दाम भी नहीं है, सात-आठ आने पैसे पड़े होंगे। मैंने आपसे कहा था पर आपने घर पर पत्र नहीं डाला।'

चन्द्रनाथ चुप रहा। अनुवाद-कार्य के कुछ रुपये मिल सकेंगे, इसी आशा में उसने घर रुपयों के लिये नहीं लिखा है। बोला—इस समय चार आने की दाल ला दूँगा, फिर देखा जायगा; चावल तो है न ?

सुशीला ने कहा—हाँ, चावल तो सेर-डेढ़-सेर होंगे।

उसने सोचा कि वह घंटे डेढ़-घंटे पढ़कर बाजार जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यह मकान जिसमें चन्द्रनाथ और सुशीला इस समय रहते हैं, दुमंजिला है। ऊपर दो कमरे हैं जहाँ दम्पति का शयनस्थान है, एवं नीचे एक बाहरी कमरा छोटा-सा आँगन, रसोई घर आदि हैं। दिन में चन्द्रनाथ नीचे के कमरे में ही रहता और काम करता है।

उसने अभी पढ़ना शुरू ही किया था कि एक अधेड़ लम्बे क़द के मुसलमान ने प्रवेश किया। चन्द्रनाथ को उसकी आकृति परिचित लगी, पर वह सहसा उसे पहचान नहीं सका। उसकी चकित मुद्रा को समझकर आगन्तुक ने कहा—हुजूर मुझे भूल गए क्या, मैं हूँ लल्लन खाँ, जार्ज टाउन में हुजूर की किताब के "प्रूफ" लाया करता था।

चन्द्रनाथ को एकदम याद पड़ गया। लल्लन खाँ कम्पोजिटर है और उसके मुद्रक के प्रेस में काम करता है। उसे आश्चर्य हुआ कि कैसे वह इस विचित्र नाम के व्यक्ति को भूल गया था।

आकृति से लल्लन खाँ अभिजात लगता है। उसका कद लम्बा है, जो शरीर की मांसहीनता के कारण और भी बढ़ा हुआ दिखाई पड़ता है; रंग गोरा नाक विशुद्ध "आर्यन" तथा माथा ऊँचा। मांस की कमी से गालों में कुछ-कुछ गड्ढे पड़ रहे हैं; पर उसकी आवाज में कड़क है, और वह मँजी हुई उर्दू बोलता है।

वह छींट का कुर्ता और लुंगी पहने हुए था। सिर पर गोल टोपी थी। उसका व्यक्तित्व सिर से पैर तक ऐतिहासिक लगता था।

लल्लनखाँ बहुत बातूनी है, चन्द्रनाथ के पास आता था तो बिना कुछ देर बातें किये नहीं जाता था। 'हुजूर अभी प्रूफ़ देखकर दे दें, तो मैं इन्तजार करूँ। मेरी तो यही ख्वाहिश है कि आपकी किताब जल्दी-से-जल्दी निकल जाय। बल्कि मैंने अपने दोस्तों से भी कह रखा है, कि इस काम में देर न हो। क्या करूँ मैं हिन्दी ठीक नहीं जानता, वर्ना आपकी किताब दो दिन में निकाल देता; किताब है ही कितनी। और ये सब लोग तो मक्कार हैं, मक्कार; लाख कहो, कहीं सुनते हैं। सारी बात यह है कि खुद मालिक को ही फिकर नहीं है। गुस्ताखी माफ हो, हुजूर, यह लोग कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। या अल्लाह!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इत्यादि। लल्लनखाँ को देखते ही चन्द्रनाथ को उसकी इस प्रकार की बातों की याद हो आई। वह चाहता था कि उससे जल्दी-से-जल्दी छुट्टी पा जाय, इससे उसने शीघ्रता से पूछ लिया—'कैसे आये लल्लन खाँ, मालिकों को क्या होगा, मुसीबत हम लोगों की है।'

'क्यों, क्या बात है ?'

'हुजूर से छिपाना क्या, पिछले दो दिन से एक दाना भी पेट में गया हो तो क़सम है। काग़ज की कमी हो गई है, इसलिए छपाई का काम बहुत-कुछ बन्द हो गया है। चार-पाँच दिन से कोई मजदूरी नहीं मिली है। खुद को खाना न मिले तो कोई बात नहीं है, पर बच्चों को भूख से तड़पते हुए नहीं देखा जाता।'

चन्द्रनाथ—क्यों भाई, क्या कुछ बचाकर नहीं रखते; इतनी मजदूरी करते हो ?

लल्लनखाँ—कहाँ हुजूर, कौन ऐसी आमदनी होती है। वही दस-बाहर आने पैसे कमा लिये, और खर्च कर दिये। आखिर इतने खानेवाले हैं, मैं हूँ, बीबी है, बूढ़ी माँ है और बच्चे हैं।

चन्द्रनाथ—कै बच्चे हैं तुम्हारे ?

लल्लनखाँ—छै हैं हुजूर। एक बच्ची साल भर की है, एक लड़का ढाई-तीन बरस का ; और तो समझदार हैं।

चन्द्रनाथ—ईश्वर ग़रीबी में बच्चे ज़्यादा देता है।

लल्लन खाँ—हाँ हुजूर, खुदा उन्हें नहीं देता जो चाहते हैं। फिर कभी-कभी उन्हें ही देखकर ग़म ग़लत कर लेता हूँ। बच्चे भी बड़े सबर के हैं। समझ जाते हैं कि घर में खाना नहीं है। लेकिन छोटे बच्चों को क्या किया जाय। मुन्नू कहता है 'अब्बा भूख लगी है' और बिटिया भी बुरी तरह चीखती है।

'फिर क्या करोगे लल्लन खाँ ?' चन्द्रनाथ ने अपने आवेग को रोकते हुए कहा। कम्पोज़ीटर के कहने का सीधा ढंग उसके हृदय को बेध रहा था।

कहने के साथ ही उसने महसूस किया कि उसका प्रश्न निरर्थक है। 'क्या करूँ, हुजूर। आज सुबह से मजदूरी की तलाश में निकला हूँ। चौक गया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दारागंज गया. सब प्रेसों में पूछ डाला, पर बेकार आठ-सात मील का चक्कर भी हो गया, और कुछ नतीजा भी नहीं निकला।'

यह कहकर लल्लन खाँ ने दोनों हाथ सिर पर धर लिये।

'तुम मालिक से कुछ उधार क्यों नहीं ले लेते ?'

'उधार ? हुजूर क्या बात कर रहे हैं। करतारसिंह और उधार देगा ? वह पूरी मज़दूरी दे दे, यही बहुत है। मैंने ऐसा कट्टर आदमी नहीं देखा। हद दर्जे का बेईमान है, अपना पैसा नहीं छोड़ेगा, दूसरों का रुपया हड़प कर लेगा। उसने हुजूर के साथ भी बेईमानी की, सभी के साथ करता है।'

चन्द्रनाथ—मेरे साथ ? नहीं भाई मेरे साथ तो कोई बेईमानी नहीं की।

लल्लनखाँ—हुजूर क्या कहते हैं। आपकी किताबें उसने एक हज़ार से ज्यादा छाप लीं, और अब धड़ाधड़ बेच रहा है। तभी तो उसने आपकी किताबें बेचने से इन्कार कर दिया।

चन्द्रनाथ—सचमुच ! क्या यह मुमकिन है ?

लल्लनखाँ—अपनी जान की क़सम हुजूर, मैं क्या झूठ कहता हूँ। आप मैनेजर से दर्याफ्त कर सकते हैं, गर्चे है वह भी बड़ा मक्कार।

चन्द्रनाथ खामोश हो गया। इससे पहले कि लल्लनखाँ उससे याचना करे, वह उठ खड़ा हुआ। सुशीला के पास जाकर उसने अत्यन्त नम्र और धीमे स्वर में कहा—ज़रा चार आने पैसे दे दो।

सुशीला ने पांच आने पैसे निकालकर देते हुए पूछा—क्या दाल लेने जा रहे हो ? दो पैसे का दही भी लेते आना। बाहर आप किससे बातें कर रहे थे ?

'एक बहुत गरीब आदमी है, कई दिन से उसके बच्चे भूखे हैं,' कहकर वह सीधा बैठक में पहुँच गया। जेब में से टटोलकर निकालने का भाव दिखाते हुए उसने तीन आने पैसे लल्लन खाँ को दिये और कहा—'लो भाई, किसी तरह गुज़र करना और पैसे तो हैं नहीं।'

लल्लन खाँ दुआ देकर चल दिया।

चन्द्रनाथ दाल तो ले आया पर दही नहीं ला सका। सुशीला को जब पैसों की कैफ़ियत मिली तो बिगड़कर बोली—'अपने खाने को है नहीं, दूसरों को दान करते फिरते हैं। भला उस शराबी को आपने पैसे क्यों दिये ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

'शराबी नहीं है, कई दिन से मज़दूरी नहीं मिली है, बच्चे भूखों मर रहे हैं।'

'आपके कहने से नहीं है शराबी, मैं तो उसकी शक्ल देखकर ही पहचान गई। आपको सबका ख्याल है, मेरा ही नहीं है। एक पैसे का दही भी मेरे भाग्य में नहीं है'—कहकर वह रोने लगी।

'अरे! दही मैं अभी लाये देता हूँ अभी तो कुछ पैसे होंगे, शाम तक कोई प्रबन्ध हो ही जायगा।' और फिर वह सुशीला को समझाने लगा—'देखो, अपना हृदय छोटा नहीं बनाना चाहिए। थोड़ी सी उदारता.......'

'ना भाई, मुझमें उदारता कहाँ है, उदार तो आप हैं। तो फिर वर्तन-भाँडे बेचकर दान क्यों नहीं कर डालते। मेरे लिये ज़हर लाकर दे दीजिये जिससे हमेशा के लिये छुट्टी हो जाय।'

चन्द्रनाथ अपराधी की भाँति चुपचाप बैठक में चला गया।

वह अब तक धन को, आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त, मात्र झूठे गौरव का अधिष्ठान समझता आया है, पर आज वह देख रहा है कि उसका कुछ और उपयोग भी है; वह शिष्टता, सहृदयता, उदारता आदि गुणों का आधार भी है। उसके अभाव में सुशीला अपनी स्वाभाविक मृदुता और मधुरता को खोती चली जा रही है, यह बड़े ही परिताप का विषय है। सुशीला नहीं जानती कि उसके प्रति चन्द्रनाथ के हृदय में कितना निगूढ़ पक्षपात है; वह उसकी प्यार करने की क्षमता, अभिलाषा और आवश्यकता सबसे अनभिज्ञ है इसीलिये इतनी जल्दी उसके व्यवहारों को सन्देह की दृष्टि से देखने लगती है।

साँझ को चन्द्रनाथ इतिहास के अध्यापक महोदय के पास, जिनके लिये वह अनुवाद कर रहा था, गया। समय-समय पर वह उन्हें अपना अनुवाद दिखाता रहा था और उन्होंने उसकी शैली को नापसंद नहीं किया था। किन्तु चन्द्रनाथ के रुपये माँगने पर उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि अनुवाद के पूर्ण होने से पहले वे उसे कुछ न दे सकेंगे।

चन्द्रनाथ ने ऐसे रूखे उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी, उसकी आशा पर तुषारपात हुआ। भला वह यकायक रुपये कहाँ से पाएगा, और घर का खर्च कैसे चलेगा?

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अध्यापक के घर से लौटते समय, बिना किसी स्पष्ट संकल्प के, उसके पैर एक विशिष्ट दिशा में मुड़ गए, और थोड़ी ही देर में उसने अपने को जार्ज टाउन की कॉटेज के दरवाजे पर पाया। वह भीतर चला गया। शायद उसकी अव्यक्त चेतना में यह विचार था कि वह वीरेन्द्र से कुछ रुपये उधार पा सकेगा।

काटेज में वीरेन्द्र और शिवानन्द पूर्ववत् उपस्थित थे। उसके अपने कमरे में एक दूसरे विद्यार्थी आकर रहने लगे थे। इस समय वे और रामानंद दोनों वीरेन्द्र के कमरे में मौजूद थे।

वीरेन्द्र ने स्वाभाविक प्रगल्भ शिष्टता से उसका स्वागत किया और उसके लिये चाय मँगवाई। कुछ देर में शिवानंद ने उससे पूछा—आपने श्रीप्रसाद कालेज में अर्जी भेज दी है न ?

'मैंने ? नहीं तो। क्या "वाण्ट" निकल गई ?'

'यह देखिये मिस्टर वीरेन्द्र, मुझे पहले ही सन्देह था, आपने माना ही नहीं। (चन्द्रनाथ से) "वाण्ट" निकले तो आज एक सप्ताह हो गया, महाशय ! लोगों ने कोशिश भी शुरू कर दी।'

वीरेन्द्र—क्या सचमुच आपने अभी तक अर्जी नहीं दी है, मिस्टर चन्द्रनाथ ? आज ही भेज दीजिए।

चन्द्रनाथ कुछ परेशान दीखने लगा।

शिवानंद ने कहा—घबराएँ नहीं, अभी आठ-दस दिन की अवधि है, इस मास के अन्त तक अर्जी पहुँच जानी चाहिए।

'आपके पास सर्टीफ़िकेट कौन-कौन-से हैं, मिस्टर चन्द्रनाथ ?' वीरेन्द्र ने पूछा।

'मेरे पास सिर्फ बी० ए० और एम० ए० की डिग्रियाँ भर हैं।'

'अरे ! आपके पास प्रिंसिपल देव का कोई सर्टिफिकेट नहीं है।'

चन्द्रनाथ—नहीं।

'और यहाँ के वाइस-चांसलर और अपने डिपार्टमेंट के हेड का ? वह भी नहीं है ?'

चन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—नहीं भाई, मेरे पास कोई सर्टिफिकेट नहीं है। कहिए तो अपने प्रधानाध्यापक तथा वाइस-चांसलर के पास जाऊँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वीरेन्द्र—ज़रूर जाइए, वर्ना क्या आप कोरी अर्ज़ी ही भेजेंगे!

शिवानंद—आप भी विचित्र जीव हैं, भला आपने प्रिंसिपल देव से सर्टिफिकेट क्यों नहीं लिया?

थोड़ी देर में वीरेन्द्र ने कहा—देखिए मिस्टर चन्द्रनाथ, अगर आप यह जगह पाना चाहते हैं तो आपको कुछ कोशिश करनी पड़ेगी, सिर्फ अर्जी देने से काम नहीं चलेगा। आपको कम से कम प्रिंसिपल देव से एक बार मिल लेना चाहिए।

चन्द्रनाथ—उनसे मिलने का तो मेरी समझ में कोई उपयोग नहीं है, वे मुझे अच्छी तरह जानते हैं।

वीरेन्द्र—साहब जानते-वानते कुछ नहीं हैं, यह लोग वड़े आदमी हैं, आप खुद मिलिए और हो सके तो कोई सिफ़ारिश पहुँचाइए।

शिवानंद—और वह वात भी इन्हें बतला दीजिए, मिस्टर वीरेन्द्र, जिसका हम जिक्र कर रहे थे।

वीरेन्द्र—हाँ, मिस्टर चन्द्रनाथ, एक बात और है। आपको वरेली मिस्टर देव से मिलने सूट में जाना चाहिए। समझे?

उत्तर में चन्द्रनाथ ने सूखी हँसी हँस दी। उसने भी सुन रखा था कि प्रिंसिपल देव को कोट-पतलून से विशेष अनुराग है। पर वह वह अब तक उनसे काम पड़ने पर- कुल मिलाकर दो बार—धोती-कुरते में ही मिलने गया था। क्या सचमुच वे पोशाक को इतना महत्व देते हैं?

कुछ देर बाद वह उठ कर चला आया। वीरेन्द्र से रुपए माँगने का साहस उसे नहीं हुआ।

सांझ को उसने अपनी एम० ए० के कोर्स की कतिपय किताबें एक पुरानी पुस्तकें बेचनेवाले की दुकान पर दे दीं, साथ ही रुपया माँगते हुए अपने भाई को भी पत्र लिख दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

:५४:

कालेज से लगभग दो मील दूर, क्लब रोड पर, प्रिंसिपल देव एक सुन्दर बँगले में रहते हैं। उनका बँगला 'गोल बँगले' के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि उसके सब कमरे बाहर से गोलाकार दीखते हैं। मुख्य इमारत के सामने और पक्षों में मनोरम फुलवारी है। प्रिंसिपल देव को फूलों, विशेषतः गुलाब से, बहुत प्रेम है और उनके बगीचे में उसकी दर्जनों जातियाँ देखी जा सकती हैं। करोटन की भी बहुत सी किस्में हैं। उन्हें चित्रों से भी अनुराग है, यह उनके ड्राइंग-रूम के बाहर पहुँचते-पहुँचते स्पष्ट हो जाता है। संगीत के प्रति भी वे विमुख नहीं है, और साहित्य तो उनका अपना विषय ही है। वे कभी-कभी कविता भी करते हैं।

अबसे पहले चन्द्रनाथ दो बार और इस बंगले में गया है, पर अबकी बार वहाँ जाते हुए उसे विशेष संकोच हो रहा था। पहली बार वह प्रिंसिपल देव से अपनी फीस माफ़ कराने के सम्बन्ध में मिला था। तब उसने अपनी स्थिति बहुत साफ़ तौर पर बतला दी थी, और क्यों कि वह एफ़० ए० में प्रथम श्रेणी में पास हुआ था, उसकी फ़ीस माफ़ कर दी गई थी। दूसरी बार स्वयं प्रिंसिपल देव ने उसे बुलाया था, और तब वह उनसे कुछ साहित्य-चर्चा भी कर सका था। पर इस बार वह उनसे मिलकर क्या बातें करेगा, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

रविवार को दिन के तीसरे पहर में, लगभग तीन-साढ़े-तीन बजे, वह प्रिंसिपल देव के बँगले पर पहुँचा। वे उस समय चाय पी रहे थे। चन्द्रनाथ ने एक कागज पर अपना नाम लिखकर उनके पास पहुँचा दिया, और बुलाए जाने की राह देखने लगा। उसे यह भी यह हुआ कि कहीं प्रिंसिपल देव उसे बुलाकर चाय पीने को न कहें—वे अपनी शिष्टता के लिये प्रसिद्ध थे। पर सौभाग्यवश खाली चाय के बर्तनों के साथ इसकी संभावना टल गई। वह आश्वस्त होकर प्रतीक्षा करने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इसी समय एक दूसरा छात्र आया जो अपनी वेशभूषा से अभिजात जान पड़ता था। चन्द्रनाथ की भाँति उसने भी अपना नाम भेजा—उसके पास छपा हुआ कार्ड था। चन्द्रनाथ को यह देखकर आश्चर्य और क्षोभ हुआ कि प्रिंसिपल देव ने उस छात्र को तुरन्त ही बुला लिया। वह फिर प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर में वह छात्र निकल कर चला गया, और उसके दो-तीन मिनिट बाद प्रिंसिपल देव ने उसे बुला लिया।

चन्द्रनाथ ने पहुँचकर देखा कि उनके सामने एक पुस्तक खुली रखी है, और वे कलम हाथ में लिये लिखने की मुद्रा में बैठे हैं। उसके पहुँचने पर विना ऊपर सिर उठाये प्रिंसिपल देव नें उससे कुशल पूछी और उसकी रिसर्च की प्रगति पर प्रश्न किये। फिर वे चुप हो गये।

चन्द्रनाथ ने कृतज्ञ महसूस किया। क्षण भर बाद उसने साहस करके उनके सामने खुली हुई पुस्तक का नाम पूछा।

'मिस करुणा सेन की अंग्रेजी कविताओं का संग्रह है। मुझे इसकी भूमिका लिखनी है।'

चन्द्रनाथ ने करुणा सेन का नाम नहीं सुना था, पर उसने अनुमान किया कि वे कोई बंगाली महिला हैं। प्रिंसिपल देव की अन्तःप्रान्तीय ख्याति के इस ज्वलन्त निदर्शन ने उसकी कल्पना को स्पर्श किया।

'मैंने, "लीडर" में विज्ञापन देखा था; कॉलेज में संस्कृत के अध्यापक की जगह खाली है,—उसने बड़े संकोच से शुरू किया।

प्रिंसिपल देव ने आँखें ऊपर उठाकर कहा—हाँ, लगभग पन्द्रह दिन से विज्ञापन निकल रहा है।

'क्या मुझे आवेदन-पत्र भेजना चाहिए ?'

'अवश्य, कोई कारण नहीं कि आप आवेदन-पत्र न भेजें। आप कालेज के पुराने छात्र हैं, और फिर फ़र्स्ट-क्लास छात्र।'

चन्द्रनाथ को और कुछ कहना न सूझा। कुछ मिनट रुककर वह उठ खड़ा हुआ और उसने चलने की आज्ञा माँगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'अच्छा; मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मिस्टर चन्द्रनाथ, आप आवेदन-पत्र जरूर भेजें।'

प्रिंसिपल देव ऐसे अवसरों पर किसी को वचन नहीं देते, और कम बात करते हैं, यह चन्द्रनाथ जानता है। इसलिये उसे किसी प्रकार का उद्वेग नहीं हुआ। इसके विपरीत उनके अन्तिम वाक्यों से वह आश्वस्त हुआ।

प्रिंसिपल देव के ड्राइंग रूम से निकलकर वह सोचने लगा कि अब क्या करे। प्रिंसिपल देव से मिलने में विशेष समय नहीं लगा—जो काम इतना भारी मालूम पड़ता था वह जैसे कुछ था ही नहीं। क्या उसे बरेली में कुछ और करने को नहीं है?

बरेली में हरिशंकर है, यह चन्द्रनाथ जानता है; किन्तु पहले तो वह उसका डेरा नहीं जानता, दूसरे वह उससे मिलने को उत्सुक भी नहीं है। और उसे याद आया कि बरेली शहर में साधना और अरुणकुमार भी हैं। क्यों न वह उनसे मिलता चले? अरुणकुमार तो प्रिंसिपल देव का भतीजा है, उसकी सिफारिस का काफी मूल्य हो सकता है। लेकिन क्या उसे किसी से सिफ़ारिश करानी ही पड़ेगी? उसके प्रमाणपत्र काफ़ी नहीं हैं क्या? अरुणकुमार से उसका विशेष परिचय भी नहीं है और साधना ने पत्र-व्यवहार तक बन्द कर दिया है। ऐसी उनके घर सहायता के लिए जाना चाहिए?

किन्तु इस विमर्श के लिए प्रिंसिपल देव के बंगले में रुकना ठीक नहीं, यह सोचकर उसने वहाँ के एक नौकर से अरुणकुमार का पता पूछा और फिर वह बंगले के बाहर हो गया।

अरुणकुमार का बँगला वहाँ से लगभग डेढ़ मील था। बिना विशेष सोचे उसने वहाँ के लिए ताँगा ठीक कर लिया।

रास्ते में वह फिर विमर्श करने लगा। अब तक वह अरुणकुमार को भूल गया था और साधना के सम्बन्ध में सोचने लगा था। बरेली में साधना है, यह विचार जैसे मधुर गन्ध की तरह वायुमण्डल में उसे घेर रहा था। साधना यहीं है और चन्द्रनाथ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा है। क्या यह संभव है? क्या सचमुच वह फिर एक बार साधना से भेंट करेगा? क्या वे दोनों फिर एक बार पहले की भाँति विश्रब्ध एकान्त में बात कर सकेंगे?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और क्या यह वही साधना होगी ? तरह-तरह की जिज्ञासा करने वाली, बुद्धि और गर्व से प्रखर, एवं स्नेह से उच्छ्वसित ? उसे देख कर वह क्या कहेगी ? क्या महसूस करेगी ? और जब वह पूछेगा कि मेरे पत्रों का उत्तर क्यों नहीं दिया, तो वह क्या कह सकेगी ?

हाँ साधना ने उससे पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया है। क्या हो गया है उसे ? कैसी विचित्र है वह ? उसे कभी कोई पूर्णतया समझ पाया है ?

उसी समय एक मोटर धूल उड़ाती हुई पास से निकल गई, उसके गुज़र जाने पर चन्द्रनाथ को इसका भान हुआ। और उसने जेब से रूमाल निकाल कर नाक पर रख लिया।

फिर वह सोचने लगा—आखिर मैं साधना के पास क्यों जा रहा हूँ, क्यों जाऊँ ? उसे मेरी अपेक्षा नहीं है, जरूरत नहीं है, फिर मैं ही क्यों उसके पास जाऊँ ? और प्रयाग जाकर एक पत्र लिख दूँ कि मैं बरेली आया था पर कुछ कारणों से मैंने उससे मिलना, उसके घर जाना, उचित नहीं समझा—वहाँ जाने का साहस नहीं हुआ।…नहीं, नहीं; मुझे जाना जरूर चाहिए, पत्र लिखने से कोई लाभ नहीं। वार-वार पत्र लिखना—उत्तर की अपेक्षा के विना ठीक नहीं। ज़रा पूछूँ, क्यों इतनी कठिन विरक्ति हो गई है। फिर अरुणकुमार, से मिलना भी आवश्यक है। जो मेरे लिए कठिन है, वह उसके लिए कितना आसान है !

सहसा ताँगेवाले ने गति धीमी करते हुए पूछा—वाबू जी कौन सी कोठी में जाएँगे ?

कौन-सी कोठी में ? एँ, क्या कोर्ट रोड आ गई। परिस्थितियाँ अधिक सोचने के विरुद्ध थीं। चन्द्रनाथ ने कहा—'पन्द्रहवीं कोठी में जाना है, ज़रा रोक कर पूछ लो।'

उसने पूछताछ कर पन्द्रहवीं कोठी के पास ताँगा खड़ा कर दिया।

चन्द्रनाथ ने देखा कि वँगला काफी अच्छा है। साधना यहीं है, इसके भीतर। उसका दिल धड़कने लगा। ताँगेवाले को पैसे देकर वह अन्दर घुसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पाँच बज रहे थे, अभी कुछ दिन बाकी था। उसने एक चपरासी से पूछा—साहब हैं ?

उत्तर मिला—नहीं।

'कहाँ गये हैं ?'

'किलब, टेनिस खेलने।'

चन्द्रनाथ का हृदय और भी वेग से धड़कने लगा। पूछा—और कोई है? मा जी हैं ?

'कौन मेम साहब, वह साहब के संग गई हैं।'

'कितनी देर हुई गए ? कब तक लौटेंगे ?'

'अभी ही गये हैं। घण्टे-डेढ़-घण्टे से कम में क्या लौटेंगे।'

चन्द्रनाथ क्षण भर किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सा खड़ा रहा। फिर वह बाहर निकला, और स्टेशन को जाते हुए एक ताँगे पर सवार हो गया।

रास्ते में उसने पाया कि उसके हृदय में वास्तविक निराशा का भाव नहीं है शायद- प्रच्छन्न रूप में, साधना से मिलने की अभिलाषा से वह विरत होने लगा था। संभवतः वह अरुणकुमार से मिलने की वास्तविकता से शंकित अथवा भीत भी था।

स्टेशन पर उतरते ही, मुसाफ़िर खाने के पास, उसे यकायक मिल गया हरिशंकर। दोनों की आँखों ने जैसे पूछा—'तुम कहाँ ?' पहले हरिशंकर ने प्रश्न किया।

'प्रिंसिपल देव से मिलने आया था, कॉलेज की जगह के संबंध में—चन्द्रनाथ ने साफ़-साफ़ कह दिया। छिपाना उसके स्वभाव के विरुद्ध था।

'अब किधर जाने का इरादा है ?'

'सोचता हूँ, बदायूँ होता चलूँ।'

'लेकिन बदायूँवाली गाड़ी तो छूट गई।'

'सच ?'

'तो क्या मैं झूठ कहता हूँ। अभी-अभी तो मैं उससे आ रहा हूँ। चलो, मेरे डेरे पर चलो, वहीं इत्मीनान से बातें होंगी। अरुणकुमार से मिले थे ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

'नहीं, भेंट नहीं हुई। सोचता हूँ, अभी सात बजे की पैसेंजर से इलाहाबाद चला जाऊँ। ट्यूशनों का हर्ज होगा।'

'अच्छा, एक दिन भी नहीं रुक सकते ? श्रीमती जी अच्छी तरह हैं न ?'

'ठीक ही हैं। अरुणकुमार से तुम्हारी कुछ बात हुई थी ?'

'पोस्ट के बारे में ? नहीं तो। लेकिन श्रीमती साधना से तो तुम्हारी घनिष्ठता है न, वे जरूर तुम्हारे लिए कोशिश करेंगे। फिर स्वयं प्रिंसिपल देव तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं। मैं भी उनसे बात करूँगा।'

'नहीं, तुम्हें अरुणकुमार से ही मिलना चाहिए। मेरा नमस्कार कहना। कई कारणों से मैं रुक नहीं सकता। पत्नी की तबीयत भी कुछ ठीक नहीं है, अकेली भी हैं।'

'तुम निश्चिन्त रहो, सब ठीक हो जायगा। वास्तव में तुम्हारा रुकना ठीक नहीं है।

:५५:

श्रीप्रसाद कॉलेज की संभावित नौकरी की आशा सुशीला आजकल प्रसन्न थी। बरेली में साधना उसके पास रहेगी, और मायका भी निकट होगा, शहर भी अच्छा है। वहाँ रहने की संभावना से उसे पूर्ण सन्तोष था।

पिछले कुछ दिनों से उसकी भूख बढ़ गई। शर्म के कारण सुशीला ने चन्द्रनाथ से यह कभी नहीं कहा, पर उसने यह लक्ष्य कर लिया है। इच्छा रहने पर भी वह इसका कोई प्रबन्ध नहीं कर पाया है। दूध, फल आदि खरी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दना उसे साध्य नहीं । चन्द्रनाथ ने देखा है, सुशीला सबेरे और साँझ के लिए रोटी या परावठे बनाकर रख लेती है, और उन्ही से क्षुधा-निवृत्ति करती है।

पर सुशीला इसका शिकायत नहीं करती। चुपके से दिन में चार-पाँच वार घी से अछूता अन्न खा लेती है। चन्द्रनाथ इसे देखते हुए भी नहीं देखता। वह लक्ष्य कर रहा है कि सुशीला आजकल यत्न-पूर्वक प्रसन्न रहने की चेष्टा करती है। नौकरी लग जाने पर, वह सोचता है, सुशीला की चिर-संचित खाने-पहनने की अभिलाषा को वह आवश्यक पदार्थों के अतिरेक से भर देगा।

उसे कभी-कभी अपने घरवालों, विशेषत: भाई साहब का, खयाल आता है। पिताजी के मरने से अब तब उन्होंने कभी सुख नाम की वस्तु को नहीं जाना है। जीवन उनके लिए सदैव संघर्ष रहा है। और वस्त्रों के लिए, सामाजिक सम्मान एवं मर्यादा के लिए, वे सदैव प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ते रहे हैं। चन्द्रनाथ से वे सिर्फ छै वर्ष ही बड़े हैं, पर जैसे अभी से बूढ़े हो गये हैं। चन्द्रनाथ ने उन्हें कभी किसी प्रकार का शौक करते नहीं देखा, कभी किसी व्यसन के वश में होते नहीं पाया। दायित्व-शून्यता की मस्ती और यौवन की उच्छृंखलता से वे सदैव अछूत रहे हैं। वे सदा सौम्य, सदा से सीधे और कर्त्तव्यपरायण हैं। उनके जीवन के अहोरात्रों में न कभी उत्सव हुआ है न छुट्टी, वह मानो समाज-रूपी देवता को प्रसन्न रखने के लिए किए हुए तपश्चरणों की एक दीर्घ परम्परा है। समाज के मानों की बेल को वे सदैव अपने पसीने और खून से सींचते रहे हैं, पर आज भी समाज में वे एक सीधे किन्तु साधारण, सच्चरित किन्तु नगण्य, सदस्य हैं। जैसे सच्चाई, सहृदयता, ऋजुता और कर्त्तव्य-निष्ठा का महत्ता से कोई सम्बन्ध नहीं है।

और उन सीधे एवं सहृदय भाई पर चन्द्रनाथ ने भी अपना बोझ डाल रखा है। उनकी समय वृद्धता, उनके जीवन की आपेक्षिक नि:स्पन्दता और नीरसता के लिए स्वयं वह कितनी दूर तक उत्तरदायी है ! अरे उसने भाई और भाभी पर अपनी अभिभावकता का बोझ लादकर उन्हें यौवन के आनन्द और उच्छृंखलता से जिस हद तक वंचित किया है, उसका वह क्या प्रतिकार करेगा ? अपने कमाये हुए धन का कितना भी अंश देकर क्या वह कभी उनसे उऋण हो सकेगा ?

. . .

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

फिर भी वह इस भावना से प्रसन्न हो लेता है कि उसको नौकरी लग पाने पर उसके भाई के होंठों पर हलकी-सी मुस्कराहट, उनके जीवन में थोड़े से रस का सञ्चार होगा। इन दिनों कभी-कभी उसे अपनी मा की याद भी आ जाती है जो जीवन भर अभाव से ग्रस्त रहीं, और मरते दम तक चन्द्रनाथ के उज्ज्वल भविष्य की आशा और कल्पना में लीन रहीं।

और कभी-कभी वह सोचता है कि यदि बरेली कॉलेज में जगह न मिली तो? तब सुशीला क्या महसूस करेगी, भाई साहब के हृदय पर क्या गुजरेगी और स्वयं वह क्या करेगा? किन्तु इसकी संभावना कम है। प्रिंसिपल देव उसे अच्छी तरह जानते हैं; फिर वे साहित्य-प्रेमी हैं। साधना की प्रेरणा से अरुणकुमार भी कुछ-न-कुछ अवश्य करेगा। डिप्टी कलेक्टर हो जाने के बाद उसकी सिफारिश का महत्त्व बढ़ जाना चाहिए, वैसे भी वह प्रिंसिपल देव का सगा भतीजा है।

●

:५६:

कई दिन से अनुसंधान आदि के काम में जी न लगने के कारण चन्द्रनाथ आज बहुत दिनों बाद 'प्रतीक्षा' को लेकर बैठ गया है। यकायक अनुवाद-कार्य हाथ में आ जाने से वह उसे पूरा नहीं कर सका था, यद्यपि अब उसका लगभग एक सर्ग ही बाकी है। जब तक बरेली कालेज से कोई निश्चित उत्तर नहीं मिलता, तब तक, मनोवृत्ति उखड़ी-सी रहने पर, क्यों न वह इस खण्ड-काव्य को ही पूरा कर डाले?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किन्तु चित्त की अस्थिर दशा में काव्य-प्रणयन नहीं हो सकता, यह अनुक्षण स्पष्ट होता जा रहा है। पृथ्वी पर पैर ठीक से टिके हुए होने पर ही मनुष्य की कल्पना भावाकाश में उड़ानें भर सकती है। 'प्रतीक्षा' को लेकर बैठते ही उसे बरेली तथा उससे सम्बद्ध अनेक चीजों का ध्यान आ जाता है।

हरिशंकर ने अवश्य ही उसके बरेली पहुँचने की खबर अरुणकुमार…तथा साधना को दी होगी। इस खबर को वहाँ कैसे लिया गया? अरुणकुमार ने इस सम्बन्ध में क्या किया—उसे कुछ करने की प्रेरणा भी मिली या नहीं? क्या यह उचित न था कि उसे इस विषय में कुछ सूचना दी जाती, सफलता की कितनी संभावना है, इसका संकेत किया जाता? हरिशंकर ने भी सोई खबर नहीं दी।

और साधना? उसने उसके बिना मिले चले आने को कैसे ग्रहण किया? क्या उसे किसी प्रकार की कसक, कोई वेदना नहीं हुई होगी? किन्तु उसने इसका उलाहना करना भी उचित नहीं समझा, मानो कुछ महसूस ही नहीं किया।

क्या इतनी विरक्ति संभव है? क्या मानव-हृदय में इतना परिवर्तन, ऐसा विपर्यय हो सकता है? या यह माना जाय कि पहले का वह स्नेह, वह मधुर भाव-बन्धन, मिथ्या था, छलावा था? क्या संसार में इतनी प्रवंचना हो सकती है? अरे क्या आँखें यथार्थ को उलटकर दिखलाती हैं, और क्या बुद्धि वास्तविकता पर पर्दा डाला करती है?

जैसे वह हजार मौन इंगितों से कह रही है—मुझे तुम्हारी बिलकुल अपेक्षा नहीं है, मैं अपने में पूर्ण हूँ, सन्तुष्ट हूँ, सुखी हूँ। इसमें आश्चर्य क्या है! वह अपने पति के साथ है, और…और उस पति के पास समृद्धि है, शक्ति और हवदवा भी है।

साधना सुखी है यह अच्छा ही तो है, क्या वह यही नहीं चाहता था? पर उसके अन्तर से जैसे ध्वनि निकलती है—'नहीं।' साधना को इतने में सन्तुष्ट होने का कोई अधिकार नहीं है, वह इतने से सुखी कैसे हो सकती है!

साधना से उसे शिकायत है, पर क्यों, इसका वह कोई उत्तर नहीं पा रहा है। इस लाखों नर-नारियों से भरे जगत् में क्यों वह एक साधना के प्रति ही असन्तुष्ट है, क्यों उसी का उलाहना कर रहा है? कोई भी तो समझ में आवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

योग्य उत्तर नहीं दीखता। साधना का केवल यही अपराध है न कि उसने उसे प्रेम किया था—स्नेह का आश्वासन दिया था ? पर यह तो कोई बुरी बात नहीं। वह कम-से-कम उन सब की अपेक्षा तो अच्छी ही है जिन्होंने उसे कभी प्यार नहीं किया। फिर उसके प्रति यह रोष और असन्तोष क्यों ?

साधना को उसके विना रिक्तता, अभाव और अपूर्णता अनुभव करनी चाहिये, यह किस नैतिक नियम का आवश्यक परिणाम है ? व्यक्ति-विशेष को प्यार करने के लिये कोई वाध्य नहीं है। न ब्रह्माण्ड की दृष्टि में और न समाज की दृष्टि में ही यह आवश्यक है कि साधना उसे प्यार करे। फिर यह अन्तर्दाह और उपालम्भ क्यों ?

चन्द्रनाथ तर्क करता है पर देखता है कि हृदय को मनाने के लिये यह यथेष्ट नहीं है। वार-वार चेष्टा करने पर भी उसका 'प्रतीक्षा' लिखने में मन नहीं लगता। जो वस्तु विशेष रूप से साधना के लिये ही थी, जिसका आरम्भ समर्पण-क्रिया का ही एक भाग था, साधना की उदासीनता के वातावरण में उसे पूर्ण और पुष्ट करके वह अब क्या करेगा ! और साहित्य-सृष्टि का ही क्या लाभ है ! हमारे जिन व्यापारों पर किसी की स्नेह-तरल दृष्टि नहीं पड़ती, हमारे जिस अंश को कोई प्यार से नहीं देखता, अपना कहकर स्पर्श नहीं करता, उसकी सार्थकता ही क्या है ? यश और प्रशंसा स्पृहणीय हो सकते हैं, पर वे कभी स्नेह का स्थान नहीं ले सकते। जो संसार मेरे प्राणों की शून्यता, मेरे एकाकीपन के दाह को, नहीं मिठा सकता, उसकी प्रशंसा और सम्मान का मैं क्या करूँ ? जिन रक्त-विन्दुओं से कला की सृष्टि होती है उनका मूल्य केवल प्यार से चुकाया जा सकता है, आदर और कीर्ति से नहीं। कलाकार की इस समस्या को संसार कभी नहीं समझ पाया है।

चन्द्रनाथ को लगता है जैसे उसका कलात्मक व्यक्तित्व, स्नेहसिंचन के अभाव में, दिन-प्रतिदिन सूखता चला जा रहा है। अपने इस अपरिमित दैन्य को लेकर वह किसके पास जाय ? जो नारीत्व ममता और स्नेह का अधिष्ठान है वह उसे साधना और सुशीला के व्यक्तित्व में प्राप्त हुआ था। किन्तु दोनों ही जगह उसे निराश होना पड़ा, दोनों के पास से प्यासा लौटना पड़ा। अपनी इस अतृप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पिपासा को लेकर वह अब कहाँ जाय ? नारी के स्नेह से वंचित रह कर काव्य-साहित्य का उद्यान कब तक हरा रह सकेगा ?

:५७:

अनिश्चयात्मक भविष्य में चन्द्रनाथ को एक ही चीज निश्चित दीख रही है; अर्थात् सुशीला की सन्तति। धीमी किन्तु असंदिग्ध गति से वह उस मार्मिक घड़ी की ओर बढ़ रही है। इस सम्भावना की परिणति का वह कैसे सामना करेगा ?

यह नहीं कि उसे बालक अच्छे नहीं लगते। निसर्गत: उसे उनसे प्रेम है। वे उसे मोहक लगते हैं, स्वर्गीय लगते हैं। बालकों के प्रफुल्ल मुख में ही मानवता के स्वच्छ, निरवसाद रूप का प्रत्यक्ष होता है। पर न जाने क्यों उसे सुशीला के बालक की कल्पना असह्य है। सुशीला के शिशु को लेकर, पिता कहलाकर, वह कहाँ रहेगा ? जो स्वयं अपने भरण-पोषण के लिये दूसरों का आश्रित है, उसे बच्चे पैदा करने का क्या अधिकार है ? विधाता की इस अकरुण देन, इस अवांछित कृपा के लिये, वह क्या करे ?

आजकल सुशीला के चेहरे का रंग कुछ बदल गया है और उसे मिट्टी सूँघना और खाना अच्छा लगता है। उसके इन काव्यवर्णित लक्षणों को देखकर चन्द्रनाथ के हृदय में क्षण भर को विनोदपूर्ण गुदगुदी होती है, पर दूसरे ही क्षण वह चिन्ता और आशंका में परिणत हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

फिर भी उसे सुशीला से सहानुभूति न हो, ऐसा नहीं है। वस्तुतः वह कुछ दिनों से यत्नपूर्वक उसके पास आने की कोशिश कर रहा है। परिस्थितियाँ भी इस दिशा में सहायता दे रही हैं।

पास या अभिन्न होने का कोई एक अर्थ नहीं है। जीवित रहने के जितने ढंग हैं, जितनी भूमिकायें हैं, उतने ही प्रकार की भिन्नताएँ और तादात्म्य भी हैं। अर्थ और सन्तान-विषयक चिन्ताएँ प्रायः ऐसी भूमिका है जहाँ पति-पत्नी अनिवार्य रूप से अभिन्न बन जाते हैं। संसार के अधिकांश दम्पति भिन्नता महसूस नहीं करते, इसका कारण यही है कि उन में से पिच्चानवे प्रतिशत की चिन्ताएँ धन और सन्तति तक ही सीमित रहती हैं। नौकरी-विषयक दुश्चिन्ता में सुशीला चन्द्रनाथ की अनवरत सहचरी रही थी। बरेली जाने के पहले हिसाब लगा कर चन्द्रनाथ ने परिस्थितियों की अनुकूलता का जो सुनहला चित्र खींचा था वह सुशीला की चेतना पर ज्यों-का-त्यों अंकित हो गया था। बरेली से लौट कर भी उसने उसमें परिवर्तन होने का कोई निश्चित हेतु उपस्थित नहीं किया था। इसलिये जब कभी वह हताश होने लगता तो सुशीला अनुकूल परिस्थितियों का प्रभावपूर्ण विवरण देकर उसे उद्वेग-शून्य कर देती। सुशीला को सबसे अधिक भरोसा साधना के स्नेह, बुद्धि और तत्परता का था। यदि साधना का मिस्टर अरुणकुमार पर कुछ भी प्रभाव है तो वह चन्द्रनाथ की नियुक्ति करा कर छोड़ेगी। वह सुशील की अत्यंत अन्तरंग सखी है, फिर चन्द्रनाथ ने उसके लिये इतना किया भी तो है—पढ़ाया है, शादी तय कराई है, इत्यादि।

अपने मनोनुकूल तर्क करने के कारण सुशीला चन्द्रनाथ को प्रिय लगती।

किंतु केवल तर्क से कभी हृदय का समाधान नहीं होता। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते त्यों-त्यों चन्द्रनाथ को ऐसा लगता कि श्रीप्रसाद कॉलेज में जगह मिलने की संभावना दूर होती जा रही है। ऐसी प्रतीति के क्षणों में वह हठात् उन वस्तुस्थितियों पर ध्यान जमाने की कोशिश करता जो उसकी सफलता के पक्ष में थीं—जैसे प्रिंसिपल देव का प्रथित साहित्य-प्रेम और उनके द्वारा उसका पुस्तक की प्रस्तावना में लिखे गये प्रशंसात्मक वाक्य, उनका बदायूँ का भाषण और उसकी ग़रीबी से उनका स्पष्ट परिचय—फिर भी वह आश्वस्त न हो पाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

न उसे अरुणकुमार के हस्तक्षेप की संभावना से ही विशेष सन्तोष होता। और वह बार-बार सोचता, कहीं हरिशंकर की रिपोर्ट का अरुणकुमार पर उलटा असर तो नहीं पड़ा। आखिर इस सार्वत्रिक मौन का क्या अर्थ है!

एक दिन चन्द्रनाथ को एक चिकने बादामी काग़ज से मढ़ा हुआ पैकेट मिला, जिसके बाईं ओर हरिशंकर का नाम लिखा था। चन्द्रनाथ ने बड़ी उत्सुकता के साथ उसे खोल डाला उसमें एक सुन्दर जिल्द बँधी किताब थी—अँधेरी रात। यह हरिशंकर की कहानियों का संग्रह था। उपशीर्षक था,—"वास्तविक जीवन की कहानियाँ।"

चन्द्रनाथ ने देखा कि हरिशंकर की पुस्तक बड़ी सजधज से निकली है, उसका गेट-अप उसकी अपनी पुस्तक से कहीं अच्छा है। वह एक प्रतिष्ठित लेखक की कृति जैसी लगती है। कवर-पृष्ठ के एक ओर कुछ सम्मानित पत्रों और लेखकों की सम्मतियाँ थीं। "समालोचक" की सम्मति भी छपी थी, उसमें काफ़ी प्रशंसा थी।

उसी दिन उसने बैठकर सब कहानियाँ पढ़ डाली। वे रोचक थीं, उत्तेजक थीं, कुछ-कुछ हरिशकर की उन बातों के समान जो उसने एक दिन वीरेन्द्र के कमरे में की थीं।

वास्तविक जीवन का अर्थ है छल, कपट, दुराव और अमर्यादित वासना का जीवन। वास्तविक जीवन में शिष्टता के पीछे विद्वेष और आदर्शवाद के पीछे प्रवंचन छिपा रहता है। वहाँ विश्वासघात होता है, और स्वार्थसाधन... और....।

संग्रह में कुल ग्यारह कहनियाँ थीं। उनमें से दो-तीन चन्द्रनाथ को काफी पसन्द आई और वह उनके लिए हरिशंकर को बधाई देने की सोचने लगा।

हरिशंकर किसी सिद्धांत का अनुयायी हो—भूमिका में उसने लिखा था कि यद्यपि वह मार्क्स का अनुयायी नहीं है, पर वह कट्टर वस्तुवादी है; वह मार्क्स की अपेक्षा फ्रायड को ज़्यादा बड़ा विचारक मानता है—किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उसमें प्रभावशाली कहानीकार बनने की क्षमता है। चन्द्रनाथ उसे अवश्य प्रशंसात्मक पत्र लिखेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

लेकिन स्वयं हरिशंकर ने, उसे पत्र नहीं डाला और नियुक्ति के सम्बन्ध में भी कोई खबर नहीं दी। इसका क्या कारण है ?

सौभाग्य या दुर्भाग्यवश चन्द्रनाथ को बहुत दिन तक अनिश्चय में नहीं रहना पड़ा। तीन-चार दिन बाद उसकी अल्फ्रेड पार्क में वीरेन्द्र और शिवानन्द से भेंट हुई। वीरेन्द्र ने अकृत्रिम समवेदना से कहा—मिस्टर चन्द्रनाथ, हमें सख्त अफसोस है कि कालेज में आपको जगह नहीं मिली।

'क्या''''आ''''? नियुक्ति हो चुकी न ?'

शिवानन्द—हाँ, एक सेकण्ड डिवीज़न एम० ए० नियुक्त हुए हैं, लेकिन वे एक बड़े आदमी के लड़के हैं।

चन्द्रनाथ—बड़े आदमी के ?

शिवानन्द—मिस्टर अरुणकुमार के दोस्त एक सीनियर मैजिस्ट्रेट के।··· यह तो होता ही है, मैं पहले ही जानता था।

चन्द्रनाथ कोई उत्तर न दे सका।

वह कुछ देर वीरेन्द्र और शिवानन्द के साथ घूमता रहा। उनके चले जाने के बाद, मस्तिष्क की असाधारण आकुल स्थिति में, चुपचाप एक एकान्त बेञ्च पर बैठ गया।

वह रह-रह कर प्रिंसिपल देव के बारे में सोच रहा था। उनके हाथों इस तरह के अन्याय का शिकार होने की कल्पना भी कभी उसके मस्तिष्क में नहीं आई थी।

उसके मानस-चक्षुओं के सामने बरेली के कालेज-जीवन का चित्र घूमने लगा। उसे याद आया वह दिन जब प्रिंसिसल देव ने अपने नाम से सम्बद्ध हॉस्टल में दाखिल करने के लिए उसका "इंटरव्यू" किया था। उस दिन वह उनकी मधुरता और शिष्टता से कितना प्रभावित हुआ था ! और इसके बाद उसे याद आया प्रिंसिपल देव का पहला भाषण, जिसमें उन्होंने नवागत विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें विद्यार्थी जीवन की उच्चता और महत्ता का सन्देश दिया था। भाषण अंग्रेजी में हुआ था। इसके काफी दिनों बाद उसने प्रिंसिपल देव की दूसरी वक्तृता सुनी, जिसका विषय था कि "साहित्य और संस्कृति।" प्रिंसिपल देव बड़ी ललित और मधुर अंग्रेजी बोलते थे; वे असा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

धारण वक्ता भी थे। फिर साहित्य उनका अपना विषय था, उनके हृदय के विशेष निकट। उस वक्तृता में उन्होंने बतलाया कि संस्कृत व्यक्तित्व किसे कहना चाहिए, और काव्य-साहित्य का सेवन उस व्यक्तित्व के निर्माण में क्या योग देता है। प्रिंसिपल देव अंग्रेजी के धुरन्धर विद्वान् थे और शेक्सपियर के विशिष्ट प्रेमी; वे संस्कृत के भी अच्छे ज्ञाता थे। अपने भाषण में वे पद-पद पर शेक्सपियर और कालिदास और भवभूति की रसमय उक्तियाँ उद्धृत कर रहे थे और चन्द्रनाथ, जो विश्व के महाकवियों से नया-नया परिचय प्राप्त कर रहा था, मंत्र-मुग्ध-सा होकर सुन रहा था। प्रिंसिपल देव बोल रहे थे सत्य के सम्बन्ध में, शिव और सुन्दर के सम्बन्ध में; वे बार-बार गौरव दे रहे थे सहृदयता पर, और सहज-सौहार्द पर। इस सन्दर्भ में वे एक बार योग दर्शन का एक सूत्र भी बोल गये थे। चन्द्रनाथ के लिए वह सूत्र एक नई वस्तु थी, एक नवीन प्राप्ति! और प्रिंसिपल देव के भाषण की समस्त पदावली एक अभूतपूर्व अनुभव थी। उनके भाषण से लौटने पर वह अपन को एक नये व्यक्ति-जैसा अनुभव करने लगा था, एक नये मन और बुद्धि वाला, नई प्रतीतियों और नये-निराले आवेगों से आन्दोलित। उसे लगा था मानो काव्य-साहित्य को, स्वयं मानव व्यक्तित्व को समझने और आँकने के लिए वह एकदम नई दृष्टि, नई चेतना ही पा गया हो।

उसके बाद उसे प्रिंसिपल देव के भाषण सुनने के अवसर बहुत कम मिले। बात यह थी कि वे अक्सर साहित्य और कला-सम्बन्धी संस्थाओं का उद्घाटन और उन्हीं से सम्बद्ध जल्सों और उत्सवों का सभापतित्व करते हुए बरेली से बाहर डोलते दिखाई पड़ते। प्रायः चन्द्रनाथ को उनके दूसरे शहरों में पहुँचने की सूचना अखबारों से मिलती, और वह बड़ी उत्सुकता और मनोयोग से उनके भाषणों के छपे हुए सारांश पढ़ता। उन संक्षिप्त रिपोर्टों की पदावली उसे अक्सर प्रिंसिपल देव के कालेज वाले सुन्दर अभिभाषण की याद दिला देती जिससे उसका रोम-रोम पुलकित हो जाता।

प्रिंसिपल देव प्रायः अंग्रेजी में ही बोलते, इसीलिए, उनकी बदायूँ वाली स्पीच के कम पसन्द आने पर, चन्द्रनाथ ने समझा था कि शायद उसका एक कारण उनका कम परिचित माध्यम में बोलने का प्रयत्न भी था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और आज''''नियुक्त के बारे में प्रिंसिपल देव के बारे में प्रिंसिपल देव के निर्णय को सुनकर, वह सहसा हतबुद्धि-सा हो रहा था। वह फिर प्रिंसिपल देव के बारे में सोच रहा था, लेकिन कितने भिन्न ढंग से ! आज फिर, रह-रह कर, उसके कानों में प्रिंसिपल देव के अनगिनत भाषणों की सुनी और पढ़ी पदावलियाँ गूँज रही थीं''''पर अब वे सब सहसा नितान्त भिन्न अर्थ ध्वनित करती प्रतीत होने लगी थीं···

ऐसा क्यों हुआ, कैसे हो सका, कैसे प्रिंसिपल देव ऐसा कुटिल व्यवहार कर सके ?

उसके सामने आज एक नई समस्या उठ खड़ी हो रही थी, एक भयंकर प्रश्न ! क्या कला के, साहित्य के अन्तरंग कक्ष में पैठ चुकने पर भी मनुष्य इस भाँति कुटिल, अन्यायी और सहृदयता-शून्य बना रह सकता है, ऐसा भी मुमकिन है ?

और यदि यह मुमकिन है तो···तो क्या उसका यह विचार मात्र छलना है कि कला और साहित्य द्वारा मानव समाज और सभ्यता का नवनिर्माण किया सकता है ?

इतना साहित्य पढ़कर, इतनी कला की साधना करके यदि ऐसा चरित्र रहता है तो···तो इस मानवता के लिए कहाँ आशा है, क्या आशा···है ! शायद मानव-जाति इसी तरह घृणा-द्वेष की लपटों में जलने और नष्ट होने के लिए बनी है···

प्रिंसिपल देव··और सिर्फ वे ही क्यों, अरुणकुमार और कीर्त्तिकान्त···और वह कवि-सम्मेलन··और हरिशंकर, और···सभी तो विश्व के उदात्त विचारकों और महापुरुषों की भावनाओं और विचार-सरणियों से परिचित रह चुके हैं।······

वह अभी तक मुख्यत: व्यक्तियों के ही बारे में सोचने का अभ्यस्त था। देश के बुद्धिजीवियों की जिस बीमारी, नैतिक रीढ़हीनता और हृदयहीन अवसर-वादिता के, आकस्मिक साक्षात्कार से आज वह चकित और क्षुब्ध हो रहा था उसके निदान और उपचार की यथार्थ चेतना से वह अभी बहुत दूर था। तेईसवें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

और चौबीसवें वर्षों के संधिस्थल पर खड़ा हुआ यह भावुक और आदर्शवादी युवक यथार्थ के पहले गहरे आघात से, पहली बार भँवर में पड़नेवाली नाव के मल्लाहों की भाँति छटपटा रहा था।

इतने बड़े देश में इतनी बुद्धि और प्रतिभा लेकर भी क्यों उसे नौकरी मिलना कठिन हो रहा है, यह समस्या उस समय स्पष्ट रूप में उसकी बुद्धि के सामने न आई।

•

५८

कालेज में जगह न मिलने की बात वह सुशीला से न कह सका। संसार की कृपा से जिस आशा-विघात की वेदना का वह बार-बार अनुभव कर चुका है, उसे सुशीला में जगाने का अकरुण साहस उसमें नहीं था।

सुशीला को, और दूसरे घरवालों को भी, उसने आश्वासन दिया था कि वह शीघ्र ही आत्म-निर्भर, अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य, बन सकेगा—वह घर पर भार-रूप नहीं रहेगा, और सुशीला परमुखापेक्षी नहीं रहेगी। उस आश्वासन को वह कैसे वापिस ले? वह इतनी आशाएँ किस बल पर बाँध सका था? मनुष्य अपने और अपने प्रयत्नों के मूल्यांकन में कितनी भूलें करता है!

मनुष्य को आशा नहीं करनी चाहिए, क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि वह जीवन में कोई लक्ष्य लेकर न चले? जो उद्देश्य लेकर चलता है, लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है, वह आशा कैसे न करे? भविष्य की ओर कैसे न ताके?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

निष्काम कर्म क्या निरुद्देश्य प्रवृत्ति का ही दूसरा नाम है ? या कि सफलता में जिसे विश्वास नहीं है, उसे निःस्पन्द या अकर्मण्य बन जाना चाहिए।

साधना फल-सापेक्ष होती है; मनुष्य का हिसाब वहाँ ठीक बैठता है जहाँ वास्तविकता अपने नियम में स्थिर रहती है। यदि दुनियाँ बे-हिसाब चलने लगे—पानी ऊपर को बहने लगे और समय भावी से अतीत की ओर—तो आशा और प्रयत्न दोनों के लिए कहाँ जगह रह जायगी ?

किन्तु मनुष्य तो स्वतंत्र है—चन्द्रनाथ यह नहीं जानता, सो नहीं। वह इस स्वतन्त्रता का हामी है, समर्थक, वह यंत्रवादी नहीं है। किन्तु क्या स्वतन्त्रता का अर्थ अराजकता है ? क्या अन्ध गति ही नियमित होती है ? क्या सत्य, सौंदर्य और न्याय की खोज में कोई नियम, कोई स्थिरता नहीं है ? मनुष्य यान्त्रिक गति से संचालित नहीं होता, क्या इसीलिए वह दुर्ज्ञेय बना रहेगा और उस पर भरोसा न किया जा सकेगा ? क्या इसलिए साधना जब चाहे उसके प्रेम को ठुकरा सकती है, हरिशंकर उससे उदासीन बन सकता है, और मिस्टर देव उसके दावे की उपेक्षा कर सकते हैं ?

सुशीला को उसने अपनी इस नई असफलता की खबर नहीं दी, इसका एक कारण यह भी था कि वह आजकल स्वस्थ नहीं रहती थी। पार्क से लौटने पर उसने पाया कि सुशीला उसके कमरे में पलंग पर लेटी कराह रही है। चन्द्रनाथ ने अप्रत्याशित रूप से मधुर स्वर में पूछा—क्या हाल है तुम्हारा ?

'कुछ नहीं ठीक,' कहकर वह दर्द को दबाने की चेष्टा करने लगी।

तकलीफ के सम्बन्ध में दुनियाँ को दम्भ रुचता है, इससे उसको समवेदना जगती है। सुशीला का अस्वीकार व्यर्थ नहीं हुआ। असफलता ने चन्द्रनाथ को और भी मृदुल बना दिया था।

उसे किसी पर रोष नहीं था। वह धीरे-धीरे 'सब-कुछ' से सन्तुष्ट होना सीख रहा था। रुचि का यह अपरिग्रह प्रयत्नों से निवृत्त होने की पूर्वावस्था है। उसे हम मुक्ति की तैयारी भी कह सकते हैं और जड़ता में लीन होने की भी। उसने अपने भाई को सूचना अवश्य दे दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वह चुपचाप सुशीला के शिशु की प्रतीक्षा कर रहा था, मानो वह उसके जीवन का एक प्रमुख हर्ष, एक महान् उत्सव होगा ! कभी-कभी वह इस संबन्ध में पत्नी से हँसी भी कर लेता था।

आजकल उसे एक धनिक के पुत्र की नई ट्यूशन मिल गई थी। रघुराज दो बार मैट्रिक में फेल हो चुका था। उसने चन्द्रनाथ को आशा दी थी कि उसके उत्तीर्ण हो जाने पर वह फीस के अतिरिक्त कुछ और भी पा सकेगा। चन्द्रनाथ ने पाया कि यकायक वह उसे पढ़ाने में अत्यधिक रुचि लेने लगा है—एक बहुत ही कर्त्तव्य-परायण शिक्षक की भाँति। शायद वह रघुराज को पास कराके इनाम का अधिकारी बनना चाहता था।

वह आजकल बहुत व्यस्त रहता, ट्यूशन को काफी वक्त देता और खाली समय में कभी-कभी सुशीला को ब्रज-काव्य पढ़ाने के अतिरिक्त, उसकी गृहकार्य में सहायता तथा मनोविनोद करने का उपाय भी करता। वह सुशीला का निकट से निरीक्षण भी करता था।

बरेली से लौटे चन्द्रनाथ को तीन सप्ताह बीत गए।

सुशीला को संभवतः आभास हो गया था कि कालेज में चन्द्रनाथ को जगह नहीं मिली, पर वह उसका कभी ज़िक्र नहीं करती। इस सम्बन्ध में उसकी उदासीनता चन्द्रनाथ को प्रिय थी।

सुशीला के प्रति उसकी भावनाएँ आजकल कुछ मिश्रित-सी थीं। वह प्रयत्नपूर्वक उसके प्रति कोमल भाव धारण किए रहता, अतः सुशीला भी उसमें अधिक विश्वास प्रकट करती। छुट्टी के समय वह प्रायः उसी के पास मौजूद रहना चाहती।

किन्तु संतति की सम्भावना से वह मन-ही-मन कुण्ठित था, और इसलिए सुशीला के बढ़े हुए अंग दीखना उसे रुचिकर न लगता। सुशीला कभी-कभी पास लेटी हुई उसका हाथ वहाँ पहुँचा देती और कहती—देखो, कुछ चल-सा रहा है।

हाथ रखकर चन्द्रनाथ उस गति का आभास लेता, फिर तुरन्त ही हटा लेता। सृष्टि की यह प्रक्रिया उसे जितनी ही रहस्यमय लगती उतनी ही असुन्दर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और जुगुप्सा-जनक भी। ऐसे क्षणों में उसका सुशीला के प्रति जो मनोभाव हो जाता वह स्नेह और दया दोनों से अधिक जटिल होता।

अपना सान्निध्य खोजती हुई सुशीला और अपने प्रति उदासीन साधना को एक साथ लक्ष्य कर वह कभी-कभी सोचता—नारी कितनी स्वार्थी होती है, और कितनी प्रवंचनशील।······वह कभी किसी बड़ी चीज़ की उत्पत्ति में सहायता नहीं दे सकती, वह सिर्फ पशुओं को ही उत्पन्न कर सकती है।······अवश्य ही वे पशु सुन्दर होते हैं, और मोहक, सुशीला भी वैसा ही कुछ उत्पन्न करेगी।······

नारी मनुष्य के दो ही रूपों में अभिरुचि ले सकती है, शिशु-रूप में और प्रणयी-रूप में, उसके और किसी रूप में, कवि में, दार्शनिक में, वैज्ञानिक में उसे विशेष रुचि नहीं होती।

कभी-कभी रात को जब वह काम करता होता तो सुशीला उसके निकट कहीं आकर बैठ जाती, अथवा पास पड़ी हुई खाट पर लेट जाती। वह विशुद्ध कर्त्तव्य-भावना से प्रेरित होकर शीघ्र ही अपना काम समाप्त कर देता और सुशीला के पास पहुँच जाता। प्रणय की उष्ण प्रेरणा के अभाव में वह विशुद्ध अनुकम्पा-वृत्ति के वशवर्त्ती हो सुशीला के अंगों को सहलाता हुआ नारी के विषम भाग्य की आलोचना करता।

❀ ❀ ❀

एक दिन शाम को सुशीला की हालत एकाएक खराब हो गई। विश्वविद्यालय से लौटकर चन्द्रनाथ बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था कि सहसा उसे पत्नी की दर्द-व्यञ्जक कण्ठ-ध्वनि सुनाई दी।

वह शीघ्र उठकर सुशीला के कमरे में पहुँचा। वह इस समय परली दीवार से टिकी कराह रही थी। कष्ट से उसका मुँह खुला था, माथा और कपोल सिकुड़ रहे थे और वह इधर-उधर कमर पर हाथ रखे सी-सी करती ऐंड़ रही थी। चन्द्रनाथ ने जाकर उसे पकड़ लिया और सहारा देकर खाट पर लिटा दिया। फिर वह उसका शरीर सहलाने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किन्तु सुशीला को चैन नहीं था। वह दर्द से विछल रही थी। उसकी आँखों में बरबस आँसू आ रहे थे, और वह दाँतों से अधरोष्ठ दबाकर अपने को चीखने से रोक रही थी।

उसकी इस कातर दशा ने चन्द्रनाथ को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया। उसकी आँखों में समवेदना के आँसू आ गए। उसे अपने आवेग को दबाना कठिन हो गया।

मनुष्य की सृष्टि की क्रिया कितनी रहस्यमय, कठिन और और हृदयविदारक है! सुशीला की दशा देख चन्द्रनाथ रह-रह काँप रहा था। क्यों नहीं कोई उसके शिशु को बरबस उसकी कोख से खींच लेता!

दर्द कुछ शान्त होने पर सुशीला ने चन्द्रनाथ से कहा—आप कहते थे न, अब मुझे अस्पताल में पहुँचा दीजिए।

चन्द्रनाथ ने कहा—अच्छा, तुम्हें विश्वास है कि दो-तीन दिन के भीतर""

सुशीला—दो-तीन दिन तो बहुत होते हैं, आज ही न जाने क्या होगा।

यह कह कर वह फिर अपनी कोख दबा कर सीत्कार करने लगी।

चन्द्रनाथ ने तुरंत ताँगा लाकर उसे कमला नेहरू अस्पताल पहुँचा दिया।

रात को उसके सामने रह-रह कर सुशीला की दर्द से व्याकुल मूर्ति घूमने लगी। इससे पहले भी सुशीला के एक-दो बार दर्द उठा था, पर इस भयंकर रूप में नहीं। वह अब तक यह अनुमान नहीं कर सका था कि प्रसव की वेदना इतनी निर्मम और निष्ठुर होती है। सुशीला इतने दिनों से जिस भयंकर पीड़ा को उठाने का आयोजन कर रही थी उसका उसे साथ रहते हुए भी कितना कम आभास था! और आज इन महाकष्ट के क्षणों में वह सुशीला के पास भी नहीं रह सकेगा—न जाने अस्पताल में आज उस पर क्या बीतेगी!

सारी रात चन्द्रनाथ ने विचित्र आशंका और उत्कण्ठा में काटी। सवेरे ही समाचार लेने वह अस्पताल पहुँचा। डाक्टरनी ने कहा—उन्हें तकलीफ बहुत है, बार-बार दर्द उठता है, पर प्रसव नहीं हो रहा है।

'तब क्या होगा डाक्टरनी साहिबा?' उसने अधैर्य से पूछा।

'यही तो मैं भी सोच रही हूँ। लाचार होकर कहीं ऑपरेशन करना पड़े।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ऑपरेशन के उल्लेख से चन्द्रनाथ के रोएँ काँप उठे। बोला—पर उसमें तो जान का खतरा है, डाक्टरनी जी।

'आप घबराएँ नहीं, अभी देखिए क्या होता है,' कह कर डाक्टरनी चलने लगी।

तीव्र इच्छा होते हुए भी चन्द्रनाथ उस समय सुशीला से मिलने का अवसर न पा सका और असह्य दुश्चिन्ता का भार लिए घर लौट आया।

आज कई वर्षों के बाद उसके हृदय में यह भावना हो रही थी कि वह सुशीला की मंगल-कामना के लिए किसी से प्रार्थना करे। पर किससे? वह अपनी मनोदशा का अन्तःप्रेक्षण करके आप ही अपने पर हँसने लगा।

उस रात तक भी सुशीला को प्रसव नहीं हुआ, और चन्द्रनाथ घोर आशंका और सन्देह के साथ सोने का उपक्रम करने लगा। देखें कल सुशीला पर क्या गुजरती है। और कभी-कभी वह सोचता—सुशीला के क्या और कैसा शिशु होगा?

दूसरे दिन तड़के ही अस्पताल के एक आदमी ने आकर दरवाजा खट-खटाया। चन्द्रनाथ ने पहुँचते ही उससे पूछा—बच्चा हुआ? या ऑपिरेशन करना पड़ेगा?

उस आदमी ने संक्षेप में बतलाया कि ऑपिरेशन की ज़रूरत नहीं पड़ी, पर प्रसव के बाद······सुशीला देवी की मृत्यु हो गई।

शिशु अभी तक अच्छी तरह था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अगले दिन लगभग शाम के पाँच बजे चौक से आनेवाली चौड़ी सड़क पर चन्द्रनाथ तेजी से उत्तर दिशा में चला जा रहा था।

आज सबेरे से वह चलता ही रहा था—पत्नी का दाह-संस्कार करने उसे त्रिवेणी जाना पड़ा था—फिर भी उसकी गति-वेग देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह थका हुआ हैं।

नये कटरे से निकल कर पहले उसने सोचा कि वह सामने की सँकरी सड़क पार करके प्रयाग स्टेशन की ओर जाय, लेकिन उसके पैर स्वतः बाँई ओर को घूम गए, और वह "चैथम लाइन्स" की ओर चल पड़ा। शायद उसकी अन्तश्चेतना में यह विचार था कि वह वहाँ रहने वाले एक नये परिचित मित्र से भेंट करे।

थोड़ी दूर चलकर कोलतार की सड़क खत्म हो गई और अपेक्षाकृत बीहड़ वातावरण शुरू हो गया। चन्द्रनाथ के बाँई ओर थोड़ी-सी हरियाली और कुछ इमारतें थीं तथा दाँई ओर ऊँची-नीची, चिकनी, शाद्वल-शून्य भूमि। इस ओर वह विचित्र तल्लीनता से देख रहा था।

कुछ देर बाद फाफामऊ रोड का चौराहा आया। चन्द्रनाथ क्षणभर को ठिठका कि किधर जाय, फिर अनायास ही बांई ओर मुड़ गया। अब वह चैथमलाइन से दूर, प्रयाग स्टेशन की विरुद्ध दिशा में, पश्चिम की तरफ जा रहा था।

चन्द्रनाथ इस रास्ते को अच्छी तरह जानता है, वह यहाँ कभी-कभी घूमने आ जाता है। इस हिस्से की विरल आबादी और सूनी दृश्यावली से वह काफी परिचित है। चौराहे से कुछ दूर चलकर, सड़क के बाँई ओर, दो-तीन झोपड़ियां मिलती हैं। उसने एक बार उन्हें खूब पास से देखा है। वे नितान्त नीची हैं, ज़मीन से गज-डेढ़-गज उठी हुई, फूस से निर्मित, जिनके छिद्रों पर कहीं-कहीं टाट के चीथड़े तथा अन्य मटीले कपड़े पड़े हैं। उनमें एक-एक में कई-कई प्राणी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रहते हैं—ऐसा चन्द्रनाथ का अनुमान है। वे उन तंग दायरों में कहाँ लेटते, बैठते और साँस लेते होंगे, इसकी कल्पना करना कठिन है। उन्होंने जाड़ों का मौसम वहीं विताया है—वस्त्रों की कमी को मानो जगह की संकीर्णता से पूरा किया गया है। ये झोपड़ियाँ काफी दिनों से वहाँ हैं, आज भी वहीं पाकर चन्द्रनाथ ने जैसे सन्तोष की साँस ली। परिचित वस्तु की स्थिरता दुःखद होने पर भी अच्छी लगती है। वह उन्हें आँखें फाड़-फाड़कर देखता हुआ तेजी से आगे निकल गया।

काफी दूर चलकर वह फिर बायें हाथ को, दक्खिन की ओर, मुड़ गया। अब वह जिस सड़क पर था वह नये कटरे की ओर जा रही थी। कुछ ही आगे जाकर दाहिनी ओर गंगा के प्रवाह का आभास होने लगा। दोनों ओर सघन वृक्षों से घिरी हुई यह सड़क चन्द्रनाथ को विशेष प्रिय है। वह प्रायः इसी ओर घूमने आता है।

इस सड़क पर एक जगह तीन ओर पेड़ों से घिरा हुआ वर्गाकार मैदान है, जिसके पच्छिमी पार्श्व में गंगाजी बहती हैं। स्वच्छ, पीली मिट्टी से ढका हुआ फूला-फूला-सा दीखनेवाला यह भूखण्ड चन्द्रनाथ को पृथ्वी के अस्थिप्राय ढाँचे का मांसल अंश-सा दिखाई देता है, और वह उसके तट पर घूम-घूमकर अक्सर गंगा-प्रवाह का निरीक्षण किया करता है। किनारे के एक भाग में एक छोटा-सा टीला है जिस पर बैठने या लेटने पर भी गंगा की जल-राशि दिखाई देती रहती है। आज वह अत्यंत दूर से चलकर, श्रान्ति-जन्य अशक्ति से गिरता-पड़ता, उसी टीले पर आकर लेट रहा।

उसकी कल्पना के सामने फिर वही तस्वीरें घूमने लगीं जिन्हें दृष्टि से ओझल रखने का वह आज सबेरे से प्रयत्न कर रहा है। मृत सुशीला के श्रीहीन चेहरे को उसने देखा था, उसकी प्रधान विशेषता श्रान्ति थी। यौवन के इस पहले उभार की बेला में ही सुशीला मानो जीवन से थक गई थी। उसका मुख-मण्डल रुक्ष और शुष्क था—चन्द्रनाथ की कल्पना ने शायद उसे और भी वैसा बना दिया था। उसे रह-रहकर यह बात आती थी कि अपनी पहली गर्भदशा में जीवन के अत्यंत क्लिष्ट और कठोर काल में, सुशीला आवश्यक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजन और विश्राम नहीं पा सकी। अन्त तक वह चन्द्रनाथ के घर का काम करती रही, और अन्त तक अभावों के बोझ से दबी रही।

अस्पताल जाते समय उसने चन्द्रनाथ से पूछा था—'आपके खाने का क्या इन्तजाम होगा?' चन्द्रनाथ ने उसके प्रश्न को टाल दिया था। हाय! मरण-शय्या पर जाती हुई भी भारतीय नारी पति के आराम की चिन्ता नहीं भूलती। उस समय सुशीला ने कहाँ सोचा जायगा कि वह उसकी पति-विषयक आखिरी चिंता थी।

सुशीला चली गई। चन्द्रनाथ ने अपने हाथ से त्रिवेणी-तट पर उसके शरीर को फूंक दिया—लकड़ियों से ढककर उसमें आग लगा दी। किसने सोचा था कि वह कभी इतना कठोर, इतना निर्मम हो सकेगा!

सुशीला के लिए वह कुछ नहीं कर सका, उसे किसी प्रकार का सुख नहीं दे सका। अपने छोटे वैवाहिक जीवन में वह अपमान, अभाव और परिश्रम का बोझ ढोती-ढोती चल बसी। जिसके लिये उसने अपने माता-पिता, अपने बचपन के घर और संगी-साथियों को छोड़ा था, उस पति से मात्र यही एवज, यही पुरस्कार मिला।

और यह सब क्यों हुआ, किसके लिए हुआ? क्यों नहीं उसने राजाराम की बात मान ली और पेशकार की जगह को स्वीकार कर लिया? क्यों नहीं वह कोई दूसरा धन्धा कर सका? इतनी विद्या और बुद्धि लेकर भी क्यों वह सदैव जीवन के वास्तविक, व्यावहारिक संघर्ष-पथ से बचता रहा है—डरता रहा है?

कला, साहित्य, सत्य—यह सब निरर्थक प्रलाप है, वास्तविक जीवन से भागने के तंग रास्ते। जीवन का असली प्रवाह उनसे बचकर, संघर्ष की चौड़ी विषय भूमि में, वेग से बहता है। डार्विन ने ही जीवन के वास्तविक तथ्य को समझा था—जीवन संग्राम-रूप है, मारकाट रूप है, वह दूसरों को दबाकर उठने की, दूसरों से रोटी छीनकर पेट भरने की दूसरों को रुलाकर हँसने की, दूसरों को नष्ट करके बने रहने की क्रिया है। वह स्वप्न नहीं है, सृष्टि नहीं है; वह ठोस कर्मण्यता, ठोस वेग-ठोस स्पन्दन है। विनाश ही उसे पुष्टि देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

किन्तु इस जीवन से लाभ क्या है ? कुछ काल भूमि के रक्तक्लिन्न क्रोड़ में बने रहने से, जीवित रहने से, उपद्रव और शोर करने से, क्या लाभ है ? जीवन में कभी-कभी, कहीं-कहीं सुख के तीव्र संवेदन उठते हैं, पर उनके लिए इतने संघर्ष, इतने कष्ट, इतना अज्ञान और उसकी चेतना, इन सबका बोझ ढोने की क्या जरूरत है ? क्यों नहीं जब एक दिन सबका यही पर्यवसान होना है, तो आज ही उसका निःशेष, निरन्वय विनाश हो जाता ? देश-काल की निर्मल चादर को ये जीवित प्राणियों के सहस्रों शव क्यों नित्य-नित्य गंदा और कलुषित किया करते हैं ?

उसी क्षण, मानो अपने में से उत्क्षिप्त होकर, उसकी दृष्टि गंगा की अथाह जलराशि पर पड़ी। और वह सोचने लगा—क्यों नहीं इस अतल जल में कूदकर एकबारगी इस देह का, इन मिश्रित, बोझिल संवेदनाओं का अन्त कर दिया जाय !

सहसा कुछ दूर पूर्व दिशा में हँसने की कल-कल-ध्वनि सुनाई दी। उस हँसी का लक्ष्य कहीं वह स्वयं तो नहीं है, यह सोचकर वह यकायक उठ बैठा और आँखें फाड़कर सड़क की ओर देखने लगा। एक संभ्रात गृहस्थ अपनी पत्नी और दो सुन्दर, स्वस्थ बच्चों के साथ उसी तरफ़ आ रहे थे। बच्चों में एक लड़की थी, संभवतः पाँच-छै वर्ष की और एक दो-ढाई वर्ष का लड़का, पीछे एक नौकर था। दोनों बच्चे भूमि पर चल रहे थे, दौड़ते आ रहे थे, और दोनों एक-दूसरे को छूते-छेड़ते, खिलखिलाकर हँस रहे थे।

क्षणभर को उन्माथ की कल्पना और आँखों के आगे से विषाद का पर्दा हटा, और वह मिश्रित कुतूहल और विनोद से बालकों की क्रीड़ा का निरीक्षण करने लगा।

वे सब आकर टीले से पाँच-सात गज की दूरी पर खड़े हो गए। शिशु दौड़ रहा था और लड़की उसे छूने का अभिनय कर रही थी। पकड़े जाने के भय से क्रमशः शिशु माँ के पास पहुँच गया और उसकी साड़ी पकड़कर चारों ओर परिक्रमा करने लगा। जब-जब लड़की उसे छू लेती तब-तब वह किलकारी मारकर हँस पड़ता और उससे छूटकर तेजी से घूम जाता। कुछ देर बाद वह माँ को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

छोड़कर गंगा की ओर दौड़ा। नौकर ने बढ़कर उसे गोद में उठा लिया, बालक जोर से चीख उठा।

धीरे-धीरे अँधेरा हो रहा था। गृहस्थ सज्जन सबको लेकर चलने का उपक्रम करने लगे। चन्द्रनाथ भी उठकर खड़ा हो गया।

बच्चे अनवरत कूदते-किलकते जा रहे थे। चन्द्रनाथ विमुग्ध नेत्रों से उनकी ओर देख रहा था, कोई भी क्या ऐसे दृश्य को बिना देखे रह सकता है!

यह जीवन कितना उल्लासपूर्ण है, कितना भव्य और आकर्षक, और कितना करुण! कितना कष्ट, कितनी यातना सहकर माँ ने इन बच्चों को पैदा किया होगा! इस व्यापार में प्रकृति कभी-कभी माँ को मार भी डालती है, किन्तु वह मरना भी जिलाने के लिए होता है, मानवता की परंपरा को अखण्ड बनाए रखने के लिए। मनुष्य नित्य मरता है, और नित्य जन्म लेता है, लेकिन यह जन्मना भी क्या मरने के लिए ही नहीं है? क्यों इतने मनुष्य नित्य पैदा होते और मरते हैं? क्यों जीवन-शक्ति इतनी सृजनशील है, इतनी निर्लज्ज कि उसकी परम्परा का अन्त ही न हो, और इतनी सुकुमार कि हलके-से झटके से छिन्न-भिन्न हो जाय?

वह लौटने लगा। सड़क पर दो विद्यार्थी जा रहे थे। वे सम्भवतः किसी विषय पर विवाद कर रहे थे।

आगे एक चौराहा मिलता था, जिसके दाहिनी ओर सँकरी सड़क के इधर-उधर ईसाइयों की बस्ती थी। चन्द्रनाथ एक दिन कौतूहलवश उधर घूमने चला गया था और आगे एक सुन्दर कुएँ के पास पहुँचकर रुक गया था। वहाँ सड़क समाप्त होती थी। इस बस्ती में एक बात जो विशेष रूप से उसे दीख पड़ी, वह थी सार्वत्रिक स्वच्छता। ग़रीब होते हुए भी ईसाई परिवार साफ-सुथरे रहने की कला जानते हैं। ब्रह्माण्ड की अखण्ड जड़ता में यह स्वच्छता का प्रेम क्या अर्थ रखता है और क्यों श्लाघ्य प्रतीत होता है।

चौराहे पर कुछ आवारे खड़े बातें कर रहे थे। शायद वे कुछ लड़कियों के उधर से गुजरने की प्रतीक्षा में थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और आगे चलकर, एक हिन्दू बस्ती के पास, उसने सुना कि होली गाई जा रही है। अपनी अनेकमुखी व्यस्तता में वह यह भूल गया था कि होली का त्योहार नितान्त समीप आ गया है, सिर्फ दो-तीन दिन ही बाकी हैं।

देश-काल के रंगमंच पर यह जीवन नाम की चीज़ कहीं से प्रकट होकर न न जाने क्यों इतनी उछल-कूद, इतना क्रीड़ा-कौतुक, गाना-बजाना, हँसना-रोना किया करती है। प्राणधारियों के इस सदा लगे हुए मेले का कहीं कुछ उद्देश्य भी है?

वह थक गया है, इसलिए अब धीरे-धीरे चल रहा है। उसे लगता है मानो आस-पास की प्रत्येक वस्तु एक वृहत् प्रश्न-चिह्न है, मानो किसी ने शून्य का उपहास करने के लिये उन्हें खींच या खड़ा कर दिया है। सड़क पर या उसके किनारे जब कोई हँसता है, या पुकारता है, या संकेत करता है, या तर्क अथवा विवाद करता दीखता है, तो वह आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखता है और सोचता है—यह सब क्या है, इसका अर्थ क्या है ?

क्यों हम सब हँसने-रोने को मजबूर हैं ? क्यों हम उन चीजों और क्रिया-कलापों को महत्त्व देते हैं—देने को विवश हैं—जिनके अभिप्राय या सार्थकता से हम सर्वथा अपरिचित है ? और उसे लग रहा है जैसे कोई दानवी शक्ति मात्र अपने मनोविनोद के लिए जीवधारियों को विचित्र प्रवृत्तियों और भयंकर वासनाओं का वाहक बनाकर कठपुतलियों की भाँति नचा रही है।

घर के पास पहुँचकर वह कुछ देर एक पार्क में रुका, उसे घर के भीतर जाते भय लगता था।

वह बहुत बहुत भूखा था, आज सुबह से उसके पेट में थोड़े-से दूध को छोड़ कर कुछ भी नहीं गया था। भूख कितनी बेशर्म है, इसका कठोर अनुभव उसे आज हुआ था। उसने एक हलवाई की दूकान से पूड़ियाँ लीं, और उनसे क्षुधा-निवृत्ति की। रात को वह ऊपर न जाकर नीचे ही अपने बैठक-रूम में लेट रहा।

तो, सुशीला की मृत्यु हो गई। ऐसा क्यों हुआ, उसने ऐसा कौन अपराध किया था ? किसका अपराध किया था ? और फिर बरबस उसके हृदय में एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दूसरा विचार आया—क्यों सुशीला अब मरी, क्यों वह एक वर्ष पहले ही नहीं मर गई ? तब''''तब शायद वह साधना को पा सकता''''''

वह अपने इस विचार की कठोरता पर क्षुब्ध और लज्जित हो उठा। आज सबेरे भी यह खयाल उसके दिमाग़ में आया था, तब उसने उसे दबा दिया था। जीवन की वास्तविकता से, सचाई से, हम सब कितना डरते हैं ! जैसे दबा देने से, अस्वीकार करने से, डरने से कोई विचार खत्म हो सकता है—हम उससे बच सकते हैं ! इस समय कुछ अधिक साहस करके वह उस विचार का सामना कर रहा है। क्या सचमुच सुशीला के तब मर जाने से कोई लाभ होता ? क्या साधना, उस अर्थ में, उसकी बनना पसन्द करती ?

सहसा उसके अन्तर्नेत्रों के आगे बरेली का वह बँगला जिसमें साधना और अरुणकुमार रहते थे, झूल गया। वहाँ से स्टेशन की ओर जाते हुए उसे आभास हुआ था, और आज उसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है, मानो साधना और उसके बीच व्यवधान करनेवाली सबसे बड़ी शक्ति वह इमारत है। उसके सुन्दर स्वच्छ बरांडे उसकी मनोरम खिड़कियाँ और सुसज्जित कमरे ही मानों वे वस्तुएँ थीं जिन्होंने उसके और साधना के बीच में वृहत् अन्तराल उपस्थित कर दिया था। ऐश्वर्य का इतना लोभ रखने वाली, उसमें इतने अतर्कित आनन्द का अनुभव करनेवाली क्लब-जीवन को चरम सुख माननेवाली साधना उस अकिंचन की चिन्ता कैसे करती रह सकती थी ! उसका वश चलता तो संभवतः वह उसी समय साधना के उस सुन्दर बँगले को भूमिसात् कर देता।

साधना से उसका सम्बन्ध पहले ही टूट चुका था, अब सुशीला भी चल बसी। अब उसका विश्व में अपना कहने लायक कोई न था। यह एक विचित्र परिस्थिति थी। मानो आस-पास के पिंडों से सर्वथा विच्छिन्न होकर वह एक ग्रह या तारे की भाँति अनन्त शून्य में कहीं चिपका दिया गया हो। ऐसी स्थिति में उसे किसी भी प्रकार की गति या प्रयत्न की कोई सार्थकता नहीं दिखाई दे रही थी।

श्रान्ति ने उसे बहुत देर तक उस अवस्था में नहीं रहने दिया। शीघ्र ही वह गाढ़ी नींद सो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सबेरे दरवाज़ा खटखटाए जाने पर चन्द्रनाथ ने जब किवाड़ खोले तो देखा कि सामने आशा खड़ी है। साथ में एक अन्य युवक भी है। वह कह रही थी—माफ़ कीजिए, मैं नहीं जानती थी कि आप इतनी देर में सोकर उठते हैं।

चन्द्रनाथ ने टाइमपीस पर दृष्टि डाली, वह बन्द थी, कल उसमें चाभी नहीं भरी गई थी। आशा ने कहा— घबराइए नहीं, अभी सिर्फ सवा-नौ ही बजे हैं।

चन्द्रनाथ ने संभ्रम में दोनों से बैठने को कहा। फिर बोला—रात बहुत देर तक जागा था इस लिए···

आशा—'सफ़ाई देने की कोई जरूरत नहीं है, कवियों के सोने-जागने का कोई समय नहीं होता।' फिर चन्द्रनाथ को अधिक ध्यान से देखकर बोली—आपका हाल क्या है, बीमार थे क्या ?

चन्द्रनाथ—नहीं, मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ।

आशा उसके पूछने की अपेक्षा न करके अपने आने का कारण बताने लगी। सात-आठ दिन बाद प्रेमलता की शादी होने वाली है और अगले ही दिन तिलक भेजा जायगा, उसी के लिए वह निमंत्रण देने आई थी। 'आपका मकान ढूँढ़ने में मुझे बहुत दिक्क़त हुई', उसने अन्त में कहा।

चन्द्रनाथ ख़ामोश था। आशा ने कहा—आपकी पत्नी तो ऊपर होंगी, उनसे भी भेंट कर आऊँ।

और यह प्रश्न करके जैसे वह असमंजस में पड़ गई।

'ऊपर कोई नहीं है', चन्द्रनाथ ने अविचलित भाव से कहा।

'कोई नहीं ? तो क्या आपने उन्हें घर भेज दिया।'

'नहीं, उनकी कल अस्पताल में मृत्यु हो गई। बच्चा हुआ था।'

'ओह ! आपने बड़ी दुःखद खबर सुनाई। पहले से हम लोगों को कुछ भी आभास न था।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'आपका परिचय ?' चन्द्रनाथ ने शान्तिपूर्वक आशा से उसके साथी युवक की ओर संकेत करके पूछा ।

'आप मेरे भाई हैं, नरेन्द्र, मेरी मौसी के लड़के; इस वर्ष गणित में एम्० एस्०-सी० परीक्षा देंगे ।' फिर जैसे वह कुछ याद करके बोली—

'और बच्चे का क्या हुआ मिस्टर चन्द्रनाथ, बच्चा कहाँ है ?'

चन्द्रनाथ ने धीरे से कहा—बच्चा अस्पताल में है ।

'उसका क्या प्रबन्ध किया जायगा ? शायद आपकी माताजी...'

'मेरी माताजी जीवित नहीं हैं, पिता जी भी नहीं हैं। घर भाई साहब को तार दे दिया है ।'

सहसा आशा ने प्रस्ताव किया—'चलिए हम बच्चे को देखने चलें ।' चन्द्रनाथ तैयार हो गया ।

सब अस्पताल पहुँचे । बड़े यत्न से आशा बच्चे को भीतर से बाहर लाई। वह उसकी गोद में चिपटा जा रहा था । चन्द्रनाथ के पास आकर उसने कहा— 'देखिए, कैसा सुन्दर शिशु है, बिलकुल आपकी सूरत का होगा। इसे तो मैं ले जाती हूँ ।'

यह कहकर आशा ने उसे माथे पर चूम लिया । चन्द्रनाथ की आँखें सजल हो गईं ।

मुद्रक—भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन, वाराणसी ।
२९/७—७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

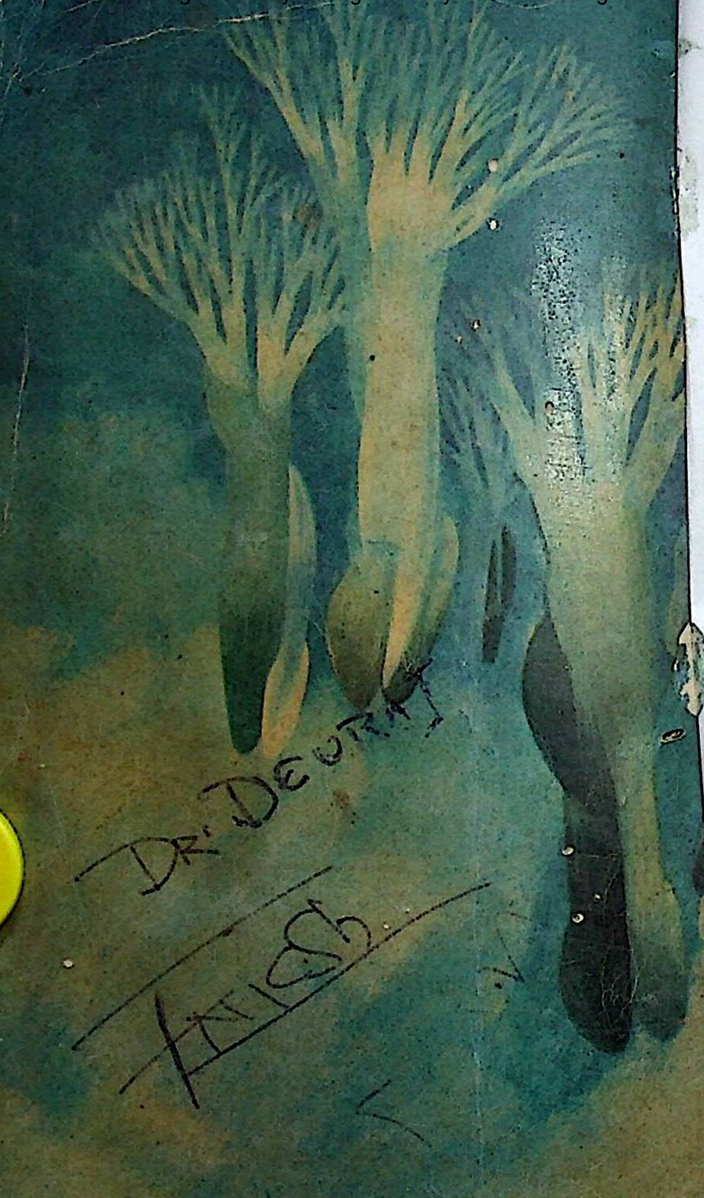

भार्गव ऑफसेट्स मच्छोदरी, वाराणसी

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

ath, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundatic

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon